दूसरा अध्याय।

दवा देनेका वर्णन.

जुल्लाबोंकी औषध ॥

श्रीगणेशायनम

अथमीज़ानुतिब्बांहदी

पहिला खण्ड

गरमी सरदी तरी और खुश्की की और रूह के विषयमें ।

गर्मीकी पहचान

अधिक प्यास, जलन, देह पर जर्दी, या सुर्खी, ठंडक को अच्छा मालूम होना, सिर में भारीपन, अंगडाई, जंभाई, और नींद की अधिकता सुस्ती मुंहमें मीठापन देह और जीभ पर लाली होगी, फुन्सियां और फोड़े बहुत निकलेंगे, मसूड़े से खूनका बहना, नकसीर बहना, हाथ पांव गिरना, और देह का दुखना ये रुधिर की गर्मी के लक्षण हैं जो गरमी पित्त से होगी उसकी पहचान यह है, देह जिह्वा और आंख में पीलापन, मुखमें कड़वापन, जीभमें सूखापन और कांटे पड़ें, नाक में खुश्की, प्यास का होना, भूखकी कमी, जी मिचलाना, रोमांच का खड़ा होना, इतने लक्षण से गरमी की पहचान है ॥

सरदी की पहचान ।

प्यास और जलन का न होना. बदन का रंग सफेद या ... होना, जो सरदी कफ से हो उसकी पहचान यह है ...की सफेदी और नरमी सुस्ती होना, बदन ठंडा होना, प... ...न होना, खट्टी डकार आनी, नींद बहुत आनी, इन्द्रियों

होता है ऐसे रोगों में कि माद्दा उनका गाढ़ाहो वार वार मुंजिस देकर जुल्लाव दिया जाता है- और जब तक मुंजिसका असर अच्छी भांति माळूम नहो तो दूसरा जुल्लाव न दिया जावे कभी ऐसा होता है- कि विना मुंजिस के मवाद पक जाता है- और रोग विना खाने दवा के जाता रहता है इससे जाना गया कि उपाय से रोगी के दिलको मदद होती है ॥

पांचवां अध्याय

जुल्लाब और मुलय्यन के विषयमें

जुल्लाव उसे कहते हैं जो मवाद को रगों और दूर दूर से खेंचला ता है ॥ मुलय्यन वह है जो केवल पेट और आंतों से मवाद को निकालता है जुल्लाव के देने में मुंजिस पहिले देना अवश्य, है- मुलय्यन में उसकी आवश्यकता नहीं- और जो मुलय्यन से पहिले मुंजिस देवें अच्छा है ॥

मुलयन मुवारिक भीतर और बाहर की बहुत सी वीमारियों को लाभ कारक है- गर्भवती स्त्री बच्चों और बूढ़ों कोभी पिला सकते हैं- सिवाय ज्वरके भीतर की सूजन को भी लाभ कारक है- और सब मकारके मवाद को अच्छा है- अमलतास लेकर गुलाव या गरम पानी में मलकर छान ले और जो गरमी बहुत हो तो कासनीका रस या ठण्डे बीजों का शीरा उस में मिलावे और जो पेटके भीतर सूजन- होय तो हरी मकोयका रस उसमें मिलावे और वायगोले के वास्ते सौंफ का शीरा और गुलकंद मिलावे जो अमलतास की दुर्गंधि दूरकिया चाहे तो सौंफ और गुलाव का मिलाना अच्छा है- जो उसे अधिक उत्कृष्ट करना चाहे तो शीरखिश्त असील और तुरंजवीन मिलावे उन्नाव लिहसोड़े, बनफशेके फूल, मुनक्का, गाउजवां आदिको औटाकर अमलतास को उसमें वाटे तो बहुत अ-

वाले को हाथ मुंह गर्म पानी से धोना चाहिये और शहदकी सिकंजवीन से कुल्ली के पीछे मस्तगी २॥ माशे पीसकर शक्कर के साथ या विना शक्कर के सेवके अर्क के साथ पीले और जो मस्तगी की जगह गुलकन्द, इतरीफल सगीर होतोभी डर नहीं है और जो औषधों की तेजी से हिचकियां आने लगें तो थोड़ा२ गर्म पानी पिलावें और छींक लाने का उपाय करें और जो वमन के पीछे छाती और पसली में पीड़ा होजाय यापेट फूल जाय तो गुल रोगन या वाबूने का तेल मले और गर्मपानी की धारदे और जो वमनकी तुरंत आवश्यकता होतो इनबातों के विना ही वमन करना चाहिये और जो विषकेखानेपर वमन कराना पड़ेतो उसे पेटसे अच्छी भांति निकालना चाहिये

वमनद्वारा पित्तोंको निकालने वाली दवा

सिकंजवीन कन्दी १० मिसकाल[1]- पालक का अर्क ४० मिसकाल जौ के औटाये हुऐ पानीमें या खुब्बाजी के पानी में घोलकर गुनगुना पिलावे- ॥

वमनमें बलगम को निकालने वाली औषधयेहैं

मूली के बीज७माशे- सोये के बीज३॥माशे-खारी नमक२॥। माशे-सब को कूट छानकर शहद में मिलाके खिलावे जो वमन आपसे आजाय तो अच्छा है, नहीं तौ ऊपर से गरम पानी पिलादे-॥

वमनद्वरा बादीको निकालने वाली दवा

मूली को खाली करके कुटकी उसमें भरदे फिर उसको सिकंजवीन में रात भर डाले रक्खे सवेरे खिलादे और ऊपर से सिकंजवीन लोबिया के पानी में घोलकर पिलावै-॥

---

(१) मिसकाल ४॥माशे का होता है और बाजे ३॥ माशे काही मानते हैं ॥

चौदहवां अध्याय
जिगरके रोगोंका वर्णन

इन्ही औषधों को देते है और मवाद के पकने से पहिले इनको नदेना चाहिये ॥

पेशाब लानेवाली ठंडी दवइयां।

कासनी–खीरे ककडी के वीज- शिकंजवीन- लोकी अर्थात् घीया का अर्क-कुल्फे के वीज, गोखरू, काकनज, तरबूज का पानी आदि।

गर्म औषध

करफ्स के वीज, सौंफ. जीरा, तिरन्जास्फ. सूखाहुआजूफा, अजवायन, गाजर के वीज, सुदाव, कवावा आदि।

मोतादिल अर्थात् वह औषध जिनमें सरदी गरमी बराबर हैं यहहैं।

हंसराज खरबूजे के वीज, ठंडी और गरम औषधों को मिलाकर देने सेभी यही बात होती है ॥

पेशाव लानेवाली मोतादिल औषध

जीरा. सौंफ, हरएक सातमाशे, कुचलकर एक प्याले पानी में औटावे जब पीने के अनुपान रहजावे तो उसे छान ले. और खीरे ककडी के वीज, और खरबूजे के वीज, हरएक साढे दस मासे, पीस कर इसमें मिलादे, और मिश्री मिलाकर पिलादे, यह दवा मवाद को वहुत निकालती है और वन्द पेशाव को जारी करती है और जो, जीरा और सौफ को कूट छान कर पहिले फांकले और ऊपरसे खीरे ककडी और खरबूजे के वीज पीसके पीवे तो भी यही फायदा होगा ॥

वन्द हैज को जारी करनेवाली औषध।

तज, कलौंजीदो मिसकाल, अवहाल, जुन्दवेदस्तर, हरएक ७माशे, सबको कूट छान कर दुगुणे शहद में मिलावे, औरएक सेदो मिसकाल की गोली बांधले और प्रातःकाल फ-

पन्द्रहवां अध्याय

यरकान, तिल्ली और पित्तोंके रोगों का वर्णन

सोलहवां अध्याय

आंतों के रोगोंका वर्णन

सतरहवां अध्याय

गुदा के रोगों का वर्णन

अठारहवां अध्याय

गुरदेके रोगों का वर्णन

नवां पाठ

मृगी के विषयमें

यह वह रोग है जिसमें मनुष्य अचेत होकर गिरपड़ता है और मुख और हाथ पांव टेढ़े और खिंचे रहजातेहैं, औरवह तड़फाकरताहै, इस रोगमें सिरका बोझल होना और जीभ की रगों का हरा होना अवश्य है. कभी यहरोग वारी से होता है जो इसकी वारी बहुत होतो बुराहै-परन्तु बालकों को कभी २ ऐसा देखा गया है. कि एक दिन में आठ२ बार आतीहै और फिर ऐसी चली जाती है कि कभी नहीं होती उपाय इसका यह है कि वारी के समय वह चिकित्सा करें जो मूर्छा में होती है, औरकोई वस्तु या कपड़ा लपेटकर उसके मुखमें रखदें, कि कि वह अपनी जीभ चबा न डालें और हाथ पांव उसके जकड़ दें, कि चोट न लगे और जब होश में आवे. तो जैसा मवाद हो वैसाही जुल्लाबदें. और तरमेवे और दूध दही न खिलावें-और ऊदसलीब, को गले में लटकावें और नास जो दूसरे खण्ड में लिखा गया है सुघावें

बच्चोंको जो पसली का रोग होताहै वह भी इसीप्रकार सेहै. उपाय उसका मवाद के अनुसार करना चाहिये-और विना कारण के जाने अधिक गर्म और अधिक ठंडी औषध नदें और दूधपिलाने वाली भी हुशयारी रक्खें कि-हानिकारक वस्तु न खावे. उससे भोग न करे कि इससे दूध बिगड जाता है और बच्चों को कब्ज होतो शाफा करें ॥

दसवां पाठ

मालीखोलियाके वर्णनमें

यह वह रोगहै कि मनुष्य को अच्छी बातें नहीं सूझती और यह बातें सूझपडती हैं जो केवल बुद्धि के विपरीत हैं ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

मसानेके रोगोंका वर्णन ।

बीसवां अध्याय ।

उन रोगोंका वर्णन जो केवल पुरुषोंको होतेहैं ॥

कुबुद्धि और अहंकार और घमंड और व्यभिचार भी इसी प्रकार के हैं ॥

जैसा मवाद हो उसके अनुसार जुल्लाव दें, और दिलकी खुशकरने वाली वस्तु और नोशदारू खिलायें, और भोजनमें हलकी वस्तु खिलाना और थोड़े२ दिन पीछे कई वार जुल्लाव देना अधिक लाभदायक है और जानना चाहिये कि ऐसे रोगों में उपाय का लाभ बहुत काल के पीछे प्रत्यक्ष होता है घवरावैं नहीं ॥

ग्यारहवां पाठ

जुनूनकेविषयमें

यह रोग कई प्रकार का है जो इसमें क्लेश और क्रोध पाया जायतो. मानिया. कहलावेगा, और जो हंसी खेल और सताना होतौ उदाउल कल्व कहैंगे ॥

और जो मनुष्य से न मिले झुले तो कुतरव कहते हैं यह रोग मालीखोलिया से बढ़कर है उपाय इसका वैसाही करेंजो मालीखोलिया काहै और स्त्रीयों का दूध दुह कर नाक में डा लें और बनफशे और बादाम का तेल सिर पर मलें और पेट पर गर्म पानी डारें और मवाद पकजाने के पीछे माजून नुजाह, खिलावैं ॥

बारहवां पाठ

सदर और दव्वार के विषयमें

जब मनुष्य खड़ाहो या चले और आखों के तले अंधेरा आजायतो उसको सदर कहते हैं ।

और जब यही बढ़ जाय और सिर घूमने लगे तौ वह दव्वार है जैसा मवाद हो वैसाही जुल्लावदे, जो मवाद सिर में हो तो सिरमेंभी कोई रोग मालूम होगा, और जोमवाद पेटमें होगा

इक्कीसवां अध्याय

बाईसवां अध्याय

उन रोगों का वर्णन जोकेवल स्त्रियोंको होते हैं

मिनशारी, सरी और मुतवातिर होती है कडेपन के साथ और टुकडे नाडी के उंचाई और निचाई और आदि और अंत में अलगर हों "अर्थात कोई टुकडा पहिले चले और कोई पीछे कोई नरम हो कोई कडा "इसके दो कारण है एक यहकि रग के भीतर कई मवाद हों कोई सडाहुआ कोई कच्चा और कोई पक्का। जिस टुकडे के तले सडा हुआ मवाद होगा वह नरम होगा और भली भांति खुलेगा और पक्का व कच्चा मवाद इस से विपरीत है दूसरे यह पट्ठों की जगह पर सूजन हो जैसे कि जातुल जनव में नाडी पाई जाती है इसलिये कि रग वनी हुई है दो झिल्लियों से एक ऊपर कोई एक भीतर को और झिल्लियों की बुनावट पट्टों के रेशे और रावत के रेशों से है जब सूजन होगी तो वह रेशे उस सूजन की जगह जो ओर पास है खिचेंगे और उनमें कडापन होगा और वाकी नरम होंगे ॥

मौजी वह नाडी है जो सरी और मुतवातिर नरम हो कुछ टुकडे उसके उभरे हों और कुछ कम कोई पहिले चले और कोई पीछे कारण इसका अधिक कमजोरी है और कभी इसमें नाडी नरमही होती है ॥

दूदी वहहै जो सब प्रकार से मौजी कीसी होती है परंतु यह सगीर होती है और मौजी से अधिक कमजोरी इस में होतीहै नमली जो दूदी सी हो परंतु अधिक कमजोर तगीर तवातुर के साथ कारण इसका कमजोरी की अधिकता है दूदी से वढ कर जनवुलफार वह है कि चले एक सिरेसे होकेर आजम या असगर की ओर फिर जावे आजम की तरफ और कभी वहां तक पहुंचेन से पहिले ठहर जाती है जो यह ठहरना दूसरी प्रकार में होतो कमजोरी होगी और पहिली सूरत में

का शिथिल होना, थूक का पतला और बेजलन होना, नाक से पतला पानी बहना, जो सरदी सौदासे हो उसकी पहचान यह है बदन का काला होना, फस्द से काला और गाढ़ा रुधिर निकलना बदन का दुबला होना सोचमें वृथा बैठा रहना कौड़ी की जगह ऐंठा होना और झूंठी भूख होनी ॥

तरी की पहचान ।

शरीरका नरम और ढीला होना, अधिक भूख होना, नींद अधिक होना, जो तरी गर्मी के साथ हो उसकी पहचान ऊपर हो चुकी है ॥

खुश्की की पहचान

बदन की सख्ती और दुबला और कुरूप होना जो गरमी पित्त और सौदा के साथ हो पहचान उसकी ऊपर होचुकीहै

॥ इति पहचान ॥

—:०:—

अब जानना चाहिये रुधिर, कफ, सौदा और पित्त से आदमी का शरीर स्थिर है, जो कोई इनमें से घट बढजाता है तो रोग उत्पन्न होजाता है, रुधिर गर्म और तर है, पित्त गर्म और खुश्क है, कफ सर्द और तर है, सौदा सर्द और खुश्क है इन ही चारों १ खिल्त से एक ठंढा धूंआं प्रगट होता है, उस में गर्मी नहीं रहती, और न मनुष्य के बदनकी स्थिरता होतीहै उसे वायु कहते है, और यह बहुधा कफ और सौदासे उत्पन्न होती है और इनही चारों से जो धूंआ उत्पन्न होताहै, और बदनकी स्थिरता और जान जिससे होतीहै उसको रूह कहतेहैं

॥ इति प्रथम खण्ड ॥

---

१ खिल्त अर्थात् रुधिर, कफ, सौदा, और पित्त ॥

दूसरा खण्ड ।

दवा और खाने के विषयमें

अध्याय पहिला ।

उन दवाओं के विषय में जो इन चारों के बिगाड़ को खोवें जानना चाहिये कि रुधिर चार प्रकारसे बिगड़ताहै-एक-यहकि अधिक होजाय; दूसरे पतला पड़जाय, तीसरे गाढ़ाहोजाय, चौथे सड़जाय॥ वह दवा जो रुधिरके जोशको थामें यह हैं-कासनी काहूकेबीज-धनियां, गुलाबकेफूल, नीबूकारस सिकञ्जबीन, शर्वत उन्नाव, शर्वतसन्दल, शर्वतकेवड़ा, और जो इनके बराबर ठंडी हों॥ जो दवा गाढ़े रुधिर को अच्छा करें वे दवा यह हैं, आलू बुखारेकापानी, सौंफकापानी, शाहतरेकापानी, सिकंजबीन, और शहद, अपनेसे दूने पानीमें औंटाया हुआ॥ और जो दवाईयां सौदा को निकालेंगी वे गाढ़े रुधिरकोभी अच्छा करेंगी क्योंकि सौदाके मिलनेसे रुधिरगाढ़ाहोजाताहै. और गाढ़े बलगम अर्थात् कफके मिलने से भी रुधिर गाढ़ा होजाताहै ऐसे समय में कफ का जुलाब और खट्टी दवाईयां दें, कि गाढ़े कफको काढ़े और कफ और सौदा के पतले होनेके पीछे मूत्र लाने वाली दवाई-यां दें जब रुधिर में बलगम मिला होगा तौ फस्द में रुधिर सफेद निकलेगा और जो सौदा मिला होगा तो रुधिर काला होगा ।

वे उपाय और दवाईयां कि जो पतले रुधिर को अच्छा करें जब रुधिर बलगम के मिलने से पतला होतो बादरंजबोया, रेहांके बीज, हंसराज. और जो दवाईयां खुश्क गर्म हों और कफ को निकाले, काबलीहरड़ कफके निकालनेको बहुत अच्छीहै और पहचान इस बलगम के रुधिर में मिलने की यही है कि रुधिरका रंग सफेदी मिला हुआ होगा-बदन का मलना और

महनत का करना, कसरत करना, कफ को फायदा देताहै-जो रुधिर पित्त के मिलने से पतला हो जाय पहचान उसकी यह है-कि फस्दसे पीला कफ रुधिर पर दिखलाई देगा,उपाय इस का पित्तका निकालनाहै और पीली हरड़ इसकेलिये वहुत अच्छी है मसूर का पानी, शर्वत उन्नाव और कासनीका पानी फाडा हुआ॥और जो दवा रुधिर के जोशको फायदा करेंगी वे ही दवा इस को भी फायदा करेंगी-अब जानना चाहिये कि कभी गर्मी पहुंचने से खिल्त सड़जाताहै और बुखार जरूर होजा ता है और विनागर्मी के कोई खिल्त नहीं सड़ता, इलाज उस का सर्द और खुश्क दवा से उचितहै जो दवा रुधिर के जोश में लिखीगई है। रुधिरके गरम होनेको रुधिरका जोश कहतेहैं

बिगाड पित्तका पांच प्रकार सेहैं

एक यह कि पतला कफ उसमें मिले, दूसरे गाढा कफ मिले, तीसरे थोड़ा सा सौदा उसमें मिल जाय, चौथे पहिला और तीसरा प्रकार दोनों मिलजांय, पांचवें पहिला और ती-सरा प्रकार वहुत जलके उसमें मिले॥ चौथे और पांचवें प्रकार में यह भेद है-कि चौथे में गरमी कम होती है और पांचवें में अधिक नहीं तौ दोनों एक है।

वे दवा जो पित्तको अच्छा करतीहैं जहां गरमी अधिकहो वहां ठंढी दवा दें या एक दिन में दो तीन वार दें और जहां गरमी कम हो वहां कम ठंडी दें वे यह हैं ईसवगोल, वीदाना, कुलफा,कासनी,खीरे ककड़ीकेवीज,सूखा धनियां,चंदन,काहूके वीज,कपूर,ईसवगोल का लुआव,निकालकरदें या फकादें इसका कूटना नहीं क्योंकि कूटने से जहर होजाता है, और वीदानेका भी लुआव निकालें, खांसी में खट्टी विहीका वीदाना दें कुल

फे और कासनी के बीजों का शीरा निकाले और इनके पत्तों का रस निकालें कासनीके पत्तोंको धोना न चाहिये क्योंकि उस का असर जातारहताहै, जो कासनीके पत्तों का पानी फाड़ले और अकेला या कुछ मिठाई या खटाई मिलाकर पीवे तो रुधिर के साफ करने में इसके बराबर कोई दवा नहीं है, खुलफे के बीज को पीसकर बहुत छानना कालक दूर करनेके लिये कुछ अच्छा नहीं है, खीरा ककड़ी के बीज और धानिये का शीरा निकाललें या पानी में भिगोकर कूटकर पीवें और यही भिगोया हुआ बहुत जल्दी असर करता है ।

चन्दन पानीमें घिसकर देना बड़ी भारी गरमीको बुझाता है, और सुफेद चन्दन लाल से अच्छा होताहै, कपूर देहकी गरमी को दूर करता है, और जो कि यह बहुत ठंडाहै, इस लिये सिवाय जवान आदमी और गरम प्रकृति वाले के और को न दे और ठंडे फल जैसे तरबूज आदि और सब खटाइयां पित्त को अच्छी हैं, और स्त्री और लड़को और खोजों को बहुत ठंडी दवाइयां न देनी चाहियें ।

पित्त को फायदा करनेवाली दवाइयां

कुर्स तबासीर मुलय्यन १, कुर्स तबासीर काबिज २, कुर्से कपूर ३, शर्बत चंदन, शरबत आलूबुखारा, शर्बत बनफसा, शर्बत नीलोफर, और ठंडी दवाओं का सूंघना और लगानाभी पित्त के लिये अच्छा है और गर्मी को बुझाता है ॥

कफ का बिगाड भी पांच प्रकार का है ।

एक यह कि थोड़ा सा रुधिर कफमें मिलजाय और उसके असर को बदलदे, उसको मीठा बलगम कहतेहैं । दूसरे जला हुआ पित्त थोड़ासा बलगममें मिलजाय उसको खारी कफ कहते हैं और स्वभाव पित्त के बराबर होताहै ॥ तीसरे बलगम

गरम होजाय तौ उसको खट्टा कफ कहते हैं। चौथे थोडासा सौदा वलगम में मिलजाय तौ कसीला कफ कहलायगा। पांचवें कफ पतला पड़जाय उसको फीका कफ कहते हैं और ये सब कफों से अधिक ठंडा होता है।

कफ को अच्छा करनेवाली दवा।

सोंफ अनीसून, मुलहैटी, जीरा, दालचीनी, इलायची, वालछड, मुनक्का, विरञ्जासफ, इनके देने की रीति हकीम की रायपर है, कफ में दवाको औटाकर देना अच्छा है॥ और जब वलगम सडजाय तो वहुत गरम दवा न देनी चाहिये खासकर खारी वलगम में क्योंकि उसमें तप वहुत होती है। और कुसूमकेवीज जहां कहीं रगोंके भीतर वलगम सड़जायतो वहुत अच्छे हैं। और कफ के सडने में जो देखें तो कुछ दवा जो पित्त में वयान हुईहै मिलाकर दें।

कफ नाशक वनी हुई दवा

मअजून फिलासफा, सोंठ की मअजून, माजूनसीर, जवारिश जालीनूस इन दवाओं को उस समय में दें जब कि कफ सड़ा नहो और बुखार नहो और तपमें कुर्सगुल कुर्स गाफिस सिकंजवीन वजूरी मौतादिल, वजूरी गर्म, शर्वत वजूरी मौतादिल और गर्म, और गुलकंद देना चाहिये॥

विगाड सौदा का भी पांच प्रकार का है।

एक यह कि सौदा अधिक वढ़जाय दूसरे यह कि सौदाजलकर विगड जाय-तीसरा यह कि रुधिर जल कर सौदा वनजाय चौथा यह कि कफ जल कर सौदा हो जाय-पांचवां यह कि पित्त जल कर सौदा हो।

जान लो कि कोई खिलत जब जल जाताहै तौ विगडा हुआ सौदा हो जाता है और मतलब जलनेसे यहहै कि तरी

उसकी गरमी से उड़कर गाढ़ा रहजाता है ॥ और उसकी अ-सल नहीं रहती-और जलनेसे यह मतलब नहींहै कि जलकर राख हो जाय और अगर कोई खिल्त सर्दीसे गाढ़ा होकर जम जाय तौ वह सौदा न कहलावेगा ॥

सौदा (वादी) नाशक दवा

लहसोड़े, गावजबां, खरबूजे के बीज, मुलहटी, कनोचे के बीज, इन्जीर, मुनक्का, आदिजो गर्म और तरहोंजो सौदा गर्म खिल्त से पैदा हों तो दवा ठंडी और तर देनी चाहिये जैसे कुल्फा, बीदाना, खीरे ककड़ीके बीज. आदि और नहींतो गर्म और तर या वह दवा जो गरमी और सरदीमें बराबर और तरहैं

सौदाके वास्ते बनी हुई दवायें

[सिकंजबीन इफ्तीमूनी, नौशदारू, माजून सुकरात, याकूती बू अली: मुफर्रह दिलकुशा, शर्बतगाजबां शर्बतबादरंजबोया आदि, और उचितहै कि हरजगह गर्मी और सरदी का-भी ध्यान रक्खें जो सौदा सड़जाय और तप होय तो ये दवा यें औंटा करदें कासनी के बीज, कसूमके बीज तीनतीन दि-रम् (दिरम् ३॥माशे का होता है) मुलहटी, जरश्क. हरएक दोदो दिरम, गावजबां. ५ दिरम्. कन्द या सिकंज-बीनके साथ और इस से पहिले चाहिये कि मुंजिज देकर जुल्लाव दे लिया हो तौ जल्दी गुण करैगा वादीके रोगों में बहुत दिनों तक दवा देनी चाहिये इस लिये कि वादी दवा को देरमेंगुण करने देतीहै सड़ेहुये सौदाकी दवाईयां और उपाय तप में लिखेंगे ॥

सूंघने मलने आदि की औषधि ।

शमूम—उस खुश्क या तर दवा को कहतेहै जो सूंघी जाय

लखलखा—उसको कहते हैं कि पतली खुश्बूदार दवायें सी सी या किसी बरतन में डालकर सूंघे ॥

सऊत—उस दवा को कहते हैं जो नाक में डाली जाय

नफूक—वह खुश्क दवा है जो नाक में डाली जावे।

वजूर—अर्थात् तर दवा को गले में चुआना।

सनून—अर्थात् मंजन।

कतूर—अर्थात् किसी दवा को बदन के किसी सुराख में टपकावें॥

नतूल—अर्थात् धारना.

सकूब—अर्थात् बहती हुई दवा को दूर से रहरह कर बदन पर डालना ॥

इकबाब—अर्थात् भपारा लेना।

कुमाद—अर्थात् कोई दवा गरम करके बदन को सेकदे चाहे दवा खुश्क हो या तर ॥

बुखूर—अर्थात् दवाओं को जलाकर धूनी उसकी पहुंचाना

आबजन—अर्थात् दवाओं को औटाकर बीमार को उसमें बिठाना॥

पाशोयां—अर्थात् गरमपानीमें या औटी हुई दवामें बीमार के पांव रक्खें-भूसी गुलखैरू, बनफंशा के फूल, बाबूने फूल. बेदके पत्ते, और बेरी के पत्ते औटावे यह उपाय सिर के दर्द और बुखार के लिये बहुत अच्छाहै. पाशोयेके समय बीमार को तकिया लगादे. और सिर पीछे झुका रहे, और मुख के आगे परदा डाल दे कि भाप सिर को न पहुंचे इससे खफकान (पागलपन) हो जाताहै।

तमरीख—अर्थात् तर दवा को बदन पर मलना ॥

तदहीन—अर्थात बदन पर कोई तेल मलना ॥

बरूद—अर्थात् ठंडी दवायें मिलाकर आंख में लगाना॥

जरूर—अर्थात् खुश्क दवायें पीस कर छिडकना ॥

जिमाद—अर्थात् गाढ़ी और तर दवाको बदन पर लगावे ॥
तिला—अर्थात् तर और पतली दवा को बदन पर लगावें ॥
कुहल—अर्थात् अञ्जन ॥
हुकना—अर्थात् किसी पतली दवाको गुदा या मूत्र की राहसे भीतर पहुंचावे ॥
शाफा—अर्थात दवाकी वत्ती बनाकर वदनके किसीछेदमेंरक्खे
फलीता—अर्थात कपडे में दवालगाकर और वत्तीबनाकर बदनके किसी सूराख में रक्खै ॥
हमूल—अर्थात् कपडा दवा में भिगोकर किसी जगह रक्खै ॥
फरजजा—अर्थात् कपडेमें दवालगाकर गद्दीकीतरह औरतके मूत्र करने की जगह रक्खे ॥
शमूम—गरम बीमारियोंको फायदा करताहै. सफेद चन्दनघिसकरसिरका और धनियेकेपत्तों कारसऔरगुलाब मिलाकर सूंघे और जो लखलखा बनालेंतो बहुत अच्छाहै और जो नींद न आती हो तो सिरका न मिलावें और जो गरमी बहुत होयतो कपूर भी मिलादें और खीरेको काटकर औरठंडे मेवेओर फूलोंकासूंघना फायदा करता है और जिसको हरे धनिये की सुगंधि अच्छी न लगै तौ तरबूज का रस या भुने हुए घीए का रस मिलादैं ॥
शमूम—ठंडी बीमारियोंको फायदा करताहै मुश्क, अंबर, दालचीनी, जुन्द बेदस्तर, लौंग, केसर, कलौंजी थोडीरकेवैं ॥
सऊत—सिरकीगर्म और खुश्क बीमारीयोंको फायदा करताहै काहूका रस, नीलोफर का तेल, एक २ हिस्सा, लडकीकी माकादूध दो हिस्से-बादाम का तेल या कद्दू का तेल मिलाकर नाकमें डाले और जो नींद कम आतीहोतो खशखशका तेल भी उसमें मिलाले
सऊत्त—सिरके ठंडे और तर रोगों को फायदा करता है [छ]

आ. मुरैमकी. कुंदर, माजू. कुंदवे दस्तर, केसर. दोनामरवा के पानी में पीसले ॥

नफ़ूख़—मूर्च्छा वाले को होशमें लावें और सिरके सुद्दों को खोले नकछिकनी. कुटकी कूट छानकर थोडी२ नाकमें फूंके

दनूर—लडकोंके पसली चलनेके रोगों को फायदा करताहै सातर. कुंद बेदस्तर. लौंग किरमानी, सबको बराबर लेकर दूध में घोलकर लडके के मुखमें टपकावें ॥

वजूर—मिरगी वाले को होश में लावै हींग कुन्द बेदस्तर सिकंजवीन. सदामें घोलकर मुख में टपकावै ॥

मंजन—दांतों को दृढ करताहै सुरंजान. लोंग. मोथा माई. पीली हारड का वकल. सफेद चंदन. गुलाव के फूल सबको बराबर लेकर मंजन बनावे जो गरमी हो तो लौंग न डाले ॥

कतूर—कानके दर्द को जो गर्मी से हो गुण करता है रोगन गुल ६दिरम रोगन बादाम ३दिरम अंगूरका सिरका१०दिरम मिलाकर मंदी आगपर पकावें जब सिरका जलजाय और तेल रहजाय तो गुनगुना कानमें टपकावै और जो दर्द बहुतहो तो थोडी अफीम भी मिलावें ।

कतुर—सोजाकको फायदा करताहै कासगरी.सफेदा, कुन्दर, डंजरुत.बबूलका गोंद. निशास्ता, दम्मुल अखवैन बराबर लेकर कूट छानकर लडकी की माके दूधमें घोल मूत्रके छिद्रमें टपकावै ॥

नतूल—जो नींद लावै और गर्म सरसामको फायदा देतीहै बन-फशेके फूल, काहूके बीज प्रत्येक पांच दिरम् पोस्तदाने समेत, गुलाव के फूल, नीलो फरके फूल हरे घीयाके छिलके बाबूने के फूल. हरएक२ दिरम. जौछिले हुए ५० दिरम इन सब को ५ सेर पानी में पकाकर तरडादे।

नतूल—जो सिरकी ठंडी बीमारियों को फायदा देतीहै यह है.

इकलीलुलमुल्क, नम्माम, मरजन्जोशाविरन्जास्फ, सातर, वरकुलगार सब बराबर लेकर पानी में औटाकर तरेडादे और चद्दर उढ़ाकर बफारादे ॥

वि-द, सिरकी गर्म बीमारियोंमें तरेडा न दे जब तक कि जुल्लाब न दिया हो ॥

नतूल—वातनाशक बाबूने के फूल, इकलीलुलमलक, करफसके बीज और पत्ते राजीयाना, किरमानी जीरा, मरजन जोश, सोया, सातर, बराबर लेकर पानी में औटावै और तरेडादे ॥

कमाद—फसी हुई रीहको पचावै—बाजरा और नमक पोटली में बांधकर मंदी आग पर गरम करके सेके रेह या गेंहूं की भूसी या गर्म ईंट से कपड़े में लपेटके सेकनाभी लाभकारक है ॥

कमाद—जो देह का नरम करता है और दर्द को आराम देता है बनफशे के फूल, बाबूने के फूल, सोये के बीज, पानी में औटा के इस्पंज अर्थात् मराहुआ बादल उसमें भिगोकर सेकै।

बखूर—अर्थात् धूनी जो मस्तक और स्मरणशक्ति वर्द्धक है यह खफकान मूर्च्छा और सुस्तीको दूर करता है ऊदगरकी, मीठा कूट, सफेद चंदन एक २ दिरम, कपूर, मुश्क, आधे २ दिरम सबको कूट छानकर गुलाब में सानकर गोलियां बनाकर सुखा रक्खे और आगपर जलाकर धूनी दे ॥

धूनी- यह पसीना लाती है और पित्त कफ के ज्वर को दूर करती है पहिले मुंजिश देना चाहिये, सोंफ की जड़की छाल, सोंफ अंगीठी में जलावै और चद्दर ओढकर धूनी ले इस से बहुत पसीना आवेगा ॥

आबजन—देह की खुश्की और तपेदिक को अच्छा करता है घीया ककड़ी, कुलफा, काहू, तरबूज, नीलो फरके फूल, बनफशे के फूल, छिले हुये जौ, इन सबको औटाकर ऐसे बर्तन में भरे जिसमें

रोगी कंठ तक बैठ जाय और एक घडीभर उसमें बैठालकर निकाललेवै और रोगन बनफशा तथा रोगन कद्दू मलै और पाशोया जो ऊपर लिखागया है करै और हाथों को भी धोवै पिंडलियोंको बांधना और तलुओं और हथेलियोंको मलनाभी बहुत लाभकारक है जब पिंडलियां बांधे तो रानसे अर्थात् घुटनोंसे बांधने का प्रारंभ करै और जब खोलै तो टखनों की ओरसे खोलै इससे जो मवाद सिरसे उतरा होगा वह फिर सिरको न चढेगा।

दूसरा अध्याय

फसद का वर्णन

जानना चाहिये कि फस्द से सब प्रकारके मवाद निकलते हैं अर्थात् रगों में रुधिर भरा होताहै उसमें पित्तवात कफभी मिला होता है इस लिये फस्द करने से जो रगों में होगा वही निकलेगा और प्रकारके जुल्लावों में यह बातें नहीं होती है फस्द को कई बातोंके निमित्त अच्छा लिखा है एक बात तो ऊपर लिखी गई है और दूसरी यह कि फस्द में मवाद का निकालना अपने वस में है और जुल्लाब पीने के पीछे वह मवाद कि जिसको निकालना चाहते हैं न निकले तो दस्तों के बंद करने में हानि होगी तीसरे यह कि फस्द में मुन्जिश पीने की आवश्यकता नहीं है।

जानना चाहिये कि बारह बरस की अवस्था से पहिले फस्द खोलना न चाहिये और फिर जब तक चाहें तब तक फस्द खोलें भरी हुई सींगी साठ बरस की अवस्था के पीछे लगानी न चाहिये, कभी ऐसा होता है कि फस्द खोल के रुधिर कम लिया गया और फस्द बंद करदी तो तप हो जाती है ऐसे समय में फिर जल्दी से फस्द खोलना उचित है॥

(जब किसी ने जहर खाया हो या किसी जहरवाले जानवर ने काटा हो तो फस्द नहीं खोलना चाहिये ॥)

जरीरा एक बिच्छू है जो धरती पर दुम घसीटता हुआ चलता है उस के डंक मारने से रोम २ से रुधिर बहने लगता है उस के काटने में फस्द खोलना उचित है।

ताऊन एक जहरीली सूजन है जो कि वबा के समय में होती है उसमें जलन बहुत होती है रंग उसका लाल पीलोंहियां हरयाली या कालक लिये हुये होता है उसमें भी फस्द न खोलना चाहिये औ जो रुधिर अधिक हो और जहर ने दिल और जिगर पर असर किया हो तो फस्द खोलना उचित है जिसको फस्द खोलने से मूर्च्छा आजाती हो—उसको फस्द से पहिले नीबू का शर्बत या खट्टे अनार का शर्बत गुलाब में घोलकर पिलादेना उचित है और फस्द के पीछे जब थोड़ासा खून निकल जाय तो अंगूठे से दबा दे इसी प्रकार दो तीन बार ठहर २ के रुधिर निकाले तो मूर्च्छा न आवेगी और मूर्च्छा दूर करने का अच्छा उपाय यह है कि वमन अर्थात् उलटीकरवावै दवा उलमिस्को को पानी में घोलकर मुखमें टपकावै जिस दिन फस्द खोलें उस दिन भारी भोजन न दे पान खिलाना हरीरा पिलाना और ठंडाई पिलाना फस्द में अच्छा नहीं है जोगरमी की अधिकता हो तो ठंडाई पिलाना उचित है इस में वह पित्त जो कि रुधिर के निकलने से जोश में आया होगा वह ठहर जायगा और जो सरदी हो तो गरम दवा देनी उचित है।

अब वे रगें जिन की फस्द खोली जाती हैं लिखी जाती हैं

(१) कीफाल अथवा सरारू यह रग हाथ के जोड़ पर पहौंचे के ऊपर अंगूठे के सामने है इसकी फस्द सिर और मुख के रोगों को लाभ करती है ॥१॥

(२) अकहल—अथवा हफ्त अंदाम यह रग तर्जनी अंगुलीकी

सीधपर कीफाल के नीचेहै फस्द इसकी सब देहके रोगोंको लाभ करती है ॥ २ ॥

(३) वासलीक--यह रग बीचकी उंगलीके सामने अकहलकी तरह उन रोगोंको लाभ देतीहै जो देहमें गरदनसे नीचे उपस्थित हैं इस रगके नीचे एक रग औरहै जिसका हलना तथा फुदकना मालूम होताहै ऐसा नहो कि इस रगमें नश्तर गहरालगजाय।

(४) हवलुज्जिरा--यह रग किसीके हाथमें वासलीकसे और किसीके हाथमें अकहलसे मिली होतीहैअंगूठेकेसामने कलाईके ऊपर फस्द खोलना उचितहै इसकी और कीफालकी फस्दका लाभ बराबरहै और कभी२ वासलीकके बराबरभी होजाताहै

(५) इवती--छुंगलिया अर्थात् कनिष्ठिका उंगलीकी सीध पर कोहनीके बराबर है भीतरकी बीमारियोंको और नीचेके देहके रोगोंको लाभ देती है ॥ ५ ॥

(६) असैलम--इवतीसे मिली हुई है इसकी फस्द बाईमें खोलते है और हाथको गरम २ पानीमें रखते हैं यह फस्द दाहिने हाथसे जिगरके रोगोंको और बायें हाथसे तिल्लीके रोगोंको फायदा देता है रुधिर और फेंफड़ेके रोगोंको दोनों ओरसे लाभ देती है इस रगसे दिल और जिगर निकलता है इसवास्ते थोड़ासाही रुधिर लेना चाहिये ॥ ६ ॥

(७)--साफन इस रगकी फस्द टकनेके ऊपर पांवके अंगूठेके सामने खोलतेहैं जोस्त्री रजस्वला न होती हो उसको खोलनेके लिये और घात और खुजलीके लिये लाभ देती है और मवादको सिरसे निकालती है ॥ ७ ॥

(८) माबिज--वह रग है जिसकी फस्द घुटनेके नीचे खोली जाती है यह साफनसे अधिक लाभ देती है पीठ गुदा और पेशावकी जगह के रोगोंको और भीतरके दर्दको लाभ देतीहै

(९) इरकुन्निसा--यह रग गांठदार पिंडलीपरहै पांवके कसनेसे दिखाई देती है और जो यहां न मिलै तो पांवकी छिंगुलियां और चौथी उंगलीके बीचमें खोलें इसी रगके दर्दके लिये इसकी फस्द लाभ देती है ॥

(१०) चाररग--येचार रगें हैं जो दो ऊपरके होठमें और दो नीचेके होठमें हैं फस्द इनकी गोल नश्तरसे होटके भीतर खोलीजातीहै यह मुख और मसूडोंके रोगोंको लाभ देती है। जब नश्तर शिरियानको लगजावै तौ उसकी पहिचानयहहैकि रुधिर साफ और उछलकर निकले और दिल शीघ्र सुस्त होताजाय जब ऐसा होतो जल्दीसे रगपर अंगुली रखदे और १ चिप्पी लगाकर और गद्दी रखकर बांधदे औरहाथ एक ऊंचे तकियेपर रखदें और हिलने न दें दस दिनतक बंधारखें ग्यारहवें दिन धीरेसे खोलकर फिर बांधें इसीप्रकारसे जबतक घाव न पुरजावेकियाकरै चिप्पीकीदवायें यह हैं दम्मुल अखवैन,इंजरूत फिटकिरी, किल्कितार,अकीकिया, जलनार, एलुआ, कुन्दर, एक २ दिरम और बबूलका गोंद दो दिरम सबको कूट छान कर अण्डेकी सफेदीमें मिलाकर खरगोशके रूयें या मकड़ीके जालेमें सानकर सलाईसे घावमें भर दें और दूसरी ओरके हाथ और पैरोंको बांध रक्खें इससे रुधिर हट जावैगा।

तीसरा अध्याय।

सींगी और जोंकके विषय में।

भारी सींगी और जोंक लड़कोंके फस्दकी जगह लगाते हैं दो वर्षकी अवस्थासे कममें न लगाना चाहिये और चौदहवीं या पन्द्रहवीं तारीख मुसलमानी महीनेकीको सिंगी न लगानी चाहिये परन्तु सोलहवीं या सत्रहवीं तारीख मुसलमानी महीनेकीको सींगीं लगानी चाहियें स्नानकरनेके पीछे सींगी लगानाबुराहैजिस

मनुष्यका रुधिर गाढ़ा हो उसके स्नानसे एक घड़ी पीछे सींगी लगाना चाहिये और जब किसी जगह मवाद बहुत इकट्ठा हो तो पहिले फस्द खोलकर सींगी लगाना चाहिये सींगीके पीछे पछने लगानासरारू फस्दकी तुल्य है कुछ नीचेको लगाना चाहिये और गरदनके मोहरोंपर पछने लगाना अकहलकी फस्द के समान है और दोनों मोढ़ों अर्थात् मुड्ढोंके बीचमें लगाना बासलीकाकाम देती है परन्तु पेटको और खफकानको बुरा है चाहिये किऊपर चढ़ाकर पछने लगावें और पिंडलीपर पछने लगाना साफ न की फस्दका काम देता है और खाली सींगी बुखार अर्थात तप और मवादके निकालनेमें काम आतीहै, जो मनुष्य पछने को न सह सके उसके जोंक लगानी उचित है ॥

चौथा अध्याय

मुंजिसके विषयमें ।

मुंजिससे कच्चा मवाद पकजाता है और मवादके पकनेमे यह प्रयोजनहै कि गाढ़ा मवाद पतला होजाय और जो पतला होतो गाढ़ा होजाय जानना चाहिये कि रुधिरमें मुंजिस न देना चाहिये और जब रुधिरमें और मवाद मिले हों तो मुंजिस फायदा करैगा ॥

वे औषधें जो पित्तको पकातीहैं यह हैं-उन्नाव ७दाने वनफशेके फूल, नीलोफरके फूल, स्यातरा, गुलाबके फूल, हरएक दोदो दिरम कासनीके बीज ३ दिरम पानी या अरकमें चारपहर या आठ पहर भिगोवे और खाली या सिकंजबीन तुरंजबीन या कोई और शर्बत मिलाकर पीवे जुसांदा इनहीं दवाओंको औटानेसे बनजाता है दवा औटानेसे उसमें गरमी आजाती है जिस रोगीको गरमी अधिकहो उसको दवा औटाकर न दे भिगो

कर वा शीरा निकालकर या अकेले ठण्डे बीजदे, जो तोल दवाओं को ऊपर लिखीगई है वे जवान मनुष्यके वास्ते हैं, जो बच्चा हो तो दवाओं को कम करदे, पित्त तीन दिनमें पकता हैं जो उसमें किसी और दूसरे मवाद का मिलाव नहो, नहीं तो पांच या अधिक दिनों में पकैगा ॥

मुंजिस बलगमका, मुनक्का ५ दाने १ सोंफकुटी हुई दो दिरमया सोंफ जगह अनी सून होतो अधिक फायदा करै- मुलहटी छिलीहुई तीन दिरम- मुवक्काई कुचली २ दिरम, हंसराज ५ दिरम, पील इंजीर ५ दाने, गुलाबके फूल ३ दिरम. इनसबको औटावै और ७ दिरम शहदका गुलकंद डाल कर छानके पिलावै और जो २ तोले सिकंजवीन डालै तौ अच्छा होगा — जो रोगी को खांसी होतो सिकंजवीन न नमिलावे खारी बलगममें पित्त और कफदोनों को मिलाकर मुंजिस देवै ॥

और यह बात सबमिले हुवे मवादों में याद रखनी चाहिये' औटाया हुआ चने कापानी कफ और बादी के पकाने को बहुत अच्छा है परंतु तपमें नदेना चाहिये- और जो तप पुरानी होय तौ लाभ करैगा जो कफ गाढा या पतला नहो वह नौदिन में पकैगा और जो गाढा या पतला होतो पांच दिन में या नौसे अधिक दिन में पकैगा।

मुंजिस सौदाका, लिहसौडे २० दाने, उन्नाव १० दाने, गाउजवां, बादरंजाबोया, उस्तखुद्दूस, हंसराज, सोंफ, स्यातरा, दोदो दिरम औटाकर कंद या तुरंज वीन- या गुलकंद मिलाकर दे- ये दवायें अकेली बादी की हैं ॥

जो बादी किसी और मवाद के जलने से पैदाहो -तौ उसी मवाद के पकने वाली दवाईयां थोडी थोडी मिलाकर दे अकेली बादी १५ दिन में या एक दो दिन कमबढ में पकती है-और मतलब पकने से यहां यह है- कि मवाद जुल्लाब के जोर में निकल जाय- इससे जानागया कि मुंजिसका असर मवाद में धीरे २

जानना चाहिये कि जिस मनुष्य की आंतें निर्बल हों और उसे मरोड़ा होसक्ता हो-तौ रोगन बादाम मिलाये बिना अमलतास नदे और ऐसेही गर्भवती स्त्री और बूढ़ों को मीठें दूध पीते बच्चों को रोगन बादम मिलांनकी आवश्यकता नहीं है- उनकी आंतें दूध पीनेसे ऐसी नर्म होजातीहै कि अमलतास उनमें चिपट नहीं-सक्ता-और अच्छे तरुण आदमीको सोलह दिरम अमलतास देते हैं-एक दिरम साढ़तीन मासे का होता है. इससे अधिक हानिकारक है ॥

अब जुल्लाब का वर्णन होता है-जो बड़ी आवश्यकताके समय जुल्लाब देना पड़े तो उसके पहिले मुंजिस नहींदी जाती-जैसे कूलंज के दर्द में रात, बादल मेह और बहुत हवा का विचार नहीं करते-जिस जुल्लाब की दवा औटा कर या भिगो कर दी जाय उसके ऊपर गरम पानी न देना चाहिये इस से उसका असर जाता रहता है और जो जुल्लाब पेट में मरोड़ा करे तौ उस के ऊपर थोड़ा सा गरम पानी पिला देते हैं-और जो दवा जुल्लाब के लिये गोलियां या फंकी हो तो गरम पानी पिलाने से दस्त आने लगते है और जो जुल्लाब में प्यास लगे तो ठण्डा पानी न पीना चाहिये-ताजा पानी थोड़ा सा पीले-परंतु गर्म प्रकृत वाले को ठंडे पानी का डर नहीं है-और कुछ दवाइयां, ऐसी है-कि जिन पर ठंडा पानी पाया जाता है-गर्म पानी के देने से उनका असर जाता रहता है-जसे शरबत वर्द-और दवाऐं जुल्लाब की जिन में-जमाल गोटा या तुरबुद और नमक मिलाहो ॥ जिस मनुष्य को दवा अच्छी न लगती हो उस की दोनों भुजा कस कर बांधदे-और नाक पकड़ कर दवा पिलावै-और कुल्ली करादे दवा पिलानेके पीछे—पोदीना चबाना और सूंघना या पान और इलायची खाना अच्छा है- ॥

जो इसपर भी वमनका हो तौ पहिले वमन कराके जुल्लाव पिलाना चाहिये-और जुल्लाव के पीछे सोना न चाहिये-और गुदा प्रक्षालन के लिये रेशाखतमी डालकर औटाया हुआ गुन गुना पानीले ॥

जो जुल्लाव नहो तो उसी दिन दूसरा जुल्लाव नदे. और शफा करैं आलू बुखारे का रस या इमली गुलकंद और तुरंज बीन मिलाकर जुल्लाव पर पिलावै इसमें अमलतास भी देतेहैं इसी प्रकार मस्तंगी को कूटछान कर-डेढ़ दिरम-बूरा या मिश्री मिलाकर गरम पानी में फाकना बहुत अच्छाहै और जो जुल्लाव से मूर्छा आजायतो जल्दी से वमन करादे जो इससे भी लाभ नहो और कोई हानि न देखैतो बासलीक और अकहल की फस्द खोलै और जो पेट और अंतडियोंमें गरमी लगे तो बीदाने और ईसबगोलका लुआब पिलावै, और जिसमनुष्यकी प्रकृति समान हो उसे तुखम रैहा शरवत गुलाव के साथदे और एक घड़ी पीछे नर्म भोजन करावै जानना चाहिये कि बुरे जुल्लाव और फस्द से बड़ी हानि होती है इसमें बीमारका बल देखकर दूसरा जुल्लाव दे जिससे जो मवाद निकालना हो निकल आवै और जो बीमार निर्बल हो उसे थोड़ा थोड़ा जुल्लाव दो दो तीन तीन दिन पीछे दें-जुल्लाव से जो बहुत दस्त आवें और उनको बन्द करना चाहै-और ज्वर भी न हो चांवल छाछ में मिलाकर दे और जो ज्वर हो तो तुखम रेहां भुना हुआ भुने हुए कुलफ और बार संगके रसके साथ पिलावे और वह उपाय जो दस्तों के विषय में लिखाजायगा करै ॥

पित्त के जुल्लाव की दवा यह है

पीलीहर्ड़, इमली, तुरंजबीन, बनफशे के फूल, इफसन्तीन सफ

भूनिया भुनी हुई (१) इशकपेचा, आलूबुखारा स्यातरे के पत्ते एलुआ, गुलाव के फूल, शीरखिश्त इन में से कुछ दवा वलिष्ट है और कुछ निर्वल चाहे अकली २ दें या मिलाकर और सकमूनिया धे भुने नदे ।

पित्त निकालने वाला जुलाव

पीली हरडका वक्कल ६ दिरम, काले आलू १५ दाने लिहसोडे २० दाने, सनायमक्की स्यातरा तीन २ दिरम उन्नाव ८ दाने कासनी के वीज २ दिरम, कुसूमके वीज डेढ दिरम, शीर खिश्त या तुरंजवीन १ दिरम से १.५ दिरम तक भिगोकर या औटाकर पिलावें और जो दस्त, उससे अच्छे न आवें तो अमलतास भी मिलादे और जब अमलतास मिलाया होतो रोगन वनफशा या रोगन वादाम एक दिरम मिलाना चाहिये और कमती वढती दवा की हकीम की बुद्धि पर है ॥

जुलाव की कोई दवा ऐसी नहीं जो एकही मवादको निकाले जो जुलावजिस मवादको बहुधा निकालता है वह उसी मवाद के नाम से प्रसिद्ध है तपमें एद पखवाडे से पहिले पीली-हरड न देनी चाहिये इससे२ इस हालकविदी होजाताहै और जो आवश्यकता होतो रोगनबादाम में उसे चिकनालें और वीदाने और ईसवगोलके लुआबमें मिलाकर पिलावें तो हानि नकरगा॥

---

(१) सकमूनिया के भूनने की रीति यह है कि सेव या विही का पेट खाली कर के उसमें मस्तंगी के साथ सकमूनिया रक्खें और उसको वन्द करके किनारों पर आटालगादें जिस में दरार वन्द होजाय और मिट्टी के वरतन मे रक्खकर चूल्हे या भाड में रखदे जव भुनजाय निकालकर काम में लावें ॥

२ इसहालकवदी कलेजे के दस्त आन को कहते हैं ॥

कफके जुल्लाब की दवा

बकायन के फलका छिलका, फंतूयून, माहीज हजज गारीकून हब्बुलनील, तुर्बुद हुमैल, कडाविस फायज, कलाजी शुकाई।।

जुल्लाबकफका

अयारिज फैक, तुर्बुद सफेद, हब्बुल नील एक २ दिरम गारीकून-अनीमूनडंड २ दिरम, नमक-और बकायन के छिलके डेढ २ दांग-इन सब दवाओंको कूटे और सोंफ के अर्क में साने यह एक पूरी मात्रा युवा आदमी की है- गारीकूनको कूटना न चाहिये इसमें एक चीज नाखूनसी होती है वह कूटे से जहर हो जाती है इस वास्ते उसे बालोंकी चलनी में छान लेना चाहिये कि महीन महीन उसका निकल आवे ।।

दूसरा जुलाब बलगम का

इस जुलाब को तपमें भी दे सकते हैं और पुरानी खांसी को भी लाभ देता है उन्नाव लिहसोडे बीसदाने सूखाहुआ जूफा नीलोफर और बनफशे के फूल हंसराज राजियाना कुचला हुआ तीन तीन दिरम- मुनक्के १५ दाने इंजीर ७ दाने मुलहटी छिली हुई और कुचली हुई ४ दिरम-तीन रतल पानी में ओटावे जब एक रतल रहजाय तब छान ले और अमलतास तुरंज बीन गुलकंद दस२ दिरम मिलाकर मलै फिर छानकर उसमें एक दिरम रोगन बादाम डालकर पीवै ।।

फंकीबलगमके जुल्लाबकी

तीन दिरम तुर्बुद सफेदको रोगन बादाम में चिकनाकर कूट छान ले-और सोंठ एकदिरमसफेद नमक आधा दिरम पीसकर इसमें मिलाकर ठंडे पानी के साथ फांके और जो नमक की जगह सफेद बूरा सब दवाईयों के बराबर मिलाके तो अच्छा है और मस्तंगी भी मिलालें तो अच्छा होगा ।।

वादीको निकोलनेवाली दवा

काबली हरड कालीहरड सनाय मक्की वालंगू अर्थात वादरंजवोया इफ्तीमून उसतखुद्दूस लाजवरद धुलाहुआ (१) हजर अरमनी आंवला ॥

जुल्लाव बादीका

अवारिज फैकरा पांच दिरम इफती मून दस दिरम लाजवरद धुला हुआ सात दिरम हजर अरमनी नौ दिरम, सरमूनीया भुनी हुई, वकायन का बक्कल, काली खरवक दो दो दिरम सुंबलु ततीव, अनीसून एक एक दिरम सब को कूटछानकर करफस के पानीमें सान कर गोलियां बना रक्खें इसकी मात्रा ढाई दिरम है ।

दूसरा जुल्लाव

वादीकी बीमारियोंको लाभदेताहै कालीहरड दो तोले ११ मासे. बिसफायज, अर्थात् खंबाली १तोले ५॥मासे, इफती मून अर्थात् आकाशबेल २ तोले ७मासे, सनायमक्की २ तोले ४ रत्ती, उसतखुद्दूस अर्थात् रुद्राक्ष २ तोले ४ रत्ती, गुलाबके फूल १तोले २ मासे, गाउजबां १०॥मासे. वालंगू १० ॥मासे, अनीसून अर्थात् वादियान रूमी ७मासे, सौंफ ७ मासे, काली कुटकी २ दाग, सफेद तुर्बुद ३॥ मासे. सोंठ १॥ मासे- इन सबको औटावे और छनी. हुई गारीकून, हजर अरमनी मिलनिफती अर्थात् नमक निफती दोदो दाग कुचल कर पक्ते में मिलादें और छान कर पीये जो अधिक

लाजवरदके धोनेकी यह रीतिहैकि लाजवरद को महीनपीस कर पानी में औटावे और थोडासा जतूनका तेलडाले फिर नितारें इसके पीछे बहुत सा पानी डालकर धीरे २ धोले औ रंगीन पानी दूसरे बरतन मे निकालकर उस बरतन को ढककर थोडीदेर रहनेदें जो लाजवरद नितरकर बैठजावै उसे निकालकर सुखालें इसी प्रकार सब धोलें ॥

पुष्ट करना चाहै तौ वकायन के वक्कल और पलुआ, सकोतरी और बढ़ादे ॥

जिसदवामें आकाशवेलडालनी होतौ दवाओंके औटनेमें उसको पोटली में बांध कर डालै और जल्दी स उतार व छानकर पिलादे

हुकना और शाफा भी मवादके निकालनेके लिये अच्छाहै परंतु हमारे देशोंमें हुकने कीरीति कम है और जो वह वैद्यककी रीति से नहो तौ हानि करताहै इस लिये इसका वर्णन यहां नहीं कीया जाता और शाफाहुकने की जगह किया जाता है उसका वर्णन यह है कि जब जुल्लाव दिया जाय और अपना असर नकरे तौ शाफा करना उचित है और कूलंज में जब तक शाफे से मवादको न निकाल सकै जुलाव न पिलावै और ऐसाही बड़े कब्ज में जब तक आवश्यकता नहो तब तक शाफा नकरे क्यों कि शाफा बहुत करने से ववासीर उत्पन्न होतीहै इस जगह वहुधा शाफे अच्छे अच्छे लिखे जाते हैं ॥

१ शाफा—जो कूलंज की बीमारी को अच्छा करताहै और दस्त लाता है इसे तपमें भी देसक्तेहैं वनफशाके फूल ७ मासे, सनाय ७॥ मासे, हिन्दुस्तानी नमक. अर्थात् खारीनोन ३॥ मासे. अमलतास का लुआव ३५ मासे, लाल शक्कर ३५ मासे लेलर शाफा बनावै इसकी लम्बाई रोगीके ६ अंगुल की होनी चाहिये ॥

२ शाफा—जो जुल्लाव के पीछे दिया जाताहै. जब कि उसकै (१) प्रभावमें देर होजाय, यह गर्म प्रकृति वाले को अच्छा है तुरंजबीन १७॥ मासे. सावन इराकी ७ मासे. खतमी ७ मासे. सांभर नमक ७ मासे, लाल शक्कर १७॥ मासे इन औषधों को कूट छान कर शाफा बनाले ॥

३ शाफा—जो जल्दी प्रभाव करै एक टुकड़ा सावन का छुहारेकी

---

(१) खुलके दस्त न हो उसे कब्ज कहते हैं ॥

गुठली की बराबर लेकर पाखाने की जगहमें रक्खे- और जो गुल रोगन से चिकना करलें तो अच्छा होगा ॥

४शाफा—लड़के और बूढ़ों को लाभ करता है मोम७॥माशे, नमक५ माशे, बूरह अरमनी५माशे, इनदोनों को मोम में मिला-कर शाफा बनावे और गुल रोगन में चिकना करके काम में लावें, ॥

छटाअध्याय

बमन लाने वाली औषधियों के विषयमें

पहिले उन उपायों का वर्णन किया जाता है, जोवमन (अर्थात्उलटी)से पहिले अवश्य हैं जानलो जब वमनका काम पडे तो उससे एक दिन पहिले नर्म नर्म भोजन करै और जो गरमी या और कोई बात नहो तो सुगंध वाला तेल मलें और जिस दिन वमन करै तो पहिले मूंगकी दाल या चांवल पतली करके पीवें और थोडी देर पीछे वमन लाने वाली दवा पीकर वमन करै और जिसके मिजाज में तरी हो उसको पहिले दाल चांवल खिलाना न चाहिये और जिसको कठिनतासे वमन आती हो उसे तीन तीन दिन गर्म जगह में रक्खे और देह पर तेल की मालिश करै और भांतिर के भोजन करावे इसके उपरांत उलटी करै और उलटी करने के समय सीधा बैठे और पेट तथा कमर को दाबले बहुधा मनुष्य खडे होकर वमन करते हैं और ऐसीवमन पेटकी जड़से मवाद को निकाल लाती है और चाहिये कि वमन दोवार थोडी२देर के पीछे कीजाय इस से बिलकुल पेट निर्मल होजायगा और इसके पीछे गरमी में गर्म मिज़ाजवाले को ठंडे पानी से मुंह हाथ धोना चाहिये और गरम पानी में सि-कंजबीन या कांजी मिलाकर कुल्ली करे इससे जो मवाद मुखमें होगा वह दूर होजायगा और जाडों के दिनों में ठंडे मिज़ाज

वमनद्वारा कफ पित्त को निकालने वाली दवा

शहद की शिकंजबीन१०मिसकाल, खारी नमक२मिसकाल मूलीका अर्क४०मिसकाल- मिलाकर गुन गुना करके पिलावे॥

वमनद्वारा पित्त कफ और वादीको निकालने वाली दवा

मुलहटी५मिसकाल- सोये के बीज५मिसकाल- खुब्बाजी के बीज औरजौ, हर एक३मिसकाल, सबको एक कटोरे पानीमें औटावैं जब पानी आधा रहजाय तब उसमें आकाशबेल का शरबत१० मिसकाल डाल के और अंगूर का सिरका मिलाके और गुन गुना करके पिलावे और वमन करादे।

जब तक उलटी कराने की अत्यन्त चाहना नहो, तबतक काली कुटकी न देना चाहिये, क्योंकि वह विषहै, और उससे खुन्नाक उत्पन्न होताहै, और इसी प्रकार जिसने वमन न की हो उसे विना आवश्यकता वमन कराना न चाहिये॥

सातवां अध्याय

मूत्रद्वारा मवाद निकालने वाली दवा

इस प्रकार की औषधें मवाद को रगों के अन्दर से निकाल ने में बहुत काम आती हैं परन्तु जब मवाद बहुत हो तो जब तक फस्द या जुल्लाब न देलें इन औषधों को काम में न लावें हकीमोंने कहा है कि जो मवाद जिगर के पीछे होतो उसका निकालना इन औषधों से अच्छाहै पेशाब के जारी होने से पसीना, और दस्त रुक जाताहै इसी प्रकार दस्तोंके आने से पेशाब कम आता है क्योंकि मवाद दूसरी ओर से निकल जाता है. इन औषधों से पतला मवाद निकलता है, इसालिये चाहियेकि जब तक तरीका रोग नहो, इन औषधों को नदे, इसकिय, इस्तिसका, (अर्थात् जलंधर) फालिज, जोडोंके दर्दमें

क गोली निगलकर ११ तोले ८ माशे सौंफ का अर्क पीवे जो बन्द होनेका कारण रुधिर की कमी या मिजाज की गर्मी न होगी तो यह औषध लाभ करैगी नहीं तौ हानि ।

जोशांदः जो हैजको जारीकरै और पुरुषका वीर्य्यक ठण्डसे रुका हो उसे निकालदे ।

अफसनतीन (अर्थात् सतारू) तुरमनय तुर्की, तुरमस, सुदाव, सौंफ, करफसके बीज, हरएक ७ माशे इंजीर ५ गुलकन्द १० मिसकाल, सबको औटाकर और गुलकन्द मिला कर बराबर तीन दिन पिलावै, और फिर तीन दिन पीछे फिर पिलावे, जिससे मवाद अच्छी तरह से निकल जावे और हैज जारी करने वाली औषधों का रजस्वला होने के दिनोंमें पिलावे इससे बडा लाभ होगा ॥

आठवां अध्याय

उन औषधोंके वर्णनमें जो दिल और सिर और जिगर और मेदेको पुष्ट करती हैं ।

सिरकी पुष्ट दाता ठण्डी औषधे यह हैं मोती, आमला, बिही, सेब और अमरूदके हरेफूल. गुलाबके फूल, गुलाब नारंगी और गर्म यह हैं, बलादर, फन्दक, बालंगू, सोंठ, नागर मोथा वालछड, मुश्क, ऊद, अम्बर, गालिया, लौंग, कुन्दुर, अबहर का तेल, भेडी का दूध ॥

दिलकी पुष्ट दाता और प्रसन्नता करने वाली ठण्डी दवाइयां यह हैं, नाशपाती, मीठाअनार, आमला, इमली, सेब चन्दन, बंसलोचन, गिलेमखतूम, रयवास, वसद, कहरुबा, कपूर, गाउ जुबां, धनियां, गुलाबके फूल, मोती, नीलोफर, नारंगी, हरड. याकूत चांदी के वरक ॥

गर्म यह हैं, सोने के वरक, इतरज छिलके, उस्तखुदद्दूस, अबरेशम सफेद बहमन लाल वहमन बिसफायज बालं जंगली

तुलसी, निरविसी, दालचीनी, नरकचूर, दरूनज आफरान सुम्बुल नागर मोथा, तज-शकाकुल ऊदगरकी, अम्बर फिरंजन मुश्क. ऊदसलीब. इलायची पोदीना, लाजवर्द.

जिगर की पुष्टि दाता ठण्डी औषधें यह है कासनी, अरिश्क, अनार ॥

गर्म यह हैं, छडीला, अजफारुत्तीब जायफल, हम्मामा, हब्ब बिलसान, दालचीनी, गाफिस, लौंग, तज, फसशू रूमी मस्तंगी ॥

जानना चाहिये कि जिगरकी कम जोरी बहुधा सरदी और तरी से होती है. इसलिये जिगर की पुष्टि दाता औषधें यह हैं ॥ मेदेकी पुष्टिकारक ठण्डी औषधें यह है आमला अनारदाना समाक, बहेडा, हर्ड, और हर्डका मुरब्बा, बिही, वंसलोचन गुलाब के फूल ॥

गर्म यह हैं सरकंडे की जड-नारगी के छिलके, बालंगू, जायफल दालचीनी, जरम्बाद नागरमोथा, तज साजिज हिन्दी लौंग, इलायची, कुन्दुर रूमी मस्तंगी, मशकत राम शीह पोदीना उदगरकी ॥

जानना चाहिये कि जो वस्तु मेदे की पुष्टि कारक हैं वह अंतडियों कोभी पुष्ट करती हैं, और जो औषध दस्त लाती है वह मेदे को कमजोर करती है परंतु हरड दस्त भी लाती हैं और मेदे की पुष्टिकारक भी हैं और सनाय को भी बहुत से लोग मेदे की पुष्टिकारक कहते हैं ॥
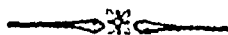
तीसरा खण्ड
सिरके रोगोंका वर्णन
पहिला पाठ

जो दर्द रुधिर की अधिकता से होतो. फस्द सरारू करै और सिरके पीछे सींगी लगावे और थोडा ही रुधिर निकाले और नीबू का शरवत पिलावे और रुधिर लेने के पीछे जो कब्ज होतो. तुख्म अहाभिज. या मुलय्यन मुवारिक और जो वीज रुधिर के लिये लाभदायक हैं. काम में लावें ॥

और पित्त की पकाने वाली और ठीक करने वाली औषधें पिलावे इसके पीछे जुल्लाव उसीका दे, और सफेद चंदन को हरे धनियां के साथ पीस कर सिर में लगावे ॥

और जो कफ अधिकता से होतो कफ को ठीक करें और सौंफ को औटाके शहद डाल कर पिलावे और कुस्तका तेल सिर पर मले और मुन्जस और जुल्लाव कफ काढ़े और वेद-इंजीर की जड और सोंठ को पानी में घिसकर लगाना अच्छा है

और जो वादीकी अधिकता से होतो वादी को ठीक करे और उसकी मुन्जस और जुल्लावदे बाबूने और बादाम का तेलसिर में मलें ॥

जोदर्द इन मवादों से हो उसमें पाशोया बडा लाभदायक होता है ॥

ऐसी पीडा में सिर को दवाना नहीं चाहिये क्योंकि इससे पहिले तौ चैन पडता है परंतु अंतमें दुखःदायक है इसकी जगह पांव को दवावें और तलुओं को मले परंतु जो सिरको केवल हाथ से पकडे तो डर नहीं और जुल्लाब के पीछे सिर दबाना भी गुणदायक है ॥

जो पीडा अकेली गरमी या अकेली सरदीसे पै

हाव की आवश्यकता नहीं जो गरमी से हो तो ठंढाई पिलावे और सरदी से होतो गर्म औषधि दे ॥

और जो सिर की पीड़ा किसी और रोग के कारण से हो तो पहिले उस रोगका उपाय करै ॥

(आधासीसी की पीड़ा) आधे सिर में होती है और दर में आती है उसका उपाय वैसही करना चाहिये जैसे कि ऊपर लिखा गया है।

और इस औषधका सिर में लगाना गुणदायक है, बम्बूल का गोंद३॥माशे. अफीम१॥माशे, केशर७रत्ती पीसकर गुलाब में मिलाकर कागज पर लगावे. और कनपटी पर चिपटा दे और इस रोग का जल्दी उपाय करे नहीं तौ दृढ होजानेसे कठिनता से दूर होता है।

बहुत से लोग सिर की पीड़ामें अफीम आदिका लेप करतेहैं इनसे पहिले तो तुरंत चैन पड़ताहै, परंतु हकीमों ने इनका लगाना नहीं बतलाया है, और जो अत्यन्त आवश्यकता होतौ अफीमके साथ केसर या बाबूना मिलादे ॥

सिर की पीड़ामें जो गुलाब सिरपर डाले तौ इतना डाले कि सिर भीगा रहै नहीं तो हानि करैगा ॥

जो सिर की पीड़ा वाले की नकसीर फूटैतौ उसे बन्द न करें क्योंकि वह उसके लिये अच्छाहै परंतु जब रुधिर अधिक निकले और उससे कमजोरी बहुत पैदा हो तब बन्द करना चाहिये सिरके रोगों में नाक या कान से पीप का निकलना बहुत अच्छा है ॥

लो.

दूसरा पाठ २

सरसाम के विषयमें

" या भेजी की झिल्ली में सूजन होजाने को सर

साम कहते हैं ॥ जो वह रुधिर की अधिकता से होवो उस का चिन्ह यह है कि रोगी के मुखपर हंसी सी मालूम होगी॥

और जो पित्त की विशेषता से होतो उसका चिन्ह यहहै कि रोगी को झुंझलाहट और चिडचिडाहट होगी ॥

और जो कफ से होतो उसका चिन्ह यह है कि रोगी सुस्त और घबराया हुआ होगा ॥

और जो बादी से होतो रोगी चौकन्ना मालूम होगा बादी से बहुत कम होता है. और जो जो चिन्ह हर मवाद के लिये हम पहिले लिख आये हैं वह हर प्रकार के सरसाम में पाये जायगे ॥

सरसाम जो रुधिर से हो उसे करानीतुम कहते हैं और पित्त वाले को करानीतुस खालिस और बलगमी को लीसरगुस कहते हैं ॥

जानना चाहिये कि जो सरसाम रुधिर और पित्त से हो उस में तप अधिकता से होती है और कफ और बादी में हिचकी और बेहोश रहना और बकना सब सरसामों में होता है उपाय उसका वैसेही करै जैसे सिर की पीडा में वर्णन कर चुके हैं, और इस रोगमें तप का उपाय अत्यन्त आवश्यक है और खूनी और पित्त के सरसाम में पिंडलियों पर सींगी और पछने लगाना अच्छा है. और दूसरों में खाली सींगी लगाना गुणदायक है. और लखलखा सुंघाना भी तुरन्त लाभदायक है. सिरसे तप के उतारने को और सब सिरके रोगों में पाशोया और पांव बांधना और मलना अति लाभदायक है. खूनी सरसाम में फस्द तुरन्त करनी चाहिये जो रात का समय होतो दिन का विचार न करै. उसी समय फस्द करादें पित्त के सरसाम में भी फस्द अच्छी है. क्योंकि पित्त रुधिर

में मिले रहते हैं. बहुधा मनुष्यों ने कफ और वादी के सरसाम में भी फस्द को अच्छा लिखा है परन्तु इनदोनों में रुधिरकम निकालना चाहिये ॥

बकना और बहकना सरसाम में अवश्य है परन्तु कभी २ विना सरसाम ऐसा होता है. जैसे कि वारी के तप में वारीके समय और किसी पीडा या रोग की अधिकता में इसको सर साम गैरहकीकी कहते है. जब वह रोग जाता रहता है तो बक ना और बहकना भी जाता रहता है इस लिये पहिले उसरोग का उपाय करना चाहिये ॥

तीसरा पाठ

जुमूद के विषय में

यह वह रोग है कि मनुष्य बैठाहोतौ बैठा रहजाता है और जो लेटा हुआ होतौ लेटा. और सोता होतौ सोता और खडा होतौ खडा रहजाता है कारण इसका यह है कि वादी सिर के पीछे गिरती है और वहीं बन्द होके रहजाती है. उपाय इसका यह है कि वेहोशी के समय कोई गरम शाफा या वादी के नि कालने वाला हुकना करें. और शब्बो के फूलों का तेल और बादाम के तेल में सोंठ. या जुन्दवेदस्तर. मिलाकर सिरपरमलें और जब होश होजाय तौ मुञ्जिश और सौदा का जुल्लाव दें. और गर्म और तर खिलावें. और सिरके पीछे मोम रोगन लगावें. जो रुधिर की अधिकतासे होतौ फस्द भी करें. और पिंडलियों पर सींगियां लगावें. फस्दका नस्तर गहरा दें. परंतु रुधिर कम निकालें ॥

चौथा पाठ

सकते के विषय मे

यह एक रोग है कि मनुष्य का हिलना झुलना बन्द होजा

ता है. और मुर्देकी तरह चित्त पडा रहता है, जो श्वास म आता होतौ इसका कारण यह है कि सिर के सब परदे बन्दहो गये होंगे जो यह रुधिर की अधिकता से होतौ फस्द सराल्करें नहीं तौ कफ के निकालने वाले हुकने और शाफे दें और सिरके वाल काट कर सिरको सेकें, और नफूख और सऊत काम में लावें और जो किसी प्रकार उलटी होसके तौ बहुत अच्छा है, और हाथ पांवका मलना और जोर से बांधना भी लाभदायक है, सिरपै पछने लगाकर उसपर पारा मलना या बछनाग, पीसकर मलना अच्छा है और जब होश आजाय तौ कफकी मुन्जिश और जुल्लाव दें.

इस रोग में जब दम आता जाता मालूम नहो तौ चंगाहोना असंभव है परन्तु जिममें दम आता जाता हो उसका अच्छा होना भी अति कठिन है इस रोग में और मृत्यु में यह अन्तर है कि इस रोग वाले की पुतली में परछाईं दिखाई देती है, और मुर्दे की आंख में नहीं दिखाई देती. चाहिये कि रोगी का तीन दिन रात दाह कर्म न करें किन्तु उसके अच्छे होने की आशा नहीं है, परन्तु परमेश्वर की कृपा से अच्छा हो जाय तौ क्या आश्चर्य है और जो देह नीली होजाय तौ उसका उपाय न करें ॥

पांचवां पाठ

सबात के विषय में

(स्वभाव से अधिक अचेत होके सोना रोग है और इसीको सबात कहते हैं, कारण इसका यह है कि सिर में तरी अधिक होजाती है,) चाहे अकेली तरी हो या उसमें वलगम और रुधिर का मवाद भी मिला हो इस रोग में जैसा कारण हो वैसाही जुल्लाव दें, और सिरका सुंघावें, खुश्की लाने वाली वस्तु और

इतरीफल खिलाना बहुत लाभ दायक है, और इसका कारण मेदाका बुखार होतो चिन्ह इसका यह है, कि पहिले बदहज्मी हुई होगी, और भूख के समय कमती माळूम होती होगी. उपाय इसका यह है कि पेट को साफ करै, और इतरीफल कश्नी जी खिलावे और सूखा धनियां कूट छानकर खाने के पीछे फकावे ।

छटा पाठ

सहर के विषय में

सहर उस रोगका नाम है जिस्में स्वभाव से विशेष मनुष्य जागे और नींद उसे कम आवे कारण इसका सिर में खुश्की, होजाना है, चाहे वह अकेली हो या उस्में वादी और पित्त और खारी कफ मिला हो जो यह रोग अकेली खुश्की से होतो सिरको तर रक्खे और खाने पीने और सूंघने में तर वस्तुओं को काम में लावे और जो यह मवाद से होतो उसी का जुल्लाब दे और सिरका कभी न सुंघावे क्योंकि यह नींद को बहुत खोताहै, निद्रा लाने वाली औषधें यहहैं, हरा सोया सिरहाने रखना और कफवालेसहरमें सिरपरभी लपटना और नाजबू गुलाबमें भिगोकर सूंघना और लप लखा हरदमपास रखना अफीम और बनफशे के तेलको मिलाकर सिरपर मलना

जब जागने का कारण तप होतो पहिले उसका उपाय करे और सिरपर तेलमलें और पांओंया करके हाथ पांव मलें ॥

सातवां पाठ

सबात सुहरी और सहर सबाती के विषय में

यह वह रोगहै जो सहर और सबात के कारणों के इकट्ठे जाने से होता है और बहुत से हकीम यह कहते हैं कि यह पित्त और कफ से दिमाग में सूजन होजानेसे होजाता है चिन्ह इस

रोमका यहहै, कि कभी अचेत और घोर निद्रा बहुत काल तक रहतीहै और कभी रोगी बहुत देर तक जागा करता है और जो मनुष्य इसे भेजे की सूजन बताते हैं उनकी दलील यह है कि इस रोग में बकना और आंखें पथर जाना अवश्य है जो निद्रा अधिक होतो इसे सबात सहरी कहेंगे और जो जागना विशेषहोतो सहर सुबाती कहेंगे और जागना और सोना बराबर बहुत कम देखा गया है जो ऐसा होतो बहने वाला जिस शब्द को चाहे पहिले करे सच्चतो यहहै कि इस रोग में भेजे की सूजन जरूर नहीं परंतु सूजन में यह रोग होसक्ता है ऊपर के दो पाठोंमें जो उपाय लिखे गये हैं उन दोनों को मिलाकर सुंघावें और जिस समय पित्तों की अधिकता से होतो ठंडी वस्तु सुंघावें ऐसेही और उपाय जानो ॥

और जब यह रोग भेजे की सूजनसे हो तो वह उपाय करें जो कफ और पित्तके सरसाम में ऊपर लिखा गया है ॥

आठवांपाठ

काबूज के वर्णनमें

यह वह रोग है कि मनुष्य सोते में बुरे बुरे स्वप्न देखताहै जैसे रकि कोई भारी चीज उसपर गिर पड़ी वा किसी ने उसे दबोचा और वह घबरा कर बर्राने लगता है, जो यह रुधिर की अधिकता से होतो फस्द सरारू करे, और पिंडलियोंपर पछने लगावें, और भोजन कमदें, और जो बलगम या वादीकी अधिकतासे होतो उन्हीका जुल्लाबदे, और इसरोग का उपाय तुरंत करे नहीं तो मृगी होजावगी ॥

तो जी मचलायगा. और पेट में कोई रोग होगा, जैसा उचित हो वैसाही उपाय करे, और जो कमजोरी के कारण सिर घूमें तो भोजन में हलकी और दिल खुश्क करने वाली वस्तु खिलावे, और मोतियों को पीसकर, नीबू या सन्दल, या अनार के शरबत में मिलाके चटावे और जो सिरमें सरदी पहुंचने से सिर घूमे तो सक और गरम लेप लगावें और गरम मसाला पड़ा हुआ भोजन खिलावे ॥

तेरहवाँ पाठ

निसयॉन अर्थात भूल जाने के रोग के वर्णन मे

बहुधा इस रोग में बलगम या वादी अधिक होजाती है, या मिजाजमें अकेली गरमी बहुत हो जाती है, कफ और वादी के मवाद मे मुञ्जिस देकर, हब्ब कोकाया, आदि खिलाकर सिर को साफ करे, और माजूनफिलासफा और बज और सोंठ का मुरब्बा, कुन्दर, और शकर मिलाकर खिलावें और ठण्डे पानी से बचते रहें और सौदावी में तेल सिर परमलें और जो यह रोग अकेली गरमी से होतो ठण्डी और तर वस्तु काम में लावें ॥

चौदहवां पाठ

फालिज के विषय में

यह वह रोग है कि आधा बदन लम्बाई में हिलता झुलता नहीं है, बहुधा इसका कारण कफ की अधिकता है, और कभी रुधिर से भी हो जाता है. कफ में चार दिन तक कुछ औषध न देवे, और खाना पीना बिलकुल बन्द करदे. और जो भूख न रुक सके तो. जीरा. और दालचीनी औटाके दे. और पानी की जगह, माउल असल, पिलावे फिर चौथे दिन कफ

को मुञ्जिस पिलावे, और ९ दिन या चौदह दिन के पीछे जबकि मवाद पकजाय तो जुल्लाव दें, और जुल्लाव के पीछे कूट का तेल मलें और, जवारिशबिकादर. और तिरयाक करीब, और मसरोदी तूस, खिलाना वहुत लाभदायक है, और जुल्लाव के पीछे, मुश्क, और कुन्दश, फिलफिल, नौसादर, पीस कर सुंघावै, और गर्म पानी बदन पर न डालें, क्योंकि वह इस रोग के लिये ठण्डे पानी से अधिक हानिकारक है, जो फालिज के साथ रुधिर की अधिकता होतो,फस्द भी खोल सकते हैं और जो यह रोग गरमी से होतो गर्म औषधें न देना चाहिये पहिले गर्मी को दूर करलें, फिर इसका उपाय करें. और जो फालिज रुधिर की सूजन से होतो पहिले फस्द खोलकर उसका उपाय करें ॥

और जो बदन में किसी एक जगह का हिलना झुकना बन्द होगया होतो उसको इस्तिरखा कहते हैं ॥

पन्द्रहवां पाठ
खदर के विषयमें

मनुष्य की देहमें कोई जगह सुन पडजाय उसे खदर कहते हैं जो यह रोग रुधिर की अधिकता से होतो फस्द खोलें, और भोजन कमदे, और जो कफ की अधिकता से होतो कफ का जुल्लाव दे, और जो खुश्की से होतो उसका चिन्ह और उपाय आगे लिखा जायगा और जो दब जाने और जोरसे बांधने के कारण से होतो उस कारण को दूर करें ॥

सोलहवां पाठ
लकवे के विषय में

इस रोग में मुखटेढा होजाता है, और कारण इसका खिच जाना या ढीला होजाना मुंहकी एक ओर काहै ढीला होजाना

कफ से होता है. चिन्ह उसका सुस्त होना. और जीभ के स्वाद में फर्क पड़ जाना. और नीचे की पलक और तालूका लटक आना है, और खिंच जाने का चिन्ह थूक का कम होना और माथे का खिंच जाना है। ढीले होजाने में फालिज का उपाय करै, और खिंच जाने का उपाय आगे लिखा जायगा, जब तक चार दिन या सात दिन न व्यतीतहो जांय, कुछ उपाय न करै, और भोजन बन्द करदे. और जो होसके तो पानी भी न दे, और अंधेरी जगह में बिठावें और चीनी आईना आगे रख दे, कि रोगी हरदम उसमें अपना मुख देखा करै, और जायफल मुख में रखवावें और फिलू की जड़ की छाल जो, माउळ असल में औटी हुई हो उससे कुल्ली करवावें, और जो रुधिर की अधिकता से होतो फस्द भी खोल सक्ते हैं. इसरोग के उपाय में देर करनी न चाहिये, जो तीन महीने व्यतीत हो-जायंगे तो मुंह सीधा न होगा॥

चीनी आईना चांदी तांबे और पीतल को मिलाकर बनाते हैं इसमें मुख देखने से जोर पडता है, इस कारण मुंह सीधा हो जाता है॥

सत्तरहवां पाठ

तशन्नुज के विषय में

तशन्नुज किसी जगह के खिंच जानेको कहते हैं- जो कारण उसका कफ की अधिकता होतो उसका नाम. तशन्नुज रतब और इमतिलाई कहते हैं, चिन्ह उसका यह है कि अचानक उ-त्पन्न होजाय, और चिन्ह कफ के दृष्टि पड़े- और जो खुश्की के कारण पैदा हो उसको, तशन्नुज याबिस कहते हैं- चिन्ह उसका यह है कि धीरे पैदा होगा और उसके पहले कै या दस्त या रुधिर बहुत निकला होगा या तप आई होगी या

रोगी बहुत जागा होगा या उसको क्लेश बहुत हुआ होगा और उसका बदन दुबला होगा। तशन्नुज इमतिलाई का उपाय फालिज के अनुसार करना चाहिये-और तशन्नुज याबिस में बदन को बाहर से और भीतर से तरी पहुंचाना चाहिये, और मोम को बनफशे या बादाम के तेल में मिलाकर मलें, और स्त्री का दूध नाक में डालें ॥

बिच्छूके डंक मारने से और पट्ठेपर घाव लगने से या फोड़े पड़ने से जो तशन्नुज हो-चाहिये कि उसकारण को दूर करें और मृगी के समय जो तशन्नुज होता है वह मृगी के दूर होने से जाता है और जो नजाय तो रोगनगुल या कोई और तेल गुनगुना करके मलें, और कभी २ आदमी का मुख जम्हाई लेनेमें खुला रहजाता है, उसमें किसी तेलका मलना लाभ दायक है, और जो इससे अच्छा न होतो तशन्नुजइमतिलाई का उपाय करें ॥

अठारहवां पाठ

तमद्दुदके विषयमें

अंगका कोई भाग लम्बाईमें तनकर रहजाताहै और समेटने से नहीं सिमटता कारण इसका यहहै कि कोई पट्ठा दोनों ओर से खिंच जाता है उपाय इसका वही करें जो तशन्नुजमें लिखा गया है ॥

उन्नीसवां पाठ

कज़ाज़के वर्णनमें

तशन्नुज जो गरदनमें हो और गरदन इधर उधर न फिरसके उसे कजाज कहतेहैं, जैसा कारण हो वैसा उपाय तशन्नुज के

..., और यह रोग सब प्रकार के तवन्नुओं से बुरा इसका उपाय बहुत जल्दी करना चाहिये ॥

बीसवां पाठ

राशे के वर्णन में

इस रोग में मनुष्य का शरीर कांपने लगताहै, जो यह कफ की अधिकता से होतो निसयान और कफ के चिन्ह पाये जायगे, उपाय इसका यह है कि कफको निकालें, और जो विषय की अधिकतासे होतो उसको छोड़दें और ताजा दूध पीना और देहपर तेल मलना अति लाभदायक है ॥

इक्कीसवां पाठ

इख्तलाजके विषय में

शरीर में किसी जगह के फड़कने को इख्तलाज कहते हैं. नित प्रति मुख का फड़कना लकवा आने का चिन्ह है-और पेट का फड़कना मृगी हो जाने का, और बगल का फड़कना छाती और बगल की सूजन का चिन्ह है, और सारे शरीर का फड़कना सकता होजाने का चिन्ह है, पेट की रगों का फड़कना माली खोलिया का चिन्ह है उपाय इसका यह है, कि नमकको गर्म करके उस जगह सेंकें, और जो इससे अच्छा न हो तो कफ को निकाले, और हैज के बन्द हो जाने से यह रोग हो तो, फस्द खुलवाने से जल्दी जातारहता है ॥

बाईसवां पाठ

लवी के विषय में

इस रोग में देह भारी हो जाती है. और मुंह और आखें लाल होती हैं, और जम्हाई और अंगड़ाई बहुत आती हैं, और ऐसा मालूम होता है कि तप आने वाली है और थोड़े

काल के पीछे यह बात आती रहती है. या बार बार आतीहै जो बार बार आये तो रुधिर और पित्त को कम करै. और भोजन थोड़ा सा दें. और गर्म मिज़ाज वाले को ठण्डा पानी पीना और ठण्डे पानी से स्नान करना अति लाभदायक है और धानिया को कूट छान कर शक्कर के साथ फांकना, या उसको भिगोकर और मिठाई में मिलाकर पीना लाभदाता है ॥

तेईसवां पाठ

इसके वर्णन में

यह वह रोग है कि भेजे में खुजली बिना दर्दके होती है उपाय उसका यहहै कि भेजेको ठण्ड और तरी पहुंचावें. क्योंकि यह रोग पित्त के बुखार के कारण से होता है. और जो इस से भी अच्छा न हो तो. पित्तों का जुल्लावदें. और जो रुधिर की अधिकता देखें तो फस्द भी खोल दें ॥

चौवीसवां पाठ

असावा के वर्णन में

यह वह दर्द है जो भौं अर्थात् भृकुटी में होता है. जो अकेली गरमी से हो तो उसका चिन्ह यह है कि सूरज के निकलनेसे उत्पन्न हो और जों जों दोपहर तक दिन चढ़ता जायगा त्यों २ दर्द भी बढ़ेगा और दोपहर पीछे घटता जायगा यहां तक कि बिल्कुल न रहैगा, और फिर सबेरे योंही होगा उपाय इसका यह है कि, कपूर को रोग़न गुल में घोल कर नाक में टपकाये और बाहर से देहको साफ रक्खे, और जो देहकी गरमी ऊपर चढ़ने के कारण यह रोग होता चिन्ह उस का यहहै कि रोगी औंधा पड़ा रहैगा, और माथे की खाल खिंची हुई होगी, उपाय इसका यह है, कि नाक में कोई वस्तु

कढी और सुरसुरी डाल कर यानख और अंगुली चुभो कर नकसीर फाडें और जो इस से नकसीर न फूटे तो फस्द सराक करें और कपूर सुघावें और हाथ पांव मलें ॥

पच्चीसवां पाठ

जुकाम और नजले के विषय में

जाननाचाहिये कि भेजे का मल जोनासिका के द्वारा बहे उसे जुकाम कहते हैं, और जो गले पर गिरे तो नजला होगा गरमी का चिन्ह यह है कि यह मल पतला और जलता निकलेगा. और सरदी का चिन्ह इसका गाढ़ा होना या जलन होना उपाय इसका यह है, कि मिजाज को दुरुस्त करें और जैसा मवाद हो वैसे ही उसे निकालें चाहिये कि जुकाम में मवाद को साफ करने से पहिले वह वस्तु न खावें पीवें जो मवादको निकलने से रोके, और कब्ज को दूर करे, और सिरको ढांके रहें नजला चाहे गरम हो या ठंडा बहुत सोने और चितलेटने और बहुत चलने फिरने और सिरझुकाने और खट्टी वस्तु और दूध दही खाने से बचते रहें और जो जुकाम के साथ खांसी भी होतो उपाय भी अति आवश्यक है ॥

माशरा और बादशनाम सूजन है जो मुख पर होजाती है और जुल्लाब सेजाती रहती है उनका वर्णन इस पुस्तक के अंत में आवैगा ॥

दूसरा अध्याय

आंखके रोगों के वर्णन में

नेत्रों में सात परदे और तीन रतूबतें और एक असवा है जो रगके सदृश बीच में से खाली है और इसी असवे में से दिखाई देता है और आंखकी पुतली भी इसे कहते हैं बीचा बीच में आकर रतूबत जलीदीयातक पहुंची है इस रतूबत जली

दीया में सब चीजें दिखाई देती हैं और असबसे निकलकर दृष्टि की इन्द्री तक पहुंचती है वह इनको पहिचान लेती है ॥ और इसी रतूवत और असबे के बचाव के लिये और सब पर दे और रतूवतें आस पास है ॥

अब जानलो कि आंख का परदा जो बाहर की ओर हवा से मिला हुआ है छुआ जाता है वह मुलताहिमा और करानियां है अर्थात् सफेदी आंखकी जो दिखलाई देती है वह मुलताहिमा है। गोल और काली वस्तु करानियां हैं ॥ यह दोनों परदा रंग दारहै और करानियांमें रंग है वह इसीका है इसी परदेके बीचमें एकछिद्रहै, और चित्रोंके निकलने के लिये और आंख में पानी उतरने की जगह भी यही है इस परदे के पीछे रतूबत बैजिया है, इसका रंग अंडे की सुपेदी के समान है इसके पीछे परदा अनकबूतिया है यह परदा मकड़ी के जाले के समान है, इसके पीछे रतूबत जलीदीया है और इसके पीछे रतूबत जजाजिया है जो पिघली हुई कांचकीसी है और इसके पीछे परदा शबकीया है जो जाल के अनुसार है और इन दोनों रतूबतों को घेरे हुये है और इसके पीछे परदा मशीमिया और इसके पीछे परदा सलबिया है जो आंख के डेले से लगाहुआ है इनदो परदों और रतूबतों में अलग२ रोग होते है उनका वर्णन आगे करेंगे ॥

पहिला पाठ

रमद अर्थात् आंख आने के विषय में

मुलताहिमा पर सूजन आजाने का नाम रमद है जो यह रुधिर में होतो चिन्ह उसका यह है कि आंख लाल और भारी होजायगी और दर्द होगा और चीपड़ उससे बहुत निकलेगी और जो पित्त से होतो जलन और पीड़ा बहुत होगी परन्तु

चीपड बहुत न होगा और जो कफ से होतो रंग इसका सफेद होगा और आंख फूल जायगी और चीपड आंसू बहुत बहेंगे और जो सौदा से हो तो सूजन बहुत होगी और चीपड कुछ भी न निकलेगी और पलकें न चिपकेंगी आंख बोझल होगी और सिर में दर्द रहेगा, और जो राहि से होतो बोझ न होगा न चीपड निकलेगा उपाय इसका यह है कि मवाद के अनुसार उसे साफ करें और फस्द और जुल्लाव से पहिले कोई औषध आंख में न डालें परंतु जब यह रोग हलका होतो दो तीन दिन पीछे बिना फस्द और जुल्लाव के दवा डालनी चाहिये, गर्म रमदमें रसोत को लडकी की माके दूध में घोल कर आंख के अन्दर और ऊपर लगाना अति लाभदायक है, और जब पीडा बहुत होतो थोडी अफीम भी उसमें मिलालें और चाकसू पीसकर आंख में डालना सब प्रकार की रमद में अच्छा है परंतु इसको थोडे दिन पीछे डालें रोग के होते ही न डालना चाहिये और गर्म वस्तु न खावें ॥

चाकसू के बनाने की रीति यह है, कि उसे छील कर पानी में पकावै और जब गलजाय तो सुखादे, उसके दो हिस्से लेकर एक एक हिस्सा मिसरी और चीनी मामीरा को मिला के पीसले और आंखमें डाले, लडकी की आंखमें कभी कभी यह रोग बहुत होजाता है, उसको बरदीनज, कहते हैं, उसका उपाय यह है, कि सिर के पीछे पछने लगावे और चुटकी चाकसू की आंख में डाले ॥

दूसरा पाठ

तुरफा के वर्णन में

इसमें मुकतहिमापर रुधिर की फुटकी पड जाती है उपाय इसका यह है कि, कबूतर या बतख का कच्चा पर उखाड कर

उसके रुधिर की बूंद अकेली या गिलेअरमनी के साथ आंख में टपकावै, और कुन्दर को जलाकर उसकी धूनी आंखको दें और जो उसका कारण अत्यन्तमुटापा होतो पहिले फस्द करें और पछने लगा कर जुल्लावदें ॥

तीसरा पाठ

जुफरा अर्थात् नाखूनके विषयमें

इसका उपाय यह है कि लाहोरी नमक की सलाई बनाकर कईवार दिनमें आंखमें लगावै और जो मवाद बहुत होतो फस्द सरारू करें और हब्बअयारिज खिलावें औरबलगम उत्पन्न करने वाली वस्तुसे बचें और जो नाखूना बहुत उभराहो तो किसी अच्छे दस्तकार से उठवालें ॥

चौथा पाठ

आंखमें जालापडजाने के विषयमें

इसका कारण यहहै कि करनियां पर कोई वस्तु उत्पन्न हुई होगी उपाय इसका यहहै कि समंदरफेन कोपानी में घिसकर आंखमें लगावै थोड़े दिनों में अच्छा होजायगा और जोमवाद पुष्ट होतो भेजे को मवाद से साफ करें और उस जालेको प्रातःकाल विनाकुछ खाये जीभसे चाटना अति लाभदायकहै॥

पांचवां पाठ

सबलके वर्णन में

इसरोगमें आंखकी रगें लाल और मोटी होजाती हैं. और खुजली होतीहै जो इसमें आंसूभी निकलें और पलकोंमें पानी भरा रहै तो उसको सबलरतव कहेंगे और ऐसा नहो तो सबलयाविस कहेंगे, उपाय इसका यह है कि फस्द सरारू करेंइस के पीछे माथे की रग और कोये की रगकी फस्द खोलें. औ

जो यह रोग कम होतो, शियाफदीनार आंख में लगावै औरजो भारी होतो शियाफअहमर. और वासलीकून, लगावें और सबलयाविस में सुरमा और औषधों के लगाने से पहिले और पीछे गर्म पानी से गर्म जगह में बैठकर स्नान करना आवश्यक है, जब रमद और सबल दोनों मिले हुए हों तो दोनों के चिन्ह पाये जांयगे, ऐसे समयमें न गर्म औषधें देना चाहिये न ठंडी परन्तु मवादको निकालें और अंडकी सफेदी आंखपर लगावें-यह दोनों रोगों को लाभदायक है जो इस उपाय से न जावै. तौ दस्तकारी से उठालें ॥

छटा पाठ

मुलतहिमा के फूलजाने के विषय में

जोमुलतहिमा का फूल जाना रीह के कारणसे होतो चिन्ह उसका यह है कि अचानक उत्पन्न होगा और पहिले आंख के कोनों में मक्खी या मच्छर के काटनेकी सी जलन होगी और बलगम से हो तो धीरे धीरे उत्पन्न होगा और पीडा बहुत नहोगी. और अंगुली के दबानेसे चिन्ह रहजायगाऔर जो मवाद बहुत और पतला होगा तौ वह चिन्ह देरतक नरहेगाउपाय इसका यह है, कि जैसा मवाद हो वैसाही जुल्लावदें, और ठंडी रमद की औषधें काम में लावें, और जो यह रोग रीह से होतो तीन दिन तक कुछ उपाय न करें आप से आप जाता रहेगा॥

सातवां पाठ

मुलतहिमाकी खुजली का वर्णन

इस्में बहुधा पलक भी घायल या लाल होजातेहै. उपाय इसका यह है कि नमकीन और चरपरा भोजन न खावै, और फस्द और जुल्लाव लें. और जस्तको नरकुलपर रगड कर

आंख में लगावें और गर्म पानी से मुख धोया करें ॥

आठवां पाठ

सोसतुल मुलताहिमा के वर्णन में

इस रोगमें आंखकी सफेदी पर बड़े कोयेकी ओर नरम मांस उत्पन्न होजाता है उपाय इसका यहहै कि कई बार मवाद को साफ करें. और फिर दस्तकारी से काट डालें ॥

नवां पाठ

दोकतुलमुलताहिमाके विषय में

यह वह रोग है कि आंखमें बहुधा कोये की ओर कड़े और लाल और काले दाने पड जाते हैं उपाय इसका यह है, कि जो मवाद अधिक हो तो उसे साफ करें नहीं तो गुलाब में कपडा भिगोकर आंख पर रखना अच्छाहै और इससे अधिक उपाय की आवश्यकता नहीं ॥

दसवां पाठ

दमआ अर्थात् आंसू बहने के विषय में

जो गरमी से होतो सुरमा लगाके और सरदीसे होतो बासलीकून और जो आंख की निर्बलता से हो तो जली हुई पीली हरड. और नमक. और माजू. बराबर बराबर कूटछान कर आंख में सलाई से लगावें और जो थोड़ी २ देर आंसू बहकर थम रहा करें तो उसको हिन्दी में मतना कहते हैं. उपाय इसका यह है. कि पहिले मवाद को निकाले, और इसके पीछे आंसू बहाने वाली दवा लगावें. जैसे बासलीकून और शियाफ अहमर ॥

ग्यारहवां पाठ

हिरकतुलऐन अर्थात् आंखमें जलन होनेके विषयमें

जो यह गर्म मवाद के कारण से होतो उस मवादको निका-

ले और जो कोई मवाद न होतो तूतिया को फच्चे और खट्टे अंगूर के रस में भिगो कर सलाई से आंख में लगावे. और हरी कासनी के पत्ते कूट कर पानी उसका तेल में मिला कर लगावे. और कपूर भी उस के साथ मिलाले तो अति लाभदायक हो ॥

बारहवां पाठ

कुजा अर्थात आंखमें किसी वस्तुके पडजानेका विषय

जब आंख में कुछ पड जाय तो आंख को कभी न मले- ऐसा न होकि कोई कडी वस्तु होतो मलने से आंख में चुभ जाय. आंख को गर्म पानी से धोवे और स्त्री का दूध आंख में डाले. और दिखाई देती हो तो उसे रूई या नर्म कपडे से उठाले. और वह भीतर चिपटी हुई हो और छुट न सके तो निशास्ते को पीस कर आंख में भरदे. और थोडी देर ठहरे रहे इससे वह वस्तु निशास्ते में लिपट जायगी, फिर उस अलग रूई से उटालें, और कोई भुनगा या मच्छर आदि होतो मुलतानी मिट्टी या गेरू पीसकर आंखमें डालें, और थोडी देर आंख में बांधदें, वह उसमें लिपट आवेगा फिर उसको रूई से उठालें और जो शीशेका चूरा आंखमें जा पडे उस समय वह मीचना जो ऐसे कामोंके लिये बनाया गया है काम में लावें या जिस प्रकार से बन सके निकाल डाले, और निकालने के पीछे स्त्री का दूध और अंडे की सुपेदी मिलाकर आंख में डालें, इस से बन्द करने में आंख नहीं चिमटेगी ॥

तेरहवां पाठ

आंख पर चोट लगने का विषय

जो चोट लगने से आंखपर लाली या सूजन हो तो उपाय इसका यह है कि फस्द खोले, और गुलरूयन नुकूअ फवाक,

को पिलावै और गुर्दी पर पछने लगावै, इसके पीछे अण्डे की सफेदी रोगन गुल में मिलाके आंख में लगावै और जो पीडा जाने के पीछे चोट का चिन्ह अर्थात् नीलाहट रह जाय तो, धनिया पोंदीना और काला पत्थर जो मिरचों की थैली में निकलता है. और हरताल पीस कर लेप करे इस से नीला-हट जाती रहैगी, और तलवार या पत्थर का घाव मुलत हिमापर लगाहो. उसका उपाय यह है कि फस्द और जुल्लाव कई वार दें और अंडे की जरदी का आंख पर लेप करैं, इस के पीछे वही उपाय करे जो आंखके घावका उपाय आगे लिखा जायगा ॥

चौदहवां पाठ

आंखके घावका विषय

आंख के सब परदों में घाव होसक्ता है। परन्तु जो घाव केवल मुलतहिमा पर लगाहो और दूसरे परदे वचेहों उसे सालिम कहते हैं उसमें पीडा कम होती है, मुलतहिमा, करनियां, और अनवीया, का घाव आंख से देख सकते हैं, परन्तु परदों के घाव में केवल अधिक पीडा मालूम होती है, और जब तक पीप नहीं पडती कोई चिन्ह घावका नहीं मालूम होता उपाय इसका यह है. कि फस्द सरारू तुरन्त करे और ऐसी औषधें देते रहें जिनसे कब्ज नहोने पावै और जब पीडा होतो स्त्री का दूध टपकावे और जो वह घाव तुरंत न पकै तो धोई हुई मेथी का लुआव टपकावें अर्थात् मेथी के वीजों को दो पहर तक पानी में भिगा रक्खें, फिर निकालकर वीस गुने पानी में पकावे जब वह पानी आधा रहजाय उसको हिलाकर निकालले यही धोई हुई मेथी का लुआव है, जब घाव पककर वहने लगेतौ दूध और शहद मिलाकर आंखमें डाले इससे घाव साफ

होजायगा, इसके पीछे शियाफ कुन्दर काम में लावें, और जो असर घाव भर आने पर भी रहजाय तोजो उपाय सीतला के दानों के घाव दूर करने काहै. वही काम में लावे, और इसके लिये पुरानी हड्डी गुलाब में घिसकर लगाना लाभदायक है।

पन्द्रहवां पाठ

कमना का वर्णन

यह कई रोगों का नाम है एक जब पलक रीह से भारी हो जाय और फूलजाय और जागने के पीछे ऐसा मालूम हो कि आंखों में धूल पडगई ॥

दूसरे जब करनियां के पीछे पीप इकट्ठी होजाय ॥

तीसरे मुलताहिमा पर सुर्खी होतो इससे कम दिखाई दे और सब वस्तु धुंधली मालूम हों ॥

वह जो केवल पलक का रोग है। उपाय उसका पलक के रोगों में लिखा जावेगा, और करनियां के रोगका उपाय यह है कि मेथी और अलसी का लुआब आंख में डालकर मवाद को पकावे और कई बार गर्म पानी से स्नानकरें इसके पीछे साफ करने के लिये रूपामुखी पीसकर आंखमें लगावें और जो इस से लाभ न होतो दस्तकारी करै और नहीं तो इसे छेडै नहीं ऐसा नहो कि कोई और रोग उठखडा हो और जो मुलताहिमा का रोगहै उसका वही उपायकरें जो वादी के रमद का है, और मेथी, बाबूना, और अकलेलउलमुलक को औटा के आंख में धार दे ॥

सोलहवां पाठ

रतौंदीकाविषय

उपाय इसका यह है कि शहदको सौंफके पानी में घोलकर आंखमें लगावे, और पीपल को बकरी या बारहसिंगे की कले-

चुभोकर आगपर रखदें उससे जो पानी निकले उसको रखदें लगावै इससे तुरन्त ही अच्छा होजायगा, और जो सी थै अधिक होतो जुल्लाब दे और फस्द खोले ।

सतरहवां पाठ

दिनौंदी के विषय में

पाय इसका यह है, कि लडकी की माका दूध सिर पर और नाक में टपकावें. और ठंडे पानी में गोता लगा कर स में आंखें खोले और उन्नाव का शरवत पीवे ॥

अठारहवां पाठ

सुदाहिदकह: और शकीक: चश्म के विषय में

यह वह रोग है कि आंख के अन्दर धमक होती है और सुईसी छिदती है. और ऐसा मालूम होता है. कि आंख को कोई दबोचता है. और कभी पीडा जाती रहतीहै. और फिर हो जाती है. जैसे आधासीसी और रमद का कोई चिन्ह नहीं होतो जो उपाय आधासीसी का है वही इसका करै. और कनपटी की रग को काट डालें ऐसा नहो कि कोई रोग उत्पन्न हो जाय ॥

उन्नीसवां पाठ

हजूज़उलऐन के विषय में

इसमें विना सूजन आंख बाहर निकल आती है, उपाय इस का यह है, कि जैसा मवाद हो वैसे ही उसे साफ करैं. और हरड घिस कर आंख में लगावै. और भोजन कम खाय ॥

वीसवां पाठ

करनिया के उभरआने के वर्णन में

उपाय इसका यह है. कि मवाद गाढ़ा हो तो उसे साफ करें

ार जो

और जरूर अस्फ़र को मलाईसे आंखमें लगावै. और ग ला के से मुंह धोया करें और उसकी भाप आंख को दें. फ इसके के उभर आनेका यह चिन्ह है. कि कडी होती है और एक है। से नहीं दवती. और आंसू नहीं होतो और उसमें पीड होती. और फुन्सियां जो करानियांमें होजाती हैं. वह नर्म है. और दवाये से से दब जाती है और उनमें पीडा भी हो ा हो कि

इक्कीसवां पाठ

करानियां पर फुंसी होजाने के विषय में

जानना चाहिये कि करानियां के चार परदे हैं कभी सब में फुन्सी होती हैं और कभी एक में परन्तु फुन्सी पडने की जगह किसी में सफेद दिखाई देती है और किसी में नहीं, उपाय इस का यह है कि फस्द और जुल्लाव दे और पहिले ऐसी ठंडी औषधें लगावे जो मवाद को इधर गिरने से रोके और इस के पीछे शियाफ अहमरलीन लगावै फिर शियाफ अवि-यजकुन्दरी ॥

बाईसवां पाठ

मोरासिरच के वर्णन में

यह वह रोग है कि करानियां का परदा फट जाय और उसके मले सें अनविया ऊपर को उभर आये, उपाय इसका उससे पहिले करें जब कि किनारे करनिया के मोटे न पडजांय और ऐसा उपाय करें जो अधिक उभरने से रोकै और अनविया को अन्दर दवादें. वह इस प्रकार है कि धोया हुआ शादना और चांदी को इकलीमीया जली हुई सीपी पीस के आंख में डाले और धोये हुए शादन का सुरमा आंख में भरै और ऊपर से गद्दी रखकर बांध दे या सीसे का टुकडा आंख के बराबर वनाके या सीसे का बुरादा छोटी सी थैली में भरके आंख पर

रखदें. और पट्टी से कस दें और जो पिसा हुआ सुरमा छोटी सी थैलीमें भरके आंख पर रख कर पट्टी से कस दें. तो अति लाभ दायक है. और जब किनारे करानिया के मोटे हो जांयगे तो फिर किसी प्रकार अच्छा न होगा इस रोग का उपाय तुरन्त करना चाहिये ॥

भेंगा होने का विषय

इसमें एक वस्तु की दो वस्तु दिखाई देती. हैं जो यह रोग जन्म से हो तो अच्छा नहीं हो सक्ता. परन्तु बच्चों की मृगी के रोग से और एक करवट सुलाने या भयानक शब्द सुन कर अचानक चौंक पड़ने से भी यह रोग हो जाता है. उपाय इसका यह है कि कोई लाल या चमकदार वस्तु आंख के किनारेके उस ओर रखदें जिधर कि आंख को फिराना चाहते हैं बच्चा हरदम उसे देखैगा इस से आंख उसकी सीधी हो जायगी ॥

जो यह रोग जवानी में उत्पन्न होतो कारण इसका तशन्नुज इमतिलाई या याविस होगा, पहिचान तशन्नुज याविस की यह है कि इसमें पहिले गर्म रोग हुए होंगे. उपाय इसका यह है कि आंख को तरी पहुचावें और लड़की की मा का दूध सिर पर धारें और पहिचान इमतिलाई की यह है कि पहिले मृगी आई होगी और तशन्नुज इमतिलाई के चिन्ह पाये जांयगे उपाय इसका मवाद को साफ करना और निकालना है ॥

जो आंख के ढीले हो जाने से यह रोग हो तो इस के चिन्ह और उपाय वही हैं जो इस्तिरखा में लिखे गये हैं ॥

और रीह के कारण आंख का कोई परदा या रतूबत जाती रही होतो आंख फड़केगी उपाय उसका यह है कि भेजेसे बलगमको निकालें. हब्ब अयारिज खिलावें और बद हजमीको दूरकरें

इततिसा और इन्तशार का वर्णन

असवे के चौडा होजाने या अनविदा के छेदके बढजाने को इततिसा कहते हैं, और आंख में रोशनी फैल जान को इन्तशार कहते हैं ॥

जानना चाहिये कि इततिसा असवे के साथ इन्तशार अवश्य होता है. परन्तु ऐसा हो सकता है कि इततिसा अनवीया के साथ इन्तशार नहो. और कभी२ इततिसा असवा और इत तिसा अनवीया दोनों साथ होते हैं. इततिसा या असवे का अच्छा होना वहुत कठिन है. परन्तु इततिसा अनवीया का उपाय कारण के अनुसार हो सक्ता है. कारण जान के उपाय करें जैसे चोट लग जाने से होतो फस्द सरारू करें और पिंढलियों पर पछने लगावें ॥

और किसी मवाद की अधिकता या रतूवत वैजिया की अधिकता से हो जैसा कि बच्चों को हुआकरता है, या अन वीया की सूजन से होतो फस्द और हुकना करें और जो अनवीया की खुश्की से होतो चिन्ह और उपाय इसका जौफ वसर पुवसी के पाठमें लिखा जायगा ।

अनवीयाके छेद के सडजानेका विषय

यह रोग जन्म से होवो बहुत अच्छा है, इस से दृष्टि तीव्र होजाती है और जो किसी रोग से हो तौ दृष्टि कम होजाती है, पहिले देखें कि कारण इसका अनवीया की तरी है, या खुश्की या रतूवत वैजिया की कमी खुश्की और तरीके चिन्ह सहज में मालूम होजायगे ॥

और रतूवत वैजिया की कमी का चिन्ह यह है कि आंख छोटी होजायगी और वस्तु भली भांति दिखाई नदेगी और केमूस अनवीया के कडे होजाने और विगड जाने से भी यह

रोग होता है उसका चिन्ह यह है पुतली न दिखाई दे जब कि अनवीया की खुश्की या रतूबत बैजिया की कमी के कारण से यह रोग हो तौ चाहिये कि आंखको तरी पहुचावें और जब रतूबत अनबीया की अधिकता से हो तौ उस तरी को दूरकरें और कैमूस बिगडजाने में मवादको साफकरें और तरी भी पहुंचावें ॥

खयालातका वर्णन

इस में आंख के आगे भुनगे से उडते मालूम होते हैं यह तीन प्रकार के हैं एक तौ मोतियाबिन्द के होने से पहिले होते हैं, दूसरे पेटके बिगडने से और तीसरे दृष्टि तीव्र होने से ॥

मोतिया बिन्द होने से पहिले जो हों उनकी पहिचान यह है कि हरदम दिखलाई देंगे और प्रति दिन बढते जायगे और बहुधा एक आंखमें होंगे उपाय इसका मोतियाबिन्द में लिखा है, और जो यह रोग पेटके बिगडने से हो तौ उसके खाली होने और भरे होने पर अधिक दिखलाई देंगे और आंख के परदों और रतूबतों के बिगडने से हो तौ आंख रंगीन होगी और उस में कोई रोग पहिले हुआ होगा, उपाय उसका यह है कि भेजे और पेटको मवाद से साफ करें और इसके पीछे आंख के परदों और रतूबतों का मवाद कारण के अनुसार निकालें और जो ऐसा दृष्टि के तीव्र होने से हो तो उसके चिन्ह यह हैं कि दृष्टि ठीक होगी और भेजे की इन्द्रीयां सब तीव्र होंगी यह कोई रोग नहीं है वदन से जो धुंआ और हवा में छोटी२ वस्तु उडती हुई दिखलाई देती हैं

मोतियाबिन्द का वर्णन।

यह नजला है कि थोडा२ या एकही बार आंखमें उतर आता है और अनबीया के छिद्रमें ठहरा रहताहै जो वह गाढा होतो

दृष्टि जाती रहती है जो पतला होगा तो धुंधला दिखलाई देगा इसको मुंताशिररक़ीक़ कहते हैं, जो नजला पूरा छागया होगा तौ आंख से कुछ भी न दिखाई देगा और पुतली वदली हुई दिखलाई देगी परन्तु मोतिया विन्द से पहिले खयालात का रोग अवश्य होगा उपाय इसका यह है कि कनपटी की नसपर दागदें जिससे वह रग जल जाय और दाग देने के पीछे तीन दिन तक उसपर हराम मग्ज मलें फिर रोटी को तिलों के तेल में भिगो कर उसपर रक्खें, और दाग से जितना पानी वहै अच्छा है, और भारी वस्तु खाने से, और मैथुन से वचते रहैं और पानी उतर आने के पीछे जव १ वर्ष व्यतीत होजाय तव देखें कि आंख मलने से पानी फैलकर फटजाता है या नहीं जो फटजाय तौ फस्द खोलें जुल्लाव न दें उसके पीछे दस्तकारी करें ॥

खयालात के पीछे जव तीन महीने व्यतीत होजांय और इसपर भी पानी न उतरै तौ जानलो कि उसके पीछे मोतिया विन्द न होगा ॥

नीलके वीज को सुरमे की तरह पीसकर आंखमें लगाने से पानी को आंखकी ओर आने से रोकता है, और ऐसाही कान के पीछे की रगकी फस्द खोलने से और उस पर दाग देने से होता है ॥

परन्तु इसमें दाग उस रग पर पूरा वैठना चाहिये और जव पानी आंख में उतर आता है तो कोई उपाय नहीं हो सकता सिवाय दस्तकारी के ॥

वहुधा ऐसा देखा गया है, कि मोतिया विन्द वाले के सिर पर कोई वड़ी चोट पड़ने से उसकी आंख अचानक खुल जाती है, जो पानी आंखमें उतरता है कई प्रकारका होता है, परन्तु जिन में दस्तकारी से लाभ नहीं होता वह यह हैं, जेवकी ग़म्मामी

जिस्सी. आसमानी. मुन्ताशिर रक़ीर, जज़ाजी. अखजर अबि-यज वरदी, अस्भर. अहमरज़र्बीजरक, असवद. और यह भी ठीक होनेके पीछे दस्तकारी के योग्य हो सकते हैं परन्तु इनका ठीक होना कठिनहै. और केवल उस पानी में जो सफेद और साफ हो और आंख मलने से कट जाय दस्तकारी हो सक्तीहै

असवेमें सुद्दापड़जाने का विषय।

जो यह बिना मोतियाविन्द के होतो चिन्ह उसका यह है कि पुतलीपूरी अच्छी दिखलाई देगी और सूजन न होगी परंतु दिखलाई न देगा उपाय इसका यहहै कि भेजेसे मवाद को निकालें और कोयेकी रगकी फस्द खोलें और कनपटीकी रग पर जोक लगावें और पिंडलीपर पछने लगावें और पांवको मलें

आंखके कुब्जा होनेका विषय

जो यह रोग जन्म से होतो उपाय इसका नहीं होसक्ता और जो किसी रोग से होजायतो इसको वरमुलएन कहतेहैं-उसका उपाय कारण के अनुसार करें॥

जो तरी की अधिकता से होतो देहको और आंखको मवाद से साफ करे और जो खुश्की से होतो तरी पहुंचावें

यह रोग जो खुश्की से होता है. उसमें सुझाईनहीं देता, इस में और मोतियाविन्द में यह अन्तर है कि मोतियाविन्द में पहिले खयालात का रोग अवश्य होगा और इसमें यह बात नहीं होती है. आंख दुबली होजायगी और दस्तकारी से लाभ नहोगा यह रोग जो बच्चों की आंख में होतो जवान होने पर जाता रहता है॥

जोफ बसर अर्थात् कम दृष्टिका विषय

जो कारण इसका रुधिर की अधिकता होतो फस्दकरें और रुधिर के बदलेजाने को रोग कहते हैं और तूतिया को कच्चे

और खट्टे अंगूर के रसमें भिगोकर आंख में लगावै और जो यह कफ के कारण से हो तौ उसके पकाने के पीछे कफ का जुल्लाब दें, और वासलीकून आंखमें लगावें, और जो इसका कोई और कारण हो तो उपाय उसका करें, बुढापे में यह रोग बहुत होता है उसका उपाय नहीं होसकता परन्तु बचावके लि-ये कफ का मवाद निकालें और जवाहरात का सुरमा लगावें

बतलानबसारत का विषय

अंधेरी जगह में बहुत बैठने से दृष्टि धुंधली होजाती है या रतूबत बैजिया काली पडजातीहै, उस्से यह रोग उत्पन्न होताहै आंखमें वासलीकून लगावे. और हल्की हल्की औषधें और भोजन खावें. और जो अचानक अंधेरे के बाहर निकल आने के कारण से यह रोग उत्पन्न हो तो नीला आस्मानी रंग का कपडा आंखों पर डालें रहें या आस्मानी रंग की ऐनक लगा वें, और हल्का भोजन खांय और भूखे रहने और मैथुन से बचते रहें और रात को कुछ न खावें ॥

चुन्धाहोजाने का विषय

इस रोग में दिनको कम दिखाई देता है यह जन्म से होतो इसका उपाय नहीं होसकता परन्तु पलकों और आंख के परदों के काला करने का उपाय करें वह इस प्रकार से है कि बनफशे और बादामके तेलसे काजल बनाकर आंखों पर लगाया करें इसमें दृष्टि पुष्ट होजायगी ॥

कुमूर अर्थात् दृष्टिके थकजाने का विषय

यह रोग सफेद और चमकीली वस्तुओं पर जैसे सूर्य्य या बरफादिक हैं दृष्टि जमाने के कारण से उत्पन्न होजाता है ॥ उपाय इसका यह है कि काला कपडा आंखों पर लपटावें और पहनने और बिछाने के कपडे भी सब काले रक्खें और दूध में

कपड़ा भिगोकर आंखों पर रक्खें या स्त्री का दूध आंखोंपर दुहैं ॥ और कड़वे बादाम पीसकर या कुचलके आंखोंपरबांधें।

आंखकेदुबलाहोनेकाविषय

इस में धूप और रोशनी की ओर देखना बुरा लगताहै जोय ह रोग गरमी से होतो ठंढ और तरी पहुंचावें और जो रमद आदि के कारण से होतो पहिले उसे दूर करें ॥

आंख के मिज़ाज पहिचाननेकीरीति

आंख का मिज़ाज गर्म और तर है, और जो इसके विपरीत होतो जानलो कि कोई रोग होगा ॥

ऊपरसे छूनेमें आंख गर्म मालूमहो और डोरे रंगीनहों और आंख जल्दी २ फड़के. तो यह चिन्ह गर्मी का है और सरदी के चिन्ह इससे विपरीत हैं।

जो आंख से चीपड़ आंसू बहुत निकलें. और फूलीहुई दिखाई दे. तो यह चिन्ह तरी के हैं. और खुश्कीके चिन्ह इससे विपरीत हैं ॥

काली आंख सब प्रकार की आंखों से अधिक गर्म और तर होती है. इस लिये ऐसी आंख में मोतियाविन्द और २ गरमी के रोग बहुधा होते हैं. परन्तु बहुत मनुष्य यह कहते हैं कि कञ्जी आंख में मोतिया विन्द बहुत होता है ॥

तीसरा अध्याय

पपोटे और पलकके रोगोंका विषय

कमनाका विषय

कमना उसको कहते हैं. कि मनुष्य जब जागे तो आंख में

खटक हो जैसे रेत पड़ गई है और थोड़ी देर पीछे यह खटक जाती रहै. पहिले इसमें जुल्लाव दें और. शियाफ अहरमलीन और शियाफ अहमर हाद लगावें और गरम पानी से स्नान करना भी लाभदायक है ॥

पपोटेके ढीला होजानेका विषय

पहिले मवाद को निकालें इसके पीछे एलुआ. अकाकिया मुर्रमकी पीस कर हलक और पलक और माथे पर लगावें. और जो इस से लाभ नहोतो पलक काटनी पड़ैगीइसकीरीति दस्त-कार जानतेहैं और नाकके भीतरकी रगकी फस्द करना अच्छाहै।

पलकोंके आपस में चिमट जानेका विषय

यह रमद के पीछे या पलक काटनेके पीछे या सबल नाखूने में होताहै. उपाय इसका यहहै. कि सलाईसे दोनों पलकोंको छुटावें और फिर जीरा और नमक चबाकर पानी उसका आंखमें डालें और रुई रोगन गुलमें भिगोके पलकों के बीच में रक्खें और अंडे की जरदी में रोगनगुल मिलाकर आंख के ऊपर लगावें ॥

पलकके छोटे होजानका विषय

इस रोगमें ऊपर की पलक सुकड़ जाती है और नीचे की पलक, बाहर पलट आतीहै और दोनों पलकें बराबर बन्द नहीं होतीं इस रोगके कारण पपोटे के ढीला होजाने, कारणों से विपरीति हैं और अधिकमांस जो पपोटे में होजाताहै उसेकाट कर निकालने से भी यह रोग उत्पन्न होता है जो यह किसी मवाद से हो तो पहिले उसमवादको निकाले फिर कारण के अनुसार इसका उपाय करेंजो दस्तकारीहो सके तो उसेभीकरें

शिरनाक का विषय

इसमें पलकपर नर्ममांस होजाने से पलक मोटी होजातीहै॥

और आंखों में पानी भरारहता है, उपाय इसका यह है. कि पहिले मवादको निकालै और फिर आंसू लानेवाली औषधें आंख में डालें और जो इससे लाभ नहो तौ दस्तकारी करें. और वह वस्तु न खावें जो हानि करती हैं ॥

पपोटेके ऊपर गांठके पडजानेका विषय

उपाय इसका यह है, पहिले नर्म होने के लिये मोमरोगन लगावें और मरहम दाखलीयून लगावें, जो काटने के योग्यहो काटें और कोई मवाद निकालना होतौ उसे भी निकालें ॥

शेरमुनकलिब और शेरजायदका वर्णन

जो पलकके वाल उलटे होकर आंखमें जालगें और चुभाकरें उसे शेर मुनकलिब कहते हैं ।

और जो वाल पलक के सिवाय अपनी जगह की भीतरकी ओर निकलें और उनके चुभने से आंख खटका करें उसको शेर जायद कहते हैं ॥

उपाय इसका यह है, कि पहिले मवाद को साफ करें फिर वह वाल जो नये उगेहैं मोचनेसे उखाडें और उस जगह पर नौशादर रगड दें और चेंटीके अंडे और इञ्जीर का दूध और उस कलीली का रुधिर जो कुत्ते या ऊंट के देह पर होती है या हरे मेंडक का रुधिर या हुद २ का पित्ता उस जगहपर मलें और समन्दर फेन ईसवगोलके लुआव मेंपीसकर लगाना वाल उत्पन्न होने की जगहको शून्य करदेता है ॥

और शेर मुनकलिबका उपाय यह है कि दिवकका लासा लगाकर सीधे वालके साथ चिपटादें फिर वाल न चुभेंगे ॥

जब वाल को उखाड़ें तौ वारीक सलाई से उस स्थानको दागदें और जहां वाल हों उस जगह को काट डालना और सींच देना भी इसका एक वड़ा कड़ा उपाय है ॥

पलकोंके झडजानेका वर्णन

जो यह रोग बुरा भोजन खाने से या पित्तों या सोदा के अधिक होने से हो तो उस मवाद को निकालें और जो पळक की कमजोरी से हो तौ जैसा करानीतुस, और गर्म तप के पीछे होताहै तौ उस जगहको पुष्ट करना और तरी पहुंचाना चाहिये और वासलीकून और रोशनाई सुरमा आंख में लगावें. और जो यह रोग कफ के अधिक होने से हो तौ कफ को निकालें और पुष्ट करनेवाली वस्तु काम में लावें ॥

और जो कोई ऐसा कारण हो कि भोजन उस जगह तक न पहुंच सकै तौ उस कारण को दूर करें ॥

पलकोंके सफेद होजानेके विषय में

उपाय इसका यह है. कि पहिले बळगमको दूर करें फिर जंगली लाले के पत्ते. जैत के तेल में मिलाकर मलें और सुरमा रोशनाई सलाई से आंख पें लगावें ॥

पलक में खुजली और फुन्सियां होने का वर्णन

जैसा मवाद हो उसके अनुसार उपाय करना चाहिये. और बरूद वनफाजी, आंख में सुरमे की जगह लगावें ॥

वरदाका वर्णन

वरदा एक मवाद गाढा और सफेद ओले की सदृश पपोटे के ऊपर उत्पन्न होजाता है उपाय इसका यह है. कि मोमरोगन और दाखलीयून लगावै. इससे नर्म होकर वैठ जायगा और नहीं तो काट कर निकाललें ॥

पलकके मोटे और कडे होजाने का वर्णन

जब पलक मोटी और कड़ी होजाती है. तो आंख वन्द करना और खोळना कठिन होजाता है, और यह रोग सौदाके मवादसे होता है. इस लिये उपाय उसका यहहै कि पहिले सौदाको

पकावैं और मवाद निकालें, और उस जगह को नर्म करें, और अकलील उल मलक. बावूना. बनफशा. खतमी के पत्ते. पानी में औटाके आंख पर भपारादें ॥

और जो विना किसी मवाद के इस रोगमें खुजली हो तो उसको यवू सतुलऐन कहते हैं ॥

पलकके मोटे और लाल होजाने का वर्णन

इस रोग में पलक के किनारे बहुधा मोटे होजातेहैं. उपाय इसका यह है कि. पहिले मेवों का नुकूआ पीवें और समाक को गुलावमें भिगोकर पानी उसका टपकावें. और फिटकरी और कुलफा और कासनी के पत्तों को रोगन गुल में मिला कर लेप करना लाभदायक है ॥

जब यह रोग पुराना होजाय तो पहिले फस्द और जुल्लावदें फिर शियाफ अहमर लीन आंख में लगावै ॥

पलकोंमें जूयें पड़ने का वर्णन

यह रोग वलगमसे होताहै. पहिले वलगमका मवाद निकालें फिर पलक में से जूयें चुनें. और जो छोटा होने के कारण चुनना कठिन होतो फिटकरी और नमक को औटाके पलक को धोवें. और थोडी देर सलाई को पारे में रखकर होले से हाथ से पोंछलें और आंख में फेरें. यह जूं मारने को अति लाभदायक है ।

गुहांजनीका वर्णन

यह एक सूजन है जो जौ के सदृश पलकपर उत्पन्न होती है जो अवश्य हो तो मवाद निकालें नहीं तौ रसौत और एलुवा और गिलैअरमनी हरीकासनी के पानी में पीसकर आंखपर लगावें फिर दाखलीयून और मोम गरम करके लगावैं जो इससे लाभ नहो तौ नाखून से कुरेद डालें और थोडी देर रुधिर

बहने दें जल्दी बन्द न करें फिर ज़रूर अस्फ़र उसपर छिड़कदें

तोसतुलअजफ़ान का वर्णन

शहतूत के सदृश एक वस्तु नीचे के पलकके अन्दर उत्पन्न होती है उपाय उसका यह है कि पारद और ज़ुल्लास के पीछे दस्तकारी करें और काट के ज़ंगार और नमक चबाकर उसपर टपकावें ॥

तहज्जुरजफ़न का वर्णन

इसमें पलक पत्थरके सदृश कड़ी होजातीहै और यह सौदा के गाढेमवादके जम जाने से होता है, और इस में वरद से अधिक पलक मोटी होजाती है उपाय इसका यह है कि पहिले मवाद को निकालें और रौगन मोम को पिघलाकर लगावें और कभी यह रोग फांडे की तुल्य होजाता है ।

पलकमें घाव पडजाने का वर्णन

इस में मस्सूर अनार और पिस्तेके छिलके सिरके में पकाकर लेपकरें और जब खुरंड गिरने लगे तो अंडे की जरदी केसर में मिलाकर लेपकरें ।

पपोटोंके फूलजानेका वर्णन

जो यह जिगर और मेदे की कमजोरी के कारण से हो तौ पहिले उनको पुष्ट करें ॥

और जो कफ के अधिक होने से हो तौ इतरीफल खिलावें और फस्द काफाल करें और शियाफ ममीरा और चन्दन हरे धनिये के पानी में पीसकर लेप करें ।

पपोटोंमें मस्से पडजाने का वर्णन

इसमें पहिले सौदाका मवाद निकालें और कलौंजी और नमक को पीसकर सिरके में मिलाकर लगावें जो इससे लाभ ना होय तौ मोचने से दबाकर नाखूनगीरी या नश्तर से काट

डालें और रुधिर बहने दें फिरघावपर फिटकरी छिड़कदें कि रुधिर बन्द होजाय ॥

पपोटों पर पित्ती उछलने का वर्णन

इसमें खुजली और सूजन हो जाती है, जैसा कि भिडके डंक से होता है उपाय इसका यह है कि फस्द करें और पित्त का जुल्लाब दें. और शादनें अदसी. धोया हुआ आंखमें लगावें

नमलय पलक का वर्णन

इस रोग में पलक पर फुन्सियां होजाती हैं और थोडी सी सूजन और जलन भी होती है, और घाव पडके फैलता जाता है पित्तका मवाद निकालें. और रसोत और एलुआ घिस कर पलक में लगावें ॥

पलक पर से भूसी उडने का वर्णन

कभी इसमें घाव भी पडजाताहै. जो रंग इस भूसीका मैला होतो सौदाका जुल्लाबदें और जो सफेद होतो बलगमका फिर शियाफ अहमर लगावें, और जो यह रोग पुराना होजाय तो पछो लगाकर शकर मलें, और सुरमा रोशनाई आंखमें लगावें

सुला का वर्णन

यह एक वस्तु त्वचा और मांस से जुदी पलक पर बढ जाती है, उपाय इसका यह है, कि मवाद निकालने के पीछे उसको काट कर अलग करदें ॥

चोट से पपोटे का नीला या हरा होजाने का वर्णन

जो घाव भी हो जायतो फस्द और जुल्लाब दें, और चन्दन और मुरदा संगको गुलाब में घिसकर मलें और जो घाव न होतो कोरी ठीकरी पानी में घिस कर लगावे. यह सब जगह की नीलाहट को दूर करदेती हैं ॥

कोये के पास नाककी ओर नासूर होजाने का वर्णन

फस्द और जुल्लाव के पीछे शियाफ गर्व टपकावे. परन्तु पहिले घ व को रुई से पोंछलें, और पीप को साफ कर डालें और औषध के प्रभाव के लिये मुर्दार मांस काट डालें जो इससे लाभ न हो तो दाग दें. और मरहम अस्फेदाज लगावें।

यह नासूर बन्द होकर फूल जाता है. ऐसे समय में कनोंच के बीज स्त्री के दूध में या गधइया के दूध में पकाके थोडीसी केसर मिलाकर लगावै इससे फूटकर फिर वहेगा॥

कोये और पलकमें बिना जलन और दानों के खुज-ली होनेका वर्णन

जो यह रोग रुधिर से होतो फस्द करें. और मवादों में उन्ही मवादों की निकालनेवाली औषधी देकर वमन करावे और कासनी को कूट के गुल रोगन में मिलाकर लेप करें. और जो कोये मवाद से साफ किया चाहें-तो वासलीकून और कुहल अजीजीलगावें॥

कोयेमें नाककी ओर अधिकमांस होजानेकावर्णन

उपाय इसका यह है कि पहिले मवाद को निकाले फिर शि-याफजंगार या मरहम जंगार लगावें। कि अधिक मांस कटजा य जो इससे लाभ न होय तौ दस्तकारी से काट डालें और जरूरअस्फर छिड़कें पीड़ा के दूर होने के लिये अंडे की जरदी रोगनगुल में मिलाके मले इसके पीछे भरावकी मरहम लगावें।

चौथाअध्याय

कानकेरोगोंकाविषय

जानना चाहिये कि कान श्रेष्ठ इन्द्री है और सब इन्द्रियों से अधिक है इस के रोग जो मवाद से हों उन में दवा कान में

न डालनी चाहिये और जो डालें भी तौ गुनगुनी करके क्यों कि ठण्ढी औषधें हानि करती हैं ॥

कानके दर्द का वर्णन।

जो यह पीडा या सूजन घाव के कारण से होतौ उसका उपाय आगे लिखेंगे और जो किसी मवाद से या केवळ गरमी से हो तौ फस्द आदि से मवाद निकालें और जो केवल ठंड से हो तो उसका उपाय करें और मवाद की पीडा में मवाद निकालने के पीछे उसके अनुसार उपाय करें और कान में पीडा कीडे के घुस जाने या पानी की बूंद रहजाने से हो तो उसे निकालना चाहिये और एक पांव पर खडे होकर कूदना उस कान पर हाथ धरकर जिस्में पानी है और सिरको उसी ओर झुकाना पानीको निकाल देता है और जो इस्फंज (अर्थात् मराहुआ बादल) की बत्ती बनाकर कानमें रक्खें और उसी ओर देर तक लेटे रहें तौ सब पानी निकल आवेगा।

जो कान में कीडे उत्पन्न होजाने के कारण से यह पीडा हो तो चिन्ह उसका यह है कि कान में गुदगुदी मालूम होगी, और कभी कीडा आपसे आपभी निकलआवेगा इस में शफतालू के पत्तों को औटा के या उसका रस निचोड कर कान में टपकावै या एलुवा सिरका में घोलकर टपकावै इससे कीडे मर जांयगे। फिर सूफ की बत्ती बनाकर उस्में सरेस मलके कान में रक्खें कि कीडे उसपर चिमट के निकल आवें फिर जब घाव साफ होजाय तौ उस घाव का उपाय करै ॥

कानकी सूजन का वर्णन।

पहिले जुल्लावदें इसके पीछे देखें, कि सूजन छिद्र के भीतर है या वाहर, भीतर होने का चिन्ह यह है सुनाई कम देगा

और पीडा अधिक होगी और तप भी होगी इसमें दर्द की औषध हरे धनिये के पानी में घिस कर कान के ऊपर और भीतर लेपकरें और लडकीकी माताका दूध कानमें दुहै और जो इससे न थमे तौ मेथी या अलसी का लुआब टपकावे. कि पकजाय और पीप पडे ॥

जो सूजन कानमें बाहर हो तौ आंखसे दिखाई देगी न तप होगा न अधिक पीडा. इस समय ऐसी ठंडी औषधें जो मवाद निकालने से रोकें लगाना चाहिये परंतु ऐसी औषधें लगावें, जो सूजन को पकावें और बिठादें और जो पीडा अधिक हो तौ कपडा गर्म पानी में भिगो के या नमक गर्म करके सेकें. और दो दिन पीछे कर्मकल्लेके पत्ते पुराने घीमें पकाके लगावें सूजन बैठ जायगी ॥

यह उपाय गर्म सूजन का था, परंतु जो कफ की सूजन हो छिद्रके भीतर या बाहर तौ उसमें कमसुनाई देगा न तप होगी. और न पीडा अधिक होगी केवल बोझ और खिचाव मालूम होगा इसमें मूली या सोये का तेल मवाद निकालने के पीछे टपकाना लाभदाय है ।

कानके घावका वर्णन

चिन्ह उसका यह है कि पहले सूजन होगी फिर पककर फूटे और घाव से पीप बहेगी शहद में अंजरूत को पीस के बत्ती में लगाकर कानमें रक्खें फिर अंजरूत दम्मुल अखवैन कुन्दर पीसकर छिडके या रोगनगुल में मिला के बत्तीमें लगाकर कान में रक्खें और जो पीडा विशेष होतो अफीम जलाके राख उसकी जुन्दबेदस्तर में मिलाके कानमें छिडकें या किसी तेल में मिलाकर टपकावें ॥

तरश और वक्र और समम का वर्णन

कम सुनाई देनेका नाम तरश, कुछ भी न सुनाई देने का वक्र और कान का छिद्र पूरा बन्द होजाने का समम है. जैसा कारण हो उसी के अनुसार होले होले मवाद को निकालें जो वोहरान के दिन ऐसा हो तो उसका उपाय करें और जो बुढापे से या जन्म से हो तो कभी अच्छा न होगा परंतु दूध पीते बच्चे को यह हो तो सातर और नमक चबा कर उसकी एक बूंद कान में डाले ॥

किसी वस्तुके कानमें पडजाने का वर्णन

जो कोई कंकर या दाना आदि कान में पडजाय तो रोगन गुल कान में डाल छींक लिवावें और छींक आने के समय मुख और नासिका बन्द करलें इससे जोर कान की ओर पडेगा और वह वस्तु निकल आवेगी और जो पानी भर गया हो तो एक बालिश्त की सोंफ की लकडीले एक ओर उसके रुई लपेटें और तेलमें भिगो कर जलावें और दूसरा छोर उसका कान में रक्खें इससे जितना पानी भीतर होगा निकलआवेगा और जो कोई छोटा कीड़ा कान में घुस गयाहो उसका उपाय वही है जो कीडों के निकालने का लिखा गया है

तिनीन और दवीका वर्णन

जो आपसे आप कान में तेज और बारीक आवाज मक्खी की भिन भिनाहटके समान सुनाई देती है उसका नाम तिनीन है और जो नर्म और भारी आवाज मालूम देती होतो उसे दवी (चक्की कीसी आवाज) कहते हैं पहिले इसका कारण मालूम करके उसीके अनुसार उपाय करें. और जो श्रवणकी इन्द्री तेज होने कारण से होतो भारीवस्तु खावें जैसे हरीस ॥

कानसे रुधिर निकलने का वर्णन

जो इसका कारण रुधिरकी अधिकता होतो फस्द से बहुत सा रुधिर निकालें और जो किसी चोटके लगनेसे होतो फस्द से रुधिर कम निकालें और फिर माजू को सिरके में औटाके कानमें डालें. जो वोहरान के दिन कान से रुधिर निकले तो उसे बन्द न करें जब तक कि रोगी को मूर्च्छा न आजाय।

जो सांपके काटने से रुधिर निकलता हो उसका उपाय इस पुस्तक के अन्त में लिखा जायगा ॥

कानके टूटजाने का वर्णन

फस्द खोल कर. नर्म करने वाली औषधें पिलावे. एलुआ. मुगाम. अकाकीया. रातीनज और मेंहदीके सूखे पत्ते पीसकर उस जगह लगावें ॥

जडसे कानके उखडजाने का वर्णन

पहिले फस्द करें फिर नर्म करने वाली औषधियां दें और कान को अपने स्थानपर जमाके गद्दी रखकर पट्टी बांध दें और जो पीडा रहजाय तो बतख की चरबी पिघलाके उस में खतमी के पत्ते और घीये के छिलके मिलाकर मलें ॥

कनकटी का वर्णन

यह रोग बहुधा बच्चों को होता है ॥ इस रोगमें कंधो के बीच में और कानके जडमें पछने और जोकें लगावें. और उस जगह को स्त्री के दूध से धोवें. और मुर्दा संग और कबीला नरम २ पीस कर छिडकें ॥

कानमें खुजली होने का वर्णन

इफसन्तीन को सिरके में औटा कर और कडवे बादाम का तेल उसमें मिलाकर कानके अन्दर डालें ॥

कानमें चिल्लाहट कासाशब्द मालूम होना

ऐसी औषधें और भोजन खावें और सूंघें जो भेजेको पुष्ट करें

पांचवां अध्याय

नाक के रोगों के विषय में

नाकमें दो मार्ग हैं एक भेजेकी ओर और दूसरा गलेकी ओर है

खश्म का वर्णन

यह वह रोग है कि इसमें सूंघने की शक्ति जाती रहती है और किसी वस्तु की गन्ध नहीं आती ॥

जो नाक में बुरे मांस के उत्पन्न होजाने से यह रोग होतो उसका उपाय इसी अध्याय में आगे लिखा जावेगा. और जो सूजन या सुद्दे के कारण से हो तो यह मालूम करै कि किस मवाद से है और जो केवल गरमी या ठंड से होतो उसके चिन्ह सहज से मालूम हो जांयगे कारण के अनुसार इसका उपाय करना चाहिये और जो यह रोग खुश्की और तशन्नुजके कारण से और गर्म रोगों के पीछे हो तो उपाय बहुत कम होसकेगा

घ्राणशक्तिके बिगडजाने का वर्णन

इसमें कुछ कुछ वास मालूम होती है यह रोगतीन प्रकारका है (१) सब वस्तुओं की वास एकसी मालूम हो (२) एक वस्तु से कई प्रकार की वास सूंघी जाय (३) किसी वस्तु की वास आवे और किसी की न आवे । उपाय इसका यह है कि भेजे को मवाद से साफ करें और जो नाक के भीतर घाव हो तो उसे अच्छाकरें जब केवल सुगन्ध मालूम हो तो जुन्दवेदस्तर की वासलें और जब केवल बुरीवास आवै तो मुश्क कोनाक में टपकावें और जो यह रोग पुराना होजावे तो सुगंध आनेमें मुश्क और बुरीवास मालूम होने में जुन्दवेदस्तर नाकमें डाले ॥

नाक में बुरासांस उत्पन्न होनेकावर्णन

पहिले फस्द खोलें और जोंक लगावें और अयारिज का जुल्लाव दें फिर अगनान और जंगार और मुर्दसंग की तीनों बराबर लेकर पीसकर मरहम बनाके एक बत्ती में लगाकर कान के भीतर उस मांस पर रक्खें जिससे वह गल जाय और जो न गलै तो नश्तर या चाकू से काट डालें या घोड़े की दुम के बालों को बटकर और गांठें लगाकर काटें और फिर मरहम सफेदे का लगावें ॥

नाक की फुन्सियों का वर्णन

इसमें पहिले फस्द खोलें और जुल्लाव दें और जो जगह कड़ी हो उसके नर्म करने के लिये मोम रोगन लगावें यदि इससे भी लाभ न हो तो पछने लगावें और मरहम नेजावीसे उन को गलादें फिर घाव भर आने के लिये मरहम सफेदा लगावें ॥

नाक के घाव का वर्णन

जो यह तरी से हो तो पहिले मुर्दासंग रोगनगुल में मिला कर लगावें और जो खुश्की से हो तो केवल मोमरोगन होमें अच्छा होजायगा ॥

नकसीर का वर्णन

भुजा. जांघ. अंडकोश. कान छातियां और पिंडलियां कस कर बांधे और गुद्दी पर पछने लगावें और जिगर पर सींगी लगाना भी लाभदायक है जो रुधिर दहने नथनेसे आवे तो तिल्ली के ऊपर सींगी लगाना उत्तम है और जो बायें नथने मे निकले तो गधे की लीद को निचोड़ कर उसके पानी की दो तीन बूंद नाक में डालें और मकड़ी का जाला स्याही में मिलाकर और चक्की का झाड़न उसमें डालकर नाकमें टपकावें और सरेस मुलतानी मट्टी में मिला कर सिर पर लेप करें ॥

जो रुधिर की अधिकता से नकसीर छूटी होतो फस्द लें और रुधिर जितना अवश्य हो निकालें चाहे एकवार में और चाहे कई वारमें निकालें और रुधिर जो पतला पडगया है उस को गाढा करने के लिये उन्नाव का शरबत आदि पिलावें और मसूर की दाल और चांवल नीबू निचोड कर खिलावें ॥

जो तप या भेजे के रोगों में नकसीर फूटे तो देखना चाहिये कि वोहरान से है या नहीं। जो वोहरान से होतो कभी बन्द न करें क्योंकि ऐसा न हो कि कोई कडा रोग उठ खडा हो. परन्तु मूर्च्छा का डर होतो बन्द करदें और जो वोहरान से न होतो उचित उपाय करें. जब भेजे के रोगों में नकसीर फोडने की आवश्यकता होतो भीतर नाक की जड में वह औजार चुभावें जो इस काममें आता है और जो कुन्दर, मवाजिज फरफियून अनीसून को कूट कर और बत्ती में लगा कर नाक भीतर रक्खें तो रुधिर निकलने लगेगा ॥

नाक में बुरी गन्ध आना

जो यह रोग फुन्सियां अथवा घाव के कारण से होतो वही उपाय करें, जो ऊपर लिखा गया है और जो भेजे के मवाद घाद के सडजाने से हो तो पहिचान उसकी यह है कि सिरमें कोई बिगाड होगा, और जो मेदे में मवाद के सडने से होतो मेदे के बिगाड से पहिचाना जायगा उपाय इसका यह है कि मेदे और भेजे को मवाद से साफ करें और कोई सुगंध नाक में डालें जैसे शराब रेहानी, सम्बुल या अगर इनको अलग२ या सब को पीस कर डालें ॥

नाक कुचल जानेका वर्णन

जो सूजन होने का डर होतो जल्दी से फस्द लें और नाक को ठीक करें. परन्तु इस प्रकार से कि श्वास न रुके. इसका

उपाय यह है कि नली पर मरहम लगाके नाक में रक्खें जिस से श्वास न रुके जब वह सीधी होजाय तब एलुआ, अकाकी या और मुरेमक्की पीसकर बारतंग के पानी में मिलाकर का गज पर लगाके ऊपर चिपका दें ॥

बहुत सी छींके आना

रोगन गुल सुगंध का नाकमें डालें और गुन गुने मीठे पानी को कानमें टपकावें और हाथ पांव आंख कान और तालूमें मलें और यह रोग लडके को होतो बकरी का गुरदा भूनके उसका पसीना नाक में डालें जो छींक न बहुत ज्यादह और न बहुत कम आवें तो चंगे होने का चिन्ह है और अधिक छींके भेजे के बिगाड का चिन्ह हैं ॥

नथनों का सूखारहना

जो केवल गरमी से होतो ठंडी औषधें दें और जो खुश्की से होतो तरकरनेवाली वस्तु जैसे बादाम का तेल आदि नाक में डालें और स्त्री का दूध नाक में दुहें और जो किसी गाढे मवाद के चिपट जाने से होतो नर्म करने के लिये रोगननाक में डालें ॥

नाकमें भीतर खुजली होनेका वर्णन

जो खुजली ठंडी हवा पहुंचनेसे होती होतो भेजे को ठीक करें और इत्रीफल खिलावे. और जो सीतला या जुकाम या नजले का चिन्ह दीख पडे तो उनका उपाय करें जो बाहर से कोईवस्तु नाकमें पडजाय और फंस रहैतो तेल नाकमें टपका के नाकमलें और मुंह बन्द करके छींक लिवावें तो वह चीज निकल पडेगी और कभी ऐसा होताहै कि विना इलाज किये ही छीकें आकर अपने आप मुंह में होकर निकल आती है ।

छटा अध्याय

मुख और जीभके रोगों का वर्णन

जीभ की सूजनका वर्णन

कारण के अनुसार मवाद को निकालें फिर कुल्लाकरावें जो रुधिर या पित्तसे होतो तीन दिनके अन्दर काहू, कासनी और मकोयके पानी से कुल्ला करें और तीन दिन पीछे करम कल्ला और मकोय के पानी में अलसी के बीजों को मिलाके कुल्ली करें और जब सूजन घटने लगे तो बाबूना, नाखूना, वनफशा और अमलतासकी कुल्ली करें और कफ की सूजन में शहद से कुल्ली करे या उसमें सातर और अयारिज और भी मिलालें और बादी की सूजनमें इन्जीर, मेथी के बीज और अमलतास को औटा के वनफशेका तेल मिला के कुल्ली करें, और कभी हरा धनिया और हरी कासनी चबाया करें कि सरतान का रोग न होजाय, और जो विषखाने से सूजन होतो उसका उपाय आगे आवेगा ॥

जीभका बोझल होना

हिन्दी में इसे तोतलापन कहते हैं इसमें ऐसा होता है कि शब्द मुंह से भली भांति नहीं निकलते, कारण जानके उसका उपाय करै और फस्द और जुल्लाव आदि दें, और जो जीभ ढीली होगई होतो देखें कि सिर मे कोई बिगाड है या नहीं जो होतो भेजेको मवादसे साफकरैं और वच और राई आदि पीसके जीभ पर मलें कि राल बहे, और जो सिरमें कोई बिगाड न होतो फालिज का उपाय करें. और ठुड्डी के नीचे पछने लगावें और जो जीभकी रग टूट जाने से मवाद बहुत सा निकलने के कारण तशन्नुज होजाने से होतो इस का उपाय नहीं हो सकता और जो सरसाम के पीछे हो या

पुराना होजाय वह भी अच्छा नहोगा परंतु पुराना पड़ने से पहिले इन्द्रानी नमक और नौसादर मलें इससे लार टपकेगी।

जीभका बढजाना और निकलआना

जो रुधिर की अधिकता से होतो सरारू और जीभ के नीचे फस्द खोले और खट्टी वस्तु जैसे अनार मलें कि रालब-हे और जो कफसे होतौ अयारिज खिलाकर कफ निकालें और नोंन सिरके में मिलाकर मलें ॥

जीभके ढीले होजाने का वर्णन

इसका उपाय जीभ के तोतलापन के वर्णन में लिख चुके हैं

जीभ के फटजाने का वर्णन

जो खुश्की की अधिकता से जीभ फट गई होतो तर औषधें काममें लावें और मोमरोगन और वनफशे का तेल मलें और भेजे को ठीक करैं और खीरे के झाग जीभपर लगावें और जो मेदे के धूंवे से यह रोग होतो पहिचान यह है कि भेजे में खुश्की नहोगी इसमें मेदे का मवाद निकालें और लिहसोड़े मुख में रक्खें ॥

जीभ की खुश्की का वर्णन

जो जीभकी खुश्की गरमी और खुश्कीसेहो तो ठंडी और वीदानेका लुआब नीलोफर के पानी में निकालकर शक्कर मिलाकर कुल्ला करै और देरतक मुख में लिये रहैं और जो लहसदार कफ जीभपर जमकर सूखगया होतो वेदकी लकडी शिकंजवीनमें भिगोकर जीभ पर मलै उससे वह कफ छूटजाय

गा इस रोग की पहिचान यह है कि थूक रहसदार आयाकरेगा और जितनी ठंडी वस्तु देंगे उतनाही रहस अधिक होगा ॥

जीभकी जलन का वर्णन

ठंडी औषधें दें और जो किसी मवाद से होतो जुल्लावभी दें और कपूर मलें और ईसबगोल रैहां के बीज बबूलकागोंद मुख में रक्खें जल्दी २ न बदलें किंतु देरतक मुखमें रहनेदें ॥

जीभमें खुजली होनेका वर्णन

इस रोग का लक्षण यह है कि जीभ लाल होगी और रोगी दांतों से जीभ को खुजलाया करेगा (उपाय) पहिले मवाद निकालें फिर गरम पानी से कुल्ली करें फिर दूध और शकरसे कुल्ली करें इसके पीछे सिरके में कोई तेल मिलाकर कुल्ली करें और पीली हरड चबाकर जीभ पर मलें ।

ज़िफ्दउललिसान का वर्णन

इस रोगमें गाढा कफ या रुधिर जीभ के नीचे जडमें जमकर कडा पडजाता है [उपाय] मवाद को निकाल कर नौशादर फिटकरीभुनीहुई, जंगार, मुरसक्की, सिरके में पीसकर मलें और जो इससे न जाय तो काटकर निकालें परन्तु सावधानी से काटें ऐसा नहो कि जीभ के नीचे जो रगें हैं वह कट जांय कभी मवाद इस रोग का पथरी बनजाता है जब ऊपर की खाल चीरते हैं तो वह पथरी निकल आतीहै और कभी सूजन होजाती है उसके छेदने से गाढा पानी निकलता है और फिर इकट्ठा होजाता है उपाय उसका यह है कि पहिले छेदके पानी निकालें और फिर बहुत सावधानी से चमडे को कैंचीसे कतर डालें ॥

फिसादज़ौक़ का वर्णन

इस रोग में एक नया स्वाद स्वाभावके विपरीति मालूमहोता

है चाहे कुछ खावें या न खावें जिस मवाद से होगा उसका चिन्ह उसके मजेसे मालूम होजायगा उसी मवाद को फस्द और जुल्लाव देकर निकालें और शिकञ्जवीन से कुल्लाकरें ॥

वतलानजोक का वर्णन

इसरोग में जीभ को नतो स्वाद आता है और न गरमी न ठंड मालूम हाती है इसका कारण यह है कि जीभ में तरी अधिक होती है पाहिले मवाद को पकाके भेजेसे निकालें और अकरकरा, मुनक्का. और राई को औटा कर कुल्ली करें और जो गरमी होतो गुलाव के फूल, और सिमाक़. औटाकर शिकञ्जवीन मिलाकर कुल्ली करें ॥

तकशशुरजबान का वर्णन

इस रोग में जीभ और मुख से छिलके उतरते हैं और मलने से अधिक होजाता है इसमें पाहिले फस्द और जुल्लावसे पित्त को निकालें, आस और गुलावके फूल और गुलनार सिरके में औटाकर उससे कुल्ला करें ॥

मुखके भीतर फुन्सियां होजाना

इस रोग में फस्द खोलें और जुल्लाब दें और धनियां, मसूर और मकोय के पत्ते सिरके में औटा कर कुल्लाकरें ॥

मुंह आने का वर्णन

यह रोग भीतर के मवाद से होता है इस का कारण जान कर मवाद निकालें, जो पित्त या रुधिर अधिक होतो उन औ-पधोंसे कुल्ली करें जो मुखकी फुन्सियों पर लिखी गईहै. और वंसलोचन. गुलनार. माजू और कपूर सबको पीस कर मुंह के भीतर छिड़कें और जो घाव होजाय तौ सिरके और नमकसे कुल्ली करें इस से मवाद ऊपर को निकल जायगा किन्तु जो सिरका की तेजी न सही जायतौ उसके बदले केसरको पानी

में औटालें और जो यह रोग कफकी अधिकतासे होतो मामीरा. हरड और अकरकरा सिरके में औटा के कुल्ली करें, और जो बादी से होतो महँदी की पत्ती चबामें, और माजू धनिया अनार के छिलके सिरके में औटा के कुल्ला करें ॥

बच्चों के मुह आने में शीरखिश्त को मकोय के पानी में घोल कर कुल्ला करावें. और गावजवां जलाकर छिडकें ॥

आकिल तुलफ्म का वर्णन

यह रोग बहुत ही बुरा है इसमें घाव सारे मुंह में फैलजाताहै इसका उपाय यह है कि जले हुये मवाद को निकालें और उन औषधों से कुल्ली करें जो मुंह आने के बयान में वर्णन हो चुकी है. और जो घाव फैलने से ठहर जाय तो. फिल्द फियूनया सुरतीजान घाव पर लगावें. और जो इनसे जलन होतो लुआबों से या ताजा दूध में शकर मिला कर कुल्ला करें ॥

जागते और सोते में मुंह से बहुतसी राल बहना

इसका कारण यह है कि मेदे में गरमी और तरी होगी, या ठंड और तरी विषेश होगी, पहिचान गरमी तरी यह है कि खाली पेट में राल बहुत बहेगी और ठंड और तरी की पहिचान यह है. कि पेट भरे पर राल अधिक आवेगी. और मुख का स्वाद खट्टा होगा और भोजन न पचेगा, जो मवाद अधिक हो उसे निकालें, और गरमी में हरी कासनी को नमकके साथ कूट कर चबावें और रस उसका निगलें, और ठंड में कुन्दुर और मस्तंगी चबावें ॥

मुख से दुर्गन्ध आने का वर्णन

जो इसका कारण केवल मुख ही में होतो उसे मवाद से साफ करें, और जो भेजे से मवाद गिरता हो या मेदे में गरमी हो तो भेजे और मेदे से मवाद को निकालें. और हब्बुल मिस्क

मुख में रक्खें और दन्तवन किया करें, और तिली का तेल या रोगनगुल से कुल्ला प्रातःकाल कर लिया करें ॥

तालू की सूजन का वर्णन

यह रोग या तो रुधिर की अधिकता से होता है या कफ की अधिकता से। जो रुधिर की अधिकता से होगा तो तालू में पीड़ा और लाली होगी और जो कफ से होगा तो सफेदी होगी पीड़ा न होगी इसमें पहिले मवाद को निकालें और जो कुल्ली ऊपर के पाठ में लिखी गई है मवाद के अनुसार करें ॥

सातवां अध्याय

होठों के रोगों का वर्णन

होठों पर सफेदी होजाने का वर्णन

यह रोग कोढ़ से अलग है, इसमें कफ को निकालें. भारी वस्तु न खावें, और खेरी का तेल नाक में डालें ॥

होठ की खुश्की और फटने और छिलके उतरने का वर्णन

इसमें भी वही उपाय करें जो मुख के रोगों में लिखा गया है तथा होठ को हवा न लगने दे माजू, निशास्ता, कतीरा कूट छान कर लगावें और जो दवा लगावें उसके ऊपर अंडे का पतला छिलका जो भीतर होता है चिपका दें. इससे होठ हवा से फटेगा नहीं ॥

होठ के फड़कने का वर्णन

जो रुधिर रगों से होठ में आकर रीह बन जाय और उस से होठ फड़के तो सरारू की फस्द खोलें और भोजन कम खावें और जो वह रीह बहुत गाढा हो तो सिर के फड़कने का जो उपाय है करें और जो मेदे का बिगाड़ हो तो जी मचलावेगा और हिचकियां आवेंगी और वमन आने में नीचे का होठ फड़केगा. इसमें वमन बहुतसी करा डालें ॥

और जो भेजे के बिगाड से होतो, उसके पीछे लकवा और मिरगी होगी. (उपाय) तर वस्तु न खावें पानी थोडा पीवें और ऐसा उपाय करें कि लकवा और मिरगी न होने पावै॥

होठका छोटा होजाना और सुकड जाने का वर्णन

जो तशन्नुज तरी से होतो मवादको निकालै और गर्म तेल मलें. और जो तशन्नुज खुश्क से होतो उसका उपाय कठिन है है बच्चा को जो यह रोग होजाता है वह खेंचने और बांधने से अच्छा होजाता है ॥

नीचे के होठपर अधिक मांसउत्पन्न होजानेका वर्णन

रुधिर और वादी का मवाद निकाले, और मसूर या मुरदासंग का मरहम लगावे. और मवाद निकालने के पीछे रंग इस मांसका काला होतो पछने लगावें और सिरका मलें और जो रंगलाल हो तो कुछ उपाय न करें ॥

होठकी सूजन का वर्णन

जो रुधिर की अधिकता से हो तो फस्द खोलें और लगावें और रसौत को हरी मकोय के रस में घोलकर लगावें यह उपाय गर्म सूजन में बहुत लाभदायक होगा परंतु यह लेप इस रोग के होते ही लगावें और अंत में बादाम के तेल का मरहम लगावें ॥

होठपर फुन्सियां होजाने का वर्णन

इस में मवाद निकालें और जो घाव पडजाय तो लेप और मरहम लगावें ॥

होठमें घाव पडके पीव बहना

इसमें सफेदा का मरहम लगावें अथवा माजू और मुर्दासंग को कूटकर मोम और तेल आदि मिलाकर लगावें।

होठमें घाव पडके फैलतेजाना

इसका वह उपाय करें जो मुंह के आने में वर्णन हुआ है जब होठ में कोई विगाड हो तौ उसको पहिचानकर उपाय करना चाहिये जो गरमी से होतो-नर्म कपडा हरे धनिये का पानी, हरेवारतंग का पानी, हरीकासनी का पानी और गुलाव में भिगोकर वर्फ से ठंडा करके होठपर रक्खें, कपूर और चन्दन को ईसवगोल का लुआव और गुलाव में पीसकर लगावें. सूखने नदें॥ और जो ठंड से होतो मुश्क, जुन्दवेस्तर, अकरकरा, चमेली और नरगिस का तेल लगावें॥

और जो खुश्की से होतो रोगन बदाम लुआव ईसवगोल आशजो. शक्कर मिलाकर पिलावें और रोगनवनफशा रोगन कद्दू आदि में मिलाकर लगाया करें।

और जो तरीसे यह रोग होतो लकवे का उपाय करें और जो मवाद नहो तो भी फस्द और जुल्लाबदें।

आठवां अध्याय

दांतो और मसूडों के रोगों का वर्णन

दांतों की पीडा का वर्णन

जो दांतोंमें पीडा गरमी से होतो ठंडे पानी से थम जायगी और जो सरदी से होतो गरम पानी से और जो कोई विगाड मिजाज में गरमी से विना मवाद के होतो सिरके और गुलाव से कुल्ला करें और ठंडे विगाडमें वायविडंग को औटाकर कुल्ली करें और जो किसी मवाद से होतो उस मवाद को निकालना चाहिये और जो पेट भरे पर पीडा होतो कारण इसका मेदे में विगाड होगा. उस समय मेदे का मवाद निकालें और हज्म करने वाली औषधें दें, और भोजन में धनिया वहुत डालें. इस में कै कराना नहीं चाहिये. और जो दर्द एक

जगह से दूसरी जगह फैलता और फिरता होतौ वातसे होगा पहिले इसमें मवाद को निकालैं फिर सोंफ अनीसून और जीरा इन को औटा कर कुल्ला करें ॥ जो कीडे पडने से दांत में पीडा होतो दांत में पहिले छेद पडा होगा. इस में गन्दना के वीज, खुरासानी अजवायन और प्याज के वीज कूट छान कर मोम में मिला कर आग में जलावै और धूंआ उसका नरकुल की राह से दांत को पहुंचावैं ॥

गन्धकका अर्क पीडामें दांत पर डालना लाभदायकहै परन्तु और दांतों पर लगने न पावै क्योंकि यदि और किसी दांत पर लग जायगा हानि कर होगा जो ठण्ड से दर्द होतौ दाग दैना अति लाभदायक है। चाहिये कि कई वार इस उपाय को करें. परन्तु ऐसा न होकि दाग और किसी दांतपरलगजाय

जो दातों के हिलने से पीडा और दांत थोडे हिलते हों तो उनको पुष्ट करै. और जो बहुत हिलते हों तो उन को निकलवा डालें, परन्तु पहिले जड को ढीला करलें, नहीं तो आंख को हानि पहुंचेगी और पीडा के थमने के लिये अकरकरा. अफीम कुन्दर की झाडन पीस कर स्त्री के दूध में मिला कर दांत पर लगावै।

दांतोंके कुन्द होजाने का वर्णन

जो खट्टी या कसैली वस्तु खाने से दांत कुन्द हो गये हों तो मिजाज में कुलफे का साग या वीज चवावें और गर्म रोटी दातों में दावै और जो केवल गरमी से हो तो कडवी वादाम और जोजाहिन्दी चवावै और जो कोई भीतरी कारण हो तो खट्टी डकारें आवैंगी और मुखका स्वादखट्टा होगा और थूक बहुत आवैगा इसमें कफ या वादी का मवाद वमन द्वारा निकालें, क्यों कि मवाद का मेदे से वमनं के साथ निक-

लना सहज है और दर्द नहोने से कोई मवाद भी दांतों पर नहीं गिरसकता

दांतोंकी आब जातीरहनेका विषय

इस रोगमें हर प्रकार की वस्तु खाई और चवाई नहीं जाती इसमेंपहिले मवादको निकालै और बकरीकी तिल्ली भूनकरगर्म गरम दांतों पर रक्खें. और जो मिजाज में कोई बिगाड गरमी से होतो रोगनगुल और काफूर से कुल्ला करै।

दांतोंके टूटने और खोखले होजाने कावर्णन

इसमें भेजे को मवाद से साफ करैं, और रसोत, माजूफल अकरकरा इनका मजंन बनाकर दांत पर मलै। और जो यह रोग दांतों की तरी जाते रहने से होतो दांत नीले पड जायगे इसका उपाय नहीं हो सक्ता परन्तु दांतो के थाम्मने के लिये तर औषधें दें।

हफर का वर्णन

इस रोग में दांत की जडमें एक पीला हरा या काला कपडा सा उत्पन्न होजातीहै और छीलने से नहीं छिलता जो मवाद अधिकहो उसें निकाले फिर लोहे की नैहरनीसे उसेकाट डाले और नमक समन्दरफेन दुरमना जलाकर मलै इससे रहा सहाजाता रहता है और फिर उत्पन्न नहीं होता॥

दांतो के रंग बदलजाने का वर्णन

जो दांत का रंग पीला होतो पित्त की अधिकता होगी और जो नीला होतो बादी की और जो चूने का सा रंग होतो कफ की अधिकता होगी मवाद के अनुसार उसे निकालैं पी लापन में मसूर सिरकेके साथ मिलाकर मलै और काले रंग में किब्रकी जड रोगन गुलके साथमिलाकरमलें और सफेद में मस्तगी का तेल मलै।

दांतों के हिलने का वर्णन

जो बच्चों और बूढों को होतो उसका उपाय न करें क्योंकि उसका कारण उनकी अवस्था है परन्तु इसके सिवाय भीतरी या बाहरी कारण से होतो उसका उपाय करना चाहिये ॥ बहुधा दांत तरी की अधिकता और रुधिरके बिगाडसे हिलने लगते हैं इसके बिगाड में फस्द सराऊ और चाररग की खोलें और ठुड्डी पर पछने लगावें. और मसूढों पर जोंक लगाना लाभदायक है. और फिर दांतों के पुष्ट करने वाला मंजन मलै और जो इससेभी फायदा न होवो दांतोंको उखाड डालना चाहिये, परन्तु पहिले दांत की जडको नश्तर से चीर कर ढीली करले और उस पर इन्जीर के पत्ते उसी के दूधमें मिला के दो तीन दिन मलैंतौ दांत ढीला होजायगा और उखाडने में सुगमता होगी ॥

दांतकालम्बा और मोटा होजाना

जो रुधिर की अधिकता होतो पीडा भी होगी इस में फस्द खोलें और मवाद को निकालें ॥ जो कफ की अधिकता होगी तो पीडा न होगी, इस में कफ को निकालें और उसीके अनुसार कोई उपाय करें ॥ कभी ऐसा भी होताहै कि और दांत घिस कर छोटे होजाते हैं और केवल एक दांत लम्बा दिखाई देता है. यह कोई रोग नहीं है जो इस का उपाय करना होतो उस बडे दांत को भी सोहन या आरी से रगड कर और दांतों के बराबर कर दें ॥

दांतों में खुजली होने कावर्णन

इस में रोगीको दांत रगडने या कोई वस्तु चबाये बिना चैन नहीं पडता. सब शरीर और विशेष कर भेजेका मवाद निकालें और खट्टी तथा तेज और खारी वस्तु न खावें और चूके

की जड़ को सिरके में औटा कर या सिकंजबीन असली को पानी में घोलकर कुल्ला करें ॥

सोते में दांत रगड़ने का वर्णन

जो तरीसे हो तो भेजे से मवाद निकालकर कूटका तेल गरदन पर मले नहीं तो केवल मिजानके ठीक करने से ही आराम होजाता है ॥

लड़कों के दांत सुगमता से निकलने का यह उपाय है कि घी कल्ले परमलें और कड़ी वस्तु न चबानेदें और हरी मकोय का रस रोगन गुल में मिलाकर गुनगुना करके मलें और अंगुली से मसूड़ों पर लगावें इससे जो पीड़ा दांत निकलने में होती है वह नहोगी

मसूड़ोंकी सूजन का विषय

जैसा मवाद हो उसी के अनुसार मवाद को निकालकर वैसी ही औषधों से कुल्ले करें ॥

मसूड़ोंसे रुधिर बहने का वर्णन

जो यह मसूड़ों की निर्बलता से होतो माजू, मसूर और वंसलोचन पीसकर मलें और जो रुधिर की अधिकता से हो तो फस्द खोले और ठंडी औषधों से कुल्ले करें ।

मसूड़ों में घाव और नासूर होजाने का वर्णन

मसूड़ों से पीव निकले तो घाव होगा और जो ऐसे ही चालीस दिन व्यतीत होजांय तो नासूर को सलाई से दागदे ।

दांतोंकी जड़में निर्बलता होनेसे दांतोंकेहिलनेकावर्णन

इस रोगमें दांतकी जड़का मांस कम और सुर्ख होजाता है. गुलाब के फूल. यतूल गुलनार. हब्बुलआस. हरएक चौदह माशे. खरनूबनिबती, सिमाक. अकरकरा, हरएक १७॥ माशे पीसकर मसूड़ों पर जमादे ॥

मसूडों पर बुरामांस उत्पन्न होनेका वर्णन ।

कभी कभी पिछली डाढ के पास सूजन हो के, बुरामांस उत्पन्न होजाता है सुर्मकी फिटकरी पीसकर उस मांस पर मलें तो गल जावेगा ॥

नवां अध्याय

कंठ और श्वासनली के रोगों का वर्णन

कव्वे (काक) की सूजन का वर्णन ।

जो मवाद अधिक हो उसी को निकालें इसके पीछे रुधिर और पित्त की अधिकता में सिरके, गुलाब और हरी मकोय आदि से कुल्ला करें और कफ की सूजन में कांजी शिकंजवीन और राई पानी में औटाकर कुल्ला करें और बादी की अधिकता होतो अमलतासको ताजे दूधमें घोलकर कुल्लाकरें ॥

कव्वे के लटक आने का वर्णन ।

जो यह रुधिर की अधिकता से हो तो फस्द खोलकर और सिरके और गुलाब के फूल, चन्दन, गुलनार, कपूर को पीसकर कव्वे पर मलें ॥

और जो कफकी अधिकता से होतो कफको निकालें और शहद को पानी मे औटा कर कुल्ली करें और जली हुई फिटकरी और बारहसिंगी नौशादर के साथ पीसकर किसी पतली वस्तु पर रख के कव्वे पर जमाके ऊपर को उठावें ॥ और माजू सिरके में पीसकर या मुलतानी मिट्टी गली हुई सिरके में गूंद के या सरेस सिरके में पिघलाकर और उसमें ईसबगोल मिलाकर सिरके ऊपर तालू की जगह लेप करें जब यह सूख जायगा तो तालू की खाल खिचेगी इससे कव्वा भी ऊपरको उठ आवैगा जो इन उपायों से कुछ लाभ नहो और

गलावन्द होजाने का डर हो तो दस्तकारी करनी पड़े-गी अर्थात् बहुत सावधानी से जितना उचित हो काटडालें परंतु इसके काटने और गलाने में बहुत डर है अधिक कट जाने से शब्दों का उच्चारण अच्छी प्रकार नहीं होसकता।

खुन्नाक का वर्णन

इस रोग में गलेके भीतर सूजन होजाती है और श्वांस रुक-ती है और खाना पीना बन्द होजाता है जो रुधिर और पि-त्त की अधिकता हो तो सरारू फस्द खोलें और जीभ के नी-चे जो रग है उसकी फस्द करें और रुधिर कई बार थोड़ा २ निकालें और जो रोगी निर्बल नहो तो एक बार जितना चा है रुधिरनिकालें और जो पीछे फिर आवश्यकता पड़े तो थोडा थोडा रुधिर निकालें और कब्ज हो तो मवाद को नर्म करके निकालै फिर सिमाक और ठंडी औषधोंसे कुल्ला करें और गर्मी निकालने के लिये ठंडे शर्बत पिलावें और भोजन की जगह आशजौ पिलावें और जो खांसी नहो तो खट्टी वस्तु से कुल्ली करावें और पिलावें जो सूजन बाहर गरदन पर हो आवे तो उसपर पछने या जोंकें लगावै इससे भीतर का मवाद बाहर निकल आवेगा और रुधिर की अधिकतामें पिंडली पर पछने लगावैं यह लाभदायक है जब इस रोग को तीन दिन व्यतीत होजांय तो अमलतास गायके दूधमें घोलकर कुल्ली करावें. जब रोगी बहुत निर्बल होकर हकीम के पास आवेतो विना आवश्यकता के फस्द न खोलना चाहिये जब यह सूजन पकजाय और अपने आप न फूटे तो बुग अरमनी हींग और अबाबील की बीट दूध में घोलकर कुल्ली करावें इससे फूट जायगा. फिर शहद और दूधको मिलाकर कुल्ली करें, कि पीव साफ होजायगा. और भोजन की जगह

यह हरीरा खानेकोदे गेहू की भूसी पानी में भिगोकर छानलें, और उसमें रोगन बादाम डालकर औटावे. और थोडीसी शक्कर मिलाकर हरीरा बनाले ॥

गलेकी पीडा में ठंडी औषध गले पर न मलें परन्तु मवाद निकालने के लिये पीछे बूरे अरमनी. जिफ्त और राई पानी में पीसकर गलेपर लगावैं मवाद भीतर से बाहर खिंच आवेगा और ठुड्डी पर पछने भी लगावें ॥

जो यह रोग कफ की अधिकता से हो तो जुल्लाव पिलावे और मूली के पत्तों के रस में शिकंजबीन घोलकर कुल्ली करै और जो यह रोग बहुत बढजाय तो जीभ के नीचे की रगकी फस्द खोलै और गुद्दीके ऊपर और ठुड्डीके नीचे पछने लगावै

और जो सौदा की अधिकतासे हो तो फस्द बासलीक खोलै और नश्तर लगावै और जुल्लावदे और दूध और अमलतास की कुल्ली करै और मेथी और करमकल्ले के पत्ते कूट के उसके रसमें रोगन नरगिस और बतख की चरबी मिला के गले के चारों ओर लगावें ॥

खुन्नाक कल्बी बहुत बुरा रोग है इस में रोगी अपना मुख-कुत्ते की प्रकार खोल देता है और जीभ बाहर निकल आती है यह गले के उजले की सूजन के कारण से होता है ।

उपाय इसका फस्द और जुल्लाव से करें, और कभी गरदन के जोडों के हट जाने से भी ऐसा होता है. चाहिये कि जोडों को ठीक करें।

एक प्रकारका खुन्नाक और होता है जिसे जन्हा कहते हैं. यह सबसे बुराहै इसमें रोगी के मुख से बात तक नहीं निकल सकती, न कुछ निगल सकता है और जो कुछ पिलाते हैं तो गले में फंदा पाडके नाक से निकल आता है ऐसे समय

में जो गले पर लाल रंग होजाय तो वहुत अच्छा है, उपाय इसका वही है जो ऊपर लिखा गया है।

जब रोगी कोई वस्तु निगल न सके तो गरदन के दूसरे मोहरे पर सींगी लगा कर चूसें उस से खाना उतरने की जगह कुछ खुल जायगी और पतली वस्तु उतरने लगेगी और जब दम रुक जाय तो गले में छेद करवें उस की रीति यही पुस्तक में लिखी गई है।

गले और मरी और कुसवेरैया में फुन्सियां होजाने का वर्णन

मरी में फुन्सियां का चिन्ह यह है कि निगलने के समय पीडा वहुत होगी और खट्टी और तेज और कड़ी वस्तु खाने से और भी अधिकता होगी और कुसवेरैया की फुन्सियों का चिन्ह यह है कि बात करने में और चबाने में धूआं और रेत पहुंचने में अधिक पीडा होगी और निगलते में कुछ न मालूम होगा. फस्द खोले और ठंडे मेवों का पानी पीये और वहुत ठंडा पानी न पीना चाहिये और तेज तथा सूखे भोजन कासेवन न करै और पकने की दशामें मवाद को पकावें और फूटनेके पीछे साफ करने का उपाय करें, जैसा कि खुनाक में लिखा गया है॥ और गले में जो फुन्सियां पडें तो यही करली करें जो खुनाक में लिखी गई है॥

गले में जोंक चिपट रहने का वर्णन

वहुधा ऐसे पानी होते हैं जिन में छोटी. २ जोंक होती है जब विना देखे कोई उस पानी को पीता है तोजोंक गले कीअन्ननली या श्वासनली में चिपट जाती है कभी तालू की राह से नाक की ओर चढकर चिपट रहती है

जो जोंक गले में नीची हो और दिखाई न दे तो आप से आप रुधिर बह निकलैगा और बेचैनी होगी ॥

और जो कुसवेरैया में चिपटे तो हरदम खांसी आवेगी और जो नाक के पास चिपटै तौ नाक में रुधिर वहैगा. और दिमाग बन्द होजायगा और कभी खखार के साथ मुंह से रुधिर निकलैगा ॥

जो गले में ऊपर को दिखलाई देतो पहिले मोचने से सिर उसका दबोचकर थोड़ी देर ठहरे फिरवह मुंह खोलदेगी तब उसको निकाल लें, और जो दिखाई न देती हो तो काली मिट्टी एक पोटली में बांध के मुंह में गले के पास ले जांय यह मिट्टी की सुगन्ध से पोटली में चिपट जायगी फिर उस पोटली को निकाल ले ॥

और जो तालू में चिपटी होतो करेला का रस और कुटकी सिरके में औटाके नाकमें डालें, जो इस से जोंक पेटमें जा पडे तो जल्दीसे वमनकरादें. और जो इससेभी न निकलेतो जुल्लावदें

पानी बहुत सावधानी के साथ देख कर और छान कर पीना चाहिये ॥

सुई निगलजाने का वर्णन

चुम्बक पत्थर को गुलावमें पीस कर विनाकुछखाये पिलावे, और घडी भर पीछे जुल्लावदें. और फिर मेदेको ठीक करें॥

मरी के भिचजाने का वर्णन

इस में पतली वस्तु तो गले से नीचे नहीं उतर सकती, और कडी वस्तु उतर जाती है इसमें अयारिज खिलाकर बलगमको निकालें, और अनीसून कुन्दर, सुम्बल. लालबहमन. और सफेद बहमन औटा के और छानकर थोडा २ पिलावें और ठुड्डी के नीचे पछने लगाकर जुन्दवेदस्तर और शिकंजबीन मलें

नरखरे के ढीले होजाने का वर्णन

चिन्ह उस का यह है कि सांस नहीं लीजाती या बिलकुल वन्द होजाती है ॥

इसका उपायवही है. जो ऊपरके पाठमें लिखा गयाहै और जब सांस बिलकुल न ली जाय तो जल्दी से गले में छेद कर के लोहे या तांबे या पीतल की नली उस में अटकादें- कि रोगी उस में से सांस लेवे और फिर उस का उपाय करें ॥

मरी में खुजली होने का वर्णन

वमन करावें और पुराने सिरके से कुल्ली करें. और दूध और शक्कर एक २ घूंट करके पीयें ।

कुसवेरैया के फडकने और कांपने का वर्णन

फडकने का चिन्ह यह है कि बात करने में हर घडी रुकावट मालूम होगी, और कांपने का चिन्ह यह है कि बात करने में कपकपी मालूम होगी. जैसा कि बूढों को होता है, इस का उपाय वही है जो एशे. और इख्तलाज का उपाय है, और इस में कुल्ली कराना भी लाभदायक है ।

डूबे हुए के उपाय में

जब आदमीको पानीसे निकालें और उसे होश न हो परन्तु दम आता होतो उस को उलटा लटका कर पेट उसका दबावें कि पानी निकल जाय और मिर्च और सोंठ सिरके में औटा के उस के मुंह में टपकावें कि होश में आवें इसके पीछे हरीरा बेसन और दूधका दें कि फेफडा ठीक होजाय और सांस आती जाती नहीं है तो जाने कि वह मरगया ॥

गला घोंटे हुए और फांसी दियेहुए का उपाय

जो दम आता जाता देखें तो जल्दी से फन्दे को काट दें.

फिर देखै कि उसके मुखमें कफहै या नहीं जो नहो तो सरारू कीफस्द खोलदें. और तलवों में राई मलें जब उस को होश आ जाय तो रोगन बनफसा और गर्म पानीसे कुल्ला करावै और जो मुंह में कफ पाया जाय तो जीने की आशा नहीं ॥

उसरउलबला का वर्णन

इस रोग में कठिनता से निगला जाता है. जो यह गले के तंग होजाने से हो तो खुनाक और मरी के भिच जाने का उपाय करै जैसा ऊपर लिखा गया है और जो मरी में कोई विगाढ होजाने से यह रोग होतो कारण के अनुसार उस बिगाड को दूर करै और दोनों कंधों के बीच में लेप करै. इस लिये कि मरी पीठ से और श्वासकीनली छाती से मिलीहुई है

मरी की सूजन का वर्णन

जैसा मवाद हो उसी के अनुसार उसे निकालें और वैसेही शरबत पिलावें ॥

मरीमें घाव पडजाने का वर्णन

इसका चिन्ह यह है कि मरीकी जगह पीडा होगी और तेज और खट्टी वस्तु के खाने में दुःख होगा और चिकनी वस्तु भलीभांति निगली जायगी और मरीकी सूजन के चिन्ह इससे विपरीत हैं और घाव कभीर फूटजाने के पीछे पडा करता है और कभी विना सूजन के गर्म मवाद के कारण पडजाता है उपाय इसका यहहै कि सफेद मोम रोगन गुलमें पिघलाकर एक एक घूंट करके पिलावें परन्तु इससे पहिले दो तीन दिन शहद और दूध और शक्कर मिलाकर पिलावें कि घाव साफ होजाय ॥

आवाज बन्द होजाने और धीमी पड़जाने का वर्णन

इस में पहिले यह देखें कि नजले से है या गले के किसी वि-

गाड से। जो नजले से हो तो खशखश का शरवत पिलावें और पोस्तखशखश से कुल्ला करें इस से नजला रुकजायगा, और जो गले के बिगाड़से हो तो जैसा उचित हो वैसा उपायकरें॥

कवाबचीनी चवाना. माकला मुनक्का, छुहारा इञ्जीर. चिलगोजा, बादाम, गन्ना. शहद, अलसी के बीज इनमें से हरएक आवाज को साफ करता है॥

नजले के लिये रूमाल गले में लपेटे रहै और सिरको ठंढी हवासे बचावें॥

दसवां अध्याय

छाती और फेफड़े के रोगों का वर्णन

दम का वर्णन

यह रोग बड़ी कठिनता से जाता है और दूर होकर फिर होजाता है. इसकी चिकित्सा में जितनी जल्दी होसके करें जोकफ से हो तो खांसी के साथ कफ निकलेगा और छाती में खर खराहट पाई जायगी इस में पहिले कफ की मुञ्जिश दें, फिर जुल्लाव देकर मवाद निकालें और बहुत गर्म दवा न दें जिस से खुश्की रहजाय या मवाद गाढा पडकर जम जाय और मवाद निकालने के पीछे शरवत जूफा दो तोले गर्म पानी में घोल कर सवेरे और संध्या को सोनेके समय पिलावें और कभी २ मूली के बीज शहद के साथ औटाकर वमन करायाकरें. और जिस समय कफ की अधिकता हो अलसी कुचली को पानी में औटाकर शहद मिलाकर पिलावें. इससे बहुत जल्दी चैन होजायगा और अलसी के तेल में मोम को पिघलाकर छाती पर मलाकरै॥

और जो यह रोग दिलकी गर्मी से हो तो चिन्ह उसका यह है कि नाड़ी और श्वास जल्दी जल्दी और भारी चलेगी और

प्यास बहुत होगी और ठण्डी हवा अच्छी मालूम होगी इसमें बांये हाथ से फस्द वासलीक खोले और नर्म करने वाली औषधें पिलावें और हाथ पांव मलें ॥

और जो यह रोग फेंफडेमें अधिक गरमी होजाने से हो तो नाडी जल्दी जल्दी चलेगी परन्तु भारी न होगी और प्यास बहुत होगी और ठंडी हवा अच्छी मालूम होगी इसमें ठण्डी औषधें पिलावें और चाहै छाती पर लगावै। जो यह रोग छाती के परदों के ढीला पडजाने से हो तो नाडी की चाल धीमी होगी श्वास दुहरी आवेगी जैसी कि रोने में आती है और छाती को सीधाकरे विना पूरी श्वास न आवेगी इसमें फालिज की सी चिकित्सा करें और मेथी के वीज और दाल चीनी. शहद में औटाकर एक एक घूंट पीवें और नरगिस का तेलमले

और जो फेंफडे की खुश्की से हो तो प्यास अधिक होगी और आवाज धीमी निकलेगी और तरवस्तुओं से लाभहोगा इसमें फेंफडे को तरी पंहुचावें और तर औषधें औटाकर उस में रोगीको विठावें और बकरीका दूध पीना अति लाभदायकहै

और जो फेंफडेकी सरदी के कारण से हो तो ठण्डी वस्तुओं से हानि होगी और गरमी के चिन्ह न पाये जायंगे. इसमें फेंफडे को गरमी पहुंचावे और मेथी के वीज औटाकर पिलावे, और गर्म तेलों को मलें ॥

और जो दमा दम लेने की राह में हवा भर जाने से हो तो सूखी खांसी होगी, और कफ न निकलेगा. और वादीकी वस्तु खाने से और वढैगा. और छाती भारी न मालूम होगी उपाय इसका यह है कि वाय को निकालें और जुल्लाव दें. और सोया और वाबूना छाती और वगलोमें मलें और माजून फिलासफा खिलावें ॥ जो यह रोग फेंफडे की सूजन से या जिगर आदि

के परदों की सूजन से हो तो इसका उपाय उन्हीं रोगों में लिखा जायगा ॥

जो दमा खुन्नाक के कारण से हो तो इसका उपाय वही है जो खुन्नाक का है ॥ और जो मेदेकी तरी से होतो पेट भरने पर दम चढने लगेगा और खाली पेट में कम होगा इसमें मेदे से मवाद निकालें और भोजन कमदें और पाचक औषधें खिलावें

एक प्रकार का श्वास रोग बहुत बुरा है. उसमें छाती को सीधा करे विना दम नहीं लिया जाता. और करवट से नहीं लेटा जाता कारण इसका या तो कोई गाढा मवाद है या श्वास आने की राह में सूजन है या छाती के परदों का ढीला हो जाना है, उपाय हर एक का ऊपर लिख चुके हैं ॥ इसका नाम इनकसाबुल नफस है ॥

खांसी का वर्णन

जो यह फेंफडे की गरमी ठंड और तरी या खुश्की से होतो पहिचान उसकी लिख चुके हैं उस कारण को दूर करें ॥

और जो रुधिर की अधिकता से हो तो नाडी भारी होगी और श्वास की हवा गर्म होगी और मुख का रंग लाल होगा इस में बासलीक की फस्द खोलें. और ठंडी औषधें पिलावें।

और जो जिगर की गरमी से हो तो ठंडी औषधें दें और नुकूअ मुलय्यन पिलावें।

और जो कोई पतला मवाद भेजे से गले में उतरे तो गले में सरसराहट होगी और खांसी में कफ न निकलेगा, और रात को सोते में अधिक हो जायगी, इसमें नजले को रोकें, और पोस्त खशखाश को औटा कर उससे कुल्ला करें. और बबूल का गोंद मुख में रक्खें ॥

और जो भेजे से फेंफडे पर मवाद गिरके मांदा होजाय तो बडे जोर की खांसी से कफ निकलेगा, और छाती भारी मालूम होगी और इससे पहिले जुकाम हुआ होगा इसमें जूफा, इन्जीर, मेथी के वीज और मुलहटी इनको पानी में औटाकर पीवै, और मुलहटीका सत, काली मिरच और शक्कर. वरावर लेकर गोलियां वनाकर मुखमें रक्खे ॥ और जो फेंफडे और छाती में अधिक तरी होजाने से होतो खांसी में लसदार कफ निकलेगा और छाती के भीतर खरखराहट होगी. यह वहुध बूढों और तर मिजाज वालों को होता है, इसका उपाय वही है जो कफज श्वास का है ॥ और जो फेफडे में धूंआं या गर्द पहुंचने या चिल्लाने से खांसी हो तो उस कारण को दूर करै और तर और नर्म वस्तु खावै और टूंडी और गुदा पर घी लगावै । और जो खांसी किसी और रोग के कारण से होतो उस रोग की चिकित्सा करने से जाती रहेगी

जो फेंफडे में फुन्सियां पडजानेसे खांसी होतो नाडी जल्दी जल्दी चलैगी और पेशाव में जलन होगी और ठंडी वस्तुओं से आराम मिलेगा इसमें फस्द खोले और छातीपर पछने लगावें और पित्तका जुल्लाव दे फिर जो उपाय गले की फुन्सियों का है वही इसका करै ॥ जो मेदे की तरी से होतो मेदेसे मवाद निकालें और भोजन कम दें । जो फेंफड़े में वादी आजाने से खांसी हो तो उस में कफ काला और नीला निकलेगा और इसके अतिरिक्त अन्य चिन्ह वादी के पाये जायगे. इस में गेंहूकी भूसी का हरीरा शक्कर या शहद डालकर पिलावें और मुन्जिश देकर वादी का जुल्लाव दें ।

और जो नरखरे में पानी या और कोई वस्तु जापडे और उस से खांसी होतो जवतक वह वस्तु वहांसे दूर नहोगी खांसी न थमे

गी इसके उपाय की आवश्यकता नहीं है परन्तु कभी ऐसा होता है कि भारी वस्तु जा पडने से मरने का डर होता है ॥ ऐसे समय में छाती और गले को सहलायें और वमन करावें इससे वह वस्तु निकल आवेगी ॥

मुखसे रुधिरनिकलने का वर्णन

इसमें पहिले यह देखना चाहिये कि रुधिर मुख के भीतर से आता है या भेजे से या गले के अन्दर से आता है जो मुख से आवेगा तो थूक के साथ निकलेगा।

और जो भेजे से आवेगा तो खखार के साथ निकलेगा और उसके निकलने से सिर हलका होजायगा। और जो गलेसे आवे तो विना खांसीके निकलेगा और श्वासकीनलीका रुधिरकफ और खांसी के साथ निकलेगा और छाती में पीड़ा होगी और फेंफडे का रुधिर वहुत लाल होता है और खांसी भीहोती है परंतु पीडा नहीं होती। और छाती का रुधिर कम और फुटकीर सा निकलेगा और खांसी वहुत होगी और घाव की जगह पीडा होगी और चित्त लेटने में खांसी और पीडा अधिक होगी ॥

जो भोजन की नली या मेदे या जिगर या तिल्ली से आता हो तो जिस जगह से आवेगा उस जगह कोई बिगाड पाया जावेगा और उसके साथ वमन भी होगी। जो मुख से रुधिर निकले तो, आसके पत्तों, गुलनार, माजू और फिटकरी आदि कब्ज करने वाली औषधों से कुल्ला करें।

और जो जोक के चिपटने से रुधिर आवे तो उसका उपाय ऊपर लिखे अनुसार करै ॥

जो भेजे से रुधिर आवे उस में फस्द सरारू करे, और गुद्दी पर पछने लगावें और ऊपर लिखी हुई वस्तुओं से कुल्ला करें

जो कण्ठ और श्वास की नली से रुधिर आता होतो वही कुल्ला करें, और कुर्सनफसउल्लदम मुखमें रक्खें और फस्द भी खोले परन्तु श्वास की नली का घाव कठिनतासे जाताहै और भीतर के परदे के घाव का उपाय हो सक्ता है ॥

जो फेंफडे से रुधिर आता हो तो फस्द साफिन और वासलीक खोलें और पिंडली पर पछने लगावें, और जो आवश्यकता हो तो, अकाकिया, कुन्दर. माजू, गुलनार, बबूलका गोंद गिले अरमनी और अफीम बराबर लेकर पीसकर मलें, परन्तु यह देख लेना चाहिये कि फेंफडे में सूजन तो नहीं है ।

और जो छाती से रुधिर आता हो तो फस्द वासलीक खोलें और कुर्सनफस उल्लदम मुख में रक्खें और खिलावें- और छाती पर लगावें । छाती का घाव जल्दी अच्छा होजाताहै और फेंफडे का घाव बहुत बुरा है ।

और जो रुधिर मरी और मेदे आदि से आता हो तो उसका उपाय आगे लिखा जायगा ।

इस रोग के सब प्रकारों में धोया हुआ शादना ४॥ माशे खुरफे या बार तंग के पत्तों के रस के साथ देना और खुरफे की पत्ती खाना और चबाना अति लाभदायकहै यह परीक्षा किया हुआ है ।

जब रुधिर किसी जगह फेंफडे पर गिरे और उसके साथ खांसी न होतो सिरके और गुलाब से कुल्ला करावें. और थोडा पिला भी दें और जो खांसी अधिक हो तो सातर शहद में मिलाकर चटावै या इन्जीर की लकडी जलाकर पानी में घोलकर दें और हाशा (एक प्रकार का पोदीना) मिलाले तो लाभदायक होजायगा ।

मुख से पीव निकलने का वर्णन

जो यह फेंफड़े की सूजन के फूट जाने या सिल आदि से होतो उपाय इस का आगे लिखा जायगा और जो गले और मुख के भीतर से आवै तो खुन्नाक का रोग पहिले हुआ होगा और इनस्थानों में सूजन होगी इसका उपाय पहिले लिख चुके हैं।

परन्तु जो सूजन के फूटने के कारण से पीव छाती से आवै तो मवाद को उन औषधों से पतला करें जो कफकी खांसी में लिखी गई है इस से मवाद पतला होके टपक जायगा और मोम को बाबूनाके तेलमें पिघलकर मलैं और कोई ठण्डी वस्तु और कब्ज करने वाली वस्तु कभी न खावें और मवाद के पतला करने के लिये जूफा. हाशा. इन्जीर और मुलहटी औटाकर पीना अति लाभदायक है और यह औषध हर परदे की सूजन में चाहै वह छाती की हो या फेंफडे की और फूट गई हो लाभ देगी॥

जानना चाहिये कि छाती का मवाद फेंफडे में उतर कर नरखरे की राह मुख से निकलता है सिवाय इसके और कोई रीति छाती के मवाद निकलने की नहीं है॥

फेंफड़े की सूजनका वर्णन

जो सूजन रुधिर या पित्त या खारीकफ से होतो तप बहुत होगी श्वास न ली जायगी छाती भारी होगी पीडा होगी गालों पर लाली होगी और प्यास बहुत होगी किन्तु इन चिन्हों में मवाद के अनुसार कमी और अधिकता होती है इस में फस्द बासलीक खोलै और जो रुधिर की अधिकता होतौ पहिले फस्दखोलै इसके पीछे मतबूख मुलय्यन से मवादको नर्म

करें. और जो नजले से सूजन होतो फस्द सराक़ करें।

फेंफडे और छाती और उसके पास में जो सूजन हो उस में तीन दिन से पहिले फस्द खोले, और जिधर सूजन हो उस की दूसरी ओर की फस्द खोलै और जब मवाद गिरने से ठहर जाय तो दूसरी ओर की खोलै अर्थात् जिधर सूजन हो उस ओर की फस्द खोलें।

शरह असबाब नामक ग्रन्थ में लिखा है कि पित्त के रुधिर में जिस तरफ मवाद हो उसी ओर की फस्द खोलनी चाहिये इससे बहुत लाभ होगा क्योंकि यहां सूजन पास होती है॥

फेंफड़े की सूजन में जब तप अधिक होगी तो सूजन की ओरका गाल लाल होजायगा, और भारीपन भी उसी ओर माळूम होगा, और सूजन की ओर लेटने से मुखसे पानी बहुत निकलेगा जो रोगी कमजोर न होतो तीन तीन दिन पीछे फस्द खोला करें. और उसके पीछे मवाद को नर्म करें और मवाद को बाहर खेंचने के लिये छाती पर पछने लगावें और रोग के आदिमें ठण्डी औषधें जो मवाद को फेंफडे पर गिरने से रोकें मलें और इसके पीछे सूजनको पटकाने अर्थात् बिठाने वाली औषधें मलें और जिमाद शोया पीडा को जल्दी से अच्छा करता है॥

विशेष द्रष्टव्य– जिन औषधों में कब्ज हो जैसे कासनी का रस और गाढा करने वाली औषधें जैसे खशखाश और ठंडा पानी इस रोग में नहीं देना चाहिये परंतु जो यह सूजन पित्त से होतो उस में यह औषधें दे सकते हैं॥

इस रोग में छाती को मवाद से साफ करने का उपाय करें और जो तपके लिये ठंडाई पिलानी होतो माउल असल और शर्बत गुलाब और आशाजौ दें और खीरे और लौकी

तथा तरबूज का पानी भी दे सकते हैं क्योंकि यह साफ करते हैं और इन में कब्ज नहीं है, और शिकंजवीन जो बहुत खट्टी न हो अति लाभदायक है और जब श्वास लेनेमें रोगी हांपने लगे तो लुआब ईसबगोल पतला करके कन्द और शरबत गुलाब के साथ एक एक घूंट पिलावें और गुन गुने पानी से छाती और पसली पर तरी दें जब तक श्वास ठिकाने से होजाय और ठहर जाय ।

जहां कहीं सूजन होती है या तो मवाद आपसे आप पक कर थूक के द्वारा दूर हो जाता है या पीप पड़ जाती है तथा वह स्थान कड़ा पड़ जाता है सूजन पटकने के चिन्ह यह है कि रोग में प्रतिदिन न्यूनता मालूम होगी और थूक सुगमता से निकलैगा ॥

और पीब पड़ने के चिन्ह यह है, कि रोग बढ़ता जायगा, और जिस दिन मवाद पकैगा उस दिन बहुत अधिकता होगी परन्तु तप और पीड़ा ठहर जायगी और भारीपन बढ़जायगा और जिस दिन सूजन फूटेगी उसदिन जाड़े के ज्वर का वेग होगा और सूजनके कड़े होजाने के चिन्ह यह हैं कि बहुधा रोगों में कमी मालूम होगी परन्तु श्वास रुकेगा और सूखी खांसी बढ़ैगी और भारीपना भी रहेगा और कभी यह सूजन कड़े पड़ने के पीछे भी पकके फूटजाती है. परन्तु ऐसा बहुत कम होता है, जिस समय सूजन फूटजाय और कफ की जगह पीब निकलै तो बहुत अच्छा है और कभी ऐसा होता है कि सूजन भली भांति नहीं पकती परन्तु किसी कारण से कच्ची फूट जातीहै और केवल रुधिर निकलता है ऐसे समय में शीघ्रता से फस्द खोलें और वह उपाय करें, जो मुख से रुधिर आने के प्रकरण में लिखे हैं ।

जो फेंफडे की सूजन ठण्ड से हो अर्थात् कफ या वादी से तो कफज के चिन्ह यह हैं, कि मुख से थूक बहुत निकलेगा और भारीपना और श्वासका रुकना बहुत होगा और गर्म सूजन के चिन्ह कोई न होंगे परन्तु हलका रहेगा और गर्म सूजन में ज्वर अधिक होगा ।

जो वादी से हो तो सूखी खांसी होगी और श्वास कठिनता से लीजायगी और जो पहिले गर्म सूजन हो फिर कडी होजाय उसका लक्षण यह है कि कडे पडने से पहिले गर्म सूजन के चिन्ह पाये जांयगे ॥

कफज सूजनमें पहिले मवादको नर्म करै और ऐसी औषधें मलें जो ठण्डी हों और मवाद को फेंफडे पर गिरने से रोकें और थोडे दिन पीछे जब ज्वर कम होजाय तो कफ की मुंजिश पिलाकर जुल्लावदें और जो वादी से हो तो खत्मी के बीज और अलसी के बीजों का लुआब बादाम के तेल में मिलाकर एक२ घूंट पिलावें और लडकी की माताका दूध और नर्म करने वाली औषधें मलें परन्तु वातज सूजन का उपाय बहुत कम होसकता है फेंफडे की सूजन में कभी पथरी पडजाती है, खांसी रुक जाती है और कभी इससे सिलका रोग होजाताहै॥

सिल का वर्णन ।

फेंफडे में घाव पडजाने का नाम सिल है लक्षण उसका यह है कि इसमें तपेदिक अवश्य होजाती है खांसीमें पीव निकलती है पीव और कच्चे कफके पहचाननेमें धोखा होजाता है इसलिये उसकी पहिचान याद रखनी चाहिये कि पीव पानी में वैठ जाती है और आगपर जलाने से उसमें से गंध निकलती है, और कफ पानी पर तैरता है और आगपर रखने से गंध नहीं देता इस रोग का उपाय नहीं हो सकता परन्तु जो उचित

उपाय के साथ दैव योगसे दूर हो जाय तो कुछ अचम्भा नहीं है इसमें शीघ्रता से फस्द बासलीक़ उस ओर खोलें जिधर पीडा न हो और जो फस्द न खोल सकै तौ छाती पर पछने लगावें और जो इस में नजला भी हो तो फस्द सरारू भी खोलें और आशजों में केंकडे पकाकर खिलावें और तपेदिक का उपाय करें और हकीम बूअली ने लिखा है कि इस रोग में जहां तक नया गुलकन्द खिलाया जाय खिलावें यहां तक कि रोटी के साथ भी वही खिलाया जाय परन्तु इतना न खिलावें कि दस्त आने लगें क्योंकि इस रोग में दस्त बहुत बुरे हैं। इस में सफूफ सरतान, शरबत उन्नाब या शरबत खशखाश के साथ चटाना उत्तम है ॥

सफूफ सरतानके बनानेकी विधि केंकडेको जलाकर राख करलें और वह राख १० माशे बबूल का गोंद और गिले अरमनी हर एक ५ माशे, सफेद खशखाश और काली खशखाश हर एक २ माशे कतीरी ३ माशे पीस के सफूफ बनावें और ७ माशे सेवन करें ॥

छातीके परदों, झिल्लियों और बधनों उजलों के आस पासके जोडोंकी सूजनोंका वर्णन।

(१) जो सूजन आगेकी पसलियोंके भीतर झिल्ली में या उस परदे में जो भोजनकी नली मेदे और जिगर के बीच में तना हुआ है पडे उसको जात उल जनब खालिस और जात उल जनब सही कहते हैं (२) जो सूजन भीतरके सब परदों में हो उसका नाम खानिका है (३) जो सूजन पसलियों के बीच के उजलों में हो उसको जात उल जनब गैर सही और गैर खालिस कहते हैं (४) जो ऊपर की पसलियों की झिल्लीमें हो तो उसका नाम इन्हीं नामों से रक्ख लिया जाता

है (५) जो पीठ की पसलियोंके भीतर की झिल्लीमें सूजन हो उसका नाम शोसा है (६) जिगर और मेदे के बीच में जो परदा है उसकी सूजन को वरसाम कहते हैं (७) जो झिल्ली छाती से मिली हुई है उस की सूजन को जात उल सदर कहते हैं (८) और इस झिल्ली के साम्हने पीठ से मिलीहुई जो झिल्ली है उस की सूजन का नाम जातउलअर्जहै

जो उपाय फेंफडे की सूजनमें लिखा गया है वही इसका भी करें सूजनकी जगह पीडा से मालूम हो जायगी. अर्थात जिस स्थान पर पीडा होगी वहीं सूजन भी होगी । जात उल सद्र में लेप छाती पर और जात उल अर्ज में कन्धों के बीच में लेप करें । इन सूजनों और फेंफड़े की सूजनों में यह अन्तर है कि फेंफडे की सूजन में नाडी लहराती हुई चलती है और श्वास वहुत रुकता है ओर इन सूजनों में नाडी ऐसी नहीं होती और श्वास भी कम रुकता है और सरसाममें होश और ज्ञानजाता रहता है इसी कारण से इस में वहुत मनुष्यों को सरसाम का धोखा होजाता है ॥

कभी ऐसा होता है कि जिगर की सूजन में श्वास रुकने लगता है इस कारण से जातउलजनव का धोखा होताहै परन्तु जातउलजनव और जिगर की सूजन में यह अन्तर है कि जिगरकी सूजन में रंग पीला होजाता है और खांसी नहीं होती और जिगरकी ओर पीडा होती है और पेशावगाढा आता है ॥

जव मवाद इन सूजनों का पकजायगा तो जो थूक मुख से निकलेगा उसमें पकने के लक्षण होंगे उस समय चाहिये कि ऐसा उपाय करें जो पीव वनने से पाहिले सव मवाद खखार द्वारा निकल जाय इसलिये गर्म पानी, आशजौ शक्कर और

शहद गुनगुना करके पिलाना चाहिये इससे मवाद थूक बनकर निकलआवेगा और रोगी को उसकरवटसे सुलावें जिधर सूजन है इससे फेंफडा सूजन के पास आजायगा और पके हुए मवाद को चूसके निकाल देगा ॥

जातउलजनव दो प्रकार का है एक हकीकी और दूसरा गैर हकीकी । हकीकी तो वह है जो सूजन हो और गैर हकीकी वह है कि गाढी रीह पसलियों के आस पास और झिल्लियों में रुकजाय और पीडा होने लगे ॥

रीह फसने के कारण आगे नहीं बढ़सकती इसलिये जात-उलजनव रीह में भारीपन और ज्वर नहीं होता और जात-उलजनव हकीकी में यह दोनों बातें पाई जाती हैं इसकी चिकित्सा यह है कि रीह में पटकाने वाली औषधें लगावें और फस्द उसेलम खोलना शीघ्र लाभदेता है

छाती के आस पास पीव रुकजानेकावर्णन

यह इस प्रकार होताहै कि फेंफडे आदि की सूजन पकके फूटजाती है और पीव छाती के आस पास फेंफडे से बाहर गिरती है और गाढे होने के कारण वहीं फस कर रहजाती है न फेंफडा उसे चूसकर निकालताहै और न मूत्र और मल द्वारा निकलसकती है लक्षण उसका यह है कि जिस अंग में पीव होगी उसमें पहिले सूजन मालूम होगी और फिर आमाशय की ओर पीव आवेगी इसमें तपदिक अवश्य होता है इन्जीर. सूखाजूफा, लिहसोडे, मुलहटी, हंसराज, मुनक्का. पानी में औटाकर रोगन बादाम और मिश्री मिलाकर पिलावें कि वह पतला होकर पेशाब द्वारा निकल जाय और वह औषधि जो गुर्दे और मसाने को धोवें प्रयोग करें और जो पीवदस्त में निकले तो नर्म करने वाली औषध दें और जो दोनों हो तौ कभी वहदें और कभी वह परन्तु ऐसा कम होता है ॥

छाती का ठण्ड पा जाना और जकड़ जाना

यह रोग यातो बाहर से अधिक ठण्ड पहुंचने से होगा या भीतर से होगा और उस में दम रुक कर आवेगा (उपाय) सातर और हींग आदि के तेल में जुन्द वेदस्तर मिला कर मलें और और गर्म औषधें औटा करें धारें और हींग माय उलअस्ल में मिला के एक २ घूंट पिलावें और हरीरा और माउल अस्ल भोजन में दें।

कभी यह रोग अफीम पीने और सीसे के पिघलने के धूंए के पहुंचने से होजाताहै इसमें वह गर्म औषधें दें जो खांसी के लिये हैं और गर्म घासों के जोशादे से सेकें॥

जो अफीम पीने से हो उसमें केसर का तेल छाती पर मलें. और जो सीसे के धूंए से हो तो कूट का तेल मलना अति लाभदायक है॥

ग्यारहवांअध्याय

दिलके रोगोंका वर्णन

दिलके मिज़ाजका विगड जाना

जो किसी मवाद से हो तो पहिले उस मवाद को निकालें. और फिर मिजाज की संभालकरें और जो फस्द की आवश्यकता हो और कोई हानि भी न हो तो दोनों कन्धों के बीच में पछने लगावें, और मिजाज को ठीक करने और मवाद निकालने में कई बातों का ध्यान रखना उचित है। (१) तो यह देखलें कि कारण रोग का कम है या अधिक (२) रोग एक कारण से है या कई से (३) दिल को कमजोर न होनेदें (४) जो तप हो तो उसका भी ध्यान रक्खें और उपाय करें इस रोग का उपाय शीघ्रता से करें नहीं तो पुराना पड कर कठिनतासे जाता है।

खफकान अर्थात् दिलघबडानेकावर्णन

यह रोग जब बढ जाता है तो मूर्च्छा आने लगती है और ये दो प्रकार से उत्पन्न होता है अर्थात् या तो इसका कारण केवल दिलमें होताहै या शरीरके और स्थान में जैसा मेदा मे जा जिगर, आंतें फेंफडे, और गर्भाशय आदि या सारे बदन में होताहै और जो जहरीले जानवरके काटने से हो वह भी इसी प्रकार में समझना चाहिये ॥

जो इसका कारण दिलके सिवाय किसी और स्थान में हो तो उस स्थान को ठीक करें परन्तु दिल को पुष्ट रक्खें और जो केवल दिलमें होतो मवादके अनुसार उसे ठीक करें और जुल्लाब दें ॥

जो यह रोग दिल के तीव्र होनेसे होतो हरीरा खिलावें ॥

और जो बहुत वमन आने रुधिर निकलने अथवा दस्त आने से दिल कमजोर होजाय और उससे यह रोग हो तो दिल को पुष्ट करने वाली औषधें और भोजन दें ॥ जिस किसी को यह रोग गरमी से हो उसको चाहिये कि गरम स्थान में और गरम हवामें और गर्म शहर में न रहै. नहीं तो अवस्था उस की कम हो जायगी या वमन बहुत हुआ करेगी ॥

तरुनी यशब की कौडी के स्थान पर लटकाना इस रोग में अति लाभदायक है ॥

मूर्च्छा का वर्णन

जब खफकान बढ जाता है तो मूर्च्छा आने लगती है और जब मूर्च्छा बहुत आती है तो मनुष्य मरजाताहै मूर्च्छा तीन प्रकार की होती है ॥

(१) यह कि रूह हैवानी जातीरहै (२)यह कि वह रूह

घुट जाय ।। (३) यह कि उत्पन्न कम हो, और इन तीनों प्रकार में रोगी कमजोर होजाता है ॥ रूहके जाते रहने के भी कई कारण है । (१) यह कि दस्त वहुत आवें या रुधिर अधिक निकल जावे । (२) कोई खुशी अधिक और अचानक हो । (३) चैन और स्वाद अधिक होने से। (४) अधिक पीडा और बेचेनी से रूह जाती रहती है ।

रूह के घुट जाने के कारण यह हैं ॥

[१] किसी मवाद के अधिक होजाने से अधिक मदिरा पीने से और अधिक मोटा होजाने से (२) 'अधिक दुखसे (३) अचानक डरके होने से रूह घुट जाती है ।

रूह के कम उत्पन्न होने के भी कई कारण हैं जैसे दिलमें विगाड होना या वुरे भोजन खाना या वहुत वीमार रहना और भूखा रहना ॥

जो मवाद रगों से दिलमें पहुंचता है वह या तो दिल की रगों में समाता है या दिलके ऊपर रहता है उसका वर्णन पाठ में आवेगा ॥

चाहिये कि मूर्छा में कारण के विपरीत उपाय करें अर्थात् जो मूर्च्छा गरमी से हो तो ठंडी औषधें दिल की पुष्ट करने वाली सुंघावे, जैसे चन्दन, कपूर, आदि और केवडे का अरक गले में टपकावे, और जो ठंड से होतो मुश्क और केसर आदि सुंघावे, और गले में टपकावे और मिजाज के अनुसार लेप करे, और गर्म मिजाज वाले को गुलाव और ठण्डा पानी छाती और मुंहपर छिडकना लाभदायक है परन्तु जो वहुत दस्त आने से शरीर ठंडा पडगया हो और उसके कारण से मूर्च्छा होतो पानी और गुलाव न छिडकना चाहिये, इसमें गर्म रोटी सुंघावे और माउल अस्ल मुंह में टपकावे और गरम तेल ढूंडी के नीचे मले ॥

जो गर्मी की अधिकता से बहुत सा पसीना आकर मूर्च्छा होजाय तो ठंडे पानी या गुलाब से हाथ पांव धुलावे और पसीना बन्द करने के लिये मूरद के सूखे पत्ते या माजू पीस कर शरीर पर मर्दन करे। जो पीड़ा की अधिकता से मूर्च्छा होतो माजून फलोनिया खिलावे, और कूलंज की पीड़ा में भी ऐसाही करे जो यह रोग जी मचलाने या हिचकी से होतो वमन करावे और बहुधा मूर्च्छा में वमन कराना अच्छा है, परंतु जो बहुत पसीना आवे तो न करावे जो जहरीला जानवर के काटने या डंक मारने सेहो तो तिरियाक और विष की दूर करनेवाली औषधें दे और जो गर्भाशय के बिगाड़ से होतो दुर्गन्धित वस्तु सुंघाना चाहिये और गर्भाशय के अन्दर सुगन्ध लगादे हर प्रकार की मूर्च्छा में हाथ पांवमलना लाभ दायक है और जब रोगी चैतन्य होजाय तो कारण के अनुसार उपाय करे॥

मूर्च्छा के लक्षण यह है रंग पीला होजाता है हाथ पांव ठंडे होजातेहैं नाडी होले २ चलतीहै और जो मूर्च्छा अधिक हो तो आखें भी बन्द होजातीहैं मूर्च्छा और सकते में अन्तरयह है कि मूर्च्छा वाला पुकारने से सुनता है और सकते वाला नहीं सुनता जो चिन्ह मूर्च्छा के ऊपर लिखेगये है वह सकते और सबात के रोगमें नहीं होते॥

मौतादिल औषधें जो दिल को पुष्ट करती है यह है याकूत फीरोजा. सोने चांदी के गावजवां और गर्म औषधें यह हैं निर्बिसी. दरूनज अकरब. अम्बर. नरकाचूर. कच्चारेशम. केसर. दोनों बहमन. लोंग. कच्चाऊद. बालंगूकेबीज और पत्ते, छोटी और बड़ी इलायची. रेहां के फूल और कबाबा. तुरंज के छिलके, तेजपात, रासन ठंडी औषधें यह है कहरुवा, बिसद

कपूर. चन्दन. बंशलोचन, गिलेमखतूम. सेव. धनियां. याकूतिं-यां और दवाउलमिस्क भी दिलको पुष्ट करती है जो खुश्की और तरी दोनों प्रकार की औषधें देना चाहै तो उन्हीं में से ठण्डी और गर्म औषधें समझकर मिलादें ॥

जब अधिक गर्मी दिलमें हो या मूर्च्छा हो तो भी बहुत ठंडी औषधें न देना चाहिये ॥

दिलके दोनों कानोंके सूजने का वर्णन

दिलके ऊपर दो वस्तु उभरी हुई हैं जिनमें छिद्र भी हैं और उनमें से हवा दिलको पहुंचती है उन्हें दिल के कान कहते हैं जब कोई रोग देरतक रहताहै रुह जाती रहती है तो भोजन दिल को नहीं लगता और इन में सूजन होजाती है यह सूजन ठण्हे मवादसे होती है । क्योंकि गर्मी कम होनेसे भोजन भली भांति नहीं पकता और वही इससूजन का मवाद बन जाताहै और गर्मी से हो या ठण्ड से दिलके लिये बहुत बुरी है, और गर्मी की सूजनसे तो मनुष्यमरही जाता है औरठण्डी सूजन में उपाय का अवसर मिलता है इस का जल्दी उपाय करना चाहिये नहीं तो रोगी दुबला हो के मरजायगा ॥

छाती भरी रहना. बहुधा मूर्च्छा रहना, उदासी. आखों पर भुरभुराहट और मुख का रंग बहुत पीला होना यह ठण्ड की सूजन के लक्षण हैं ॥

इस में बाबूना. नाखूना. हंसराज. गेहूं की भुसी. पानी में औटा कर छाती को टूंडी तक धारें और पटकाने वाली औषधों का लेप करें और दिल को पुष्ट करते रहें. दिल के ऊपर की झिल्ली में जो सूजन होती है उसमें इन कानों की सूजन से कम दुख और मूर्च्छा होती है ॥

दिल से धूआं उठने का वर्णन

यह किसी मवाद के जल जाने से होता है और जब पुराना हो जाता है तो मूर्छा आने लगती है और बुरी २ बातों के ध्यान होते है. इसमें बादी का मवाद निकालें. और तरी पहुंचावें, इस रोगमें जो रंग रंग के काले दस्त आवें या नकसीर फूटे या बवासीर होजावे तो रोगी जल्दी अच्छा होजावेगा।

जगतल कल्ब का वर्णन

इस रोग में ऐसा मालूम होता है कि दिल को कोई दबोचता है और जब ऐसा होता है तो मूर्च्छा आजाती है और मुंह से झाग निकलते हैं और थोड़ी देर के पीछे रोगी अच्छा हो जाता है इसमें दिल को ठीक करें और दिल और भेजे को पुष्ट रक्खें बादी का जुल्लाब दें. मुफर्रह सगीर और तिरयाक कबीर खिलावें ॥

तकश्शुरकल्ब का वर्णन

इस में दिल छिलता है और पीड़ा भी होती है और जब पीड़ा अधिक होती है तो मूर्छा भी आजाती है. और थोड़े समय पीछे होश आजाता है और मूर्छा के समय पीड़ा की अधिकता से मुंह पर झुरियां सी पड़जाती हैं और सारे बदन से पसीना निकलता है ॥ इस में पहिले कारण को मालूम करें कि मवाद भेजे से आता है या किसी और स्थान से फिर वैसाही उपाय करें। जो पित्त से हो तो पित्त को निकालें. और जो नजला हो तो मवाद निकालने के पीछे खशखाश का शरबत चटावें, और नजले की रोकने वाली औषधें दें ॥

कजाफुल्कल्बका वर्णन।

इस में ऐसा मालूम होता है कि दिल बाहर खिंचा आता है जैसे वमन में होता है. ये रुधिर या पित्त की अधिकता से

होता है जो रुधिर की अधिकता होगी तौ मुंह का रंग लाल होगा और पित्त में पीला होगा इसमें दाहिने हाथ से फस्द बासलीक खोलें और पित्तका जुल्लाव दें और चन्दन का शरवत वेदमुश्क के अरक और गुलाव में घोलकर पिलाया करें और भोजन अच्छा दें और दिलको प्रसन्न करने वाली औषधें पिलावें ॥

दिलके बैठने का वर्णन।

यह रोग दिल में रुधिर या पित्त की अधिकता होजाने से होता है और कभी इसके साथ पीडा और मूर्च्छा भी होती है जो मुंहका रंग लाल हो तौ रुधिर की अधिकता और पीला होय तौ पित्तकी अधिकता होगी मवाद के अनुसार फस्द खोलें और जुल्लाव दें ॥

दिलपर तरीछाजाने का वर्णन।

इसरोग में ऐसा जान पडता है कि दिल पानी में डूबाजाता है और कडकता है यह रोग दिल घबराने के प्रकार में से है, इस में दिल के ऊपर की झिल्ली में कफ इकट्ठा हो जाता है (उपाय) अयारिज खिलावें और गुलाव के फूल वालंगू वालछड आदिका लेप छाती पर करें और रोगी से मिहनत-करावें और क्रोध दिलावें इससे तरी दूर जाती है कभी यह तरी लसदार होकर दिल से चिमटजाती है तो श्वास भली भांति नहीं आता वल जाता रहता है क्रोध आता है और दिलको खुशी नहीं होती, इस में नर्म करने वाली औषधें दे और खुश्की दूर करने के लिये छाती पर मोम रोगन का तेल मलें फिर मवाद को निकाले और दिलको पुष्टकरे सारे शरीर में दिल बहुत उत्तम वस्तुहै इसके उपायमें सुस्ती नहीं करना चाहिये

बारहवां अध्याय

स्त्रीकी छाती के रोगों का वर्णन ।

दूध कमहोने का वर्णन ।

इस रोग के तीन कारण हैं. एक रुधिर की कमी उसके निकल जाने से दूसरे किसी रोग के देरतक रहने से और कभी रुधिर की अधिकतासे भी इसी प्रकार से दूध कम होजाता है कि छाती में बहुतसा रुधिर आकर दूध नहीं बनने पाता तीसरे रुधिर के विगाड से भी दूध कम होजाता है जो रुधिर की कमी हो तो प्रकृति के अनुसार वह वस्तु खायें जो दूध उत्पन्न करें जैसा दूध आदि. और जो रुधिर की अधिकता होतो फस्द खोलें और पछने लगावें और भोजन थोडा दें. और जो मिजाज में कोई विगाड होतो ऐसे भोजन और औषध जो रुधिर को ठीककरें और जो मवाद अधिक हो उसे निकालें ॥ जो दूध पतला और पीला हो तथा स्वाद और घाल उसकी तीव्रहो तो पित्तों की अधिकता होगी और जो वह पानीसा पतला और सफेद और खट्टा होतो कफ की अधिकता जानो और जो मैला और गाढा और थोडा होतो वादी की अधिकता है और जहां कफ और पित्त दोनों मिले हों तो दूध का स्वाद खारी और नमकीन होगा ॥

जो औषध वीर्य को वढाती है वह दूध को भी वढाती है जब खुश्की और दुवले पनमें दूध कम होजाय तो चौपायों का दूध अति लाभदायक है ॥

यह औषध दूधको उत्पन्न करती है गाजर के वीज, प्याज के वीज. शलगम के वीज. मूली के वीज. सोंफ सब वरावरले कर उन सब के वरावर भुने हुऐ चने मिलाकर कूट छान लें

और उसमें से साढ़े सत्रह माशे ताजे दूधके साथ सवेरे पिलावें और जो रातको सफेद चने दूधमें भिगोकर सवेरे छानके और शक्कर मिलाकर पिलावें तो भी लाभ होगा ॥

यह लेप दूधको बढानेवाला है बाकलेका आटा ३५ माशे. बाद रंज १७॥ माशे कूट छानके बादरूज के अरक में घोलके छातिया पर लगावें ॥

दूध बढजाने का वर्णन

इसके कारण कमी के कारणों से विपरीति है इसमें दूध के सुखाने का उपाय करें और वह औषधें पिलावें जो ऋतु धर्म को जारी करें और लाख गुरदसंग रोगन गुलमें मिलाकर छाती पर लगावें और मलें और जीरा और मसूर सिरके में पकाकर लगाना और ईसवगोल के पत्तों का लेपकरना भी लाभदायक है और जब ठण्ड बढजाय तो सुद्दाव के पत्ते और बीज और करम्ब के बीजका लेप करे ॥

छातियों के सूजने और तन जाने का वर्णन

जो यह रोग किसी मवाद से होतो सिरके को गर्म पानी में मिला कर फुकने में भरकर सेकें और हरी मकोय पीसकर लेपकरें और तीन दिन पीछे वह औषधें लगावें जो आगे के पाठ में लिखीगई है औरजो ठण्डे मवाद से होतो अजमोदको कूटकर लेप करें या बाबूनेको सौंफ के पानीमें पीस के लगावें और वही उपाय करें जो और सूजनों का है ॥

छातीमें दूध जमजाने का वर्णन

जब छाती के भीतर दूध जम जाता है तो सूजन उत्पन्न होती है इसका कारण यह है कि यातो गर्मी से दूध गाढा होजाता है, या ठण्ड से जमजाता है और देरतक दूध के न निकलने से भी ऐसा होता है कारण के अनुसार उपाय करें

और जव देर तक दूध न निकलने से या वच्चे के न पीने से या किसी और कारण से ऐसा हो तो छातियों पर गर्म पानी से तरेडा दें और धीरे२ दूधको चुसवावें कि सारा दूध निकलजावे और जो दूध के वन्द होने से छाती पकजाय और दूध का रंग और स्वाद विगड जाय तो सूजन को पकाने के लिये वावूना, अलसी के वीज, मेथी के वीज और खरू के वीज वरावर लेकर चुकन्दर के पानी में अथवा केवल पानी में पीसकर दिन में दो तीन वार छाती पर लगावें और जो सूजन आप से आप पककर फूट जाय तौ अच्छा है नहीं तौ नश्तर लगावें. कभी ऐसा होता है कि नश्तर गहरा नहीं लगता और पीव की जगह नहीं पहुचता और उस से केवल ऊपर का रुधिर निकल जाता है ऐसे समय में दूसरी वार गहरा नश्तर लगामें जिससे पीव निकले फिर घाव का उपाय वही है जो मुंह और जीभ के घावों में लिखा गयाहै क्योंकि छाती में भी पतली और नर्म रगें और मांस हैं जैसे कि जीभ और मुंहमें, जो छाती में गुठली हो जावे तो मोम रोगन वांधें ॥

स्तनों का कुचल जाना

इस में मूंग को सर्व के पत्तों के पानी में पीस कर लेप करें और जो सूजन होजाय तो उसका उपाय करें ॥

फिटकरी को रोगन जैत मिला के शीशे के वासन में रगडें और लगावें तो छातियां वढने न पावेंगी और जो उपाय कि अण्डवृद्धि का है वही इसका भी है ॥

तेरहवां अध्याय

मेदेके रोगोंका वर्णन

मेदेके मिजाज बिगड जानेका वर्णन

जो गरमी से मिजाज में बिगाड हो और कोई मवाद नहोतो थोडा और हलका भोजन पेट में जाकर बिगड जाता है और बहुतसा और भारी नहीं विगड़ता और भली भांति पचजाता है खारी कफ जब मेदेमें होता है तो प्यास बढजाती है और उसमें विशेषता यहहै कि ठण्डे पानी से अधिक होती है और गरम पानी से कम और जो मेदे में पित्त या गर्मी हो तोभी प्यास बढजाती है।

और यह ठण्डे पानी से बुझती है और गर्म पानी से अधिक होजाती है जो आमाशय में केवल गर्मी हो और कोई मवाद न होतो उसे ठीक करें और जो कोई गर्म मवाद हो तो उसे निकालें आमाशय का मवाद वमनद्वारा भली भांति निकलता है और जो किसी स्थान से मेदे में मवाद आता हो तो वहां से मवाद को निकालें बहुधा भेजे और तिल्ली और जिगर से मेदे में मवाद गिरा करता है लक्षण प्रत्येक के यह हैं जो भेजे से गिरै तो नजला होगा और जिगर और तिल्ली से गिरनेमें इन स्थानों में विगाड पाया जायगा जो भेजेके कारणसे होतो फस्द सराक खोलें और जिगर में दाहिने हाथसे फस्द वासलीक या अप्तीलम खोलें कभी ऐसा होता है कि आमाशय पुष्ट और साफहो लेकिन देर में भोजन करने के कारण निर्बल होजावे और मवाद उसमें गिरै यह वात बहुधा गर्म मेदेकी होती है कि भोजन न मिलने से बेचैन होजाता है और कभी भूखकी अधिकता से मूर्छा आजाती है ऐसे मनुष्योंको चाहिये कि प्रातःकाल ही कोई खट्टी वस्तु खालिया करें और पेट

खाली न रक्खें और कभी आमाशय के परत में मवाद के फंसजाने से यही रोग होता है उसमें अयारिज फैकरा खिलाकर वमन करावे और जो उसमें शरबत इफसंतीन या पीली हर्ड मिलालें तो मवाद आमाशय की तह से उखड कर निकल आवेगा ॥

पेट की पीडा का वर्णन

जो यह आमाशय के विगाड से होतो उसका वर्णन हो चुकाहै और मेदेमें सूजन या घाव होतो उस का वर्णन आगे आवेगा और जो वात की अधिकता से होतो पीडा फिरती हुई मालूम होगी डकारें और हिचकियां आवेंगी और पेट बोलेगा और फूला हुआ होगा और जब भोजन मेदे में नीचे उतरेगा तो बाईं ओर पीडा होगी इस में पेट को सेकें और इलायची को गुलाब में औटाकर पिलावें और पोदीना चबावें कि डकार खुलकर आवें और कमूनी खिलावें और जो वात गाढी होतो कफ का जुल्लाव दें और पचाव कराने के लिये उपाव करें पेट पर वारे लगाने से पीडा जल्दी जाती रहती है किसी कारण से पीडा हो उस में शिकंजबीन को गुलाब या पानी में मिला कर पिलाना अति लाभदायक है । कभी ऐसा होताहै कि पीडा पतले या खारी कफ से हो और कोई वस्तु ठंडी दी जावे और कफसे वादी कुछ कमहठे और इस कारण से पीडा में कुछ कमी हो तो जान पडता है कि गर्म मवाद है क्योंकि ठंडी वस्तु से कमी हुई और इसी तरह कभी ऐसा होता है कि मवाद गर्म हो और कोई औषधि गर्म दीजावे और वह धूंऐ को पचावे और वादी को तोडतो धोखा होता है कि मवाद ठंढा है क्योंकि ठण्डी दवा से लाभ हुआ इन

दोनों धोखों से वडी हानि होती है इसी लिये चाहिये कि और लक्षणों पर भी ध्यान रक्खें ॥

अधिक भोजन या तीव्र वस्तु खानेसे पीडा होतो वमन कर के उसे निकाल डालें और कई दिन तक भोजन कम खाय और जो तीव्र भोजन खाने से होतो ऐसी वस्तु खावें जो उस प्रकार की न हो ॥

जो आमशय के निर्बल होनेसे यह रोग होतो लक्षण उस का यह है कि भोजन करने के पीछे पीडा की अधिकता होगी और जब तक वह वमन या दस्तों से निकल न लेगा पीडा नहीं ठहरेगी इसमें वह औषधें दें जो मेदे को पुष्ट करें, और नौशदारू का खिलाना अति लाभदायक है ॥

और जो आमाशय मवाद इकट्ठा होजाने से दुर्बल होजाय तौ उसका लक्षण यह है कि भूखबन्द होजायगी और गर्म मवाद में प्यास और मतली अधिक होगी. इसमें आमाशय से मवाद निकालें और कुर्स कौकब और कुर्स अनीसून दें ।

जो मेदेकी हिस्स वढजानेसे पीडा हो तो पहिचान उसकी यह है कि थोडे कारण से पीड़ा उत्पन्न होजाती है, जैसे भोजन की भाप या बोझ से या वादी गिरने से जो मेदे के खालीहोने के समय तिल्ली से गिरता है और उस से भूख मालूम होती है और ठण्डे पानी पीने से। ऐसे समयमें भारी भोजन या ऐसी दवा खिलावें जो मेदे को कुंद और सुन्न करदें जैसे पोस्त खशखाश को पानी में भिगोकर और छानकर पिलावें ॥

एक प्रकार की पीडा ऐसी है जो खाली पेट में बिना कुछ खाये होती है और खाने के पीछे जाती रहती है इसके तीन कारण है एक यह कि तरी मेदेमें इकट्ठी होजाय और पेट के खाली होने के समय भूख की गर्मी से औंटे और उससे वात

उत्पन्न होके पीडा हो, दूसरे यह कि आमाशय के खाली होने के समय जिगरसे पित्त मेदेमें गिरे और उससे पीडा हो, तीसरे यह कि तिल्ली से मेदे पर अधिक वादी गिरै या वादी में तेजी हो जिससे पीडा होजाय. वादी का लक्षण यह है कि डकार आनेसे पीडा हलकी होजातीहै और किसी मवाद का चिन्ह नहीं पाया जाता और पित्त और वादीके लक्षण लिख चुके हैं परन्तु वादी के कारण मेदे में जलन होती है। वादी में तरी को मेदे से दूरकरें और उसे पुष्ट रक्खें और पित्त में मवाद को निकालें और जो अवश्य हो तो दाहिने हाथ से फस्द असीलम खोलें और वादीमें जो मवाद की अधिकता हो तो उसे निकालें और बांये हाथसे फस्द असीलम खोलें, और जो वादी की तेजी हो तो उसे ठीक करें ॥

जौफहज्म सूयेहज्म और तुखमे का वर्णन।

कारण इन तीनों रोगोंका एकहै जो कारण दुर्बलता हो तो पहिला रोग होगा और जो बहुत पुष्टता हो तो तीसरा और मध्यम अवस्थामें दूसरा रोग होताहै। जो स्वभावके विपरीत देर तक भोजन मेदे में ठहरा रहै और फिर पचकर निकल जाय तो वह जौफ हज्म है और जो भोजन भली भांति न पचे और दस्त पतला आवै तो उसे सूयेहज्म कहते हैं और तुखमा वहहै कि भोजन विलकुल न पचै और वैसाही दस्तोंमें निकले। जैसा कारण देखें वैसाही उपायकरें बारहघंटे से कम और बाईस घंटे से अधिक भोजन पेट में न रहना चाहिये, मेदेका जो रोग गर्मीसे नहो उसमें सेरभर शिकंजबीन बिही में तीन तोले सोंठ मिलकर देना आति लाभदायक हैं ॥

हैजे का वर्णन।

यह वह रोग है जिसमें बिना पचा हुआ और बिगाडकरने वा

ला मवाद शरीर से मेदे में आकर दस्तों और वमन में बहुत जोर से निकलता है और कभी ऐसा होता है कि वमन नहीं होती केवल दस्त आते हैं परंतु जी मिचलाना अवश्य होता है यद्यपि यह रोग बहुत डरावना है परंतु दस्त. प्यास. कमजोर नाडी का न चलना और हाथ पांव का ऐंठना देख कर बहुत डरना न चाहिये. जो उपाय अच्छा किया जाय तो दूर हो जाने की आशा है. उपाय करने वालोंको घबराना न चाहिये मुख्य करके जबकि बच्चों को यह रोग हो। इस में जहां तक बने विगाड करने वाले मवाद को दस्तों या उलटी से बिल कुल निकाल डालें और बन्द न करें परंतु जो रुकाव देखें तो वमन और जुल्लाबसे उसे निकालें और जोरोगीदुर्बल अधिक होजाय तो बन्द करदें। बन्द करने के लिये नीबू के छिलके मुख में रखकर उसका रस चूंसे और जब प्यास और गरमी अधिक हो तो गरम औषधें और तिरयाक फारूक कभी न दें और यह बातें याद रक्खें. एक यह कि रोगी को हिलने झुल ने नदे और भोजन की प्रकार से कोई वस्तु न खिलावें परं- तु जब अधिक आवश्यकता होतो कोई हल्की और पतली वस्तु खिलावें जैसे अनार या मिठ्ठे आदि का रस. और जहां तक बने रोगी के सुलाने का उपाय करें यद्यपि इस रोग में नींद आना बहुत कठिन है तथापि सब उपाय सुलाने के करने चाहिये और जब मवाद निकल चुके तो कोई हलका भोजन रोगी की दशा के अनुसार थोडा २ खिलावें ॥

रात के अन्त में सवेरा होने पर कभी वमन होती है उससे डरकर तिराक फारूक और लोंग आदि गरम औषधियां देते हैं यह बात अच्छी नहीं है विना समझे गर्म औषधें देनेसे तप हो जाता है कभी मवाद के जलने से जंगीर कै होजाती

है वह बुरी है उससे मूर्छा और कमजोरी अवश्य होती है जी मचलाने में ठंढापानी पिलाना जहरको कम करता है जब ऐसी वमन रात के अन्त में हो और मूर्छा आदि के साथ हो तो तिरयाक फारूक दें नहीं तो कुछ न दें. और तीन पहर तक भोजन न दें और जब मूर्छा उत्पन्न हो तो तिली के तेल में जायफल पीस के और गुन गुना करके शरीर पर मलें ॥

भूख के घट जाने या जाते रहने का वर्णन

कारण इन दोनोंका एक है. जब कारण रोगी की निर्वलता हो तो भूख घट जाती है और जब कारण पुष्टता हो तो जाती रहती है परन्तु कारण इन दोनों के बहुत हैं एक केवल मेदेका विगाड है बिना मवाद के चाहे वह विगाड गर्म हो या ठण्डा दूसरे मेदे में मवाद का इकट्ठा होना. तीसरे सारे शरीर में किसी कच्चे मवाद की अधिकता हो इस कारण से वदन को भोजन की चाह न हो. चौथे शरीर के छिद्रों का मैला होना और चाम का कडा होना कि इस से मवाद पचता नहीं है पांचवे जिगर का कमजोर होना या जिगर और मासारीका के बीच में सुद्दा पड जाना छटे उस रास्ते में सुद्दा पड जाना जो तिल्ली और मेदे के बीच में है सातवें मेदे की हिस्स जाती रहै ॥

जो मवाद और बिना मवाद के हो उसके लक्षण आपसे आप मालूम होजायगे, परंतु वह जो तिल्ली से मेदे पर सौदा के गिरने से रास्ते के वंद होजाने के कारण से हो और जो मेदे की हिस्स जाती रहने भेजे के किसी मवाद के कारण हो उन दोनोंमें मेदे के कारण सबसे अच्छे रहेंगे और उनदोनों में अन्तर यहहै कि सौदाके न गिरने से हो उसमें खट्टीवस्तु खानेसे वहुत जल्दी भूख लगेगी और जो मेदे की हिस्स जाने

से हो उसमें खट्टी वस्तु खाने से कुछभी भूख न लगेगी, और इस के सिवाय भेजे से विगाड पाया जावेगा ॥

जब बदनको भोजनकी चाहनाहोतीहै तौ वहरगोंसे मांगताहै और चूसताहै और रगेंजिगरसे मांगतीहैं और जिगरमासारीका मेदेसे उससमयमें मेदाजानलेताहै और तिल्लीसे सौदामेदेपर गिरताहै और उसकीखटाई और कसीलेपनसे मेदा ऐंठता है इसी का नाम भूख लगना है जब कभी इनमें से किसी एक बात में विगाड पडजाता है तौ भूख नहीं लगती सादे विगाड को ठीक करें. और जब कोई मवाद हो तो उस मवादको निकालें और जब शरीर के छिद्रों के मेला होने से यह रोग होतो गर्म पानी से स्नान करें और जो जिगर के कमजोर होने से यह रोग होतो उसमें जिगर को पुष्ट करें और जो तिल्ली और मेदे के बीच के रस्तेके बंद होजाने से रोग होतो तिल्ली से मवाद निकालें और वह उपाय करें जो तिल्ली की सूजन का है और जब मेदेकी हिस्स जाते रहने से हो तो भेजे को पुष्ट करें और आवश्यकता के अनुसार भेजे से मवाद निकालें क्योंकि एकपट्ठा भेजे से आमाशय पर आया है मेदे में हिस्स उसीके कारण से है इसलिये भेजे के उपाय से उस में भी लाभहोगा शरीर में रुधिर के घटजाने, और किसी टेवके छोड देने से भूख विगडजाय तौ उपाय अवश्य करें और जो आंतों में केंचुए उत्पन्न होने से भूख जाती रहै तौ उनके निकाल ने का उपाय करें और इसी प्रकार से कारण को दूर करें ॥

(भूख लगाने वाली औषधें यह हैं शिकंजवीन विही नीबू का शर्वत, हरापोदीना सिरके में डाल कर खायें और खट्टा अनार और पोदीना का शर्वत चाटें ॥)

भूखके बिगड़जाने का वर्णन

इस रोग में मनुष्य वह वस्तु खाने लगता है जो खाने क योग्य नहीं जैसे मिट्टी, कोयला, कागज, रुई, आदि और यह बहुधा पेट वाली स्त्रियों को होता है इसमें बुरे मवाद मेदे में इकट्ठे होजाते हैं और उनसे विपरीति खाने की चाहना होती है इसमें मेदे से मवाद निकालैं परन्तु पेटवाली स्त्रियों का कुछ उपाय न करें उनका ऐसा स्वभाव तीन चार महीने पीछे आपसे आप जाता रहता है और अजवायन जीरे का चबाना और उसका रस निगलना भी लाभकारक है ॥

भोजन का होका हो जाने का वर्णन

इस रोग में ठंड से मेदे में बिगाड होजाता है और तरी से मेदा एंठता है जैसे कि सौदा गिरने से भूख के समय होता है लक्षण उसका यह है कि खाने का होका हो और प्यास बिलकुल न हो और पेट फूला रहै और नाडी धीमी चले इस में मेदे को गर्मी पहुंचावे और अनीसून- अजवायन. जीरा, मस्तगी. आदि गर्म औषधें चबावें और मेदे पर बालछड़. जायफल आदि पीसकर मलें. और कफ से बिगाड हो तो उस मवाद को निकालें. और तिल्ली से मेदे पर सौदा अधिक गिरे और उस से यह रोग हो तो लक्षण उस का यह है कि जब तक पेट खाली रहै मेदे में जलन पायी जायगी। इसमें सौदा का मवाद निकालें और दाहिने हाथ से फस्द बासलीक और असलिम खोले कि जिगर से सौदा निकल जाय और तिल्ली पर बारे लगावें, जो मेदे या सारे शरीर की अधिक गर्मी से भोजन जल्दी पचजायाकरे, जैसे कि रसा- यन या कुश्ता खाने से होता है, उपाय इसका समझ के अ-

नुसार करें जिससे वह कारण दूर होजाय, जो इस रोग का कारण भेजे से मेदे पर कफ का गिरना और खट्टा हो जाना होतो खट्टी डकार आवैगी, और पहिले इस से नजला हुआ होगा, इस में नजले को रोकैं और जो आंतों में केंचुए पडने से यह रोग होतो इस कारण से कि केंचुए भोजन को खालें तौ उसका वर्णन सोलहवें अध्यायके नवें पाठमें किया जायगा॥

जू उल वकर का वर्णन।

इस रोग में भूख बिलकुल जाती रहती है और भोजन से ऐसा दिल हट जाता है कि एक टुकडा खाना कठिन होता है परंतु सारा शरीर भूखा होता है, और दिन पर दिन दुबला होता है और जोर घट जाता है, और देखने में कोई कारण और रोग नहीं पाया जाता, जब यह बढ़ जाती है तौ मूर्च्छा उत्पन्न होती है जब मूर्च्छा होतो पहिले उसका उपाय करें और फिर कारण को पहिचान के उसे दूर करें और जब रोगी कमजोर हो तौ कभी जुल्लाब न दें. उत्तम उपाय यह है कि मेदे को पुष्ट और ठीक करै॥

भूख की असह्नता का वर्णन।

इसमें समय पर भोजन न मिलने से मूर्च्छा भी आ जाती है चाहिये कि हर समय भोजन बना रक्खें और मेदे को पुष्ट करें और खट मीठे अनारके रस में रोटी भिगोकर खिलावें इस से मेदा पुष्ट होता है॥

अधिक प्यास होने का वर्णन।

यह दो प्रकार का है एक तो सच्ची प्यास होना और दूसरे झूंटी सच्ची प्यास वह है कि जिस में गरमी के बुझानेके लिये तरी घट जाने के कारण पानी की चाहना हो, इस में गरमी

और खुश्कीके लक्षण पाये जावेंगे और पानी से प्यास बुझैगी और झूंटी प्यास वह है कि खारी या दिस्सी कफ या जली हुई वादी मेदे में चिमटे और उसके धोने के लिये पानी की चाहना हो. इस में पहिले तौ ठंढे पानी से प्यास बुझ जाती है परंतु थोडी देर पीछे फिर लगती है और मुख का स्वाद मवाद के अनुसार होता है, और थोडी देर पानी न पीये तो प्यास धीमी हो जाती है जब वह रोग गरमी से होतो यह देखना चाहिये कि वह गरमी मेदे, जिगर, छाती और फेंफडे आदि जिस स्थान पर हो ठंढ पहुचावें. और छाती फेंफडे और दिलकी गरमीमें ठंडी हवा खाना और ठंढी वस्तु सूंघना अति लाभदायक है तथा मेदे और जिगर की गर्मी को ठंडा पानी लाभदायक है, इसी से पहिचान सकते हैं कि गरमी किस स्थान पर है, और जब कोई ठंडा मवाद होतो गर्म पानी में सिकंजवीन घोल कर पिलावें, और वमन करावें तथा सोंफ का अर्क दें और चनोंको औटा कर उसका पानी पिलावें परंतु खारी में सिवाय सोंफ के अर्क के और कोई वस्तु गरम न देंनी चाहिये, और जब खुश्की होतों तरी पहुंचावें, और बादाम का तेल और दूध पिलावें. और जो प्यास ज्वर या जिगर की सूजन के कारण से हो तो ज्वर और सूजन का उपाय करें, कभी ऐसा होता है कि बहुत सा रुधिर निकलने से पित्त की अधिकता हो कर खुश्की बढ जाती है और उस के कारण से प्यास लगती है इस में ठण्ड और तरी पहुचावें। किसी लसदार भोजन के खाने से भी प्यास लगती है क्योंकि वह मेदे में जाकर चिमट जाता है और उस के धोने और छुटाने की चाह होती है इस का वही उपाय करें जो कफ की प्यास का है और इस में पानी का न पीना

भी लाभदायक है तथा कभी वर्फ खाने से भी प्यास होती है इस लिये कुछ लोग वर्फ को गरम बताते हैं. इस में नीबू का शर्वत या थोडा २ गर्म पानी पीवें ॥

मेदे की सूजन का वर्णन

यह सूजन चाहे जिस मवाद से हो उस में पीडा और ज्वर अवश्य होगा. परंतु गर्म मवाद में ये दोनों अधिक और ठंडे में कम होंगे. और चिन्ह प्रत्येक के पाये जांयगे । जो गर्म मवाद होतो फस्द खोलें और वमन न करावें और पुष्ट जुल्लाव भी न दें जब कब्ज हो तो, अमलतास और इमली और गुलाव के फूल हरी मकोय के फटे हुए अर्क में पिलावें और तीन दिन पीछे जौ का आटा और खेरू के फूल गुलाव में पीस कर लेप करें और जब ठंडा मवाद कफ का होतो पहिले कफ की मुंजिस दें, अंगूर की लकडी जला कर उसकी. राख. मोथा, सरकंडे की जड और बालछड सिरके में पीस कर गुनगुना लेप करें. फिर जुल्लाव की आवश्यकता हो तो अमलतास को औटे हुए जूफे में घोल कर और छानके पिलावें, और जो वादी से सूजन हो तो वह कडी होगी जो उसमें गरमी का लगाव नहो तो रेंडी का तेल अमलतास और मकोय का अर्क मिलाकर पिलावें. तीन दिन में वह कडापन जातारहैगा और जो यह सूजन पुरानी होजाय तौ कुर्स सम्बुल देना चाहिये ॥

दुवैललुल मेदे का वर्णन

इस रोग सें मेदेकी सूजन फोडा बनजाती है और पक के उस में पीव पडती है, जो गरम सूजन हो तौ उसे खुराज कह ते हैं, इसके पकने और फूटने के चिन्ह वही हैं जो जातुज्जनव में वताये गये हैं जब मवाद इकट्ठा होनेपर हो तो मेथी और कनौचे के वीज और कडुये वादाम कूट पीसकर रेंडी के तेल

में मिलाके लेप करें कि वह पककर फूट जावे और जो आप से न फूटे तो रोगी को गरम पानी पिलाकर सूजन को दबावें कि वह फूट जावै और फिर गाउलअसल और गुलाब का शर्वत दूध में मिलाकर पिलावें इससे मेदे से मवाद निकलजावेगा और जब देखें कि मेदा होगया तो कुन्दर दम्मुलअखवैन गुलनार, कहरुवा, गिलेअरमनी पीसकर फकावें कि घाव पुर जाय और आशजौ या हरीरा भोजन की जगह खिलावें ॥

मेदेके घाव और फुन्सियों का वर्णन

इसमें पीडा और जलन खट्टी और तीव्र वस्तुओं के खाने से होगी और घाव आमाशय के मुख पर है या भीतर है इस की पहिचान यह है कि जिस स्थान पर पीडा होगी उसी के घाव और फुन्सियां होगी इसमें फस्द खोलें और उसी के पीछे वह उपाय करें जो सूजन का है तो काली गायके मठे में थोडे गुलाब के फूल, चूके के बीज और बंसलोचन पीसकर देना लाभदायक है और जब फुन्सियां फूटजांय तो पहिले वे औषध दें जो घाव को साफ करें, फिर वह औषधें दें जो घाव को भरलावें जैसे उपर के पाठ में लिखी गई है, और नरम करने के लिये अमलतास को हरी कासनी के पानी में घोलकर देना लाभदायक है ॥

पेट फूलने का वर्णन

इसका कारण या तो कोई ठण्डा और सादा विगाड है या भोजन का विगाड या किसी मवाद का मेदे में इकट्ठा होना है इसके चिन्ह और उपाय जौफहज्म और मेदे के विगाड में लिख चुके हैं । छोटी इलायची कुचल के गुलाब में औटा कर पिलाना भी लाभदायक है ॥

डकार जंभाई और अंगडाई अधिक आने का वर्णन

यह तीनों रोग सब शरीर में या मेदे में बादी के उत्पन्न होने से और उसमें से अधिक धुंआ उठने से होते हैं, इन में से महीन वादको निकाले और पचावको ठीक करै. तथा सौंफ को महीन, पीसकर गुलकंद में मिलाकर खिलावें, तथा मुश्क या मस्तगी शहद में मिलाकर देना भी अति लाभदायक है, और सारे शरीर से बादी को दूर करता है ॥

वमन उबाकी जीमिचलाने का वर्णन

वमन वह है जिस में कुछ मेदे से मुंह की राह निकलता है उबकाई वह हैं जो कुछ न निकले परन्तु ऐसा मालूम हो कि वमन होगी, जी मिचलाना वमन से पहिले होता है, और बरावर वमन होना तकल्लुब नफ्स कहलाता है। मवाद के अनुसार जुल्लावदे और गरम पानीमें सिकंजवीन घोलकर पिलावें और जो कुछ हानि न हो तो वमन कराना उत्तम है और जो मवाद किसी और स्थान से मेदे में आकर गिरता होतो उस स्थान का जुल्लाव दे और उसे ठीक करे, और जो ज्वर में बुहरानके दिन वमन हो तो उसे कभी न रोके ॥

पित्त की वमन को दूर करनेवाली औषधियां

आमला, कहरुवा, वंसलोचन, जौ कासत्तू इनको चाहे अलग२ दें या मिलाकर ॥ (कफ की वमन और आमाशय को पुष्ट करने वाली औषधि) ऊदगरकी, लौंग, मस्तगी और सूखा पोदीना बराबर लेकर कूट छानले और उसमें से साढ़े तीन माशे लेकर पैंतीस माशे गुलकंद में मिलाकरदे ॥[वादी की वमन पर लेप] लादन, नाखूना, छडीला और मौरद के हरे पत्ते गुलाब में पीसकर मेदे और तिल्ली पर लगावे, और कुर्स ऐला उससे अधिक कफ और बादी की वतन में कोई वस्तु

लाभदायक नहीं है तथा खाली सिंगी विना पछने की टूंडी
पास और कंधों के वीचमें लगाना. हाथ पांव मलना और रो
के सुलाने का उपाय करना अति लाभदायक है। जब भोज
के विगाडसे वमन आवे तो उस भोजन को विलकुल निक
लना चाहिये, इसके लिये चाहे वमन करावे और चाहे जुलाब
दें और जो मेदे के कमजोर होने से हो तो उसे पुष्ट करें औ
केंचुए पड़जाने से यह रोग हो तो उन्हें निकालें।

उलटी में रुधिर आने का वर्णन

यह रोग दो प्रकार से होता है एक यह कि कोई रग भोज
की नली या मेदे की टूट जाय या फटजाय या उस का
खुलजाय, इस रोग में मरी (भोजन की नली) या मेदे
कोई विगाड पाया जायगा, और दोनों कंधों के वीच में पी
होना मरीके घावका लक्षण है इस में फस्द वासलीक खोलें अ
आवश्यकता के अनुसार रुधिर निकालें और जब बहुत सा
धिर उलटी में आताहोतो उसमें एक सेरतक रुधिर निकाल
ना लिखा है। हाथ पांव कसना पिंडली पर पछने लगाना अ
रुधिर के बन्द करने वाली औषधें देना लाभदायक है। र
मुंह खुलजाने से जो रुधिर आता हो उसके बन्द करने के लि
मुनक्का वीज समेत खाना अति लाभदायक है और
मरी में कोई विगाड होतो रुधिर के रोकने की जो औषधि
यें वह थोडी थोड़ी गले से नीचे उतारें कि देरतक दवा म
रहे और रग के फटजाने में कुर्स कुहल लाभदायक है॥ दू
यह कि जिगर तिल्ली या भेजे में कुछ विगाड हो वहां से
धिर मेदे में गिर कर वमन में निकले लक्षण उसका यह है
उन्हीं स्थानों में विगाड होगा इसमें फस्द खोले और ठह
कर थोडार रुधिर निकालें परन्तु जो मवाद वहुत हो तो

वारभी बहुत निकाल सकतेहैं और जो छाती पर चोट लगने से यह रोग हो तो पहिले जल्द से फस्द खोलें फिर मुगास. अकाकिया. गिले अरमनी, मुरमक्की, एलुआ और आस के पत्तों के पानी में पीसकर चोट की जगह लगावें ॥

मेदेमें रुधिर या दूध के जमजाने का वर्णन ॥

रुधिर कहीं से आकर मेदे में रहै उसमें गरमी नरहने के कारण वह वहां जम जाता है या दूध आमाशय की ठंड से या किसी जमाने वाली वस्तु जैसे पनीर आदि से मेदेमें जमजाता है लक्षण दोनों का यहहै कि मूर्च्छा और ठंडा पसीना आवै और कभी जाडा भी आता है। इस में सोया और पोदीना औटाकर और सिकंजवीन मिलाकर गरम गरम पिलावें सब जानवरों का पनीर जमे हुए दूध और रुधिर को पिघलाता है कभी ऐसा होता है कि दूध पीने वाले बच्चों के मेदे में दूध जम जाता है, कारण इसका दूध पिलाने वाली के दूध का विगाड है या मेदे की कमजोरी । पहिले दूधको पिघलावें और दाई से बच्चेको अलग करके ऊंटनी गौ या बकरी का दूध पिलावें, और उत्तम यह है किसी और दाई का दूध पिलावें जिसका दूध अच्छा हो, और जिस जानवर का दूध दें उसका सुदाव या कैसूम खिलावें और जो दाईको दूर न कर सकें तो भोजन उसको ठीक दें, और कभी २ थोडा थोडा सा तिरियाक फारूक उसको खिलावें और बच्चे को भी थोडा सा खिलावे और जब तक दाईको भोजन न पचे दूध न पिलाने दें तथा बच्चे के पेट को कपडे से ढाक रक्खें जिस से गरम रहे और सूखा हुआ पोदीना साढे सत्तरह मासे खिलाना जमे हुए दूध को तुरन्त पिघलाता है ॥

अधिक हिचकी आने का वर्णन ॥

जो बहुत खा जाने से हिचकी आवें तो खाने के पीछे ऐसा होगा यदि ऐसा होतो जल्दी वमन कराके भोजनको निकाल डालें और पचावकी औषधियां दें और कभी इलायची तथा पोदीना चवाने से भी जमजाता है और कभी आप से आप जो हिचकी का कारण वादी होतो वातल वस्तु के खाने से ऐसा होगा और पचाव न होगा जैसा बच्चों को बहुत होती है इस में वह वस्तु जो वादी को दूर करदें और जो किसी तीव्र मवाद या औषधि के खाने से हो तो पहले सिकंजवीन और गरम पानी पिलाकर वमन करावें और ठंडे और तर लुआब और शीरे दें. और गर्म पानी में बादामका तेल मिलाकर एक घूंट पीना और भोजन में मक्खन डालकर खाना अति लाभदायक है। और जो मेदे में कफके चिमट रहने से ऐसा हो तो लक्षण उसका यह है कि मुंहसे पानी निकलेगा पचाव न होगा और खट्टीडकारें आवेंगी, अयारिजका जुल्लाव देके उस मवाद को निकालें और जो यह किसी सादे विगाड से हो तो लक्षण उसविगाड के पाये जावेंगे इसमें गर्म औषधें पीवें या खावें सब प्रकारकी हिचकी में उत्तम उपाय दमका रोकना और चिल्लाना है. और जो कारण इसका जिगर या मेदे की सूजन हो तो लक्षण और उपाय उसका लिख चुके इसमें छींक लेना लाभदायक है और अर्क नाना और खट्टे अनार का रस मिलाके पीना वहुत सा ठंडा पानी पीना रीठे को गले में लटकाना डराना मस्तगी और दालचीनी औटाकर पिलाना लाभदायक है ॥

इकिलाव मेदे का वर्णन ॥

इस रोग में भोजन ठहर के वमन में निकल जाता है कारण

इस का छिल जाना उस आंत का है जो मेदे के पास है जब भोजन पचकर उस आंत तक पहुंचता है तो वमन हो जाती है. और जो उपाय मरोड का है वही इस का भी करें।

कलकुल मेदे का वर्णन।

यह वह रोग है जिस में रोगी को जान पडता है कि मैं गरम राख पर लोट रहाहूं. इस के दो कारण हैं. एक तो मेदे में पित्त इकट्ठे हो जांय या कोई ठण्डा मवाद बिगड जाय इस में मवाद और मिजाज के अनुसार जुल्लाब दें और ठीक करें।

मेदे के फडकने का वर्णन

इस रोग में दिल घबराने की सी दशा आमाशय में मालूम होती है. मवाद के अनुसार जुल्लाब दें और जो केंचुए पडगये हों तो उन्हें निकालें॥

वजउलफवाद का वर्णन

यह एक पीडा है जो आमाशय में होती है इस में हाथ पांव ठंडे हो जाते हैं और मूर्छा हो जाती है और दिल तक इसका दुख पहुंचता है तथा जो यह रोग देर तक रहता है तो रोगी मर भी जाता है जोउपाय मेदे की पीड़ाका है वही इसकाहै।

पेटमें जलन होने का वर्णन

जो यह रोग कच्ची रोटी या कच्चे फलों के खाने से या मेदेमें कच्ची तरी के इकट्ठा होजाने से हो तो लक्षण उसका यह है कि पहिले भारी वस्तु खाई होगी. और भूख के समय जलन में कमी होगी और जो वादी के गिरने से हो तो भूख के समय जलन होगी और चिकनाई खाने से जलन जाती रहैगी जो भारी और तर भोजन के खाने से हो तो उस में वमन करावें और हलका भोजन दें और आमाशय को पुष्ट

करें और जो वादी से हो तो बांये हाथ से फस्द अस्लीम या
बासलीक खोलें और हरड का मुरब्बा और सिकंजवीन बजूरी दें

मेदे के ढीला होजाने का वर्णन

यह दो प्रकार से होता है. एक तो आमाशय स्वयं ढीला
होजाय और दूसरे उस के बंधन जिन से कि वह बंधा हुआ
है. ढीले होजांय. पहिले का लक्षण यह है कि पचाव न हो
और छाती उभर आवे दूसरे का लक्षण यह है कि आमाशय
झुक पडे और जिस ओर झुकेगा उसी ओर बोझ होगा इस
में इसतिरखा और फालिज का उपाय करें हलका भोजन दें
सुगंध वाली और कब्ज करने वाली औषधें दें और वह उपाय
करें जो अगले पाठ में लिखा जायगा ॥

मेदे की बुनावट के ढीला होजाने का वर्णन

यह रोग बहुत बुरा है इस में चाहे जैसा उत्तम भोजन खाओ
भोजन कभी नहीं पचता तथा सूजन और बिगाड के लक्षण
नहीं पाये जाते. जवारिश ऊद खिलावें और मस्तगी का तेल
आमाशय पर मलें और पालतु मुर्गे का संगदान सुखाकर और
पीस कर सवा दो माशे इतरीफल या शर्बत हब्बुल आस के
साथ चटावें. और हरा यशब पीस के पौने दो माशे दें ॥

मेदे के खिचजाने का वर्णम

जो यह रोग मेदे में हो पचाव नहीं रहैगा और जो पीठ के
बंधन में होतौ खाते ही भोजन आंत में उतर जावेगा और रोगी
दहनी या बांई ओर झुकजायगा पेटसीधा न करसकेगा और
हंसली के बंधन में हो तो रोगी आगे को झुका रहैगा और पीठ
सीधी न हो सकेगी इस में वही उपाय करें जो तशन्नुज का हैं॥

मेदेके कडा होजाने का वर्णन

यह कडापन हाथ लगाने से मालूम होता है. और जब बढ
जाता है तौ दिखाई भी देता है इस में मेदेका बिगाड अवश्य

होगा जो गरमी से होतो फस्द वासलीक या कसीलम खोलें, और कच्चा मोम रोगन वनफशे या रोगन गुलमें पकाकर लगावें और जो सर्दी से हो तो वावूना, वालछड, सरकंडे की जड मेथी के वीज, गूगल और कडुये वादाम कूट छानकर लेपकरें कभी ऐसा होता है कि तिल्ली के कडे होजाने से उसी ओर से आमाशय भी कडा होजाता है इसमें तिल्ली का उपाय करना चाहिये ॥

मेदे के ऊपर के पट्ठों के कडाहोजाने का वर्णन ।

इसकी पहिचान यह है कि कडापन एक ओरसे पतला और दूसरी से मोटा होगा और मेदे में कोई विगाड नहीं पाया जायगा इसका वही उपाय करें जो ऊपर के पाठ में लिखागया है ॥

पेटचलने का वर्णन

जो कोई मादा विगाड या मवाद हो तो लक्षण और उपाय उसका ऊपर लिख चुके हैं और जो फुंसियों और घाव से हो तौ उसका वर्णन कर चुके हैं । जो जिगर में दुर्वलता नहो तौ सफूफ चारतुखम और सफूफ हव्वुलरमां लाभदायक है और जो नजले के गिरने से ही उसमें सोने के पीछे दस्त आवेंगे, इससे नजले का उपाय करें दस्तों को न रोकें परन्तु मवाद को निकालें और भेजे को पुष्ट करें और जो भोजन से दस्त आवें तो पचाव और भोजन को ठीक करें और जो रगों के मवाद से ऐसा हो तौ लक्षण उसका यह है कि शरीर मोटा होगा और दस्त वडे आवेंगे इस में फस्द खोलें और वदन मलें और पसीना निकालें और भूखेरहें और जो जिगरके दुर्वलहोने से होतो दस्त सफेद या हरे आवेंगे इसमें जिगर और आमाशय को पुष्ट करें और जवारिशमस्तगी खावें और जो दस्त

वारी वांध कर आवें तौ मवाद के रंग से लक्षण मालूम हो-
गा फस्द और जुल्लाव से उस मवाद को निकालें ॥

और जो मासारीका में सुद्दा पडने से ऐसा होतो उसका
वर्णन जिगर के सुद्दे में होगा, और जो आमाशयके स्रोतों के
जाने से ऐसा होतो कोई गलाने वाला मवाद गिरा होगा, या
मेदे में गर्म सूजन हुई होगी, या विष खाया होगा कारण के
दूर करने के पीछे, सिमाक, जरवर्द. वसलोचन. छालियां.
चंदन, अनारके छिलके, रसौत. पीसकर, विही या अंगूर के
पानी में मिलाकर मेदे पर लेप करे, और सत्तू सेव और विही
रोगन बादाम मिलाकर खिलावे और खाने के पीछे देरतक
दाहिनी करवट लेटे रहें और कहते है कि दूध और मेदे का
हरीरा मेदे के स्रोतों को साफ करता है, और जो जुल्लाव
के पीनेसे अधिक दस्त आवें तौ खट्टा मठा ठंढा करके पिलावे।

आमाशयके छोटाहोने का वर्णन।

जो यह जन्म से होतो अधिक भोजन चाहे हलका हो दुख
देगा. इसका उपाय सिवाय इसके और कुछ नहीं है कि नित्य
थोडा और पुष्टि कारक भोजन दियाजाय और जो खिचाव
या सूजन आदि से होतो उसका उचित उपाय करै ॥

चौदहवां अध्याय

जिगर के रोगों का वर्णन

जिगरके बिगाड का वर्णन

चाहै यह रोग मवादसे हो या विना मवादके इसमें जिगर
में कोई विगाड होगा. और इसके साथ हर प्रकार के लक्षण
पाये जांयगे इस में कारण को दूर करें जिगर के विगाडको
कासनी अति लाभकारक है, यह अमलतास के साथ हर

प्रकार के विगाड को लाभ देती है, परंतु अमलतास उस समय पर दे जब कि मवाद को नर्म करना चाहैं, अब यहां वह औषधें लिखते हैं जो केवल जिगर को लाभ देती हैं. इन्हें समझके देवै और कब्ज का ध्यान रख ठंडी औषधें, हरी कासनी का रस जरिश्कका शीरा अस्पगोल का लुआब. चन्दन का शर्वत. और सिकञ्जवीन और मठा चाहै इनको अकेला दें या मिलाके और जो कब्ज न होतो कुर्स तबाशीर काविज विही या सेव के सत्त में मिलाके या शर्वत हुम्माज के साथ दें, और जो कब्ज हो तो हड और अमलतास औटा के दें और जब रुधिर की अधिकता हो और कोई रोक न होतो फस्द खोले, और पित्तों से होतो ठंडाई अधिक दें, और जो अवश्य होतो फस्द खोलें और ठंडी औषधों का जिगर पर रखना जिगरकी गरमीको बुझाता है, परन्तु जब तक जिगर से मवाद न निकाल लें ठण्डी औषधें न लगावें ॥

और गर्म औषधें यह हैं सोंफ. करफस के वीज शहद का गुलकन्द, असानासिया. दवाउलकरकम. और कफके निकालने के लिये माउलअसल और हब्बुलासिब्र लाभदायक हैं, और सूखे जूफे को पानी में औटा के साढ़े चार माशे दवाउलकरकम के साथ देना जिगर को गर्म और पुष्ट करता है. और माजून फलासफा और धनिये का इतरीफल भी जिगर को गर्म करता है और मवाद अधिक न निकलै कि इससे निर्वलता और दुबलापन होता है और जो इस रोग में दस्त भी आते हो तो कुलफा, रेहांके वीज, वबूलका गोंद प्रत्येक साढे दशमाशे भूनकर और अर्क गुलाव में भिगोकर देवै और जो वादी की अधिकता हो तो तरी पहुंचावै और वादी के निकालनेके लिये इफतीमून औटाकर या इफतीमून की गोलियां मा

लजावन के साथ दें और कैरूतीमुरसव जिगर पर लगावें इस से खुश्की और कड़पन जाता रहता है परन्तु तरी अधिक न पहुंचावें नहीं तो जलधर होजाने का डर और भोजन भी उचित देवे और जो उसके साथ कोई और रोग भी हो तो उसका भी उपाय करें ।

जिगरके निर्वल होजाने का वर्णन

चाहे जिस कारण से हो उसका लक्षण यहहै कि दस्त और मूत्र मांस के धोवन कासा होगा और शरीर दुबला होगा और भूख बिलकुल न होगी और दाहिनी ओर बगल में ऊपर से नीचे की पसली तक लम्बाई में पीडा होगी परन्तु खाने के पीछे जब भोजन जिगरमें जाने लगेगा तो अधिक पीडा होगी और रोगी का रंग सफेद और हरा होगा और कभी पीला और कभी काला जानना चाहिये कि देह के प्रत्येक स्थानमें चार शक्ति हैं पचाव दूर करने वाली शक्ति खेंचलेने वाली शक्ति और जानने वाली शक्ति जिगर की चारों शक्तियों में से जो निर्वल होजायगी उसे जिगर की निर्वलता कहेंगे । और लक्षण इनचारों की निर्वलता के अलग अलग हैं जिगर के पचाव की निर्वलता के लक्षण यह हैं कि दस्त और मूत्र धोवन कासा होगा और सूजन और उदासी आदि पाई जांयगी और दूसरी शक्ति के लक्षण यहहैं कि दस्त और मूत्र थोडे २ होंगे और उन में रंग भी थोडा होगा और भूख न लगेगी और तीसरी शक्ति के लक्षण यह हैं कि दस्त बडे सफेद और पतले आवेंगे और शरीर दुबला होगा और चौथी शक्ति के लक्षण यह हैं कि दस्त और मूत्र मांस के धोवन से होंगे और रुधिर के पतला होनेसे शरीर ढीला होजायगा और मुख पर सूजन और उदासी होगी यह रोग जो जिगर के वि-

गाढ से हो उसका उपाय लिख चुके हैं और जो सुद्दे या सू-
जन या जिगर के फटजाने से या किसी और कारण से हो
उसका उपाय आगे आवेगा और जो किसी और स्थान से
हो तो उस स्थान का उपाय करै और जिगर और रूह को
पुष्ट करते रहैं और फस्द असीलम भी लाभदायक है ॥

जिगरके सुद्देका वर्णन

इस रोग में जिगर के अन्दर या उसकी रगों में कोई गाढा
मवाद फंस रहता है चिन्ह उस का यह है कि शरीरमें रुधिर
कम उत्पन्न हो और रंग पीला हो. और दस्त धोवन से
आवें. और जिगर भारी हो. और जो सुद्दा जिगर के ऊपर
होगा तौ बोझ अधिक होगा, और मूत्र थोडा और पतला
आवेगा और जो सुद्दा भीतर हो तो दस्त बडे और पतले
आवेंगे इस रोग में और जिगरकी सूजन में यह अन्तर है
कि सूजन में तप होती है, और अधिक पीडा हो तो सुद्दे में
बोझ अधिक होगा जो सुद्दा जिगर से ऊपर हो तो मिजाज
के अनुसार मूत्रलाने वाली औषधें पिलावैं और जो जिगर
के भीतर हो तो नर्म करने वाली औषधें और जुल्लाव दें
और उपायों में प्रकृति का ध्यान रक्खें. और जो कब्ज करने
वाली वस्तु खाने से सुद्दा पडे तो रोगन बादाम और दूध
और शक्कर का हरीरा पिलावें. और अनार का रस भी ला-
भदायक है, और जो जिगर की रगों के सकडा हो जाने से
सुद्दा हो तो यह रोग जन्म से ही होगा, इसका उपाय कुछ
नहीं है सिवाय इस के कि भारी भोजन खाने से बचते रहैं,
और कभी २ मूत्र लाने वाली औषधें पिया करें ॥

मासरीका के सुद्दका वर्णन

लक्षण उस का यह है कि मेदे के बीच में भीतर को खिचा-

व और बोझ मालूम हो और आमाशय और जिगर दोनों चंगे हों और दस्त कच्चे आवें. और शरीर दुबला होता जावे इसका ठीक उपाय वही है जो जिगरके भीतर के सुद्दे का है और वह औशधें दें जो सुद्दे को दूर करें ॥

जिगर के फूल का जाने वर्णन

उसका लक्षण यह है कि दाहिनी पसली के तले पीड़ा और खिचाव हो और बोझ न हो और "तप और पचाव के पीछे पेट अधिक फूल जाय. इसमें कामूनी खिलावें, और शर्वत दीनार पिलावें और गर्म पानी से विना कुछ खाये पीये स्नान करें परन्तु हवा न लगे. और नमक बाजरे और राखसे सेके और जो आवश्यकता हो तो जुल्लाव दें, और मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें और हलका भोजन जिसमें वातनाशक औषधें पड़ी हों खिलावें ॥

जिगर की पीड़ा का वर्णन

जो इस का कारण कोई बिगाड या सुद्दा आदिहो तो उस का उपाय लिख चुके हैं, और जो शिरका या सूजन या जिगरके फटने या पथरी या रेत पडने सें हो उस का उपाय आगे लिखेंगे ॥

शिरका का वर्णन

जब विना कुछ खाये या मिहनत करने के पीछे या न्हाते ही जल्दी से ठंडा पानी पीलें उस की ठंढ जिगर को लगे और पीड़ा होतो गरम पानी में कपड़ा भिगो के गरम २ जिगर पर रक्खें और बालछड़ और मस्तगी गुलाब और सोंफ के अर्क में पीस कर गर्म करके जिगर पर लेप करें और गरम पानी से धारें, और जो इस में हकीम से कोई भूल होजायगी तो जलन्धर या जिगर की सूजन हो जायगी ॥

जिगरकी सूजन का वर्णन

जो यह रुधिर या पित्त की अधिकता से होतो लक्षण उस का यह है कि तप और प्यास होगी और जिगर में बोझ पीड़ा और जलन होगी और उसके सिवाय रुधिर और पित्त की अधिकता के लक्षण पाये जायगे. और जिगर की सूजन के भीतर या बाहर होने के लक्षण तीसरे पाठ में लिख चुके हैं और सिवाय उस के जिगर की, भीतर की सूजन में वमन मूर्च्छा और हाथ पांव ठण्डे होंगे और बाहरकी सूजनमें खांसी और दम का रुकाव होगा और हसली नीचेको खिचेगी और मूत्र थोड़ा होगा और सूजन टेढी दिखाई देगी जब सूजन रुधिर की अधिकता से होतो फस्द बासलीक या हफ्त अंदाम खोलें और कई बार करके रुधिर निकालें कि निर्बलता न हो और कासनी और खट्टे मीठे अनारों का रस सिकंजवीन मिलाकर पिलावे और जो सूजन अंदर हो तो मूत्र लाने वाली औषधें न दें परंतु फलों के अर्क से मवाद को नर्म करें और जो अधिक नर्म करना हो तो अमलतास हरी कासनी मकोय के पानी में मलकर पिलावें।

और जो सूजन जिगरके ऊपर हो तो मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें परंतु कब्ज के दूर करने का भी ध्यान रक्खें और नरम करने वाली औषधें दें जैसे लुआब बीदाना या ईसबगोल आदि, और जो सूजन जिगर में रुधिर की अधिकता से हो तो उस के आदि और अंत में जो लेप करें उस में ठंढी औषधें जो मवाद को इधर गिरने से रोकें और जो सूजन के पटकाने वाली औषधें हों उन दोनों को मिलाना चाहिये. आदिमें पहिली प्रकार की औषधें अधिक हों, और अंत में दूसरी प्रकार की और मध्य में दोनों बराबर हों और पित्तों की सूजन में भी

यही उपाय करें. परंतु फस्द न खोलें और उस के आदि में केवल ठंडी औषधों का लेप कर सकते है जो मवाद को इधर गिरने से रोकें जैसे जौ के आटे को गुलाब और सिरके में पीसकर लेप करे और जो अवश्य होतो गरमी के बुझाने के लिये थोडा सा कपूर भी मिलालें. और जो खारी कफ न होतो बोझ अधिक होगा और तप न होगी. और पीडा कम होगी. और मुंह जीभ और दस्तों का रंग सफेद होगा. जो सूजन भीतर होतो मवाद को नर्म करने वाली औषधें और जुल्लाब दें ॥

और जो सूजन ऊपर होतो मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें और इस के पीछे प्रकृति को ठीक करें. और जो सूजन वादी से होतो जिगर के स्थान पर कडापन होगा इस में वादी की मुंजिस दें और मोम रोगन लगावें और जब नरम होजावे तब वह औषधें जो वादी को दस्त और मूत्र में निकालें और उचित होतो फस्द भी खोलें इस से जल्दी लाभ होगा. और एक प्याला भरके वर्ष दिन की जनी हुई ऊंटनी का दूध मीठा डालकर पिलाना इस में अति लाभदायक है परन्तु इस का ध्यान रक्खें कि गरमी नहो जो जिगर पर चोट लगने से सूजन हो तो फस्द खोलें और ईसबगोल के लुआब में गिले-अर्मनी साडेतीन माशे पीसकर पिलावें और राबद गिलेअर-मनी हब्बुलआस. इस के लिये लाभदायक है और छिले चने और रेवतचीनी प्रत्येक साडे दश माशे और मोमियाई सात माशे पीसकर रोगनबनफशा या किसी और तेल में मिलाकर लेप करें इसके पीछे वही उपाय है जो ऊपर लिखा गयाहै ॥

पेट के पट्टों की सूजन का वर्णन

यह सूजन एक ओरसे मोटी और दूसरी ओरसे पतली होतीहै

चाहै ऐसा लम्बाई में हो या चौडाई में। इसमें और जिगर की सूजन में यह अन्तर है कि जिगर की सूजन टेढी धनुषाकृति होती है और यह नहीं होती इस में फस्द खोलें और जुल्लाब दें और आदि में केवल वह औषधें लगावें जो मवाद को इधर गिरने से रोकें और मवाद के कडा होजाने से न डरें और अंत में केवल वह औषधें लगावें जो सूजन को पटकादें और निर्बलता होजाने का डर न करें और जब सूजन पकजावै और पीव पडै तो नश्तर लगावे और देर न करें, कहीं ऐसा नहो कि कोई और रोग उत्पन्न होजाय ॥

जिगर के फोडे का वर्णन

जो उपाय मेदे के फोडे का और फेंफड़े की सूजन का है. वही इसका है जो मवाद आंतों की ओर गिरने लगे तो हल का सा जुल्लाब दें और जो गुरदे की ओर गिरे तो मूत्रलाने वाली औषधें पिलावें और जो फूट के पेट में जावै तो जलंधर होजाने का डर है उसमें जिक्की जलंधर का उपाय करें और जो मवाद आपसे आप पक कर पचजावै तो रोगों में कमीहो गी और दस्तों और मूत्र में पीव न निकलेगी ॥

जिगर की फुन्सियों का वर्णन

लक्षण उसका यह है कि जिगर में कोई गरमी से विगाड हो और जिगर के स्थान पर जलन हो और कभी कभी रोमांच खडे होजांय और जाडा लगे इसका वह उपाय करें जो गरम मवाद के विगाड से पहिले पाठ में लिखा गया है ॥

जिगर के फड़कने का वर्णन

इस में ऐसा मालूम होता है कि कोई फूंकता है, और यह वात थोडी देर तक रह कर वंद हो जाती है, कारण इस का जिगर का सुद्दा है और वादी का फिरना और रहजाना

है, इसमें वह औषधें दें जो सुद्देको दूर करें और दाहिने हाथ से फस्द असीलम खोलें ॥

जिगर की पथरी का वर्णन ।

लक्षण उसका यह है कि भोजन पचने के पीछे वमन आवे और कोई वस्तु चुभे जिससे जिगर में पीडा हो और कभी, हाथ लगाने से जिगर पर सूजन और कडापन मालूम हो और देखने में भी आवे ॥ और जब दाहिने हाथ से फस्द बासलीक खोलें और नश्तर गहरा लगे तो रुधिर के नीचे रेत हो, इसका उपाय वही है जो अठारहवें अध्याय में मूत्र में रेत आने के वर्णन में लिखा गया है ॥

जिगरके छोटा होने का वर्णन ॥

इसका लक्षण और उपाय वह है जो आमाशय के छोटा होने में लिखा गया है परंतु इस में जिगर से मवाद निकाल-ना चाहिये चाहे गरम करने वाली औषधें दें चाहे मूत्र लाने वाली ॥

जिगर से दस्त आने का वर्णन ।

यह रोग छः प्रकार का है, (१) कीही जिस में दस्तों में पीव आती है, कारण इस का जिगर के फोडे का फूटना है उपाय इस का लिख चुके हैं ॥ (२) गस्माली जिस में मांस के धोवन के से दस्त आते हैं इसका कारण जिगर की निर्व-लता है उपाय इसका भी लिख चुके हैं इसमें मुनक्के बीज समेत खाना अति उत्तम ॥

(३) दमनी जिस में रुधिर के दस्त आते हैं, कारण इस का जो केवल रुधिर की अधिकता हो और घाव न हो तो लक्षण उसका यह है कि एक वार बहुत सा, रुधिर निकल कर ठहर जावे और फिर थोडी देर पीछे निकले और चिन्ह

रुधिर की अधिकता के उत्पन्न हो. और जो जिगर पर घाव या चोट लगने से होतो मेदे और आंतों के खाली होने पर थोडा २ रुधिर बराबर चला आवेगा और चिन्ह घाव के उत्पन्न होंगे। जो यह रोग रुधिर की अधिकता से होतो जब तक निर्वलता न बढने लगे दस्तों को न बंद करै और शुरू में फस्द खोलें और मवाद को दूसरी ओर गिरावें, उपायइस का यह है कि हाथ पांव और छातियों को कस कर बांधे और फस्द में थोडा २ रुधिर ठहर २ के निकालें और जो कब्जकी आवश्यकता होतो कुर्स कहरुवा. कुलफे के बीजों का शीरा और बारतंग का पानी मिलाकर दें और भोजन थोडा खावें और, जो घाव के कारण से हो उसका उपाय यही है. और जो यह रोग रुधिर की अधिकता से न होतो कारण को दूर करें और कुर्स नफसुलदम में जरावंद बढाकर देना कब्ज और घाव के भरने के लिये अति लाभ दायक है ॥ (४) सफरावी इसमें जिगर पर गरमी होगी. इसका उपायभी जिगर के विगाड में लिख चुके हैं. परंतु मवाद निकालन और ठीक करने से पहिले दस्तों को न रोके ॥ (५) सदीदी कारण इसका जिगर में रुधिर या किसी और मवाद का जल जाना है, इसकालक्षण और उपाय भी वही है, जो चौथी प्रकार में लिखा गया है। चन्दन को गुलाब में घिसकर जिगर पर लगावे, और दाहिने हाथ से फस्द असीलम खोलें ॥ (६) खासरी इसमें दस्त गाढे कीचड से आते हैं, इसका कारणभी जिगर के फोडे का फूटना है या जिगर के सुद्दे का खुलजाना और बुरे मवाद का बहना या जिगर में मवाद का जलजाना है इस में लक्षण और कारण जानकर उचित उपाय करै, और जब तक दुर्बलता न बढने लगे दस्तों को कभी न रोकें, इन

दस्तों और आमाशय के दस्तों का अंतर जिगर और आमाशय के लक्षणों से जाना जाता है जिगर के दस्तों में बुरी गंध होगी. दस्त वारी करके आवेंगे, खाली पेट में दस्त कम होंगे पीडा नहोगी और प्रति दिन रोगी दुवला होता जायगा और आमाशय के दस्तों में यह बातें न होंगी. परंतु जब जिगर के दस्त देर तक रहते हैं तो मेदे से भी दस्त आने लगता है. उस समय मरोड और जिगर के चिन्ह इकट्ठे हो जावेंगे, ऐसे समय पर दोनों के अनुसार उपाय करें ॥

सूउल किनीआ का वर्णन

यह रोग भी जिगर का विगाड है और जलंधर से पहिले होता है । लक्षण इसका यह है कि मुख और हाथ पांव पर भुरभुराहट होती है और जिगर की निर्वलता के लक्षण उत्पन्न होते हैं ॥ उपाय इसका जलंधर में लिखा जायगा चूंकि यह हुआ रोग पुष्ट नहीं होताहै इसलिये ठण्डी निर्वल औषधें और सफर करें और पैदल चले. जोयहरोग बढजावे और जलंधर होता जान पडे तो एक रत्ती ऊंटनी के ताजा दूध में दोरत्ती सिकंजवीन मिलाकरदें अथवा अनार का रस पिलावें. ठंडा पानी विलकुल न पीवै उसके वदले कासनी और सोंफ और मकोय का अर्क पिलावें और जो हो सकै तो भूखे रहें नहीं तो मूंग या चनों को औटाकर उनका पानी दें और जो यह रोग ववासीर या मासिक रुधिर के रुकने से हो तो मूत्रलाने वाली औषधें देकर और लेप लगाकर उन्हें जारी करें और जो इस से लाभनहोतो फस्द साफिन खोलें और रुधिर थोडा निकालें फस्द से पहिले जुलाव पिलाना उत्तम है ॥

जलंधर का वर्णन

यह रोग तीन प्रकार का होता है (१) लहमी इसमें सारे

शरीर पर झुरझुराहट होती है और मवाद मांसके भीतर होता है (२) जिक्की इसमें पेट मशक सा होजाता है, और हाथ पांव पर कभी सूजन होती है और कभी, नहीं होती, और पेट के परदों में तरी समाजाती है (३) तवली इसमें गाढी वादी पेट के परदों में समाजाती है और पेट पर हाथ मारनेसे तवले कीसी आवाज निकलती है इसमें पहिले कारण को दूर करै और फिर जिगर को ठीक करे और गरमी पहुंचावै और जो गरमी होतो उसे शान्त करै फिर इस रोग का उपाय करै अर्थात् दस्त और मूत्र और पसीना लाने वाली औषधें दे जैसे शरीर को वालू में गाढ देना. और खुश्क औषधें मलना जैसे नरकचूर और राख और खूवकला और महुवे का आटा आदि और खुश्क करने वाली औषधों का लेप करे ठंडा पानी न पीवै और गर्म औषधें भी अधिक नदे और जो विना ठंडे पानी पिये चैन न पडे तो छोटा लोटा जिसकी टोंटी सकरी हों उससे एक एक बूंद पानी गलेमें टपकावें और वह पानी भी पक्का हुआ और ठंडा किया हुआ हो और थोडा सिरका भी उसमें मिलादें और जो पानी के बदले कासनी और सोंफ का अर्क दें तो उत्तम है और वह भी थोडा हो। उचितहै कि दिन भरमें भोजन से तिगुना पानी पिलावें और स्वस्थदशामें जितना भोजन खाते हो उसका छटा हिस्सा इस रोगमें खावें इसमें अनार अति लाभदायक है जितना खा सकै खावै और जहांतक होसके अन्न नदे और रोटी मे सौंफ अनीसून मिलादें और सूखी रोटी खिलावै, अरबी ऊंटनी का दूध भी अति लाभदायक है ॥ इसको भोजन और पानीके बदले पिलावें, यह दूध पिलानेकी रीति यह है कि पहिले दिन १४० माशे पिलावें, फिर हर रोज

१४० माशे बढा दिया करे. परंतु इसका ध्यान रक्खें कि आमाशय में दूध जमने न पावे इसके लिये पोदीना और इत्र सिकंजबीन कुभीर दियाकरें तौ दूध न जमेगा और लहमी जरावंद का जुल्लाब दें. और जो गरमी होतो हरड को औटा के दर्द मुकर्रर के साथ दें और जिकी में जो गरमी न होतो फलकुलानजहार दें, और जो गरमी होतो कलकलानजवारिद और पीली हरड का जुल्लाब अति लाभदायक है और तवली में मिजाज के अनुसार जुल्लाब दें, और सब प्रकारों से मवाद निकालने के पीछे जिगर के पुष्ट करने के लिये कुर्स अम्बर वारीस आदि खिलावें और मूत्र लाने के लिये कुर्स माजरीयूर दें और एक ही औषध मूत्र लाने वालीनित्त न दें उसे बदलते रहें और जो औषध दें उसे भली भांति पीस लिया करें कि वह जिगर में तुरंत पहुँचे । इस रोग में पसीना लाना भी अति लाभ दायक है ॥

रीति उसकी यह है कि खारनिमक को बाबूना के तेल में मिलाकर शरीर पर मलें और पसीना को पोंछते जावे और दूसरी रीति यहहै कि गरम रेतमें रोगीको बिठावें या लिटावें उसके चारों ओर शरीरको रेतसे तोपदें केवल मुख खुलारहै जब रेत ठंडी होजावै तौ और गरम तेल डालें इससे सूजन जल्दी पटक जाती है और जो सूजन किसी एक स्थान पर हो जैसे हाथ में या पांव में तौ उसीको रेत में गाढै और ऐसेही धूपमें बिठावै और समुद्र के पानी से स्नान करावै । जो नमक को पानी में घोलकर कई दिन तक धूपमें रक्खें तो वह भी समुद्र के समान होजाता है ॥ यह लेप तरी को सुखाता है यथाः- मेथीका चून, जंगली कबूतर की बीठ बतख के पेटका

गोंद और पुरानी चरबी इन सब को मिलाकर मरहम बनालें लहमी जलन्धर में सारे शरीर पर लेप करें और तबली में हाथ पांव पर और जिक्की में केवल पेट पर लेप करें तबली जलन्धर में मवाद निकालने के पीछे बादी के तोड़ने का उपाय करें और सूखा सुदाब, इस्पंद, सोंफ और उसका पानी इन की वत्ती बनाकर गुदा में रक्खें। जिक्की जलन्धर में कोई हकीम चीरा देते हैं उस से पीला पानी निकलता है परन्तु इस में डर है। इस रोग में जो पानी रोगी को पिलाते हैं उस के पकाने की यह रीति है कि सौ हिस्से पानी और एक हिस्से सिरका मिलाकर औटावें और जब तिहाई रह जाय तो ठंडा करके पानी के बदले पिलायाकरें। इससे जलन्धरकी प्यास बहुत बुझती है, प्यास के बुझाने और जिगर के सुद्दा खोलने के लिये सिरका अति लाभदायक है जरिश्क भी अच्छा है किन्तु जो खांसी होतो जरिश्क न दें। जो इस रोग के साथ कोई और रोग होतो उसका भी ध्यान रक्खें। जिक्की जलंधर पेट पर लेप करें. नमक अरमनी. मुलहटी फर्दमाना. और मुनक्का. प्रत्येक दश माशे. करम्ब के बीज. साढे चौबीस माशे. बकरी की मेंगनी १७५ माशे, जौका आटा और गौ का गोबर प्रत्येक २१० माशे, सबको पीस कर सोंफ या कासनी के पानी में मिलाकर पेट पर लगावें॥

तबली जलन्धर में जब बहुत दिन हो जावें और पेट कड़ा होजावे तो उस समय पेट बडा होने के सिवाय और कुछ डर नहीं है और उपाय उस का यह है कि उन औषधों का लेप करें जिन से पेट नर्म हो उसके पीछे बाबूना, नाखूना. दोनामरुआ, सातरा. सुद्दाब के बीज, जुन्दबेदस्तर, झाऊ की शाख और नतरून, कूट छानकर सुद्दाब के पानी में पीस

कर पेट पर लेप करें. और जब जलन्धर में कोई औषध लाभ दायक न होतो पांच स्थान पर दाग दें एक मेदे पर दूसरा जिगर पर, तीसरा तिल्ली पर और चौथा मेदे पर नीचे को पांचवां टूंडी पर। जो रोगी पुष्ट होतो सब दाग इकट्ठा दें नहीं तौ ठहर ठहर कर दें।

पंद्रहवां अध्याय।

यरकान तिल्ली और पित्ते के रोगों का वर्णन।

पीलिया रोग का वर्णन।

इस रोग में शरीर का और आंखों का रंग पीला या काला हो जाता है, पीला यरकान पित्तों के फैलने और काला यर-कान वादी के फैलने से होता है॥

पीला यरकान (पीलिया) कई प्रकार का होता है, एक वह बुहरान के दिन पित्तों के चमडे की ओर आजाने से होता है इस में जो रोगी पुष्ट होतो कुछ उपाय न करें और जो दुर्बल होतो उसे गर्म पानी में बिठावें कि शरीर के छिद्र खुलें और मवाद भली भांति त्वचा में आजाय और केवल सिकंज बीन को या उस को कासनी के शीरे के साथ पिलावें। जो पीलापन आप से आप जाता रहै तौ अच्छा है नहीं तौ खोलने वाली और जला देने वाली औषधें पिलावें (२) जिगर में गरमी से कोई बिगाड उत्पन्न होने के कारण हो बहुधा रुधिर की तप में होता है इस की पहिचान जिगर के बिगाड से होगी इस में वही उपाय करे जो जिगर के बिगाड में लिखा गया है॥ (३) पित्ते के बिगाड से उत्पन्न हो लक्षण उस के यह हैं कि अचानक उत्पन होगा और उस से पहिले सफेद मूत्र आवेगा फिर पीला होकर गाढा और काला हो जायगा

और न कोई विगाड और सुद्दा जिगर में होगा और भूख जैसी की तैसी ही रहे गी इस में सिकंजवीन कासनी के शीरेके साथ पिलावें और जो उपाय जिगर गरमी का है वही इस का है (४) पित्ते में गरम सूजन उत्पन्न हो और उससे पित्त उवल कर फैले लक्षण उसका यह है कि तप रहैगी और जीभ में कांटे पडेंगे और उवकाई और वमन होगी जो उपाय जिगर की गरम सूजन का है वही इसका है ॥ (५) जो सब शरीर और रगों की गरमी से उत्पन्न हो उसका लक्षण यह है कि देह जलेगा और कब्ज रहैगा और अंग में खुजली और सब लक्षण गरमी के पाये जावेंगे । जो कोई सादा विगाड होतो ठंडाई पिलावै और जो मवाद हो तौ उसे निकाले और सारे शरीर को ठीक करें और तरी पहुंचाने वाले तेल मलें और उसी प्रकार के आवजन में विठावें ॥

(६) जो शरीर के छिद्र वंद होने से उत्पन्न होता है उसका कारण यह है कि गरमी ऋतु में वहुत चलने से रेत शरीर पर जमजाती है और छिद्र वंद हो जाते हैं इस से पित्त उवल कर फैलते हैं इस में खैरू के फूल और गेंहूं की भूसी औटाकर उस के गर्म पानी से न्हावें ॥

(७) जो जिगर की गर्म सूजन से हो तो लक्षण और उपाय उसका उसी सूजन में लिखगया है ॥ (८) जो जिगर के सुद्दे से हो तो इसका उपाय भी जिगरके सुद्दे में मिलेगा ॥ (९) जो विषैले जानवर के काटने और विषखाने से उत्पन्न हो, इसमें विषका अवगुण दूरकरै और वह औषधदें जो उचित हों और जो गरम विष खाया हो तो कुर्स काफूर और ठंडी औषधदें और जो ठंडा विष होतो तिरयाक फारूक खिलावें (१०) पित्ता निर्वल हो जावे और पित्तोंको जिगर से न खेंचे, और वह स-

व देह में फैलजावै, लक्षण उसका जीमचलाना पित्तोंकी वमन होना कब्ज रहना और दस्त विना रंग के होता है इसका उपाय वही है जो जिगर की निर्वलता का है, (११) जिगर और पित्तके वीचमें जो रास्ता है उसमें सुद्दा पडे लक्षण उस का वही है जो पित्ते की निर्वलता में लिखागया है और दस्त भी धीरे धीरे सफेद आनेलगेंगे इसमें जिगरके सुद्दे को खोलें ॥

(१२) पित्तों और आतों के वीचमें जो रास्ता है उसमें सुद्दा पडे, इसमें अचानक दस्त सफेद आवेंगे, और कब्ज होगा, इसमें भी सुद्दे को खोलें और इन दोनों प्रकारों में अमलतास को करमकल्ले के पानी में घोलकर कडुये वादाम का रोगन मिलाकर पिलाना अति लाभ दायक है ॥ (१३) उन दोनों रास्तों में बुरा मांस या मस्सा उत्पन्न हो, लक्षण उस का वही है जो ऊपर के प्रकारों में लिखा गयाहै, परंतु उपाय इसका नहीं हो सकता है ॥

(१४) जो कफ की कूलंज से उत्पन्न हो इसका कारण यह है कि लसदार कफ उस रग के मुख पर चिमट जावे जिससे पित्त गिरते हों, उपाय इसका वही है जो कूलंजकाहै इस रोग में कारण दूर करने के पीछे जो पीलापन आंखों में रह जाय तौ गरम स्थान में बैठ कर पुराना सिरका नाक में डालें और सिरका और गुलाब मिलाकर आंखमें टपकावें और इफसंतीन को औटाकर कुल्ला करे ॥

काला यरकार (कमलवाय)भी कई प्रकारका होताहै,(१)जो बुहरान के दिन हो, तिल्लीके रोगों में इसके पीछे तिल्लीका यह रोग घटजावेगा, इसका उपाय वही है जो पित्तोंके प्रकार में लिखा गया है, और वाबूना और सोये का तेल मलना अति

लाभदायक है। (२) जिगर और तिल्ली के बीच में रास्ता है उसमें सुद्दा पडे, लक्षण उसके यह हैं कि भूख धीरे२ घटैगी और जिगर में बोझ होगा और यरकान भी धीरे२ वढेगा, इसमें सुद्दे कोलें, और जुल्लाव दें, और वांये हाथ से फस्द वासलीक अथवा असीलम खोलें ॥ (३) मेदे और तिल्ली के वीचमें जो रास्ता है उसमें सुद्दा पडे इसमें भूख अचानक जाती रहेगी और तिल्लीमें वोझ होगा इसका उपाय भी ऊपर की प्रकार का सा करें॥ (४) जो रुधिर के जल जाने से उत्पन्न हो, यह जिगर की गरमी के कारण से होता है. इस का लक्षण और उपाय जिगर के विगडमें देखो। (५) जो तिल्ली की निर्वलता से उत्पन्न हो इसका उपाय आगे लिखा जायगा ॥

(६) जो तिल्लीकी सूजन से उत्पन्न हो इसका वर्णन भी आगे करेंगे ॥ (७) जिगर में अधिक ठंडसे विगाड हो और उससे यह रोग उत्पन्न हो उपाय इसका जिगर के रोगों में लिखा गया है ॥

जब यरकान पीले और काले दोनों साथ हों तो दोनों हाथ से फस्द खोलें, तीन दिन वीच देकर और ऐसी औषधें औटा कर पिलावें जो वादी ओर पित्तों को निकालें, और मवाद अधिक हो उसके अनुसार उपाय करें और जिगर और तिल्ली को ठीक करें ॥

तिल्ली के रोगोंका वर्णन ॥

गर्मी का लक्षण तिल्लीका जलना (मूत्र और दस्तोंका रंग लाल औरकाला होना और गरमीके लक्षण पायेजांयगे) ठंड का लक्षण यह है कि तिल्लीके स्थान पर गड वड होना भूख का घटना और ठण्ड के दूसरे लक्षण खुश्की के लक्षण

यहहै कि तिल्ली पर कड़ापन होगा रुधिर गाढा होगा और शरीर का दुबला होगा तरीके लक्षण यह हैं कि तिल्लीमें बोझ होगा और शरीर का रंग सीसे कासा होगा । जो समान्य दोष होतो प्रकृतिको ठीककरै और जो मवाद होतो उस मवाद को निकाल कर ठीक करै जैसा कि जिगर के रोगों में लिखा गया है और बांये हाथ से फस्द बासलीक खोलै और जो, गरमी से होतौ यह औषधें लाभदायक हैं बेद के पत्तों और कसूम के पानी में सिकंजबीन मिलाकर दें और नर्म करने के वास्ते काली हरड पानी में औटाकर अमलतास के साथ पिलावे और जो गरमी अधिक होतो कुर्स कापूर इसकूलकंद्रीयून मिलाकर दें और जो ठण्ड से बिगाड होतो अजमोद का पानी और सिकंजबीन बुजूरी बिना कुछ खाये पिलावें और मूली का पानी तिरियाक अरबी गुलकंद किब्र की छाल सिकंजबीन बुजूरी के साथ दें और जो खुश्की से बिगाड होतो शर्बत बनफशा और माउजोवन आदि तरी पहुंचाने वाली औषधें पिलावें और जो किसी मवाद से बिगाड से होतो पहिले फस्द और जुल्लाब से वादी को निकालें और जो तरी से बिगाड होतो गुलाब के फूल. किब्र की जड. बालछड, रेवंद. धुली हुईलाख और जरिश्क सब को पीसकर कुर्स बनाकर दें और सुखाने वाली औषधों का लेप करें और नर्म करने के लिये हुब्बअयारिज दें और जो कई मवाद मिले हुए हों तो उसका उपाय भी वैसाही करें और तिल्ली से ठंढा मवाद निकालने के लिये किब्रके जड की छाल और इफतीमून दोनों बराबर कूट छानकर शहदमें मिलाकर सात माशे देना चाहिये औ जो ठंढ और खुश्की दोनों हों तो उनका वर्णन आगे लिखाजावेगा ॥

तिल्ली की सूजन का बर्णन

जो सूजन गरम हो तो ज्वर नित्य रहेगी और जो कारण इसका रुधिर हो तो ज्वर चौथे दिना अधिक होगा और जो पित्त होतो एक दिन वीच करके ज्वर अधिक होग। और वा की और लक्षण रुधिर और पित्तों की अधिकता के पायेजावें गें और जो कफकी सूजन हो उसको तहव्वुज तिहाल कहतेहैं और जो वादी से हो उसको जसावत या सलावत कहते हैं, लक्षण तरी और खुश्कीके दूसरे पाठ में लिखे गये हैं, मवाद के अनुसार उस मवाद को निकाले और ठीक करे, और जो गरम सूजन हो तो जौका आटा, हरी मकोय. झाऊ के पत्तों के पानी में पीसकर तिल्ली पर लेप करै, और कफ की सूजन में अंगूर की लकडी की राख. रोगन गुल में मिला कर लेप करै या बकरी की मेगनियां जलाकर उसकी राख तीन हिस्से और कित्र की लकडी की राख एक हिस्से सिरके में मिलाकर लगावें, और जो वादी से होतो अश्क सिरके में पकाकर या सुद्दाव और पोदीना सिरके में पीसकर या गेहूंकी भूसी सिरके में औटाकर अश्क मिलाकर तिल्ली पर लेप करें कहते हैं कि जो कोई प्याला झाऊ की लकडी का बनाकर खाना पानी उसमें खिलाया पिलाया करें तो चाली स दिनमें तिल्लीकी सूजनघुलजावेगी. और हंस राज. सूखा जूफा. संभालू के वीज. बराबर लेकर कूट छानकर शहदमें मि लाकर सात माशे खिलाना सूजन को घुला देता है और इंजीर और कित्रिका अचार जो सिरका में वनाहो अति लाभदायक है और मरहमों से सूजन को नरम करके बांये हाथ से फस्द असीलम खोलना लाभ देता है।

तिल्ली की सूजन के पकजाने का वर्णन

लक्षण पीव पड़ने का यह है कि पीड़ा होती है, जैसे कोई वस्तु चुभती हो और मूत्र में तलछट निकलती है और दुर्गंध आती है. और कभी ऐसा होता है कि यह सूजन अंदर को फूटती है. और उलटी और दस्तों में निकलती है उपाय इसका वह है जो जिगर के फोड़े का है परंतु मूत्र लाने वाली औषधें प्रकृति के अनुसार दें और जो पीव निकलजाने के पीछे भी कड़ापन रहे तो वादी की सूजन के लेप लगावें और कब्ज करने वाली औषधें से बचें और जब सूजन कड़ी होके पुरानी हो जाय और कोई औषध लाभकारक न हो तौ दाग दें इसकी रीति यह है कि चाम को तिल्ली की जगह से मोचन से पकड़ के अलग उठालें, और लोहे के औजार से जिसकी दो नोकें हों भली भांति गरम करके दाग दें, और उसी दाग के इधर उधर दो दाग और दें कि तीनवार में छः दाग होजांय और जो वह शस्त्र छः पहलका होतो और भी अच्छा है उससे एक ही वार में छः दाग हो जावेंगे।

तिल्ली की निर्बलता का वर्णन

जो तिल्ली की आकर्षण शक्ति में निर्बलता होतो लक्षण उसका यह है कि भूख बिल्कुल जाती रहैगी, और वादी के रोग उत्पन्न होंगे और जो उसकी मासकी शक्ति में निर्बलता होतो सौदा की उलटी और दस्त होंगे और जो उसके पचाव में निर्बलता होगी तो भूख बहुत होगी. या वादीके दस्त होंगे और जो दूर करने वाली शक्ति में निर्बलता होतौ तिल्ली बढ़ जायगी और भूख जाती रहैगी तिल्ली के पुष्ट करने के लिये इफसंतीन रूमी. बालछर झाऊ का फल कर्दमाना और सरकंडे

की जड की कुल्की करें. और किन्न की जड और गुलाब के फूल. गूगल सब को कूट कर झाऊ के पत्तों के पानी में या सुद्दाब के पानी में मिला कर सिरकेके साथ तिल्ली पर लेपकरें और तिल्ली को खुरखुरे कपडे सेमले परऔरउस खालीसींगी लगावे

तिल्लीके सुद्दे का वर्णन

इस में तिल्ली में बोझ होगा और सूजन के लक्षण बिलकुल न होंगे जिगर के सुद्दे में जो पुष्ट करने वाली औषधें लिखी गई हैं दें. और सिकंजबीन बुजूरी तथा कुर्स किन्न अति लाभदायक है ॥

तिल्लीकी बातज सूजन का वर्णन

यह तिल्ली के पचाव और दूर करनेवाली शक्तिकी निर्बलता से होती है इसमें तिल्ली को पुष्ट करें और गेंहूं की भूसी बाजरा और नमक कूट कर सेके और खारीनमक. पोदीना. सुद्दाब सिरके और शहद में पीसकर लेप करें और बारे लगावें और तरातेजक का चूर्ण खिलावें ॥

तिल्लीमें पथरी पडनेका वर्णन

इसमें मूत्रमें रेत आती है और तिल्ली में चुभती है इसके सिवाय और कोई रोग नहीं होता इंजीर को सिरकेमें भिगो कर खिलावें और उसीका लेपकरै और मूत्रलाने वाली तथा वह औषधें दें जो गुरदे और मसाने की पथरी को तोडती है

सोलहवां अध्याय

आंतोंके रोगोंका वर्णन

जलकुलअमआ का वर्णन

इस रोग में भोजन विना पचे हुए दस्त होकर निकलजाताहै

जो आंतोंमें फुन्सियां होंतो जलन और पीडा होगी और पत
ला और पीला पानी निकलेगा इसमें पित्तों का जुल्लाव दें
फस्द खोलें ठंडी औषधें पिलावें और सफूफ जल कुलअमआ
खिलावें ॥
और जो फुन्सियां आंतोंके बाहर हों तो खुजली और चुभ
ना भीतर होगा पीडा कभी टूडी के ऊपर कभी नीचे और
कभी आसपास होगी इस में हुकना करें और ठंडी औषधें टूंडी
के नीचे लगावें । जो कफकी अधिकता से हो तो जुल्लाब दें
और उलटी करावे और हब्ब अयारिज से मवाद निकालें
और सुखाने वाली औषधें दें ॥
जो तरी से विगाड होतो सुखाने वाला सफूफ खिलावें और
रोगन गुल पेट पर मलें ॥ जो पित्तों की अधिकता होतो पि
त्तों को निकालें और पीली हरड दें ।, जो कफ और पित्त
दोनों होंतो दोनोंको निकालें और पीली हरड सातमाशे हब्बु
लआस. शाक प्रत्येक पौने सातमाशे सबको कूट छान कर
उसमें हालों पौने सात माशे मिला के यह सफूफ सात माशे
फकावें ॥ जो फालिज से यह रोग होतो उसी का उपाय करें
और जो जुल्लाब से यह रोग हो तो चार तुख्म भून कर
रोगन गुल में चिकना कर के फकावें. और हालों को मठे में
इतना औटावें कि वह जम जावे तो उस का खिलाना अति
लाभदायक है ॥

आंतों से दस्तों में रुधिर आने का वर्णन

यह रोग दो प्रकार का है एक तो यह कि आंतें छिल जावें
दूसरे यह कि रुधिर की अधिकता से आंतों की किसी रग
का मुंह खुल जावे ॥
(१) आंतों के छिल जाने के कारण जो पित्त होंतो पित्त

के दस्त आवेंगे फिर दस्तों में छिलके निकलेंगे. और फिर रुधिर छिलकों समेत और आंत्र निकलेगी. और गर्मीके लक्षण पाये जावेंगे. आदि में कच्चे अंगूरों का सत. अनार का सत और जो औषधें खट्टीं और कब्ज करनेवाली हों खिलावें. और जब मवाद अधिक होजावे तौ उसे निकालें. और लुआव अस्पगोल, लुआव वीदाना, और लसदार औषधें जो घाव को वंद करें पिलावें, और कुल्फे का शीरा. गिले अरमनी के साथ पिलाना और सुफूफ मिकलियासा अति लाभदायक है. और जब तुरन्त दस्तों को रोकना हो तो वीजों को भून डालें और केवल वारतंग लाभदायक है और जव पीडा अधिक हो तौ चार तुख्म का लुआव रोगन गुल में मिलाकर पिलावें ॥

और जो कफ से होतो पहिले कफ के दस्त आवेंगे और बहुधा जुकाम नजले के पीछे ऐसा होता है पहिले कारण को रोकें और वह औषधें दें जो घाव पर दीजाती हैं जैसे रैहां के वीज वारतंग और जंगली तुलसी आदि और काली हरड घी से चिकना कर भूनकर और कूटछानकर तीन माशे लें और उसके बराबर सफेद कंद मिलाकर खिलावें ॥

जो यह रोग वादी से होतो हर समय मरोड रहैगी और दस्तों में वादी और रुधिर और छिलके निकलेंगे इसमें पहिले कारण को दूर करें फिर तिल्ली को पुष्ट करें. और मवाद के नर्म करने वाले वीज और सफूफ खिलावें ॥

जो तिल्ली के कडेपन और मवाद की खुश्की से होतो पहिले कब्ज होगा और वैसीही वस्तु खाई होगी और मवाद भी कडा निकलेगा इसमें तर और नर्म करने वाली औषधों को दें जैसे वीदाने ईसवगोल का लुआव शर्वत वनशफा और रोगन

न बादाम आदि और मरोड बाकी रहै तो कब्ज करने वाली औषधें जो उचित हों दें परंतु जब तक मवाद को न निकालें और आंतों से सूखा मवाद न निकलचुके कभी कब्ज करनें वाली औषधें न दें ॥

और जो विषेली वस्तु खाने से मरोड हो जैसे हरताल नौसादर और चूना आदि तौ उसमें वमन करावे और ताजा दूध और हरीरे पिलावै ॥

और जो जुल्लाब पीने से मरोड होतो ठंडी औषधें दे और लुफूफ तीन और बीज खिलावे. और मठे में लोहा बुझाकर अकेला पिलावे या चांवल के साथ खिलावे ॥

जब आंतों की रग खुलजाने से रुधिर के दस्त आवें तो मरोड बबासीर और जिगरके दस्तों के लक्षण न होंगे और पीडा भी न होगी, परंतु पेचिश में पीडा अवश्य होती है जो रुधिर अधिक निकलजाय और रोगी में बल रहेतो फस्द बासलीक खोले. फिर बंद करने के लिये कुर्स कहरुवा और ऐसीही औषधें दे और गिले अरमनी पौने दो माशे. शर्बत हब्बुलआस या शर्बत अंजबार के साथ देना अति लाभदायक है और अनार के छिलके. झाऊ और गिलेअरमनी बराबर लेकर कूटछानकर गोलियां बनावे. उसमें से सात माशे खाना अति लाभदायक है. और पेट पर वारे लगाना भी अच्छा है ॥

जब तक होसके इस रोग में अफीम के प्रकार की औषधें न खिलावे, और जो आवश्यकता होतो शाफे में दे या उनके साथ उनकी ठीक करने वाली औषधें मिलादे ॥

आंतों से पीव आने का वर्णन ।

कारण इसका या तो मरोड से घाव पड जाना है या पककर सूजन का फूटना. इसमें पहिले पेचिश होगी या सूजन

होगी। पहिले उन औषधों से हुकना करें जो घाव को साफ करें और फिर उनसे जो घाव को भरलावे, हुकना करें ॥

साफकरने वाली औषधें यहहैं, अनारके छिलके, सिमाक आस, चांवल, जौ. सवको कुचल के पानी में औटावै, और मलकर थोडा सा विनाबुझा चूना मिलाकर हुकनाकरें। और भरलाने वाली औषधें यह हैं, वबूल का गोंद. गिले अरमनी, दम्मुल अखवैन, वरगद के रेशे का रस. जलाहुआ कागज सबको पीसकर हरे वारतंग के पानी में और कच्चे शहतूतके रसमें मिलाकर हुकनाकरै। जब मरोड से पीप आवे तौ पहिले कारण को दूर करें और फिर घाव के भरने का उपाय करै।

कूंथकर दस्त आने वर्णन।

इसमें आंव निकलती है और कभी उसके साथ रुधिर भी होता है, यह सूखे मवाद के आंतो में फंस रहने से होता है और कूंथने में आंव निकलती है इसको जहीर काजिब कहते हैं लक्षण उसका यह है कि ईसबगोल आदि के पिलाने से आंव नहीं आती इस में मवादको नर्म करें और वैसाही हुकना काम में लावें और कभी केवल गरम पानी लाभदेता है और इसमें कब्ज करने वाली औषधें कभी न दें कि उससे मरनेका डर है। और जो कफ या पित्त या वादी से होगई हो तो उपाय उसका मरोड में लिखागया है इस रोगमें हुकना और शाफा अति लाभदायक है ॥

और जो नीचे की आंतमें गरम सूजन होने से यह रोग हो तो उस स्थान पर वोझ होगा और कभी तप और मूत्र कठिनतासे होगा इसमें फस्द खोलें और कमरके नीचे पछने लगावें और भोजन थोडा दें और ठंडी औषधें जो रुधिर की गरमी दूर करें पिलावें और जब मवाद का गिरना रुकजावै तो

खैरू, मेथी, बनफशा, बाबूना करमकल्ले के पत्ते औटाकर पेट को और गुदाको धारेंजो और उल्टी हो सकती हो तो बहुत अच्छा है और जो गुदा में अधिक ठण्ड पहुंचने से यह रोग होतो सेकैं और गरम पानी से धार और कूटका तेल आदि गरम करके मलें और ईंट गरम करके उसपर बैठें और सात माशे हालों भूनके बिना कुछ खाये फांकें। जो सवारी या किसी कड़ी वस्तुपर बैठने से होतो मोमरोगन मलें ॥

खाली पेटमें खटाई खाने से भी ऐसा रोग होजाता है उसमें मिश्री का शर्बत पिलावें ॥

मरोड़ का वर्णन।

इसका उपाय कारण के अनुसार करै जो ऊपर लिखागया है और कूलंज में और कैंचुए पड़ने के रोग में लिखाजायगा और जो जुल्लाब के पीछे यह रोग हो तो थोड़ा थोड़ा गरम पानी पिलावै और रोगन गुलमलें ॥

आंतों के फूलने और बोलने का वर्णन।

यह रोग वायु उत्पन्न करने वाली वस्तुओं के खाने से या बुरा भोजन खाने से होता है इसमें अच्छा भोजन खावै और गुलकंद और गुलाब पीवै और जो कारण निर्बल हो और उससे आंतको ठंड पहुंचै तो आंतें बोलेंगी इसमें भोजन थोड़ा खावै और माजून फलाफली और कमूती देनाचाहिये और जो इसके साथ दस्तभी आते हों तो जवारिश खोजी अति लाभदायक है ॥

कूलंज का वर्णन।

यह पीड़ा है जो कूलन नाम एक आंत में होती है, और इसके साथ बिलकुल कब्ज हो जाताहै, और जो कुछ निकलता

भी है तौ बडी कठिनता से, कारण इस का गाढे कफ का आंत में अटक रहना हो तो भोजन बुरा खाया होगा और कब्ज अधिक होगा, और खट्टी और नमकीन वस्तु अच्छी लगेगी। पहिले शाफे और हुकनों से मवाद को नरमकरें फिर जुल्लाव पिलावें, औह वह जुल्लाव ऐसा हो कि मतली को दूर करै, और मेदे को पुष्ट करें, जैसे सफरजली और जवारिश शहरयाराका जुल्लाव दें॥

जुल्लाव देने से पहिले आवजन और सेक, और लेप न करें और कवज दूर होजाने के पीछे एक रातदिन बिलकुल भोजन न दें, और चनों को औटाकर उनका पानी गरम मसाला डालके दें, और पानी थोडा पिलावें, और जो पानी के बदलें गुलाब या सौंफ का अर्क या माउलअरल दें तौ अच्छा है॥

जो गाढी वायु के कारण से पीडा होतो तकले से चुभेंगे और पेट फूलने वाली वस्तु खाई होगी, और पेट बोलेगा और पीडा एक स्थान पर न रहेगी इसका उपाय भी ऐसा ही करें और जुल्लाव देने से पहिले इस में लेप आदि कर सकते हैं और सोये का तेल मलें और कमूनी खिलावें और वह उपाय करें जो मेदे के फूलने में लिखा गया है, उरद के आटे की रोटी एक ओर से पकाकर कच्ची ओर से गरम गरम पेट पर बांधना और वारे लगाना अति लाभदायक है॥

पेट पर वादी के गिरने से भी कुछ मनुष्यों को ऐसी पीडा होती है. चिन्ह उस का यह है कि अचानक पीडा हो और पेट फूल जावे और खट्टी डकारें, आवें परंतु पीडा अधिक न हो इस में वादी का मवाद निकालें और फरद असीलम खोलें और तेल मलें, और आंतों की सूजन के कारण से पीडा हो

तौ मवाद के अनुसार जुल्लाव दें और फस्द खोलें. और वह उपाय करै जो मेदे की सूजन में लिखा गया है, ढीली और कफकी सूजन बहुत कम होती है, और वादी की सूजन में उन औषधों से हुकना करै जो वायु को तोडें. और उन में रोगन मिले हों ॥

और जो आंत के टल जाने से यह पीडा होतो कूदने उछलने से ऐसा हुआ होगा. इस में पेट मलवावै इसी को लोग नाफ टलना कहते हैं ॥

और जो आंत अपनी जगह से उतर आवे और मवाद आंत में फंसा हुआ होतो उस मवाद को निकालें और फिसलाने वाली औषधें दे, और ऐसा उपाय करै कि फिर यह रोग न हो ॥

और जो आंतों के भीतर पित्त इकट्ठा होके यह रोग होतो केवल मवाद ही निकाल लेने से लाभ होजायगा परंतु ऐसा बहुत कम होता है क्योंकि पित्त पतले होते हैं और शरीर से उत्पन्न भी कम होते हैं ॥

और जो मसाने, गुरदे, जिगर, तिल्ली और रहम की सूजन से होतो उन का उपाय करै ॥

एक प्रकार का कूलंज बहुत बुरा है. उसको एलाऊस कहते हैं और उबकाई. और उलटी भी इस में होती हैं ॥

और जब यह रोग बढ जाता है तौ दस्त मुख से निकलता है इसका उपाय वही है जो ऊपर लिखा गया है ॥

इस रोगके आदि में फस्द अति लाभदायक है, जब आंतों में सूजन हो या उसका डरहो ॥

हर प्रकार की कूलंज में यह औषधें अति लाभदायक हैं छुदर का मांस, सुखाये हुए कैंचुए. भुना हुआ विच्छू जला-

या हुआ बाहरसींगा. और यही औषधें मरोड के रोगको एक दम में खोदेती हैं ॥

बिना पीडा के कब्ज होने का वर्णन

इस में कब्जका उपाय करें और शर्वत वजफशा रोगनबादाम के साथ पिलावें ॥

पेटमें कॆंचुएपडने का वर्णन

यह चार प्रकार के होते हैं एक लंबे बारह अंगुल के या गज भरके उनको कॆंचुए कहतेहैं दूसरे चौडे जैसे कद्दू के बीज होतेहैं उनको कद्दूदाने कहतेहैं । तीसरे गोल होतेहैं । चौथे पतले और छोटे इनको चिंचने कहते हैं ॥

लक्षण इनका यह है कि दिनको होट सूखे रहें और रातको राल बहाकरे और मेदे के मुख पर कुरेद मालूम हो और भूख के समय कॆंचुए ऊपर चढते हों और ऊपरही की आंतमें पडते हों और कद्दूदाने से और तीसरी प्रकार के कॆंचुओंसे भूख अधिक होजातीहै और वो कभी कभी दस्तों में भी निकला करते हैं और कूलून और अऊर, नामक आतों में उत्पन्न होते हैं और चिंचने बच्चों के बहुत पडते हैं और नीचेकी आंतोंमें होते हैं उन से गुदामें खुजली होती है ॥

इन्हें इसप्रकार से मारके निकालें कि तीन दिन बराबर ताजा दूध मीठा डालके पिलावे और चौथे दिन दूधके साथ यह औषधें दें छिलाहुआ विरंग, कावलीसरेखस तुरबुद. कवीला प्रत्येक १७॥ माशे नाकला मिश्री कडुवा कूट प्रत्येक २४॥ माशे शीह३५माशे. नमक३माशे, कूट छानकर १० माशेदें और पीनेके समय नाक बन्द करले नहींतो कीडोंको इनकी बासपहुंचजावेगी

गरम प्रकृति वाले को गरम औषधें कभी न दें उस के लिये यह औषध हैं खट्टे अनार के पेड की छाल और उसकी जडपानी

में औटाकर छानकर पिलावे. इस से कीडे मर जाते हैं और दस्तों के साथ निकल आते है, और जो दवा पीना बुरा मालूम होतो हुकना या शाफा करें, और ये भी न हो सके तौ सिमाक, अकाकिया और गिले मखतूम शराब में पीसकर पेट पर लेप करें. या कडुये वादाम, कमीला, तुरफस, चित्र और करम्ब को सिरके में पीसकर लेप करें ॥

और बच्चों के लिये यह उपाय अति लाभादायक है कि मेंहदी और मोम मिला कर बत्ती बनावें और उस का शाफा करें फिर थोडे देर पीछे दिये से देख के जो कीडा किनारे हो उसे मोचने से पकड कर खेंचलें। जैतून का कच्चा तेल भी सब प्रकार के कीडों को लाभदायक है चाहे खिलावें या गुदा में लगावें ॥

सत्रहवां अध्याय

गुदा के रोगों का वर्णन

बवासीर का वर्णन

इस में गुदा पर मस्से फूल जाते हैं। जो उन सेरुधिर और पीला पानी बहै तो उसे खूनी बवासीर कहते हैं और जो कुछ न बहै तौ बादी की बवासीर कहलाती है इस रोग में बादी के मिलने से रुधिर गाढा होजाता है या जल जाता है और कमी पित्तों के मिलने से भी होता है. रुधिर के गाढा होने के लक्षण यह हैं शरीर भांरी होगा पीडा और खटक अधिक होगी. और पित्तों के मिलने के चिन्ह यह हैं कि मस्सों में जलन और पीडा होगी इसमें फस्द खोलें और जो न होसके तो पछने लगावें और कब्ज को दूर करें और रुधिर को ठीक करें और जो वह अधिक निकलता होतो कुरस कहरुवाखिला.

वें, और जब काला रुधिर निकलने लगे और निर्बलता का डर नहो तो कभी बंद न करें क्योंकि इस से और रोग नहीं होने पाते और जो मस्से फूले हों और पीडा हो परंतु उन में रुधिर न बहता हो तो खतमी और सोयेसे सेकें, और रोगन शफतालू मलें, और मरहम सफेद का अति लाभ दायक है. परंतु मस्सों के काटने में डरहै, जो काटें तो एक मस्सा रहने दें और गूगल मुर्र बकायनके छिलके काचली सांप की और ठुंडनी बैगन की चाहे सबको चाहे एक२ को जलाकर धूनी लेना मस्सों को सुखा देता है, और गिरा देता है ॥

बादी की बवासीर का वर्णन ।

इस रोग में गाढी बात आंतोंमें उत्पन्न होतीहै वह कभी नीचे को उतरती है और कभी पीठकी ओर जाती है कभी हाथ पावोंमें आजाती है और कभी रुधिर बहता है कभी पेट बोलता है और कभी पीडा भी होतीहै. इसमें बादीका मवाद निकालें और बात नाशक औषधें दें, किब्र की जड की छाल एक हिस्से और सातर फारसी उससे आधी पीस कर सात माशे फंकावे और बदन का मलना. घोडेकी सवारी,मह्नत करना और फस्द बासलीक अति लाभदायक है ॥

गुदा पर नासूर होजाने का वर्णन ।

उससे पीलापानी बहा करताहै यह बडी कठिनाई से अच्छा होताहै, इस रोगमें शियाफ गर्मपानीमें घिसकर सबेरेऔरशाम को दो तीन बूंदें रोगी को चित लिटाकर टपकाया करें और जब तक दवा सूखनजाय वैसेही पडे रहें और जो नासूर में बत्ती जा सके तो बत्ती शियाफ की औषधों के गोंदका पानी लगाके रक्खें और सलाई में रुई लपेटकर बत्ती की जगह रखना उत्तम है ॥

और जब नासूर आंतके पार होजाता है तो अच्छा नहीं हो सक्ता है ।

गुदा पर सूजन हो जाने का वर्णन ।

जो सूजन गरमीसे होतोपीड़ाऔर जलनहोगी इसमेंफस्दखोलैं और पछने लगावें. उलटी करावै जबसूजन पकने पर आवेतो तुरंतचीरदें क्योंकि देरहोनेसेनासूर पड़नेका डरहैऔरजोसूजन ठण्ड और कफकी अधिकता से होतो वह नरम होगी और गरमीके लक्षण बिलकुल न होंगे उसमेंउलटी करावैऔरपका ने वाली मरहम लगावें ॥

गुदा फटजाने का वर्णन ।

इसका उपाय वही है जो होटों के फटने में लिखागयाहै बहुत ठण्डे पानीसे बचें खट्टी वस्तु नखावेंऔर कबज न होनेदेंइसके लिये सवेरे शर्वत बनफशा और रोगन बादाम मिलाकर देतेहैं और नरम भोजन खिलाते हैं ॥

शिरज के ढीला होजाने का वर्णन ।

शिरज एक पट्ठा है जो दस्त और बात को रोकता है जब यह ढीला हो जाताहै वो दस्त और बात नहीं रुकसक्तीअचा नक निकल जाती है । यह बात तरी और ठंड पहुंचने से होती है इस रोग में उस मवाद को निकालें जिस से पट्ठा ढीला होगया हो और उस उपाय से मिजाज को ठीक करें जो फालिज में लिखा गया है, और जो सूजन हो तो उस का उपाय करें और जो चोट लगने या ववासीर के मस्से काटने से यह रोग हो तो असाध्य है ।

कांच निकलने का वर्णन ।

जो कारण इस का सूजन हो तो उसका यह उपाय करै कि खतमी और बनफशा औटाकर रोगी को उस में बिठलावें

और मोम का तेल मलें तो वह अन्दर बैठ जाती है और जो तरी से पट्ठा ढीला हो जाने के कारण यह रोग हो तो जरा से कूंथने में निकल आया करेंगी, और सहज से अंदर को चली जावेंगी, उपाय उस का यह है कि रोगन गुल मल कर उस पर सफेदा, गुलनार, माजू, फिटकरी, सुरमा और अनार के छिलके पीस और छान कर छिडकें और गद्दी रखकर कस दें ॥

गुदामें गहरा घाव होजाने का वर्णन

इस में काला मरहम लगावें और सुखाने वाली औषधें छिडकें, और जो पीडा अधिक होतो अफीम मलें और वही उपाय करें जो घावों का है ॥

गुदामें खुजली होने का वर्णन

जो कीडे उत्पन्न होने से खुजली होतो लक्षण और उपाय उस का लिख चुके हैं, और जो कोई मवाद होतो उसे निकालें और हर प्रकार के मवाद में ठुड्डी पर पछने लगाना और सिरका और रोगन गुल मलना अति लाभदायक है ॥

अठारहवां अध्याय

गुरदों के रोगों का वर्णन

गुरदे के बिगाड का वर्णन

इस में गरमी, ठण्ड और मवाद के लक्षण वैसे ही पायेजायंगे जैसे कि जिगर के बिगाड में लिखेगये हैं और उपाय भी उसी प्रकार का करें जो गरमी से बिगाड होतो काफूर मलना लाभदायक है परंतु अधिक न मलें कि इस से पथरी पडजाने का डर है और विषय शक्ति घटजाती है ॥

गुरदेके दुवला होजाने का वर्णन

इस रोग का लक्षण यह है कि मूत्र अधिक और सफेद आवेगा. शरीर दुवला होगा. विषय की इच्छा कमहोगी और सिरमें पीछे की ओर हलकी पीडावरावर रहेगी । जिस कारण से यह रोगहो उसकारण को दूर करें और फिर गुरदेको मोटा करने के लिये पिस्ते. वादाम, बुंदुक और नारियल शक्कर के साथ और दवा उलतुरंजवीन और विषयकी इच्छा उत्पन्न करने वाली औषधें खिलावें ॥

गुरदेकी निर्वलता का वर्णन

इस का लक्षण यह है कि टेढ़ा और सूधा होने में और करवट वदलने के समय कमर में पीडा होगी. विषयकी इच्छा और मूत्र घटजायगा और मांस के धोवन कासा मूत्र आवैगा ।जो कोई सादा विगाड होतो उसी के अनुसार उसे ठीक करै और गुरदे के दुवला होने से ऐसा रोग होतो उसका उपाय करें । जो गुरदे की खाल ढीला होजाने से और उसके रास्तों के खुलजाने से यह रोग होतो कारण उस का विषय की अधिकता अथवा चोट लगना अथना मूत्र लाने वाली औषधों का अधिक पीना होगा इस में कारण को दूर करें और जो औषधें जिगर को पुष्ट करती हैं वह गुरदे को भी पुष्ट करती हैं। माजून लवूव और विषय की चाहना उत्पन्न करने वाली औषधें अति लाभदायक हैं ॥

गुरदे में वायुकी पीडा का वर्णन

इस रोगमें कमर के आस पास पीडा और खिचाव होगा और बोझ न होगा पथरी के लक्षण न पाये जावेंगे, और भूख के समय पीडा घट जाया करैगी, इसमें जीरा, सोया, सुदाव के बीजें, वावूना

पीसकर गुरदेके स्थान पर लेपकरें, और शर्बत बुजूरीपिलावै और बादी की तोडने वाली औषधें खाना और शरीर को मलना और पचाव को ठीक करना अति लाभ दायक है ॥

गुरदे कीपीडा का वर्णन ।

इस का कारण गुरदे की बात या निर्बलता या सूजन या पथरी या घाव होगा. उस कारण को दूर करें, और बाबूना और सोया और खतमी और करम्ब के पत्ते औटा कर आबजन करना हर प्रकार की पीडा को लाभ दायक है ।

गुरदे की सूजन का वर्णन ।

लक्षण और उपाय उसका मवाद के अनुसार यह है जो जिगर की सूजन में लिखा गया है, परंतु कमरमें पीडा होगी जो दाहिने गुरदे में सूजन हो तो कुछ ऊपरको जिगरके पास पीडा होगी और जो बायें गुरदे में होतो नीचे को मसाने के पास पीडा होगी यह इस लिये है कि दाहिना गुरदा बांये गुरदे से कुछ ऊंचा है ॥ और जोपीडा अधिकहो तो परदोंके पास गरम मवाद से होगी ।

और जो सूजन गुरदे के रस्तों में होतो मूत्र रुकैगा, और जो आंतों के पास होतो पीडा भीतर की ओर होगी, और अचम्भा नहीं कि कूलंज का रोग भी उत्पन्न हो जावे और जब गुरदे की सूजन पुरानी हो जावे तो फस्द माविज लाभदायक होगी ॥

गुरदेके घाव का वर्णन ।

लक्षण उसका यह है कि मूत्र में पीब और रुधिर और छिलके निकलेंगे, और गुरदे के स्थान पर पीडा होगी इस में मवाद को ठीक करें और जिस ओर के गुरदे में घाव हो उसी ओर फस्द बासलीक खोलें, और पुष्ट जुल्लाब कभी न

दें परंतु हलका जुल्लाव दे सकते हैं, इस के पीछे गर्मी और ठण्ड के अनुसार मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें, और फिर घाव भरने वाली औषधें दें, जैसे गिलेअरमनी, दम्मुलअखवैन. जला हुआ कागज, कुंदर आदि और कुर्स काफनज और बनाद कुलबुजूर खिलाना लाभदायक है ॥

गुरदे में खुजली होनेका वर्णन

सात दिन में दो वार मवाद को निकालें, और उलटी करें और शर्बत बनफशा पिलावें. और शियाफ अबियज को रोगन बादाम में घिस कर मूत्र के छिद्र में टपकावें, और बनादकुल बुजूर खिलावें ॥

जिया बितुस का वर्णन

यह वह रोग है कि पानी जैसा पीवें वैसाही तुरंत मूत्र में निकलआवें इसका उपाय गर्मी और ठण्ड देखकर करना चाहिये गरम में कुर्सकाफूर और कुर्स तबाशीर और कुर्स जिया बितुस दें, और ठण्ड में मसरोदीतूस और माजून मासिकुल बौल खिलावें ॥

गुरदेमें पथरी पडने और पेशाब में रेतआने का वर्णन

इस रोग की बारियां होती हैं कभी एक महीने के पीछे कभी वर्ष दिन में और कभी कमबढ में जोर करताहै । इसका लक्षण यह है कि ठुड्डी की जगह खिचाव और बोझ होगा और मूत्र पीला और लाल आवेगा. और कभी उसमें पथरी भी निकलेगी, और जब आंतें भरेंगी तो पीडा अधिक होगी और पथरी में अधिक दुखहोता है: और रेत पडने में दुख और रोग उससे कम होते हैं ॥

और जब मूत्र में रेत निकले तो जानों कि रेत पडी है

पहिले वमन करावै और मूत्र लाने वाली और साफ करने वाली औषधें और जुल्लाब पिलावें, और जब पीडा अधिक होतो वह आवजन करें जो गुरदे की पीडा में लिखा गया है और पथरी के तोडने के लिये माजून अकरब और माजून ह जरुलयहूद अति लाभदायक है। और उन वस्तुओं से बचें जो रुधिर को गाढा और मैला करें, और पचावका उपाय करें और जब पेट खाली होतो मेहनत करें और डण्ड पेलें, और विषय कम करें और कतां के कपडे परसोना और भोजन के बीचमें और कभी२ विनाकुछखाये ठंढा पानी पीना पथरीको नहींपडने देता है।

उन्नीसवां अध्याय

मसाने के रोगोंका वर्णन

मसाने की सूजन का वर्णन

जो गर्मी से सूजन होतो पीडा अधिक होगी सुई सी चुभेगी, पेड़ू फूला हुआ होगा. और गरम ज्वर होगा इस में फस्द बासलीक खोलें और तीन दिन पीछे माबिज की फस्द खोलें और मुलैय्यन मुवारिक पिलावें हरी मकोय के अर्क के साथ आदि में वह पुष्ट औषधें जो मूत्र लावें. बिलकुल न दें, और अकेली वह औषधें जो ठण्डी हों और मवाद को इधर गिरने से रोकें कभी न दें क्योंकि ऐसा करने से मवाद के कडा होजाने का डर है और रुधिर की सूजन में तो कभी ऐसा न करना चाहिये। जब सूजन का मवाद पकने पर हो तो पकाने के लेप पीछे उसके फोडने का उपाय करें. और पीव निकलने के पश्चात् घाव को भरें और जो ठण्डी सूजन होतो अगर उस में नरमी होतो कफ का चिन्ह है और कडापन वादी का चिन्ह है बाकी और लक्षण हर मवाद के

जो उस के लिये हैं पाये जावेंगे। कफ की सूजन में वमन करावें और गरम औषधों से हुकना करें और पटकाने वाले आवजन में बिठलावें. और मूत्र लाने वाली औषधें माउल असल के साथ और अमलतास दें वादी की सूजन में नरम करने वाली औषधों का लेप और तरेडा करें, करमकल्ले और चनों का पानी पिलावें, और खीरे ककडी के बीज हिल्यून. हंसराज और अमलतास का जुल्लाव बना कर रोगन बादाम के साथ दें. और मूत्र अधिक न लावें और जब सूजन नरम होजावे तो फस्द साफिन या बासलीक खोलें

मसाने के घाव का वर्णन

मसाने के घाव का यह चिन्ह है कि मूत्र में छिलके. दुर्गन्धि और जलन होगी और मूत्र रुक कर आवेगा। उपाय इसका वही है जो गुरदे के घाव का है. और जब पीडा अधिक होतो शियाफ अबियज स्त्री के दूध में घोलकर मूत्र के छिद्र में टपकावें.और जब पीव अधिक आती होतो केवल माउल असल टपकावें. वह घाव के साफ करने में अति उत्तम है. और मसाने के रोगों में मूत्र के छिद्र से दवा का पहुंचना तुरंत लाभ देता है. और स्त्रियों को पिचकारी से दवा पहुंचा सकते हैं॥

मसानेकी खुजली का वर्णन

इस रोग में पेडू में खुजली जलन और पीडा होगी. और मूत्र में दुर्गन्धि होगी और कभी कभी उस के साथ रुधिर भी निकलेगा. इस में मवाद को निकालें और ठीक करें, और लुआब बीदाना और स्त्री का दूध और रोगन बादाम मूत्र के छिद्र में टपकावै. और इन्ही औषधों से हुकना करै और भोजन की जगह आशजौ और दूध और चांवल खिलावै ॥

मसाने में रुधिर जमजाने का वर्णन ।

यह रोग मूत्रमें रुधिर निकलने से, मसाने में चोट पड़ने से और किसी रग के फटजाने या मुंह खुलजानेसे उत्पन्न होता है इस रोग में हाथ पांव ठण्डे होंगे. और कभी जाडा भी आवेगा और मूर्च्छा होगी, केवल सिकंजबीनअनसिली पाउसमें थोडी अंगूरकी लकडी की राख मिलाकर पानीमें घोलकरपिलावै और खरगोशका पनीर अंगूर की लकडी की राख के पानी के साथ खिलावें, और पेडूको उसपानी से धारें तथा मूत्र के छिद्रमें टपकावे. कदाचित् इस उपाय से जमाहुआ रुधिर न पिघलेतो पथरीको तोडने वाली और मूत्र लानेवाली औषधें तथा पुराने चनों को सुदावके पानीमें औटाकर पिलावें और जब कोई औषध लाभदायक न होतो जमे हुए रुधिरको चीरकर निकालें. और भोजन की जगह पुराने चनों को औटाकर उसका पानी दालचीनी डालकर पिलावें ।

मसाने की पीडा का वर्णन !

यह रोग सूजन, घाव, खुजली. पथरी पडने अथवा मसानेमेंवात उत्पन्न होने से होता है इन सबका उपाय लिख चुकेहैं, एक प्रकार की पीडा जो मसाने के बिगाड से होती है. जोयह गरमीसे होतो प्यास होगी और मूत्रमें जलन होगी. और पहिले इससे गर्म वस्तु खाई होगी. इसमें ठण्डाई पिलावे और ठण्डी वस्तु लगावै और ठंडी वनादकुल बुजूर खिलावै और ठण्डसे होतो मूत्र सफेद आवेगा, और इससे पहिले ठंडीवस्तु काममें लाये होंगे जैसे कपूर आदि, और ठंडीहवा लगने सेभी पीडा होजाती है इसमें गरम भोजन और औषधें दें. और गुनगुने पानी से पेडूको धारें ॥

और दूसरी प्रकार इसपीडा की वह है कि वहरानके चिन्

मवाद मसाने में आवे और मूत्र जोर से निकले और उससे यह पीडा हो इस में अधिक मूत्र निकालने का उपाय करें ॥

मसाने के टलजाने का वर्णन

पीठ पर चोट लगने से यह रोग होता है सुगंधि वाली औ-षधों का लेप पेढू पर करें. और जो चोट लगने से पट्टा खिच गया होतो मूत्र रुक जाता है और कभी पट्ठा खुलजाता है तो अचानक मूत्र आने लगता है । इन दोनों में फस्द साफिन खोलें और कभी इस रोगके साथ और कोई रोग भी होताहै ऐसी दशामें पहिले उसरोगका और फिर इसका उपाय करें।

मसाने के फूलने का वर्णन

इस रोगमें मसाने में वादीभर जाती है. और पेढ़ पर खिचावरह ताहै इसमें नाय एक स्थान पर नहीं रहती और न बोझ होता है और जो बोझ और खिचाव एक स्थान पर रहे तो जानो कि वादी के साथ तरी भी है इस रोग में कुछ दिनों तक मा उल असूल गरम पिलावें या उस में थोडा रोगन वेद इंजीर मिला कर पिलावें और रोगन गरम जो वादी को तोडे मले और मूत्र के छिद्र में टपकावें जैसे रोगन केसर को खिलावे और मलें और जब मूत्र निकलने में कठिनता होतो खरबूजे के सूखे हुए छिलके कुचलकर कंद के साथ दें और रोगी को आवजन में विठावें. और जब वात के साथ तरी भी हो तो वारवार वमन करावे. और तिरियाक और मसरूदीतूस और इंजीर खिलावें ॥

मसानेमें पथरी पडने का वर्णन

इस रोगका लक्षण यह है कि लिंगकी जडमें खुजली होगी और थोडी २ देर पीछे मूत्र आवेगा और विषय की इच्छा पहिलेतो एक वार अधिक होगी और फिर तुरंत ही जाती रहेगी ॥ इस

रोग में मूत्र का रुक कर आना या बिलकुल न आना और मसानेमें पीडा होना कुछ नहीं होता परन्तु जिस समय पथरी मसाने के मुख पर आनकर अडजाती है तो ऐसा होताहै और इस पथरी का उत्पन्न होना इसप्रकारसे जान सकतेहैं कि गुरदे की जगह और रान में पहिले पीडाहोगी ॥

इसमें वह उपाय करें जो गुरदे की पथरी में लिखागया है और अधिक पुष्ट औषधें दें। विच्छू और खिसक का तेलआदि पेडू पर मलै और मूत्र के छिद्रमें टपकावें और जो अवश्य होतो चीर कर पथरीको निकाले और जो रोगी की अवस्था सत्तरह या१९वर्ष से कम होतो कभी ऐसा न करें क्योंकि इस में रोगी के मरने का डरहै और जब पथरी मूत्र के रास्तेमें आकर फंस रहे और उससे पीडा होतो रोगी को चित्त लिटावें, और दोनों पांव उठाकर गरम पानीसे पेडूको धारें और नीचे से ऊपर तक मलें इस से पथरी वहां से हटकर मसानेके अंदर चली जावेगी और मूत्र का रास्ता खुलजावेगा। हजरतलहूर असली पथरी के तोडने में अति उत्तम है ॥

मूत्रमें जलन होने का वर्णन

मूत्र में जलन गुरदे या मसाने की खुजली या इनही स्थानोंके घाव की पीव से होतीहै खुजली और घाव का उपायकरें और जो लिंग के भीतर घाव होतो उपाय उसका आगे लिखा जायगा और जो जिगर की गरमी और पित्तों की अधिकता से हो तो उनके लक्षण पाये जावेंगे इस में वह ठंढी औषधें दें जो जिगर के बिगाड में लिख चुके हैं और जो मवाद की अधिकता के कारण उन से लाभ न हो तो मवाद को निकाल लें. और स्याफ अबियज स्त्री के दूध में घोलकर रोगन गुल और रोगने बादाम मिला कर मूत्र के

छिद्र में टपकावे, और लिंग को अस्पगोल के लुआब में रक्खे

विशेष द्रष्टव्य--लिंग के छिद्र में एक तरी चिपटी होतीहै उसके छिल जाने से भी यह रोग होता है, लक्षण उस का यह है कि इस रोग से पहिले गरम औषधें मूत्र लाने वाली खाई होंगी, और विषय की अधिकता की होगी इस में पहिले कारण को दूर करें और श्याफ अवियज को स्त्री के दूध में घोल कर मूत्र के छिद्र में टपकावै. और लुआबों और बीजों को चाहे पीवें और चाहे टपकावें ॥

मूत्र बंद होजाने का वर्णन

जो यह रोग गुरदे अथवा मसाने की सूजन से या उन में पथरी पडने या मसाने में रुधिर के जमने या पीव अटकने से या वात के फंसने से होतो उस का उपाय ऊपर लिख चुके हैं ॥ और जो मूत्र के स्थान पर मांस उत्पन्न होने से यह रोग होतो और किसी रोग के लक्षण नहीं होंगे । इस का उपाय नहीं हो सकता, परन्तु थोडा सा लाभ होने के लिये ढीला और नरम करने वाली औषधों का आवजनकरें. कि बिलकुल रुकाव न रहै ॥

मसाने की गर्दन पर एक पट्ठा है जो मूत्र को निचोडता है, उस के ढीला होने से भी यह रोग हो जाता है, लक्षण उस का यह है कि मसाने के दवाने से मूत्र खुल के निकलता है, इस में गरमी पहुंचावै चाहे पीने की औषधों से या लगाने की से और वह तेल मलै जो फालिज में लिखे गयेहैं।

और जो मसाने और गुह्यन्द्रिय में लसदार मवाद चिपट रहै और उस से मूत्र रुके तो पेडू बोझल होगा, और उस से पहिले गाढा करने वाली वस्तु खाई होंगी और किसी दूसरे रोग के लक्षण नहोंगे इस में पुष्ट औषधें मूत्र लाने वाली

पिलावें और आवजन करें और खिसक और विच्छू का तेल उसी छिद्र में टपकावें ॥

और जो मसाने की दूर करने वाली शक्ति के जाते रहने से यह रोग होतो उस से पाहिले रोगी ने देर तक मूत्र रोका होगा, इस में आवजन करें, और पेडू को हाथ से दवावें. और रोगन विलसान और रोगन कुस्त पेडू पर मलें, और जो इस से लाभ न होतो एक पोली सलाई चांदी शीशे या रांग की लेकर छिद्र में डाले, रीत उसकी यह है कि थोडासा फूसडा रेशम का लेकर धागे में बांधें, और सिरा उस धागे का उस सलाई में डाल कर निकालें. और जिस ओर वह फूसडा हो उसी ओर से सलाई उस छिद्र में डालै, जब वह सलाई मसाने के मुंह तक पहुंच जावे तो तांगे को जोर से खींचले तो मूत्र का रास्ता विलकुल खुल जावेगा ॥

और जो मूत्र के रास्ते में घाव या फुंसी होने से मूत्र रुके तौ उन के लक्षण पाये जावेंगे इसका उपाय शुजाक में देखना चाहिये ॥

और जब पीठ या पेडू पर चोट लगने से यह रोग हो तो देखना चाहिये कि सूजन है या मसाना ढीला और खिंचगया है जो सूजन होतो उपाय उसका करें और जो खिंचाव आदि होतो फस्द वासलीक खोलें और रोगन गुल मलें ॥

और जो मूत्र के मार्ग में खुश्की और कब्ज होतो गरमी के लक्षण पाये जावेंगे और तर औषधों से लाभ होगा और मसाने से थोडासा मूत्र न निकल सकेगा और जब बहुत सा इकट्ठा होजायगा तो भली भांत निकला करेगा, इसमें तरी और ठंढ पहुंचावे ॥

और जो पट्ठों और बधनों पर कफ के गिरने से मसाने और

मूत्र के रास्ते में खिचाव होजावें तो लक्षण उसका यह है कि मूत्र थोडासा उछल कर निकल पडता है, और रेले से नहीं आता, इसमें खिचाव का उपाय करें, जैसा हम लिख चुके हैं और जो पेडू पर अंडकोष चढ़जाने से मूत्र रुके तो उनके उतारने का उपाय करें ॥

और जो मूत्रकी सरसराहट न जानपडने से यह रोग हो- तो केसर और बिलसान का तेल छिद्रमें टपकावै और पोदीने और सोये आदि का लेप करे और माउल अस्ल और रो- गन बेद इंजीर पिलावै और तिरयाक कबीर खिलावै ;

जो तरी से यह रोग होतो सब से पहिले बमन करावें ; जो मसाने के ढलजाने से होतो उस का उपाय लिख चुके हैं ; जो मसाने के आस पास किसी और स्थान में सूजन या बि- गाड होतो उस स्थान का उपाय करै ; और जो मसाने के बराबर गुंडियों के उतरने से मूत्र रुके तो उन गुडियों को अपने स्थान पर बिठावै जैसाकि बारहवें पाठमें लिखा जायगा

मूत्र खुलके नहोनेका वर्णन

इस रोगमें मूत्र एकएक बूंद करके आताहै उसके लक्षण उपाय दसवें पाठ के अनुसार हैं ;

अचानक मूत्र निकलजाने का वर्णन

मसाने के ढीला होने या उसमें कोई गरम बिगाड होनेपर उस की सूजन से या मसाने के ढलजाने से यह रोग होतो उसका उपाय दसवें पाठमें लिखचुकेहैं ;

और जो शराब या खरबूजों आदि के खाने से होतो उस कारण को दूर करें, और मसाने के बराबर की गुडियों के ढलजाने से यह रोग होतो देखें कि वह भीतर को धस गई

हैं या बाहर उभर आई हैं, जो भीतर घुस गई होंतो खाली सींगियां उस जगह पर रखकर चूंसे या जिफित का लेप करें और जो बाहर उभरी होंतो हाथ से मलें, और जो मसाने के बंधन टूट गये हों तो उनका उपाय नहीं होसकता ॥

नींद में मूत्र निकलजाने का वर्णन

यह रोग लडकों को बहुत होता है, इस में गरमी पहुंचावें और दसवें पाठ में जो उपाय मसाने के पट्ठे की सुस्ती दूर करने का है वही करें, और रात को कईबार उठा के पेशाव करालें और रात को खाने पीनेको नदें और कुन्दर का जीरा हब्बुल आस प्रत्येक साडे २२ माशे पीसकर १८० माशे शहद में मिला रक्खें, और सोनेके समय सात माशे खिला दियाकरें।

मूत्र में रुधिर निकलने का वर्णन

जो गुरदे की रग फट गई हो या खुल गई होतो चिन्ह उस का यह है कि रुधिर साफ बिना तलछट के निकलेगा और पीर बिलकुल न होगी जो थोडा थोडा आता होतो रग का मुंह खुल गया होगा, और जब बहुत सा आवे तो जानो रग फट गई है, फस्द बासलीक या साफिन खोलें. और कुर्स कहरुबा और कुर्स बौलुद्दम खिलावें और पेडू तथा गुदा पर पछने लगावें, और जब रुधिर में तेजी होतो ठंडे पानी से पेडू को धारें और ठंडी औषधों का लेप करैं और ध्यान रक्खें कि रुधिर मसाने में न जमने पावे और शर्बत उन्नाव धनिये के जुकू में देना रुधिरको बन्द करताहै और गरमी को बुझाताहै॥

जब जिगर या गुरदे की निर्बलता से होतो रुधिर से मूत्र अलग न हो सकेगा, इस लिये उसके साथ निकलेगा, लक्षण उसका यह है कि मूत्र मांस के धोवन का सा होगा ॥

जब गुरदा निर्बल होगा तौ मूत्र सफेद और गाढा होगा॥

और जब जिगर निर्बल होगा तो मूत्र लाल और पतला होगा इस में जिगर और गुरदे को पुष्ट करें ॥

और जो मूत्र की रगों में घाव होतो पीव आदि से जान पड़ेगा. इसका उपाय लिख चुके है और इस में कुर्स काफ़नज लाभदायक है ॥

वीसवां अध्याय

इस अध्याय में उन रोगों का वर्णन है जो केवल पुरुषों को होते हैं

मैथुनेच्छा घट जाने का वर्णन

स्त्री संगकी चाहना शरीरके बड़े बड़े स्थानोंके आरोग्य होने से पूरी होती है यह दो प्रकार से घट जाती है एक तो यहहै कि वह आप ही घट जावे, दूसरे पुरुषेन्द्रिय के ढीला होजाने से इन दोनों का वर्णन अलग अलग किया जाता है. पहिली प्रकार के कई कारण हैं. एक तो यह कि शरीर भोजन की कमी से निर्बल होजावे और उससे रूह वायु और रुधिर जो स्त्री संग के मवाद हैं कम उत्पन्न हों लक्षण उसका यह है कि निर्बलता और दुबलापन होगा, और पहिले से भूखे रहे होंगे इसका उपाय यह है कि अच्छे अच्छे भोजनों और पुष्ट औषधों से शरीर को पुष्ट करें और खेल कूद नाच रंग में लगे रहें ॥

दूसरे यह हैं कि वीर्य्य थोड़ा उत्पन्न हो चाहे भोजन भली भांति खावें, लक्षण उसका यह है कि वीर्य थोडा निकलेगा कारण यह है कि कोई विगाड़ वीर्य्य उत्पन्न होने की जगह पड जायगा. और उन वस्तुओंसे हानि होगी, जो उस विगाड़ के अनुसार हों और उनके विपरीत से आराम होगा इसी

से उसकी दशा जान पडेगी, कि गर्म है या ठंडी आदि इसमें प्रकृति को ठीक करें ॥

तीसरे यह कि वीर्य्य अधिक हो परंतु उसकी तेजी और गुदगुदाहट जाती रहै लक्षण उसका यह है कि वीर्य्य अधिक निकले और गाढा हो और संगम करने के समय आदि में बल कम हो और फिर अधिक होजाय इस में माजून जरऔनी और माजून लबूर और माजून बुजूर आदि खिलाकर गरमी पहुचावें ॥

चौथे यह कि बहुत दिनों से संगम करना छूट गया हो और उससे यह रोग उत्पन्न होतो चाहिये कि इसकी बातों में लगे रहें और उसी प्रकार की औषधें काममें लावें और (अकरकरा विनोले के तेल में घिस कर पेडू गुह्येन्द्रिय आदि पर लगावें,) पांचवें, यह कि दिल पर किसी बात का डर या घिन उत्पन्न होने से यह रोग होतो उस कारण को दूर करै ॥

छटे यह कि दिल या मेदे या जिगर या भेजे या गुरदे पर किसी दोष के होने से ऐसा होतो पहिले उस दोषका उपाय करें। दूसरा प्रकार यह है कि शरीर में निर्बलता होनेसे या बहुत दिनों तक संगम के छोडदेने से लिंग सुस्त होजाय उपाय इसका ऊपर लिखचुके हैं और गर्मपानी से धारें, फिर भेडी का दूध मलें, और जिफ्त लगावै। जो नीचे के धडमें वायु होतो देखे कि ठंड से है या गर्मी से या खुश्की से उसीके अनुसार काम करें ॥ जो पट्ठों पर कफ के गिरने या ठण्ड पहुंचने से होतो लक्षण उसका यह है कि पहिले ये सबबातें पाई जावेंगी और वीर्य्य पतला होगा, और विना बल करने के निकला करेगा, इसमें वही उपाय करै जो फालिज काहै और गरम शाफे और हुकने और गरम औषधें मलें. और लि-

गको बहुत ठण्डे पानी से धारै, जोवह उसकी ठण्ड से न सि-
मटे तौ उस रोग का उपाय नहीं होसकता । अब ऐसी औ-
षधें लिखीजाती हैं जो लिंगको बडा करें । पहिले उसे खुरखुरे
और कडे कपडे से उतना मलें कि लाल होजावे फिर रोगन
मोर्चा और इसी प्रकारकी और औषधेंमलें और उसपर जिफ-
तूका लेपकरें ॥ दूसरे कर्फसके पानी से कई बारधोवें ॥ बकरी
के घीसे कईबार चिकनाकरें ॥ चौथे केंचुऐ या जौंक सुखाकर
रोगन सोशन में मिलाके मलें ॥

वीर्य्य जल्दी निकलने का वर्णन ।

यह रोगठंढ या तरीसे होतो लक्षण उसका यहहै कि वीर्य्यबहुत
सफेद और पतला होगा और गर्मी न होगी गरम जुल्लावों
से मवाद को निकालें, और वमन करावें और माजून खुब्र सु-
ल हदीद खिलावें और उसकी शराब पिलावे और शहदानेको
औटाकर शहद मिलाके पिलावें ॥ और जो यह रोग वीर्य्य और
रुधिर की अधिकता से होतो फस्द खोलें, और विषय थोडा
करें और भोजन कम खावें और वह वस्तु खावें जिनसे वीर्य्य
और रुधिर कम उत्पन्न हो ॥ और जो वीर्य्य में तेजी आगई
होतो लक्षण उसका यह है कि वह पतला और पीला निकलेगा
और उसमें जलन होगी, इसमें ठंढाई और काहू के बीज
औटाकर पिलावें । और जो कमजोर होने के कारण से यह रोग
होतो उस कारण को दूर करै ॥

स्त्रीसंग की चाहना अधिक होजाने का वर्णन ।

यह रोग भी रुधिर और वीर्य्य की अधिकता से होता है
उन्हें कम करें. परंतु ऐसा न चाहिये कि कोई हानि हो और
जो बहुत ही अवश्य होतौ फस्द और जुल्लाब दें, और वह
वस्तु खावें जो वीर्य्य को कम करें और भोजन भी कम खावें
और जो वीर्य्य में तेजी होतो ठंडाई दें, और ठंढे पानी से

न्हावें और जो निर्बलता हो और रुधिर कम हो जावे और इस पर भी वीर्य्य की अधिकता होतो वह पतला और सफेद होगा, इसमें कलोंजी और सुदाव और संभालू के बीज देना चाहिये, और जवारिश कमूनी अति लाभदायक है और जो वीर्य्य के स्थान पुष्ट हों, परंतु शरीर में और स्थानों पर निर्बलता होतो उसके लक्षण पाये जावेंगे, उपाय इसका यह है कि वीर्य्य के स्थानों को कमजोर करदें और दूसरे स्थानो को पुष्ट करें॥

और जो वीर्य्य के रास्ते में फुन्सियां या घाव या खुजली उत्पन्न होने से यह रोग होतो लक्षण उसका यह है कि विषय करने के समय वीर्य्य आनन्द से निकले, परंतु घाव में पीडा होगी, और पीव भी निकलेगी,-इसका उपाय वही है जो मसाने के घाव का है. फस्द और जुल्लाव आदि दें ॥

और जो शरीर के फूलने से यह रोग होतो गरमी की अधिकता में ठंडी औषधं दे. और जो तरी अधिक होतो वह औषधं दें जो वायु को तोडें और खुश्की करे और जो बादी की अधिकता होतो फस्द बासलीक खोलें और सौदाका जुल्लावदें

वीर्य्य निकला करने का वर्णन ।

जो यह रोग वीर्य की अधिकता या तेजी या उसके स्थान के ढीला होने से होतो लक्षण उसका यह है कि तुरंत ही विषय की चाहना उत्पन्न हो जाया करेगी और हर बार में वीर्य निकला करैगा, इसका उपाय दूसरे पाठ में लिखा गया है. जो यह रोग उस पट्ठे के खिच जाने से हो जो वीर्य के स्थान पर है तो खिचाव का उपाय करें; और पेड़ू आदि पर रोगन मलें जो गुरदे की कमजोरी हो और उसकी चर्बी पिघल कर निकला करे तो लक्षण उसका यह है कि

विषय करने के पीछे मूत्र में कोई वस्तु सफेद और गाढी नि
कले और गुरदे की कमजोरी के और लक्षण पाये जावेंगे
और कभी विषय की बातें सुनने से भी वीर्य निकल आता
है, उस कारण को भी दूर करें ॥

यह रोग स्त्रियों को भी होता है और उस के यही
कारण होते हैं जो ऊपर लिखे गये है और कभी रहम के
मुंह ढीला होजाने से भी होता है, उपाय इसका यह है कि
वमन करावे, और कब्ज करने वाली औषधों को औटाकर
आवजन करै। यह औषध वीर्य्य या मजी या वदी निकालने
में लाभदायक है. सुद्दाव के वीज साढे दस माशे, संभालू के
वीज और सौसन की जड प्रत्येक सात माशे पीस छानकर
मठे या कच्चे अंगूर के रस में मिलाकर दें। यह दवा मजी
और वादी को लाभ देती है. भंगको भूनकर पीसकर शहद में
मिलाकर दें जानना चाहिये कि मजी और वादी लहसदार
वस्तु है और मूत्र के साथ या उसके पीछे निकला करती है

वीर्य्य के बदले रुधिर निकलने का वर्णन

इसका कारण अंडकोष या गुरदे की कमजोरी है, जो गरमी
का डर न होतो अंडकोषों को रोगन मस्तगी में भिगोवे और
गुरदों को पुष्ट करे ॥

सोते में वीर्य्य निकल जाने का वर्णन

इसका उपाय और लक्षण वही है जो चौथे पाठ में लिख चुके
है और सीसे का टुकडा पीछे कमर पर गुरदों की जगह वांधे

लिंग के हर समय जोर करने का वर्णन

जो रुधिर की अधिकता होतो फस्द खोले और भोजन थो
डा दें. और ठंडी औषधें काम में लावै. और जो ठंड और
खुश्की से होतो वमन करावै, जिससे कफ निकले और वह

औषधें जो वायु को तोडें चाहे लगावे या खिलावे और सुदाव का तेल पीठ और पेडू पर मलें।

वीर्य्य निकलने के समय दस्त होजाने का वर्णन

शरीर के बडे २ स्थानों की कमजोरीसे और तरी की अधिकतासे ऐसा होताहै. इसमें उन स्थानों को पुष्ट करें. और अकाकिया और एकम और गुलनार और बवूल का गोंद और कुंदर से शाफा करें और विषय के समय भी यही करना चाहिये. और नारदीन का तेल गुदा के स्थान पर मलें और विषय के समय पेट खाली रक्खें।

पुरुषको विषय करानेकी चाहना उत्पन्न होने का वर्णन

इस रोगमें आंतों में खुजली होजाती है जो कोई मवाद पाया जावे तौ उसे निकालें. और इस रोग का मवाद बहुत करके खारी कफ होता है और जो स्वभावमें स्त्रियों कीसी बातें होजावें तौ मार पीट से दूर करें।

अंडकोष की सूजन का वर्णन

जो सूजन अधिक और बोझल हो और गरमी पाई जावे तौ रुधिर की अधिकता होगी. और पित्तोंकी अधिकता में अत्यन्त गरमी होगी. पहिले पीठ और पिंडली पर पछने लगावें और फस्द खोलें, फिर उन ठंडी औषधों का लेप करें जो मवाद को इधर गिरने से रोकें. और इसके पीछे उस लेप में पटकाने वाली औषधें भी मिलालें और फिर केवल पटकाने वाली औषधों का लेप करें. जैसा कि सूजन के उपाय में लिखा गया है॥

और जो सूजन में नरमी और सफेदी होतो कफ की अधिकता होगी. इस में वमन करावें और कफ की मुंजिश और

जुल्लाव दें. और बाकले के बीज पीसकर वेसन और शहद में मिलाकर लेप करें ॥

और जो सूजन में कड़ापन और कालापन होतो सौदा की अधिकता होगी इस में नर्मकरने वाली औषधें बाबूना और नाखूना के साथ लेप करें. और फिर सौदा का जुल्लाव और मुंजिश दें ॥

और जो किसी मवाद के लक्षण न हों और जो सूजन फूली हुई होतो वायु से होगी. इस में पटकाने वाली औषधों से सेक करे, और कमूनी खावें और जो इस से लाभ न होतो वमन करावें और जुल्लाव दें, जो रोग नीचे के धड़ में होते हैं उन में वमन कराना अतिलाभदायक है. और उसमें डरभी नहींहै जो सूजन केवल थैला अर्थात् ऊपरखालकी में होतो दुखः कम होगा. और सूजन दिखाई देगी. और भीतर की में दुखः और तप और प्यास अधिक होती है ॥

अंडकोषों के बढजाने का वर्णन

यह रोग सूजन की प्रकार से नहीं है. इस में मोटा पन आजाता है, इस में खुरासानी अजवायन और शूकरान और तफ़ाह और पोस्त खशखाश और सान के पत्थर की रेत हरे धनिये के पानी में पीस कर लेप करें. और जो गिलेअरमनी और सिरका भी मिलालें तो अतिलाभदायक होगा, और इसी लेप को स्त्री की छाती पर लगाने से छातियां बढने नहीं पाती, परंतु इस रोग में भोजन भी थोड़ा खाना अवश्य है ॥

लिंगमें रहम के मुंहके फडकने का वर्णन

मवाद को निकालें और-रुधिर को ठंडा करें और उसी जगह पर जोकें लगाना अति लाभदायक है, और भोजन भी अच्छा खावें ॥

अंडकोषों की पीडा का वर्णन ।

जो सूजन के कारण से होतो उसका वर्णन कर चुके हैं और जो वायु होतोपीडा एक जगह न ठहरेगी. उस पर सेकें और गरम तेल मलें, और जो गरमी और ठंडसे बिगाड होतो उस का उपाय भी लिख चुके हैं, और जो चोट पडने से पीडा होतो फस्द खोलें और बनफशा, खेरू, मकोय, कद्दू, नीलो, फर का लेप करें ॥

अंडकोष के छोटा होजानेका वर्णन ।

यह ठंड के पहुंचने से होता है. इस में गरम पानी से न्हावें और गरम दवायें लगावें ॥

अंडकोष के चढजाने का वर्णन ।

कभी ऐसा होता है कि बिलकुल ऊपर चढआतेहैं नीचे कुछ भी नहीं रहता उस समय मूत्र रुकके और टपक टपक कर निकलता है और चला फिरा नहीं जाता और जो थोडा चढे तो थोडी२ पीडा होती है और कुछ हानि नहीं होती और कभी पीडा भी नहीं होती परंतु जो देर तक यह रोग रहे तो अच्छा नहीं है इस में गरम पानी से स्नान करै और फराफि-यून का तेल मलें और आवजन करें और उसी जगह सींगि-यां लगावें ।

इसी प्रकार से कभी लिंगभी चढजाता है उसका उपाय भी यही है ॥

रगें उभर आने का वर्णन ।

इसका उपाय वही है जो पैरकी रगें उभरने का लिखाजावे गा और जो कडापन भी आजावे तो उसका वह उपाय करें जो सूजन का है ।

ऊपर की खाल ढीली होजाने का वर्णन

माजू, आस, गुलाब के फूल, गुलनार बलूत के फल आदि कबज करनेवाली औषधियोंका लेपकरें औरइन्हींको औटाकेधारें

लिंगआदिके घावका वर्णन ।

जो यह घाव ताजी होतो मुर्दासंग और तूतिया छिड़कें और लगावें चाहें सूखा पीसके या मरहम बना के और जो रुधिर की अधिकता होतो पहिले मवाद को निकालें और जो घाव पुराना होतो यह मरहम लगावें दम्मुल अखवैन औरमुर प्रत्येक नौ माशे एलुआ मुर्दासंग इंजरूत प्रत्येक ७माशे पीसके रोगन गुल मिलाके लगावें ॥

जो घाव लिंगके अंदर होतो मूत्र आने में जलन होगी उस का उपाय मसाने के घाव का करें ॥

लिंग के सूजजाने का वर्णन ।

इसका उपाय वही है जो अंडकोषकी सूजनमें लिखा गया है

लिंग आदि की खुजली का वर्णन ।

इसमें फस्द खोलें, और रान और जांघ पर पछने लगावें और पित्तों का जुल्लाब दें, फिर गरम पानी और सिर के से धारें, और रोगन गुल मलें, और अंडेकी सफेदी का लेप करें ।

लिंगके फटजाने का वर्णन ।

इसका उपाय वही है जो गुदा के फट जाने का है ।

लिंग पर कड़ी फुन्सियां और मस्से होजानेकावर्णन

काला दाना सिरके में मिलाकर लगावें, और वही उपाय करें जो मस्सों का है ॥

मूत्रके छिद्रबंद होजाने का वर्णन ।

जो फुन्सी निकली होतो मूत्र कठिनता से जलन के साथ

होगा. इस में फस्द खोलें. और कुलफे और खरबूजे के बीजों का सीरा निकाल कर शर्वत खशखाश के साथ दें. और अस्पगोल रोगन बनफसे और बादाम में मिला कर लिंग पर रक्खें जब वह पक कर फूटे और पीव निकले तो श्याफ अवियज रोगनगुल और स्त्री के दूध में घोल कर छिद्र में टपकावै और जो पीडा अधिक होतो थोडी सी अफीम भी पिलावें॥

और जो कोई लहसदार मवाद छिद्र में फँसा होतो मूत्र कठिनतासे निकलेगा और जलन नहोगी और मूत्र में उस मवाद का लक्षण पायाजावेगा इस में मूत्र लानेवाली औषधेदें और पिघलाने वाली औषधों को औटाके धारें और उसी औटे हुए पानी में थोडासा रोगन बाबूना मिलाके पिचकारीलें और जो मस्सा होतो मूत्र कठिनता से होगा और जलन नहोगी, न कफ निकलेगा जो वह मस्सा सिरेपर होतो एलुआ और सफेदारोगन गुलमें पीसकर टपकावै और जो पीडा अधिक हो तो फस्द साफिन खोले और पिंडली पर पछने लगावै॥

लिंगकेटेढ़ी होजानेका वर्णन

इसका कारण पट्टका खिचाव या सूजन है पहिले उस कारणको दूरकरें और रोगन आदि मलके उस स्थान कोनर्म करै और फिर हाथ से भली भांति उसे सीधा करलेवै॥

इक्कीसवां अध्याय

मिराक सिफाक और सर्ब का वर्णन

जानना चाहिये कि पेट के चमडे को मिराक कहते हैं और जो झिल्ली उसके नीचे है वह सिफाक कहलाती है और एक परदा मोटा चिकना जो सिफाक के तले है सर्बकहलाता है

कालंकावणन

यह वह रोग है कि सिफाक की रीह जो चढ्ढों की ओर है
अंडकोप के पास से खुलजावे या सिफाक आपही यहां से
हट जावै और सर्व या आंत या वायु या तरी अंडकोप की
थैली में उतर आवै इसको फितक़भी कहते हैं ॥
और जब कोई गाढा मवाद उतरै तो उसे करदुल लहमी कह
ते हैं इन पांचो का वर्णन अलग अलग करतेहैं पहिले आंतके
उतरने का लक्षण यहहै कि थोडी थोडी उतरे और कठिनता
से ऊपरको चढे और चढनेके समय गडवडहो और कभी कुलं
ज की पीडा भी इसमें होती है,उपाय इसका यहहै कि धीरे२
मलके ऊपर चढावें. और जो तुरंत न चढे तो गरम पानी सेधारें
और आवजन में विठावै. और जवचढ जावे तो यह लेप पेडू
और चढ्ढों और अंडकोष पर लगावै. मस्तगी इंजरूत कुंदर
सरी के फल और पत्ते. अकाकिया. गुलनार. सुर. दम्मुल
अखवैन, फिटकरी. रसौत. अमल. एलुआ. सब को बरावर
लेकर कूट छान कर सरेश माही को हरी मकोय के पानी में
पिघला कर यह औषधें उस में मिलाकर एक कपडे पर मरहम
की तरह लगाकर अंडकोप पर चिपटा दें, और ऊपर से पट्टी
खेंच कर बांधदे और तीन दिन तक बंधा रक्खे और रोगी
को चाहिये कि तीन दिन तक चित्त पडारहै और तीन दिन
पीछे वहुत हौले से उठे और चले फिरे और जो वस्तु हानि
दायक हो उसे न खावे पीवै और हिलने झुलने से वचें और
नित्त जवारिश औरकमूनी खावें और आंकडा जो इस काम
के लिये वनाया गया है बांधे रहे ॥
दूसरे सर्व के उतरने का लक्षण भी कठिनता से चढना है
परंतु उसमें गडवड नहीं होती और यही इसमें और आंत के

उतरने में अंतर है, इसका उपाय भी वही है जो ऊपर लिखा गया है। तीसरे वायु के उतरने का लक्षण यह है कि सहज से ऊपरको चढ़े और गड़बड़ अधिक हो, इसमें वातनाशक औषधें काम में लावे, और वायु उत्पन्न करने वाली वस्तुसे बचें और पट्टी बाधें रहै। चौथे पानी उतरने का लक्षण यह है कि अंडकोष की खाल भारी और पानी से भरी मालूम हो और किसी उपाय से ऊपर न चढे, इसमें उस पानीको सुखावें जैसा कि जिक्री जलन्धर में लिखा है और जब उससे लाभ न होतो छेवादेके पानी निकालडालें पांचवें करदुललहमी में गाढ़ापन और खिचाव और कड़ापन थैली के अंदर होता है नाकि उसकी खाल में यही अन्तर है इसरोग में और यहां की सूजन में मतबूखइफतीमून से मवाद निकाले और बाकी वही उपाय है जो अंडकोष की सूजन का है।

पेट और चड्डोंकी फितक का वर्णन।

कभी सिफाक टूंड़ी के पास ऊपर या नीचे को उससे फटजाता है, और मिराक जैसे का तैसा रहता है और जो कुछ सिफाक के तले है उभर कर मिराकको ऊंचा करता है और इसी प्रकारसे चड्डों में सिफाक फटजाता है और उस जगह ऊंचा होजाता है, और यह दोनों रोग बहुत करके स्त्रियोंको होते है, उस जगहको भारी गद्दियों और पट्टियों से कसके बांधें और उन वस्तुओं से बचे जो ऊपर लिखी गई हैं, परंतु सच यह है कि यह रोग अच्छे नहीं होते उपाय करने से केवल यह लाभ है कि रोग बढने नहीं पाता कहते हैं कि इनरोगोंमें पांवोंकी अंगुलियों पर शलाकाको गरम करके दाग देना लाभ दायक है, और इसी प्रकार से उस मोटी रगपर जो अंगूठकी जड़में हाथ की मुट्ठी पर है दूसरी ओर दाग दें॥

टूंडीके उभरआने का वर्णन ।

जो उत्पत्ति के दिन बुरी तरह से काटने से या किसी चोट से उभरआवै तौ उसी समय तुरंत ही उसे ठीककरै नहीं तौ पुराना होने पर कुछ लाभनहीं होगा उसी समय पट्टी आदि से ठीक करै ॥

जो यह रोग सिफाकके फटने या कफ इकट्ठा होनेसे होतो जैसाकि जिक्की जलंधर में होताहै या वायु के इकट्ठा होने से जैसा कि तब्ली जलंधर में होता है या टूंडी की खालके नीचे, मांस बढजाने से या किसी रगके फटजाने से और रुधिर इकट्ठा होने से हो इनमें से जो रोग फितक की प्रकार का है उसमें दवाने से टूंडी नीचे होजाती है चाहे गडवड हो या नहो॥ और कफ में बोझ जान पडेगा, और वायु में नरमी होगी और वायु की उत्पन्न करनेवाली वस्तु खाने से उभार अधिक होगा और उनकी विपरीतिदवाओंसे घटेगा मांस उत्पन्न में ठंडी कड़ीहोगी और दवानेसे नही दवेगी और रुधिरकेइकट्ठा होनेमें ऊपर का रंग नीला या काला होगा, जो यह रोग फितक की प्रकारसे होतौ उसका उपाय लिख चुके हैं और जो कफ या वायुसेहोतो उसका उपाय जलंधरके वर्णनमें देखलें, और मांस उत्पन्न होजानेमें कुछ उपाय न करें वह अच्छा न होगा॥ और जो रुधिर इकट्ठा होजावै तौ जोंक लगाके कब्ज करने वाली औषधों का लेपकरें जो नकसीर के वर्णन में लिखी गई हैं कि रगों का मुंह जिससे रुधिर निकलताहो वन्द होजावै।

बाईसवां अध्याय

उनरोगोंका वर्णन जो केवल स्त्रियोंको होते हैं

वांझ होने का वर्णन

जो रहममें कोई विगाड गर्मी या ठंड या खुश्की या वारी

और सादा या मवाद से होतो उस का कारण जानके उपाय करना चाहिये ॥

गरमी की पहिचान यह है कि हैज का रुधिर काला और गाढा होगा, और उसमें गरमी भी पाई जावेगी. ठंडकी पहिचान यह है कि हैजका रुधिर देर करके और विना जलनके निकलेगा, और खुश्कीकी पहिचान यह है कि पेशावकीजगह सूखी रहेगी और हैज कम होगा, तरी की पहिचान यहहै कि रहम से तरी निकला करैगी. और ऐसी स्त्री के तीन महीने से अधिक पेट न रहैगा, और जो बिगाड किसी मवादसे होतो पहिचान उस मवाद की उस तरी के रंग से जानी जावेगी, जो कि रहम से बहै ।

जो मुटापे के कारण गर्भ न रहै तो दुबला होने का उपाय करें, और जो अधिक दुबला होने से हो यहां तक कि इतना रुधिर न बचे कि बच्चे को बढावै तो मोटा होने का उपाय करें जो इस पुस्तक के अन्त में लिखा गया है और जो हैज के बंद होजाने से होतो ऐसी औषधें काम में लावें और हैज को निकालें ।

और जो रहम की सूजन या ववासीर या घाव या फटेपन से होतो उस कारण को दूर करें और इन का वर्णन अलग अलगकिया जावेगा ।

और जो रहम में गाढी वायु इकट्ठा होने से होतो लक्षण उस का यह है कि पेड़ू फूला हुआ होगा और विषय के समय पेशाव की जगह से वायु आवाजके साथ निकलेगीइस में वह औषधें काम में लावें जो वायु को तोडें और पेड़ू पर वारे लगावें और रोगन वेदइंजीरसादे दशमाशे माऊलअसूल में मिलाकर पिलावें ॥

और जो रहमके मुंह में कोई बिगाड हो जैसे सूजन या मांस या मस्सा आदि जिससे मुंह बन्द होजावै तौ उस कारण को दूरकरें उसका वर्णन आगे कियाजावेगा और जो रहम का मुंह सामने से हटगयाहो और जो उससे वीर्य्य भीतर न जासके तौ विषय करने के समय पीडा होगी और उसका उपाय आगे लिखा जावैगा और जो विषय के पीछे स्त्री तुरन्त ही उठखडीहो या कोई और इसी प्रकार की हो जिससे वीर्य फिसलकर निकलजावै तौ उसकारण को रोकें कभी पुरुष भी बांझ होताहै जैसे कि वीर्य के विगडजाने से होतो पुरुष का उपाय करना चाहिये और वीर्य को ठीक करें । और कभी ऐसा होता है कि मनुष्य के जन्म से होतो उसका उपाय नहीं होसकता है ॥

अब इस बातको जानना चाहिये कि स्त्री बांझ है या पुरुष, इस प्रकार से होसकताहै कि दोनों के वीर्य अलग अलगलें और उन्हें गरम पानीमें डालें जो ऊपर तैरतारहै तौजानो कि वही बांझ है ॥ जो औषधें कि गर्भ रहनेके लिये लाभदायकहैं यह है हाथी दांतका बुरादा ४॥ माशे खिलावें या पनीरलगावे

वहुधा गर्भ गिरने का वर्णन ।

जो इसका कारण चोट या क्रोध या दुख आदि या उलटी या भूख या कोई रोग होतो उस कारण को रोकें बांझ होने के कारण और इसके एक हैं इसलिये ऊपर के वर्णनमें देखना चाहिये ॥

जनने में कठिनताहोने का वर्णन ।

इसका उपाय ठंडी और गरम हवा और समयके अनुसार करना चाहिये और जो स्त्री कठिनता से जनाकरे उसे

आठवें महीने से दूध पिलाया करै जितना उसे पच सके. और जब वह जनने को होतो उसे गरम जगहमें लेजावै और गरम पानी बदन पर धारै और आवजन में बिठावै. और, तेल म ले और टहलावै और ठण्डे पानी और ठंडी वस्तुओं और खटाई से बचै, और स्त्री को चाहिये कि अपने दम को रोके और पांव पर जोर करै और कूंथे और दाई रोगन बादाम या अलसी का तेल, अलसी का लुआब मिलाकर गुनगुना कर के रहम के मुंह पर बहुत सा मले इस से बच्चा सुगमता से उत्पन्न होता है ॥

यह औषधें इस रोगको अति लाभदायक है चुम्बक पत्थर का बडा टुकडा बांये हाथ में बांधे और मूंगे की जड दाहिनी रान पर बांधे, और दाल चानी खिलावै, और जो जुंदवेद स्तर या हींग भी मिलाले तो तुरंत लाभ होगा. परंतु गरमी नहो और अमलतास के छिलके डेढ तोला कुचल के औटावै और शर्वत बनफशा या चनों का पानी मिलाकर पिलावै, इस से तुरंत ही बच्चा हो सकता है, और मशीमा भी निकल आती है और गर्भवती स्त्रीको सुगन्धि कभी न सुंघाना चाहिये और जनने के समय तो कभी नहीं सुंघावै ॥

मशीमाके रुकने और पेटमेंबच्चा मरजानेका वर्णन

-पेटमें बच्चा मरजानेका लक्षण यहहै कि फिरना उसका बंद होजाता है, और स्त्री के हाथ पांव ठंडे होजाते है, और हांपने लगती है, और सांस पेटमें नहीं समाती इसमें तुरंतही बच्चे या मशीमाको निकाले, चाहिये कि पहाडी- पोदीना, हंसराज, अवहल, प्रत्येक साढे१०॥दशमाशे, तुरमुस और पोदीना प्रत्ये. क सात माशे ओटाकर और तीन तोले मिश्री मिलाकर पिलावे और नकछिकनी या पिसी हुई कलोंजी या तमाकू की नास

सुंघाकर छींक लिवावै, और जब छींक आने लगे वो मुंह और नाक बंद कराले; कि जोर छींकका अन्दर को पडे और बच्चा मरा हुआ निकल पडे. और सांप की कांचली और कबूतर की बीठ जला कर रहम में धूनी दें तो तुरन्त लाभ होता है और जो इन से कुछ लाभ न होतो बच्चे को काटकर निकाले

जो रुधिर जनने के पीछे निलकता है उस के रुक रहनेका वर्णन

इसका उपाय वही है जो हैज के बंद होने का है कुछ स्त्रियों को जनने के पीछे पीडा होती है उसकी औषधं यह है अलसी के बीज औटाकर रहम को भपारा दें, और गधीका दूध गुन गुना करके मूत्र की जगह को धोवें और गधे या खिच्चर का सुम जलाकर धूनी दें और सातरका पानी पिलावें ॥
और खुव्बाजी औटा के पिलावें. और रहम में भी पहुंचावें और जो कोई दवा लाभदायक न हो तो पोस्त को पानी में भिगोकर उसका पानी थोडा सा पिलावें कभी गर्भ गिराना पडता है, यह महा निषेध काम है. और जो अत्यन्त आवश्यकता होतो उसका उपाय यह है कि कागज की बत्ती बना कर रहम के मुंह में रक्खें और जो उस को कुतरान में अथवा इन्द्रायन के पानी में या उसके जुशांदे में मिलालें तो अधिक पुष्ट हो जावेगा, और हींग दो माशे सूखा हुआ सुदाब दश माशे, मुर्र मक्की तीन माशे कूट छानकर खिलावें और ऊपर से अबहल औटाकर पिलावें. संध्या और सवेरे यह सब एक खुराक है और भोजन के बदले चनों का पानी दें तिरियाक अरबी भी लाभदायक है, और जो औषध मरे हुए बच्चे और मशीमा को पेट से निकालती हैं वह गर्भ के गिराने में काम आती है ॥

गर्भ गिराने के समय पहिले गरम स्थान में बैठकर रोगन वेद इंजीर मलें और चिकनाई पिलावें, और गिरजावै तो गूगल और राई जलाकर रहम को धूनी दें कि रुधिर गाढा न होने पावे और निकलता रहै

जब चाहैं कि गर्भ न रहने पावै तो उपाय उसका यहहै कि विषय के पीछे सात वार या नौ वार कूदें और वीर्य्य निकल ने पीछे तुरंत ही उठ खडी हों और छीक लें और पुरुष विषयके समय लिंग पर तिली का तेल मलाकरे उसकीचिकनाई से वीर्य्यफिसलजावेगा और कालीमिर्चें विषय करनेकेपछिमूत्रके छिद्र में रक्खें और चूहेकी मेंगनी पीसके गद्दी बनाकर रक्खें

रिजा का वर्णन।

यह वह रोग है कि जिसमें सब लक्षण गर्भ रहने के से पाये जाते हैं परंतु वह गर्भ नहीं है क्योंकि इस रोग में और गर्भवती होने में यह अंतर है कि बच्चे के हिलने झुलने के जो समय हैं उनमें बच्चा हिलता नहीं है और लक्षण जो गर्भकेहैं वह नहीं पायेजाते ॥ और ऐसाही जलंधर में और इस रोगमें जानने वालों को अन्तर मालूम होजाता है अर्थात् जैसा कडापन इस रोगमें होता है वह जलंधर में नहींहोता । कारणइस का रहम की सूजन होतो उसका उपाय आगे लिखा जावेगा और जो किसी मवाद के गिरने या वायु के उत्पन्न होने से हो तो उसका उपाय बांझहोने के वर्णन में लिखा गया है ।

और जो केवल स्त्री के वीर्य्य से और रहम से कोई वस्तु उत्न्पन होगई हो तो गर्भको गिरादें ।

हैजकी अधिकता का वर्णन ।

जो रुधिर की अधिकता से होतो फस्द से उसे कम करें ॥

और छातियों को पट्टी से कसके बांधदें और उनके नीचे गछ्छ ने लगावें और फस्द के पीछे कुर्स कहरूवा रुधिर बंद करनेके लिये खिलावें और शाफा मुमसिक रहम में रक्खें ॥ और जो रुधिर पित्तों की अधिकता से पतला और तेज होगया हो तो पित्त के लक्षण पाये जांवेंगे इसमें पित्तको निकालें और वही उपर वाले कुर्स और शाफा दें और चंदन पेडू पर लगावें जो रुधिर में तरी बढजावै तौ कफ के लक्षण पाये जावेंगे इसमें तरी को सुखावें और निकालें ॥

जो सौदा के मिलने से रुधिर में तेजी आगई हो तो रुधिर काला या नीलायाहरा होगा उसमें सौदाको फस्द और जुल्लाव से निकालें।

और इसका कारण रहमकी ववासीर या घाव हो तो उसका उपाय आगे आवेगा ॥

और जो जनने की कठिता से रहम की रगें फट गई होंतो उसका उपाय आगे के वयान में लिखाजावेगा ॥

और जो कच्ची फूटने से यह रोग होतो काविज शराव में विठावें और कव्ज करने वाली औषधें जैसे माजू और गुल नार और गुलाव के फूल औटाकर आगे से धोवें और उस स्थानको चिकना रक्खें. और अंगूर की लकडी और पत्तों की राख कपडे पर रखकर गद्दी बांधें और जहर मुहरा मठेमें घिसकर पिलावै, और जो उपाय घावकाहै वही मरहम लगावै।

रहमके घाव का वर्णन।

लक्षण उसका यह है कि पीडा वनी रहेगी और पीव या रुधिर अकेले या दोनों मिले हुए निकलेंगे जवतक घावमें पीव न पडे और कोई हानि न होतो फस्द खोलें और भोजन ठीक

दें और कुर्स कहरुवा खिलावें और कवज करने वाले हुकने और गद्दी काममें लावें और जब घावमें पीव पडे या सूजन पककर फूटेतो रोगन गुल शक्कर और रोगन वनफशा पानी में घोलके रहम में हुकना करें और जब मवाद साफ होजाय तो मरहम वासलीकून रोगन गुल में मिलाकर रहममें हुकना करें कि घाव अच्छा हो जाय।

और जो रहम की गर्दन में घाव होतो इनहीं औषधों की गद्दी रक्खें कुछ हुकने की आवश्यकता नहीं और अकेला शहदया औटाहुआ दूधरुईमें भिगोके घावमें रक्खें औररहमसे मवाद निकालना अति लाभदायक है।

और जब पीडा अधिक होतो अफीम औरकेसर स्त्रीके दूधमें घोलकर उसमें रुई भिगोकर रहमके भीतर रक्खें।

रहम के फटजाने का वर्णन।

इसमें विषयके समय अधिकपीडा होगीऔर लिंग रुधिरमेंभरा हुआ निकलेगा जोमरहम गुदाके लिये लिखेहैंवही लगावेंऔर मरहम वासलीकून और रोगन बनफशा अति लाभदायक है कभी गुदा और मूत्रेन्द्रियके बीचमें जोपर्दाहैवह जनने कीकठिनता आदि से फटजाताहै इसमें नलीका गूदा सफेद मोमऔर बकरी के गुरदे को लेकर बहुतसा संगजिराहत मिलाकेमरहम बनावें और उसको गद्दी पर लगाकर इस प्रकार से बांधें कि घावकी जगह जमजावै और हानि कारक वस्तुओं से बचें।

रहमकी खुजलीका वर्णन।

यह रोग पित्त खारी वलगम या सौदा या वीर्य्य में तेजी आ जाने से होता है लक्षण इस का यह है कि हैजका रुधिर पीला या सफेद या काला होगा पहिले मवाद को निकालें फिर पोदीना अनार के छिलके और दलीहुई मसूर कूट छान

कर मुसल्लस या शराब या सिरके में घोल कर रुई उस में भिगोकर अन्दर रक्खें और रोगन गुल और रोगन बनफशा मलें और जो मूत्र के स्थान पर खुजली होतो उसका भीयही उपाय है ॥

रहमकी बवासीर का वर्णन ।

इस का उपाय भी वही है जो बवासीर का सत्रहवें अध्याय में लिख चुके हैं ॥

रहमकी फुंसियों का वर्णन ।

यह रुधिर के बिगाड या पित्त से होता है फुन्सियां छूने में आती है और खुजली होती है फस्द से मवाद को निकालें और सिकंजबीन पिलावें और सफेदे का मरहम लगावें और जो रहम की गर्दन में फुन्सियां हों और जो भीतर कोहोंतो हुकना करें ।

रहम के मस्सों का वर्णन।

यह भी छूने से मालूम होते हैं फस्द खोलें और सौदा का, जुल्लाब दें और बाबूना नाखूना मेथी और अलसी के बीज औटाकर आबजन करें और पेशाब करनेके पीछा उसी से धोवें ।

रहम के नासूर का वर्णन ।

जब घाव चालीस दिन का हो जाता है तो उसे नासूर कह ते हैं लक्षण उसका यह है कि पीला पानी बहा करै और उपाय उसका वही है जो आठवें पाठ में लिखा गया है ।

रहम से पानी बहने का वर्णन ।

इस में फस्द और जुल्लाब से मवाद को निकालें, और मिजाजकी ठंढ और गर्मी के अनुसार सुखाने का उपाय करें ।

रहम से वीर्य्य बहने का वर्णन।

इसमें और पानी बहनेमें यह अन्तरहै कि पानीमें दुर्गन्धि अधिक होगी और वीर्य में गाढापन और सफेदी अधिक होगी, इसका उपाय वही है जो पुरुषों के वीर्य बहने का है

हैज बन्द होजाने का वर्णन।

जोयह रुधिरकी कमीसे होतो शरीर दुबला होगा और रुधिर की न्यूनताके लक्षण पाये जावेंगे,पुष्ट भोजन खिलाकर रुधिर बढाने का उपाय करें, और जो ठंड पहुंचने से या किसी मवाद के मिलने से रुधिर भी गाढा हो गया होतो पहिले उन के कारण पाये जावेंगे. और ठंड के लक्षण होंगे, उस गाढें मवाद को निकालें, और वह औषधें जिन से रुधिर पतला हो चाहे पिलावें या भपारादें, और जो रहमकी रगों के मुंह बंद हो गये होंतो देखना चाहिये कि कारण उसका गर्मी है या ठंड या खुश्की. फिर वैसा उपाय करें, जो पहिले पाठ में लिखा गया है॥

जो रहमका घाव भरने से रुधिर बक रहा होतो उसका उपाय नहीं हो सकता. परंतु अधिक हानि से वचने के लिये कभी कभी फस्द खोला करै. और मिहनत अधिक करै और भोजन कम खावै॥

और जो रतक के कारण से होतो उसका उपाय आगे आताहै. और जो अधिक मुटापे से रुधिर निकलने के रास्ते बंद हो गये हों तो दुबला होने का उपाय करै, और जो रहम का मुंह चिर जाने से होंतो उपाय उसका आगेके पाठ में आवेगा

रतक का वर्णन।

यह वह रोग है कि भगके मुंह पर या उसके और रहम के मुंह के बीच में या रहम के मुंह पर कोई वस्तु बढी हुई

उत्पन्न हो. पहिले में लिंग अन्दर न जा सके और दूसरे में पूरा जावेगा. और तीसरे में जासकेगा परंतु हैज का रुधिर निकलने न पावेगा चाहिये कि इसको किसी से काट डालें ॥

रहमके उभरने का वर्णन।

इसका लक्षण यह है कि पेडू और कमर के स्थान पर अधिक पीडा मालूम होगी और कुजाज और राशेके रोग उत्पन्न होंगे, और भीतर कोई वस्तु नरम पाई जायेगी, आंतों को झुकने से और मसानेको मूत्र लानेवाली औषधों से साफ करै. चमेलीका तेल या रोगन गुल लेकर उसमें थोडासा केसरका तेल और अरगजा मिलावै और गुनगुना करके रहममें टपकावै और मले और दाई से कहदे कि स्त्रीको चित्त लिटा कर दोनों राने उठावै इस प्रकार से कि आपस में मिलने न पावें अलग अलगरहै और भेडके नरम बाल जो खालके पास बालों की जडमें होतेहैं उनको लेकर उस शराब में जिसमें कि कब्ज करने वाली औषधें औटाई गई हों भिगोकर अकाकिया और सुक और रामक कूट छानकर उससे उन बालोंको लथेडे और पोटलीसी बनाकर रहमको उससें उठाकर भीतर करै. और उस पोटली को उसी जगह रहने दे और दूसरी गद्दी से भगको भरदे और कसकर पट्टी बांधे और पेडूपर उसके आसपास काबिज औषधोंका लेपकरें और तीन दिन तक इसी प्रकार से रहे. और हानिकारक वस्तुओं और हिलने झुलने से बचे. तीसरे दिन पट्टी खोलके उस औषधि को निकाले और नई दवा रखदे. और जब तक भली भांति आराम नहो चलने फिरने में पट्टी बांधे रहे और बराबर सुगंधि सुंघावै ॥

रहमके झुक पडने का वर्णन।

यह दाई का हाथ लगने से मालूम होसकता है और इसमें

विषय के समय पीडा होती है और कभी कभी पेचिश भी होती है और मूत्र और दस्त बंद होजाता है ॥

जो रुधिर की अधिकता से रगें तन गई हों तौ जिधर को झुकावहो उसी ओर फस्द साफिन खोलें॥ और जो ठंड पहुंचने से हातो तर आवजन में विठावें और रोगन बाबूने में बतख की चर्बी पिघलाकर मलें।

और जो कफ गिरने से होतौ अयारिजें खिलाकर मवाद को निकालें ॥

और जो कारण दूर करने के पीछे भी यह रोग न जावै तौ उंगली में मौमरोगन लगाके दाई सीधा करदें ॥

रहमकी सूजनका वर्णन ।

जो गरम से होतो लक्षण उसका यह है कि गरम ज्वर होगा और नाडी और श्वास जल्दी जल्दी चलेगी । और मेदे और भेजेमें विगाड होगा और जो आगेको रहम में सूजन होतो पेडूमें पीडा होगी और जो पीछे होतो कमरकी ओर और जो दोनों जगह हो तो दोनों कोख में पीडा होगी इसका उपाय वही है जो मसाने की सूजन का है ॥

और जब सूजन पकजावे और फूटै तो रहम के घावका उपाय करें ॥

और जो कफकी सूजन हो तो पेडूके आसपास पीडा होगी और बोझभी होगा उलटी और मसाने की ठंडी सूजन का उपाय करें । और जो वादी से होतो कडापन होगा और रहम किसी ओर झुकाहोगा और पीडा कम और बोझ अधिक होगा फस्द और जुल्लावसे वादीको निकालें और मरहम और चरबी और रोगनों से चाहे पिचकारी दें या गद्दीरक्खें या

लेप लगावें, और सोये और खेरू को औटाकर रात दिन में दो वार आवजन करें ॥

रहम के दुवैले का वर्णन ।

जव सूजन पकजावे और न फूटे तौ उसको दुबेला कहते हैं जो यह रहमके मुंहमें होतो छेदा देकर पीवको निकाल डाले। जो रहमके भीतर तहमें हो तो मूत्रलानेवाली औषधें पिलावें, और नरम करनेवाली औषधोंका लेपकरें कि आपसेआप फूट जावे, और जो फूटने में देर होवी होतो इंजीर और राई औटाकर रहममें हुकना करें. और फोक उनका कूटकर सूजनकी जगह पेडू पर लेपकरें और जव फूटे तौ पीव को साफ करें और घाव को भरें ॥

सरतान रहम का वर्णन ।

यह रोग वहुधा गरम सूजन के पीछे हो जाता है इसमें कडापन और गरमी और सपक होगी पीडा छाती तक होगी. और पांव पर सूजन होगी इसका उपाय नहीं हो सकता. परंतु थामनेके लिये ऐसे मरहम लगाया करें जिनसे पीडा धीमी हो. और आवजन और हुकना आदि क्रिया करें और मरहम रसूल अति लाभदायक है और सौदा के निकालने के लिये कभी कभी फस्द और जुल्लावदें परंतु तरी पंहुच ने का ध्याम वहुत रक्खें ।

खातिनाक रहमका वर्णन ।

इस रोगमें मृगी और मूर्च्छाकासा हाल होता है परंतु कफ मुंह से नहीं निकलता और तडपन नहीं होती और मूर्च्छा ऐसी अधिक होतीहै कि पुकारने से भी कुछ खवर नही होती मूर्च्छामें वह उपाय करें जो मूर्च्छा और मृगी काहै परंतु इस

में सुगंधि कभी न सुंघावें दुर्गंधि सुंघानी लाभदायक है और गंधक और गूगल आदि जिसमें दुर्गन्धिहो नाक के आगे जलावै और सुगंधि रहमके भीतर मलै और मुश्क और अम्बर की धूनी रहम में पहुंचावे औरजब विषय के छूट जाने या वीर्य्य की अधिकतासे यह रोग हो तो होसके तौ विषय करे और जब हैजके रुधिर रुकनेसे होतो फराफियून और काली मिरचें गद्दीमें भीतर रक्खें और जब रोगी चेतन्य होतो मूत्रलाने वाली औषधें पिलावें और फस्द खोलें और मवाद निकालें और रहमको पुष्टकरें ॥

रहममेंपानी भरजाने का वर्णन।

इसरोग में जिस्की जलंधर की भांति पेट फूलजाता है और कभी पानी ऊपर बह आताहै इस में रहम और सारे शरीर का मवाद निकालें और मूत्रलाने वाली औषधें पिलावें और वह उपाय करें जो जलंधर और पंद्रहवें पाठमें लिखागयाहै और भूखारहना और महनतकरना लाभदायकहै और कहते हैं कि सफेद कुटकी भीतर लगाना अच्छा है ॥

रहम में वायु भरजानेका वर्णन।

इस में पेडू फूलजाता है और पीडा भी होती है और बजाने से तबले की सी आवाज निकलती है अयारिज खिलाकर सारे शरीर का मवाद निकालें और वायु को तोडने वाली औषधोंसे हुकना, लेप, सेक, आवजन आदिक और जो उपाय तबली जलंधर काहै वही इसका है ॥

जो रोग वीसवें अध्याय के आठवें, नवें और बारहवें पाठ में लिखे गये हैं वह स्त्रियों कोभी होते हैं उनका उपाय वही है जो पुरुषों के लिये है ॥

तेईसवां अध्याय।

पीठ और हाथ और पांव के रोगों का वर्णन।

कुभ निकल आने का वर्णन।

इस में पीठ की गुरिया अपनी जगह से आगे पीछे दहने बाये खिसक जाती है इस रोग के कारण पांचह एक उसपट्ठे की सूजन जो गुरियों के आस पास है, दूसरे गुरियोंके नीचे गाढ़ी बात का भरना तीसरे यह कि पतली तरी गुरियों की नसों में आवे और उसे ढीला करदे चौथे नसों का खिंचना पांचवे यह कि गुरियों पर चोट पड़े पहिली प्रकार का लक्षण यह है कि पहिले पीठमें पीडा होती है और नाडी भारी होती है और तप अधिक होती है और दूसरी प्रकार का लक्षण यह है कि पीडा अधिक होती है विना तपके तीसरे में मूत्र सफेद निकलता है और इस से पहिले तर वस्तु खाई होगी और खिचाव और चोट पडने का लक्षण तो सब जानते हैं पहिली प्रकार में फस्द खोलें और मुलायम करने वाली औषधें दें और लेप लगावें और सूजन का उपाय करें दूसरी और तीसरी प्रकार में वह उपाय करें जो गुरदे की बात का है और खिचाव में तशन्नुज का उपाय करें और चोट लगने में पीठके मुहरों को ठिकानेसे बिठावें जोभीतर को घुसगयेहों तो ऊपर खेंचें सींगियोंसेया वारे लगाकर या जिफ्त औरचूगल थोडा सा अकरकरा मिलाकर लेप करें कि सूखने से तनाव पडे और ऊपर खिंचें जोमुहरे बाहर उभर आये होंतो हाथ से मल कर भीतर अपने ठिकाने पर फेर दें फिर काबिज औषधों का लेप करें कि फिर न उभरें॥

पीठ कीपीड़ा का वर्णन।

जो कारण इसका केवल कोई विगाड विना मवाद के होतो

ठंड लगेगी और पीडा बिना बोझ के होगी और गरमी से आराम मिलेगा इसमें पिलाने और लगाने से गरमी पहुंचावें और जो कफ उत्पन्न होने या गिरने से होतो कफ उत्पन्न होने में पीडा बोझके साथ होगी, और पहिले से कफ उत्पन्न करने वाली वस्तु खाई होंगी ॥

और कफ गिरने के लक्षण इनके सिवाय, क्रोध, दौड, धूर मिहनत आदि है। मवाद को निकालें और शाफा करें।

और कफ गिरने में पचाने वाली औषधों का लेप भी लाभ दायक है बिना मवाद निकाले हुए। और जो पीठ में वाय फंसी हो तो लक्षण उसका वही है जो कफ के गिरने का है परंतु इसमें बोझ न होगा या हलका होगा, और पीडा इधरउधर फिरेगी, इसका उपाय भी लिख चुके हैं, क्योंकि जड इसकी भी कफ है ॥

और जो विषय की अधिकता होतो विषय करना छोड दे और रोगन गुल और रोगन सुरंजान पीठ पर मले और जो इससे लाभ न होतो कफका मवाद निकाले ॥

और जो गुर्दे की कमजोरी होतो लक्षण और उपाय उसके वही हैं, जो गुरदे के रोगोंमें लिखे गयेहैं। जो पीठमें बडीरग है उसमें रुधिर की अधिकता से होतो पीठके मुहरो में गर्दन के पास में कमर तक बराबर लम्बाई में पीडा और तपकहो इसमें फस्द वासलीक और मावेज खोले और ठंडाई पिलावै और ठंडी औषधें लगावे ॥

जो यह रोग रहम के बिगाड़ से हो जैसे कि स्त्रियों को हैज आने के समय हुआ करता है जब कि भली भांति खुलकरन आवे इस में हैज लाने वाली औषधें दे और उसके निकालने का उपाय करै और रोगन गुल पीठपर मलें ॥

कोख की पीडा का वर्णन ।

इसके कारण. लक्षण और उपाय पीठकी पीडामें देखें

गठिया का वर्णन ।

यह पीडा शरीर के जोडों मे होती है. इसमें कभी सूजन होती है और कभी नहीं होती जो चूतडों के जोड में पीडा हो उसे वजुल वर्क कहते हैं. और जो कूल्ह से नीचे पांवतक उतरे तो अरकुन्निसा कहलाती है ॥

और जो टखने के जोड से ऊपर को चढे या पांव की उंगलियों में होतो उसका नाम नुकरस है. बहुधा यह पांव के अंगूठे में होती है ।

और जो हाथ पांव के सब जोडों में होतो वजय मफासिल है सब प्रकारों के कारण और उपाय एक से हैं इस वास्ते एक उपाय लिखा जाता है और जो वस्तु केवल एक ही प्रकार के लिये है वह भी बताई जाती हैं जो केवल गरमी ठंड या खुश्की से होतो धीरे उत्पन्न होगा और बोझ और पीडा न होगी और इन विगाडों के लक्षण पाये जावेंगे पीने और लगाने की औषधों से मिजाज को ठीक करें. और तरी से यह रोग नहीं होता ॥

जो रुधिर की अधिकतासे हो तो उस स्थानपर लाली और तपक और तनाव होगा. जो पीडा होतो दूसरी ओर फस्द खोलें और जो दोनों ओर होतो दोनों ओर से खोलें जो हाथके जोडों में होतो फस्द हफ्त अंदाम खोलें और पावों के जोडों में होतो बासलीक परंतु रुधिर अधिक निकालें और जो मवाद के नरम करने की आवश्यकता होतो वैसी औषधें दें और मिजाज के ठीक करने के लिये शर्बत पिलावें और रोगके आदि और बढती में फस्द के पीछे उन ठंडी

औषधों का लेप करें जो मवाद को इधर गिरने से रोकें और पीडा की अधिकता में सुन करने वाली औषधें भी मिलावें और रोग के अंत में वनफसा और खैरू आदि फिर पचाने वाली औषधें जैसे नाखूना और बाबूने के फूल काममें लावें चाहे तरेडा करें या लेप करें ॥

और जो पित्त के मिलने से रुधिर बिगड जावे तो पित्त के लक्षण पाये जावेंगे अर्थात् पीडा की अधिकता और जलन आदि होगी फस्द खोलें और मवाद को नरमकरे परंतु रुधिर अधिक न निकाले फिर मूत्रलाने वाली औषधें जो ठंडी हों अति लाभदायक हैं और पचानेवाली औषधों का लेप कभी न चाहिये और इन दोनों प्रकारों में सिकंजबीन जो बहुत तेज न हो लाभदायक है ॥

और जो पित्त से पीडा होतो केवल उन्हीं के लक्षण पाये जावेंगे और मवाद को नरम करें और मिजाज को ठीक करें और वमन अति लाभकारक है और फस्द न खोलें यह रोग केवल पित्त से बहुत कम होता है।

जो कफसे होतो जोड बोझल होंगे और ठण्डके लक्षण पाये जावेंगे इसमें वमन करावें और मुंजिश देके कई बार जुल्लाब दें जब मवाद निकलचुके मूत्र लानेवाली गरम औषधें पिलावें और इसमें भूलकर भी केवल वह ठंडी औषधें जो मवाद को इधर गिरनेसे रोकें या जो केवल पचानेवाली हों न लगावें

औरजो बादीसे होतो रंग कालाहोगा और पीडा कम होगी और सूजनमें कडापन और तनाव होगाइसमें फस्द खोलें और जब मवाद भलीभांति पकजावै तो बादीके जुल्लावदें और ऐसे मरहम लगावें जो कडेपनको नरम करें ॥ फस्द में नश्तर चौडा

लगावैं जो रुधिर गाढा और काला निकलेतो बहुत सा निकालैं और बंद न करें और जो लाल और साफ निकले तो तुरंत बंद करदें और पहिले मवाद को वादी की मुंजिसों से पतला करलें फिर फस्द खोलें ॥ जो वाय से होतो पीडा फिरैगी और तनाव होगा इसमें गुलकंद गुलाब और सौंफकाअर्क और शर्वत बजूर पिलावें और रोगन गुलमलें और कफको निकालें और पचावको ठीक करें । एक प्रकार की वायकी पीडा ऐसी है कि कडापन और तेजी उसकी हड्डियों तक पहुंचती है और उसे तोडती है और बिगाडती है इसमें रुधिर और पित्त को निकालें ॥ जो पीडा मिले हुए मवाद से हो उसका उपायभी वैसाही करैं और सुरंजान सब प्रकारों में लाभकारक है खाने में भी और लगाने में भी परंतु कफ के मवादको अतिलाभ दायक है और इस में जीरा और सोंठ मिलालेना चाहिये फिर मेदेकी हानि न करेगी और जब इसे खावे जोडों पर रोगन गुल मलतेरहें तो इसकी खुश्की से फिर हानि नहोगी यह औषधें इस रोग में लाभकारक है सुरंजान और मिश्री मिलाकर कूट छान कर साढेदश माशे ठंडेपानी के साथ फकावें ॥

सूखा धनियां और बराबर शक्कर मिलाकर साढेदसमाशे खिलावै सफेद खशखाश पीसके बराबर शक्कर मिलाके सात माशे फकावै । अस्पगोल गरम पानी में घोलकर और रोगन गुल मिलाकर लेपकरे ॥

और मेथी के बीजों का लुआब और सिरका मिलाकर लेप करै नुकसर आदि में सुन्न करने वाली औषधों और ठंढी औषधों से जब भेजे में कोई बिगाड उत्पन्न होतो औषधि को तुरंत ही छुडालें और बाबूना खैरू को औटाकर सिरको धारैं कि मवाद भेजे से उतर आवै ॥

अबरजउलबर्क और अरकुंनिसा में औषधि से लाभ न हो तो पहिले रोगमें कूले पर दागदें और दूसरे में टखने पर। अरकुंनिसा जो रगहै उसकी फस्द भी लाभ कारक है वहरग गठीली होती है चाहिये कि लोहकी सींक भली भांति गरम करके टखने से आठ अंगुल ऊपर दाग दें चौडाई में औरएक दाग पांवकी छुगलियां और दूसरे उंगली पर जो उसके पास है जड में ऊपर को सलाई गरम करके लगावें कि एक लकीर सी पडजावै चोबचीनी सावधानी के साथ जोडों की सब पीडाओं को अति लाभदायक है।

पिंडलीकी रगों गावडी और मोटीहोकर उभर आना

इस में बादी और कफ का मवाद निकालें और फस्द बासलीक और जुल्लाब और उलटी के पीछे उन्हीं रगों की फस्द खोलें कि उनके भीतर का मवाद निकल जावे और जब रोग में कमी होजावे तो भली भांति नरमी से उन्हें बाधें कि मवाद उलट न आवे।

पांव सूजकर हाथी के से होजाने का वर्णन।

इस का उपाय वही है जो ऊपर के पाठ में लिखा गया है और जो अधिक हो जावे तो अच्छा हो नहीं सकता।

एडी की पीडा का वर्णन।

जो घावमेंसे होतो मरहम लगावें जो चोट लगी होतोममीरा गिले अर्मनी पानी या गुलाब में पीसकर लगावें और ठंडे पानी से धोवें और पछने भी लगा सकते हैं और जो जूते के दवाने से होतो भी वही उपाय है और जो मवाद के गिरनेसे होतो रुधिरके मवाद में फस्द खोलें और जो कोई मवाद होतो उलटी करावें और जुल्लाब दें और गरम पीडामें रोगन गुल और ठंडीमें बाबूने और फराफियून और कूट का तेलमलें

२८

तलुये की पीडा का वर्णन ।

इस पीडामें धरती पर पैर नहीं रक्खा जाता मसूर को सिर के में पका कर लेप करें और जो रुधिर का मवाद अधिकहो तो सब से पहिले फस्द खोलें ।

चौबीसवां अध्याय ।

तप का वर्णन ।

तप तीन प्रकार की होती है हुम्मायौमी हुम्माखिल्ती हुम्मादिक्की

हुम्मायौमी का वर्णन ।

यह वह तप है कि इसका संबन्ध रूह से होता है और एक दिन में बहुधा जाती रहती है इसके कारण बहुत है जैसे दुख क्रोध, भूख, प्यास, धूप, आग, भोजन आदि जब कोई कारण इन कारणों से बढ जाता है तो रूह गर्म होजाती है और ज्वर होजाता है और रूहें तीन हैं नफसानी, हैवानी, तबई इन तीनों में से जिस रूह के कामों में हानि हो जानो कि उसी रूह में तप है ।

हुम्मायौमी का लक्षण यह है कि गर्मी विना जलन के बराबर रहेगी, जैसे कि बहुतमिहनत करनेमें होतीहै, औरसर्दी तप और दिक के लक्षण न होंगे, और बहुधा एक रात दिन रह कर उतर जाती है जब कि दूसरी प्रकार की तप नहो जावे इस में कारण को दूर करें जैसे उचित हो ।

इस तप में भोजन बंद न करें सिवाय उस तपके जो दुखमें सेहो और उलटी भीनकरावें, और न फस्द आदि खोलेंपरंतु जो तप सुद्दे से हो और कारण उसका मवाद की अधिकता

हो और जब मेदे से पचाव न हो और गरम नजले में फस्द आदि कर सकते हैं और इसतहसाफी तप में भी ।

इसतहसाफी और सुद्दे की तप में शरीर का मलना और महनत करना और गरम पानी से न्हाना अति लाभदायक है इसतहसाफी वह तप है जिसमें शरीर के छिद्र बंद हो जाते हैं और खाल मैली और मोटी होजाती है, जैसे कि ठण्डकी अधिकता से खाल सुकड जाती है ।

और सुद्दे की वह है कि पतली रगों में गाढ़ा मवाद फस जावे । कश्फी तप उसको कहते हैं कि महनत या न्हाना छोड देने से गर्मी रुके और उससे रूह गर्म हो जावे चाहे सुद्दापडे या न पडे ।

और जहीगी तप वह है कि पेचिश की अधिकता आदि से तप होजावे ।

हुम्माखिलतीका वर्णन ।

शरीर में चार मवाद हैं कफ, रुधिर, पित्त, वादी. इसलिये इस तपमें भी चार प्रकार लिखी जाती हैं पहिली प्रकार रुधिर का ज्वर एकतो यह है कि रुधिर केवळ गरम होकर ज्वर उत्पन्न करे और सडे नहीं दूसरे यह कि सड जावे पहिले तपको सूनाखस दूसरीको मुतविका कहते हैं।पहिलीकेलक्षणयहहैंकि रुधिरकी अधिकता होगी और शरीर एकसा गरम रहैगा और पसीना न आवेगा और मुतविका में मूत्र और दस्तमें दुर्गंधि होगी और जितने लक्षण रुधिर औटने के हैं इसमें सोनाखस से अधिक होंगे जैसे होसके और सुगमता से रुधिर को निकालें आवश्यकता के अनुसार रुधिर की गरमी को बुझावें और रुधिरको साफ करें परंतु बहुत ठंडाई देना इसमें बुरा है कि इससे कफ का सरसाम होजाताहै सोनाखसमें जितना अधिक रुधिर नि-

कालैं तो अच्छा है और मुनविका में आवश्यकता के अनुसार जब रुधिर पतला होजावे तो शर्बत उन्नाव पिलाके उसे गाढा करें और जो गाढाहोतो तो सिरके की सिकंजवीन देनेसे पतलाहो जावेगा और ऐसी औषधेंदें जो मवादको नर्म करें और जब मवाद बुहरानके पीछे रगोंमें रहजावै तो हरी कासनी का अर्क ७० माशे फाडकर और साफकरके ५२॥ माशे शिकंजवीन पिलाकर दें जो खांसी का लगाव होतो खट्टी वस्तु कभी नदें। बीदाने और अस्पगोलका लुआब पिलावें और शर्बतबनफसा चटावें और जो खटाई के बदले कोई और ऐसी औषधि दें। कि खांसी को भी लाभदायक हो और तप को भी, तो बहुत अच्छा है इस तपमें उन्नाव भिगोकर या औटाकर पानी उसका कई दिन तक पिलाना अच्छा है विशेष करके जब कि रुधिर को गाढा करना हो और केवल अस्पगोल रुधिरके साफ करने को अच्छाहै और आलूबुखारे का पानी भी लाभदायक है और खांसी को भी हानि नहीं करता॥

दूसरी प्रकार पित्तोंका ज्वर है चाहै अकेला हो या कोई और मवाद मिला हो लक्षण पित्त आदि का आरम्भ में इस पुस्तक के लिखा गया है यहां इतना जानना चाहिये कि जो पित्त का मवाद रगों के भीतर सडगया हो तो ज्वर बराबर रहेगा और एक दिन बीच करके अधिक होगा इसका नाम गिब्बे लाजिम है और जो यह मवाद दिल और मेदे के पास की रगों में सडजावै तो रोगोंकी अधिकता होगी इसका नाम तपे मुहरिका है॥

और जो मवाद पित्तों का रगों से बाहर कहीं सडे तो गिब्बे दायर कहते है॥

फिर यहमवाद जो निरे पित्तका विना किसी और मवादके होतौ

गिब्ब खालिश कहेंगे ॥ और जो कफ मिला हो और ऐसा मि
ले कि दोनों मिलकर एक हो जावें तो गिब्बे गैर खालिश
नाम होगा ॥

और जो कफ और पित्त का भली भांति मेल नहीं हुआ हो
और अलग अलग होतो शतुरूल गिब्ब कहेंगे ॥ गिब्बे खालि
स में तप एक दिन आवेगी, और एकदिन नहीं, परंतु जो दो
गिब्बे इकट्ठा हों इस प्रकार से कि एक २ दिन आवै और
दूसरी दूसरे दिन आवै तो वारी से आना मालूम न होगा ॥
और गैर खालिश में एक दिन अधिकता होगी, और दूसरे
दिन थोडा अन्तर होजावेगा ॥

शतुरुल गिब्ब में पित्त और कफ रगों से वाहर सडे होंतो
लक्षण यह है कि एक दिन केवल कफ के लक्षण पाये जावेंगे
और दूसरे दिन दोनों के क्योंकि कफ की तप रोज वारी
करती है और पित्त की एक दिन वीच करके तो जिस दिन
पित्त की वारी न होगी उस दिन केवल कफ के लक्षण पाये
जावेंगे, और पित्तकी वारी के साथ दोनों के ॥
जो दोनों मवाद रगों के भीतर होंतो दोनोंके लक्षण बराबर
रहेंगे परंतु एक दिन वीच करके अधिक अन्तर हो जायगा
और जो पित्त रगों के भीतर हो और कफ बाहर होतो पित्त
की तप बराबर रहैगी और कफ की भी अपने समय पर रो
ज आवेगी और एक दिन बीच करके अधिकता होगी इन
तीनों का नाम शतुरुल गिब्ब गैर खालिस है ॥

और जो पित्त रगोंसे बाहरहो और कफ भीतर होतो कफकी
तप बराबर रहेगी और पित्त की एक दिन बीच कर के आ
वेगी जिस दिन पित्त की तप की वारी होगी उस दिन रोगी

की बहुत अधिकता होगी इसको मतुरुल गिब्बे खालिस कहते हैं ॥

गिब्बे खालिस जो बराबर रहे सात दिन से अधिक और गिब्बे खालिस दायरा चौदह दिनसे अधिक नहीं रहती परन्तु उपाय में भूल नहो ॥

पित्तको ठंडाई और तरी पहुंचाना चाहिये और जो कब्ज होतो मवाद निकाले और जब मवाद रगों के भीतर होतो बहुत ठंडाई न दें, परंतु मवाद के पकाने का ध्यान रक्खें, और तपे मुहरका में ठंडाई अधिक चाहिये, दिक न होने पावे परंतु वह तपे मुहरका जिसमें मवाद गरमीसे अधिक हो उसमें पहिले मवाद को पकाना और निकालना चाहिये और ठंडाई का ध्यान रक्खें और मवाद निकालने के पीछे ठंडाई अधिक करें और इस पित्तकी गिब्ब में जो रुधिर की अधिकता हो और मूत्र लाल और गाढा निकले तौ फस्द खोल सकते हैं बहुत करके जब मवाद रगोंके अंदरहो परंतु जैसा कि रुधिर की तप में नहीं कर सकते हैं और जो खोलें भी तौ रुधिर बहुत थोडा निकालें और वह भी पकानेके पीछे और जब केवल पित्त हो और रुधिर की अधिकता बिलकुल न हो तो कभी फस्द न खोलें ॥

तपे दाइरा में जो हो सके तौ वारी के दिन भोजन न दें और जब जाडा और कपकपी आने को हो तो सिकंजबीन गरम पानी के साथ पिलावैं कि इससे वमन होजावै और निकल जावै और जो वमन नहीं हो तो उबकाई हीसे पचजावै और जाडा ठहरजावे और जब ज्वर उतरने परही होतौ पाशो-या करे और पांव गरम पानीमें रक्खें और मलें कि रही स. ही गर्मी सिरसे उतर जावै और उस समय सिकंजबीन भी पि-

लाना अच्छाहै जो मतली हो और कुछ हानि न हो तौ वमन करावें और जो आंतों में गडबड होतो जुल्लाव दें, और जो मूत्र खुलके नहीं आता हो तौ मूत्र लानेवाली औषधें पिलावें और जो शरीरपर तरी पाई जावै और पसीना खुलके न आ. वै तो पसीना लानेका उपाय करें और जो इनमें से कोई बात नहो तो जुल्लाव देना अच्छा है ॥

और गरम ज्वरों में तुरंजवीन नदें परंतु आलू और इपली के साथ और जब तक मेवों के पानी से काम निकालें कोई और पुष्ट वस्तु दस्तलाने वाली नदें सिवाय मुलय्यन मुतारिक के ॥

और जब पित्त अकेला न हो तो बिना मुंजिस दिये जुल्लाव और मुलय्यन न दें परंतु गवाद का औटना कम करने के लिये दे सकते हैं ॥

जितना कफ अधिक हो ठंडाई कमदें परंतु खारी कफ में ठंढाई देना चाहिये । ज्वरमें जब तक इन सब बातोंको भली भांति न जानलें उपाय न करें और कुर्सगुल और सिकंजवीन गुलकंद के साथ मिली हुई तप में अति लाभदायक हैं ।

तपे मुहरिका में वहुत पसीना नींद और भूख का होना. छींकों की अधिकता और मूर्च्छा आदि होती है नकसीर फूट- ती है और दम रुकता है इनका उपाय भी तपके अनुसारकरें

पित्तोंके तपका एक भेद ऐसा है जिसमें बराबर तप रहती है और एक दिन बीच करके अधिक हो जाती है इसमें पित्तों के लक्षण पाये जाते हैं और भीतर गरमी और बाहर ठंढ होती है उपाय इसका वह है जो गैर खालिस का है और सिकंजवीन तथा गुलकंद लाभदायक है इस तप को लेफूरि' या कहते हैं ॥

इसी तप का एक भेद और है इसमें वारी के समय मूर्च्छा आ जाती है उसको हुम्मागाशिया कहते हैं इसका उपाय वही है जो उस हुम्मायौमीका है जो मूर्च्छासी आजातीहै और वारीके समय रोटी नीबूके अर्कमें भिगोकर थोडीसी खिलावे तीसरा कफका तप है, जो इसमें कफका मवाद रगों के भीतरसड जावै तौ उसको लसका कहते हैं ॥

यह मवाद जो खारी कफ हो और दिल तथा मेदे के पास रगों के अन्दर सडजावे तो मुहरिका कहलावेगा इसमें और पित्त की मुहरिका में अंतर उनके लक्षणों से मालम होजावेगा और जो कफ रगों के बाहर सडेतो नाइवा और मुआजिवा नाम होगा, परंतु लसका वराबर रहती है विना जाडे और कभी कभी थोडी देर के लिये कुछ कमी भी होजातीहै और नाइव प्रति दिन में एक दो वार उतर जाती है ।

कफकी तपमें कफके लक्षण पाये जावेंगे. परंतु खारी कफमें वह लक्षण नहीं होते, क्योंकि इसमें गरमी अधिक होती है इसपर भी खारी कफकी गरमी पित्तों की गरमी को नहीं पहुंच सकती ॥

खारी कफका लक्षण यह है कि रोंगटे शरीर पर खडे हों, और ठंड और कपकपी थोडी हो ॥

और जजाजी कफ में कपकपी अधिक होती है और खट्टे कफमें ठंड बहुत मालूम होती है, मीठे से कम और बहुधा कई वारियों तक रोंगटे खडे होना, और ठंड और कपकपी कुछ नही होती. सात दिन तक शहद की सिकंजवीन और शहद का पानी जिसमें थोडासा जूफा औटाहुआ हो और आसजौ जिसमें थोडी सौंफ और चने औटे हों देते रहें और सिकंजबीन और गुलकंद गुलाब के साथ देना अच्छाहै इसके पीछे

सिकंजवीन और गरम पानी से वमन करावें विशेष करकेउस समय जब कि बारी आने को हो और बहुत सी पिलावें, और जितनी वमन सुगमता से आवे अच्छा है, और कभी कभी गुलकंद के साथ अनीसून दें, और पोदीना और मस्त गी बराबर चबाया करें जब मवाद भली भांति पक आवे तौ जुल्लाब दें ।

जो कब्ज होतो रात को दवाय तुरबुद जितनी उचित हो खिलाया करें, और सबेरे गुलकंद १७॥ माशे खिलाकरऊपर से शहद की सिकंजवीन पिलाया करें, जब कि कब्ज दूर करना हो, और जो मूत्र गाढ़ा और रंगीन होतो फस्द खोल सकते हैं और जब भेजा निर्बल होतो सिकंजबीन न दें और मवाद निकालने के पीछे कुर्स गुल अति लाभदायक है ॥

जो कफ की तप पुरानी हो और कपकपी अधिक आती हो और शरीर देर में गरम होता होतौ अजवायन कूट छानकर शहद में मिलाकर १०॥ माशे खिलावें और गारीकून ३॥माशे शहद ४॥ माशे मिलाकर खिलाना भी ऐसाही है ॥

लसका में पकाने वाली और पतली करने वाली औषधें देने में इतनी जल्दी न करना चाहिये जैसी नायबा में कर सकतेहैं क्योंकि कहीं ऐसा नहोकि मवाद पिघलकर सिरमेंचढ जावै और सरसाम होजावै और सिर की पीडा और भेजे की निर्बलता में तो ऐसा कभी न करना चाहिये ।

कफ के तप का एक ऐसा भेद है जिसमें भीतर ठंड और बाहर गर्मी होतीहै उसको इनक्यालूम बोलतेहैं और एक और भेदहै जिसमें भीतर गरमी और बाहर ठंड होतीहै उसकानाम लैफूरिया है उसका वर्णन और उपाय ऊपर हो चुका है ।

कफकी तपका एक भेद ऐसाहै जिससे गरमी और ठंड इक

ही भीतर और वाहर होती है और एक प्रकार में भीतर ठंड होती है और वाहर असली हालत और कपकपी कई वारवि-ना गर्मी के आवै इन दोनों का कुछ नाम नहीं है ॥

एक प्रकार की तप दिन को आती है और रातको उतरजा ती है उसको नहारी कहतेहैं और एक प्रकारका ज्वर रातको आताहै और दिनको उतर जाता है उसको लैली कहतेहैं इन सब में मवाद को पतलाकरें ॥

चौथा भेद वादी का तप है इसका मवाद भी जो रगों के भीतरहोतौ रुवाला जिमकहतेहैं और लक्षणइसका यहहैकि तप वरावर रहैगी और दो दिन वीच करके अधिकता होगी॥जो मवाद रगों के वाहर सडजावै उसको रुवदायक कहते हैं और यह दो दिन पीछे दौरा करता है इस तप के आने का दिन उतर जाने के दिन समेत चौथा दिन होताहै इस लिये इसका नाम रुवारक्खा गया है इस प्रकार से पांचवें दिन वाला तप औरछटे दिन वाला आदि जानों परंतु चौथे दिन वालावहुत आया करता है यह तपें या तो प्राकृतिक वादी के सडने से होंगी लक्षण उनका यह है कि पहिले वह वस्तु खाई होंगीजो वादी को उत्पन्न करें और नाडी हलकी होगी दूसरे यह कि अप्राकृतिक वादी से हो और यह वात हम पहिले लिख चुके हैं कि जो मवाद जलता है वह अप्राकृतिक वादी हो जाताहै तो मालूम हुआ कि यह तपें रुधिर या पित्त या कफ यावादी से होंगी और लक्षण हर मवाद के पाये जावेंगे परन्तु पित्तों की तप में गरमी और तपों से अधिक होगी और जलदी जाती रहैगी ।

तपे रुवा देरतक रहती है और कभी पांच छैः वारी होकेजा तीहै और फिर आने लगती है इस में वारी के दिन और व-

हुत करके इस रोग के आदि में खाना पीना बन्द करदें और ठण्डा पानी मेवे और वायु उत्पन्न करने वाली वस्तु गरम खुश्क और जल्दी सडने वाली वस्तु से बचें और तर औषधों तथा भोजनों से जहां तक होसके मवाद को पकावें फिर मवादको कई वार करके निकालें और रुधिर की रुवा में फस्द खोलें परंतु दो तीन वारियों के पीछे औरर प्रकारोंमें भी फस्द खोलें परंतु मवाद के भली भांति पकजाने के पीछे। और पित्तोंकीतपमें मवादकापकानाअवश्य नहींहै औरजबफस्दसे रुधिर लाल और साफ निकलें तो रोक दें और जो यहतपदेर तक रहैतौ रोगी में वल रहने का ध्यान रखै और कडापरहेज न करावैऔर महीनेके आरम्भमें फस्द असीलम खोलनाऔर थोडा सा रुधिर निकालना अच्छाहै और वारीके दिन२घडी पहिलेखाली सींगियांलगाकर वहुतदेरतकचूसना लाभदायकहै

मिली हुई तपों की कई प्रकारें हैं नाम उनके अलगर नहीं हैं सिवाय शतुरुल गिव्व, और गिब्बै गैरखालिसा के और और जिसकी इनमें से वारी का ठीक न हो उसको मुखतलित कहते हैं और तपोंके मिलने के तीन भेद हैं।

एकयह किएक तप उतरने नहीं पाती कि दूसरी चढआतीहै उसको मुदाखिला कहते हैं।

दूसरी यह कि एक उतरे और दूसरी चढै उसको मुवादिला कहते हैं।

तीसरी यह कि इकट्ठी दोतपें चढें, चाहे साथ उतरे या नहीं उसको मुशारिका और मुशाविका कहते हैं उपाय इसका सोच समझके करें जो अधिक हो उस के दूर करने की अधिक आवश्यकता जानों।

दिक का वर्णन।

यह वह तप है जिसमें बुरी गरमी शरीर के बडेर स्थानों और दिल में बैठजाती है. और अच्छी तरी पहिले जानेलगती है और आदि में उसको दिक कहते हैं।

और जब दूसरा दर्जा होता है तो शरीर पिघलने लगता है उसको जबूल कहते हैं।

और जब इससेभी बढजावे औरबाल गिरने लगे तबउसको मुफतित कहते हैं उस समय उपाय कठिन होजाता है॥

अकेली दिक की पहिचान यह है कि हलका तप बराबर रहता है और भोजन करने के पीछे गरमी अधिक हो जाती है.और नाडी निर्बल होतीहै, परंतु खानेके पीछे नाडीमेंबल पाया जाता है मूत्र में छिलके से निकलते है इसमें शरीर को तरी और ठंड पहुंचावें और भोजन और मकान और हवा ठीक करें. और ठंडी औषधें और गधे का दूध और मठा पिलावें, जो सड़ी हुई तप न होतो इसके देने की क्रिया बडे ग्रन्थों में लिखी गई है. इस तप में जहां तक हो सके शरीर के बडे बड़े स्थानों को पुष्ट रक्खें और तरी पहुंचावे और दस्त न आने दें और जब निर्बलता बढने लगेतो माउलहम पिलावें।

एक और रोग है जो दिक से मिलता हुआ है उसको दिक शैखूखत और दिक्कुल हरम कहते हैं, वह यहहै कि जवान सूखकर बुढ्ढा कासा होजाताहै, और बुड्ढे को होतो वह और भी बुरा होजाताहै, बिना गरमी के और बहुधा बुढ्ढों को यह रोग होता है, और जवानों को कम और बच्चोंको बहुतकम तपों में ठंडी वस्तु अधिक खाने से दिलमें ठंड से बिगाड हो जाता है, या महनत करने के पीछे ठंढा पानी पीलेने से या

किसी और ऐसेही कारण से यह रोग होता है, इसमें प्रकृति को गरम और तर वस्तुओं से ठीक करें. परन्तु बहुत न दें, और कभी कभी शहद चाटें, और जब यह रोग जगह पकड लेता है तो अच्छा होना बहुत कठिन है, परन्तु उपायसे हाथ न रोकें कि जल्दी मरने से बचें. और सोने का वर्क शहद में या गुलाब शरबत में मिलाकर खिलाना और माउल लहम और अंडे की जरदी देना अति लाभ कारक है ॥

सीतला का वर्णन ।

इस रोग में जो तप होती है उसमें बेचैनी और पीठमें पीडा होती है. नाक खुजलाती है. आंसू बहते हैं और सोतेमें चौंक पडता है ॥

खसरा में मोतिया से बेचैनी अधिक और कमर की पीडा कम होती है ॥

सीतला निकलने से पहिले रुधिर कम करें. जवानों के फस्द खोलें और लडकोंके जोकें लगावें, और नरम करने वाली औषधें पिलावें और शरबत उन्नाव पिलाया करें ॥

और जब निकल आवे तो कभी मवाद न निकालें परन्तु भली भांति निकालने का उपाय करें. इस प्रकार से कि शरीर को नरम कपडेसे ढाके रक्खें और ठंडा पानी एक २घूंटदेतेरहें और खूबकला विछोने पर बिछादें, और औटाकर उसका भपारादें

हुम्मावबाई का लक्षण ।

यह तप बहुत बुरी है वबा के दिनों में होती है ताऊन एक रोग है जब तक वह न निकले मवाद को निकालें. और गरमी को बुझावें, और दिल और भेजे को पुष्ट करते रहें और जब ताउन निकल आवे तौ उस का उपाय करें जैसा कि आगे लिखा जावेगा ॥

पच्चीसवां अध्याय

सूजनों और फुन्सियों और उन रोगोंका वर्णन जो शरीरके ऊपर होते हैं

सूजन आदिका वर्णन

छोटी सूजन को फुंसी कहते हैं यह सूजन कई प्रकार की होतीहै और उनका नाम भी जुदाजुदा है जैसाकि आगे लिखाजाताहै ।

फलगमूनी एक सूजन गाढी है वहुत वडी रुधिर के मवाद से उसमें पीडा और लपक अधिक होती है ॥

फस्द खोलें और आदि में वह ठंडी औषधें जो मवाद को इधर गिरने से रोकें लगावें जैसे चंदनछालिया. गिलेअरमनी, मामीसा. अकाकिया. गुलावके फूल, कासनी आदि और वढने के समय ढीला करने वाली औषधें मिलालें जैसे जौका आटा हराधनियां. खेरू. खुब्वाजी और अंतमें ढीला करनेवाली और पकाने और पटकाने वाली औषधें मिलाकर लगावै जैसे वाकले का औटा और खेरू, खुब्वाजी, वावूना, कनौचा आदि और जव सूजन वढने से रुकजावै तो अकेली पटकाने वाली औषध लगावें जैसे वावूना असली, नाखूना, और मेथीके वीज आदि और जव मवाद न पचै और पकने पर आजावें तौ पकाने वाली औषधों का लेप करें जैसे कनौचे और कतां के वीज और इंजीर आदि जिससे जल्दी पकजावै फिर जो आप फूटजावैतौ अच्छाहै नहींतौ फूटने वाली औषधें लगावै जैसे कवूतरकी वीट और उशक या नश्तर से चीरदें और फस्द के पीछे जो कब्ज होतो मतवूल फवाकह या मुलय्यन मुवारिक पिलावें ।

यह जो रीति लेपकी लिखी गईहै सब सूजनोंमें इसी प्रकार

सेकें सिवाय उस सूजन के जो कानके पीछे और बगलके नीचे और रानके कोनेमें हो। बडे२ स्थानोंके मवाद दूर होने से हो वहां ऐसी ठंडी औषधं जो मवाद को इधर गिरनेसे रोकें लगाना न चाहिये।

सकाकिलूस—यह बहुत बुरी सूजन है। जिस स्थान पर होती है उसको काला करदेती है और बिगाड देती है काला होने से पहिले गहरे पछने लगावै और उसी जगह का रुधिर निकालें फिर मटरका आटा सिकंजबीनमें मिलाकर लगावै जब वह जगह बिलकुल काली होजावैतौ सिवाय काट डालनेके कोई उपाय नहीं है उसी समय काटडालें, कि बिगाड आगे को न बढे, और इसमें फस्द कभी न खोले, जो वह काटने के योग्य न होतो आसपास उसके दागदे ॥

हुमरा पित्त की सूजन है, जो केवल पित्त से होतो जलन और चमक अधिक होती है यह फैलती हुई चली जाती है. और पीला होता है, और जो पित्त और रुधिर के मेल से हो तो लाल होती है. इसमें जलन नहीं होती. और न जलदी फैलती है. केवल पित्त में उन्हें निकालें. और हर समय ठंडी औषधें लगावे. और तर और जो मेल से होतौ पहिले फस्द खोलें, और फिर पित्त को निकालें. और दवा उसी रीति से लगावै. जो फलगमूनी में लिखी गई है ॥

"जमरा" यह दाने होते है फैलेहुए और बहुत लाल पीडा और जलन के साथ जैसा अंगारा होता है. इस में पित्त को निकालें. और जो रुधिर अधिक होतो फस्द भी खोलें और कुछ लोग यह कहते हैं कि रुधिर इतना निकालें कि मूर्च्छा आजावै और यह लेप लगावै सिरके की तलछट गरम जमीन पर डालें जब खोलने लगे तो उसे उठाकर कपूर मिलाकर

लगावें, और जो गिले अरमनी या सिर धोने की मिट्टी भी मिलाले तौ अच्छा है ॥

नमला ..एक दाना या बहुत दाने होते हैं, जलन और खुजली उसमें बहुत होती है. और अपनी जगह से बढती नहींहै जो केवल पित्त होतौ खाल के ऊपर ही होगा। और जो रुधिर भी मिला होतो खाल के ऊपर और मांस के भीतर पैठाहुआ होता है. कारण के अनुसार उपाय करै, और जमरे वाला लेप लाभदायक है और दवाय नग्द आस पास लगावें और घाव का उपाय सफेदे के मरहम से करें ।

जावरासिया छोटे २ दाने खालपर बाजरे के से होजातेहैं। नोक उनकी सफेद और जड लाल होतीहै और अलग अलग निकलते हैं इस में पित्त और कफ का मवाद निकालें, अनारके छिलके थोडे से सिरके और गुलाव में पीसकर मलें और जो आवश्यकता हो फस्द भी खोलें ॥

नारफारसीएक दानाहै उसके भीतर पतला पानी भराहोताहै और खुजली अधिक होतीहै, जलन और खुजली अधिक होती है और जब निकलता है और जल्दी खुरंड होजाता है ॥ निकलनेसे पहिले उस जगह लाल और मोर के रंगकी लकीरें पडजाती हैं फस्द खोलें और पित्त का मवाद निकालें और माजू गुलाव में या सिरके में पीसकर लगावें ॥

निफतात छाले पडने को कहते हैं इसके भीतर बहुधा पतला पानी भरा होता है और कभी केवल गाढी वायु होती है॥ और कुछ नहीं होता फस्द खोलें और रुधिर को गाढा करें और जब छाला बडा होकर फूल जावे तौ सोने की सुई से फोड दें जिससे पानी वहजावे, और ठंडी औषधें मलें ॥

पित्ती .ददोडे होते हैं, लाल और चपटे छोटे हों या बडे

और बहुधा अचानक होजाते हैं, खुजली और बेचैनी होतीहै जो उससे पानी बहैतो दुलुम कहते हैं मवाद इसका बहुत करके रुधिर या कफ होता है और लक्षण हर एक के पाये जावेंगे रुधिर में फस्द खोलें और कब्ज दूरकरें और सिरका गुलाव और रोगनगुल मलें और कफ में मवाद को निकालें ॥

मासरा—यह सूजन पित्त और रुधिर से मुंह पर होतीहै इस में मुंहलाल और पीडा और तपक होती है और सिर कान नाक, गाल और माथा ये सब सूजजाते हैं इसमें बहुत सा रुधिर निकालें फिर मिजाजको नरमकरें और उस समय गले और छातीपर ठंडी औषधें लगावें कि मवाद मुंहसे उतरकर छातीं पर न गिरे और ३० दाने उन्नाव के पानी में औटाकर सिर्कंजवीन मिलाकर पिलाना अति लाभदायकहै ।

ताऊन—सूजन है जो बहुधा ववाके दिनों में होतीहै इस में जलन बराबर रहती है और रंग इसका लाल या पीला या नीला या हरा या काला होजाता है इन रंगों में हर दूसरा रंग पहिले से बुरा होताहै इस में दिल और भेजेको ठण्ढ और जोर अधिक पहुंचावें और सूजन के आस पास ठंडी औषधें लगावें और उस पर गहरे पछने लगावें और गरम पानी से धोडालें कि रुधिर भली भांत वह जावे और जो रुधिर की अधिकता होतो फस्द भी खोलें परंतु पहिले सूजन पर पछने लगावें ॥

औराम मगाविन यह वह सूजन है जो बगल में या कान के पीछे या चड्ढों में उत्पन्न हो विना विष के और जो किसी और जगहके घावके या गुठली के कारण से होतो केवल जिदवार घिसकर लगावे मवाद निकालने की आवश्यकता नहीं और जो शरीर के बडे बडे स्थानों के मवाद दूर होने से होतो ढीला करने वाली औषधें लगावें और ठंडी औषधें जो

मवाद को इधर गिरने से रोके न लगावें और मवाद को पका कर चीरनेका उपाय करें ॥
आकिला ..मवाद इसका मांस में चारों ओर जल्दी २ फैलता है और सवेरे से सांझ तक अमलतास के बीज के बराबर हो जाता है, इस में दाग दें, और गिले अर्मनी सिरके में पीस कर आस पास लगावे ओर बदन से मवाद भली भांत निकालें और घाव को सिरके और पानी से धोवे जो इस से लाभ न होतो दाग दें, इस प्रकार से कि तैल ध.ड कडा कर आकिले के आस पास आटे से घेरा बना कर वह तेल उस के बीच में छोड दे कि जितनी जगह झुलस जावें ॥
दुम्मल . इस सूजन को सब जानते हैं. इस में रुधिर को फस्द आदि से निकालें और मवादों को जुल्लावों से निकालें और सिकंजबीन पिलावें और आदि से तीन दिन तक ठंढी औषधें लगावें, और चौथे दिन अस्पगोल अंडेकी सफेदी में मिलाकर लेप करें, और जब पकने पर होतो पकाकर चीरें और पीव आदि से साफ करें, घाव के भरने का उपाय करें पकाने वाली औषधें यह हैं, इंजीर इलक कूट कर मलें. गेहूं का आटा गूंध कर थोडा सा नमक और अलसी का तेल और शहद मिलाकर सूजन पर बांधें ॥
फोडने वाली औषधें यह हैं खट्टी खमीर कनौचे के बीज कबूतर की बीट बिना बुझा चूना अंडेकी जर्दी शहद में मिला कर लेप करें और नश्तर से चीर देना सब से उत्तम है ॥
दुबैला, यह सूजन दुम्मल से बडी बिना पीडा के शरीर के ऊपर या भीतर होती है इस का मवाद भी कई रंगका होता है, जैसे काली मिट्टी और ठीकरी और नाखून हरताल और चूने कासा, पहिले मवाद को निकालें, और भोजन थोडा दें

और मरहम दाखलियून लगावें जब मवाद पकजावै तो चीर दें, चाहिये कि मवाद को कई वार करके निकालें क्योंकिएक वारगी निकालने से इसमें मूर्च्छा आजाती है और जब सब मवाद निकल चुकै तो पुरानी रुई घाव में भरदें कि सारीपीप कोचूसले फिर घावके भरनेका उपायकरेंजोदुर्वका भीतरहोता है उसका वर्णन अपनी२ जगह लिखचुकेहैं जब तक सूजनभ-ली भांति न पकले उसे चीरें नहीं और चीरनेका स्थान उभरी हुई जगह है जो पिलपिली हो और चाहिये कि छेवे को नीचेकी ओर झुका रक्खें जिससे मवाद रेलेसे निकलजावै ॥

ऊजीमा, सूजन है सफेद विना गरमी और पीडा के इसमें मिजाज को ठीक करै, और कफका मवाद निकाले, और नतरून की खारगें जो अंगूर के पेड की राख से बनाऽगईहो और थोडे सिरके में मिलाकर लेप करे, और एलुआ सिरके और गुलाब में घोलकर लगाना लाभदायक है ।

नफखा . .वाय की सूजन को कहते हैं वह हलकी और उं-गली से दवाने के पीछें फिर वैसाही होजाती है, जैसे मश्कमें हवा भरी हो, वाय उत्पन्न करने वाली वस्तुओं से वचें और वायकी तोडने वाली वस्तु खावें और बाजरे के आटेसे सेंकें और नमक और अंगूर की राख और गौ का गोवर और फिटकरी और एलुआ सवको पीसकर सिरके में मिलाकरलेप करें ।

सलआ... सूजन है मोटी विना कडेपन के कि नीचे खालके हिलाने से हिलती है अपनी जगह पराइसमें कफका मवादनि कालें और मरहम दाखलियून नित्यलगाते रहैं ।

और जो इससे लाभ नहोतो वह औषधें लगावै, जो गला सडाकर फोडदें या नश्तर से चीरकर भीतर से सावधानी के साथ उस गुठल को निकाल डालें ।

गद्दूद और 'गांठ, शरीर के ऊपर होतीहै इस में औरसल्ल आमें यह अन्तरहै कि यह बड़े नहीं होतेऔर कड़े होतेहैंऔर जो मवाद अधिक होतो एकके पास दूसरा भी निकलआताहै इसमें मरहम दाखलीयून लगावें और भारी टुकड़ा सीसे का उसपर बांधे ।

फूजिशला .उस सूजन को कहते है जो गदूद के स्थानों में उत्पन्न हो परंतु यह ताऊन की प्रकार से नहीं है, उपायउस का वही है जो औराम मगाविनका है ।

खनाजीर .बुरी सूजन है और सल्अे की प्रकार उभरी हुई होती है और बहुधा नरम मांससे उत्पन्न होती है, बहुत करके गर्दन और बगलमें।बलगम को निकाले, और दाखिली यून लगावै, और मवाद निकालनेके लिये हब्बे खीजगनऔर हब्बे घासली और इतरीफल गुददी सबसे उत्तम है ।

सुकैरूस कड़ी सूजन को कहते हैं, बहुधा बादी के मवाद से होता है, वादी को निकाले और दाखलीयून लगावें और कभी कफ या कफ और वादी से मिल कर होता परंतु इसमें कड़ापन कम होता है, मवाद के अनुसार उसे निकाले, यह सूजन दो प्रकार की होती है एकमें पीड़ा होती है औरदूसरी नहीं होती. पहिली प्रकार का उपाय हो सकताहै और दुसरी का नहीं ।

सरतान ...यह सौदा की सूजन है, अधिक कड़ी काला पन लिये हुऐ बुरे रंग की और बीच में मोटी और भीतरको बैठी हुई और उसके किनारे काल और हरी रगें होती हैं, सब मिलाकर केकड़े कासा होजाता है ।

इस में हौले हौले कई वार करके सौदा का मवाद निकालें और जिगर के मिजाज को ठीक करें आदि में ऐसी ठंडी

औषधैं लगावैं जो मवाद को इधर गिरने से रोकैं जबतक कि पीप पडे. इस के पीछे घाव भरने वाली और ठंडक डालने वाली और पढने रोकने वाली औषधों का लेप करें, जैसे कलई का सफेदा धोयाहुआ तूतिया आदि तेल में मिलाकर लगावै

नहरुआ. एक दाना होताहै. उसमें छेद हो जाता है. जिस में एक वस्तु रग की सी निकलती है लाल और काला पन लिये हुए और बढतेर एक एक बालिश्त या उस से भी अधिक होजाती है और कभी खालके नीचे कीडे की तरह रेंगा करती है। आदिमें फस्द खोलें फिर जोकें लगावै. और बादी का मवाद निकालें तरी पहुंचाने के साथ। एलुआ हरे धानिये और हरी कासनी के पानी में पीस कर लगावें, एलुआ इस रोग में बहुत लाभकारक है, चाहिये पहिले दिन १॥ माशे एलुआ हरी कासनी के पानी में रात को भिगो दें और सवेरे अकेला या कंद के साथ मिलाकर पिलावें और दूसरे दिन ३॥ माशे एलुआ लें. और तीसरे दिन ५। माशे। और जब नहरुआ बाहर निकलने लगेतौ सीसेके टुकडेतर लपेटे कि बोझसे बाहर को निकलता आवै. और आस पास सूजनके रोगन मलें, और गरम पानी फुंकने में भरकर सेकें और ध्य न रक्खें कि नहरुआ टूटने न पावे, और जो टूट भी जावे तौ लम्बाई में चीर दें, कि सारा दवाद निकल जावे, फिर घाव को भरदें, कमीले की माजून इस रोग को नहीं होनेदेती।

जुजाम इस में शरीर का रूप बिगड जाता है और नाक चपटी हो जाती है और आवाज बैठ जाती है. और मुंह फूल कर शेर का सा हो जाता है. इस में फस्द और जुल्लावों से शरीर का मवाद निकालें और नित्य गमप पानी से न्हावें और खाने पीने और नाक में डालने और शरीर पर मलने

सेतरी पहुचावें और बकरीकादूध अकेलायाउसमें रोटी भिगो कर खाना अति लाभ कारक है और जो वस्तु सौदा उत्पन्न करें उस से बचें, और इस के उपाय से घवरावेंनहीं यहंदर में अच्छा होता है।

साफा .घाव को कहते हैं, जो सिर और मुंह पर होते हैं जो तरी के साथ होतो फस्द खोलें, और हरड और शाहतरे को औटाकर पिलावें इस से मवाद निकलेगा और रुधिर को ठीक करें और हलदी अनार के छिलके मुरदासंग, और मेंह दी पीसकर सिरका और रोगन गुल मिला कर लेप करेंऔर और जो सूखा हो और सफेद छिलके खाल पर से उतरें तो तरी पहुंचावें एक प्रकार इसकी ऐसी है, जिस में शहद कासा मवाद निकलता है और एक में दाने पडते हैं जिनकी नोंकें सुई कीसो होती हैं और दूसरी ऐसी है जिसमें कडा दुम्बल हो जाता है और पीब नहीं पडती और एक अंजीर कासाहो ताहै और एक में हजामत वनवाने से सिरकी खाल लाल हो जाती है इन सब प्रकारों में मवाद को निकालें और मिजाज को ठीक करें।

खुजली जो सूखी होतो तर वस्तु लगावें फिर कई वार कर के मवाद निकालें और गरम पानी से स्नान करके रोगनगुल और सिरका मिलाकर मलें और जो तर हो और पीला पानी उस में से वहै तो पहिले फस्द खोलें और जो मवाद अधिक हो उसका जुल्लाव दें और गरम दवा कभी न लगावें

हिका ..उस खुजली को कहते हैं जिस में दाने न पडें इस का उपाय भी वही है जो ऊपर लिखा गया है. और जो खु जली मूत्र स्थान और गुदा में हो उस में मेथी और

अलसी के बीज शहद के साथ औटा कर कपडा उस में भि· गो कर शाफा बनाकर रक्खें ॥

खुजली—और (पित्ती) जो बच्चों को होती है, उस में पछने या जोंकें लगावें गुलाब के फूल और बनफशा और नीलोफर और छिके हुए जो औटा के शरीर को धोवें और ऊपर से रोगन मलें और दूध पिलाने वाली अर्थात् बच्चे की मा को औषधि पिलावें ॥

हसफ–छोटे छोटे लाल दाने शरीर पर निकलते हैं उन में खुजली अधिक होती है फस्द और जुल्लाव से पित्त का मवाद निकालें, और नमक और मंहदी सिरके में पिलाकर मलें

दाद–खुरखुराहट फैली हुई खुजली के साथ होती है आदि में जब कि मांस के भीतर तक न होतो रसौत सिरके में घोल कर या हरड सिरके में पीस कर मलें. और जो कुछ मांसके भीतर पहुंच चुका होतो उस जगह पर जोंकें लगावें और उ· शक या मुर सिरके में पीस कर ऊपर से मलें. और जो भली भांति मांस के भीतर बैठ गया हो और खाल मोटी पड गई होतो पहिले फस्द और सौदा के जुल्लाव से मवाद को निका लें और गरम पानी से स्नान करें, फिर उस जगह का रुधिर निकालें. और तीव्र औषधें जैसे हरताल, उशक और राई, गूगल, और फिटकरी गेहूं के तेल में और सिरके में मिलाकर लगावें जब दाद जाता रहे तो ठंडी औषधें कई दिन तक लगावें, कि फिर न होने पावे. और बच्चों के दाद में बासी थूक लगावें और जब दाद औषध से अच्छा नहो और संभव होतो चीर दें. फिर तीव्र औषधें लगावें कि बुरा मांस गल जावे फिर वह औषधें लगावें जो घाव को भरें ॥

मुहासे-सफेद फुंसियां होती हैं नाक और माथे पर निक-

लती हैं इन में शरीर से कफ का मवाद निकालें और अंगूर की राख सिरके में मिलाकर लेप लगावें ।

वनातुल लैल--छोटी२ फुन्सियां रात को ठंडके समय निकलतीहैं और उनमें खुजली भी होती है फस्द और जुल्लाव से मवाद को निकालें और गरम पानी से स्नान करने और मल के शरीर के छिद्र खोलें जैसा कि खुजली में लिखा गया है और कर्फस के पानी में सिरके की तलछट मिलाकर मलना लाभकारक है ॥

मस्से अधिक कडी फुंसियां कई प्रकार की होती हैं पहिले मवाद को निकालै और नमक और सिरका मलै और रोगन गुल से चिकना रक्खें ॥

वलखीया इन फुंसियों में से फूट के पानी बहता है और ऊपर खुरंड जमजाता है और इनके साथ बहुधा दिल घबरावा है और मूर्च्छा आतीहै पहिले मवाद निकालै और गिले अर्मनी सिरके में पीसकर नित्यलगाया करै जब तक घाव सूख के नया मांस न जमे ॥

वतम . यह काली फुन्सियां होती हैं, जो पिंडली पर निकलती हैं इन में से काला पानी बहता है पहिले फस्द वाम्लीक खोलै और कईवार उलटी करावै फिर जोकों या पछनों से उस जगह का रुधिर निकाले और जली हुई मेंहदी मामीरा पीसकर सिरके और रोगन जैतमें मिलाकरलगाया करै

तौसा --फुंसी है घाव वाली कि मांसके भीतर शहतूतकी सी होती है, मवाद निकालकर मरहम जंगार लगावै कि बुरा मांस गलजावै फिर भरने वाले मरहम लगावै ॥

दाखस-'गरम सूजन है, जो नखूनों की जड में होती है,

इस में पीडा तपक और खिचाव अधिक होता है और कभी ज्वर भी आजाता है फस्द और जुल्लाव के पीछे मिजाज को ठीक करें और आदि में अस्पगोल सिरके में घोलकर वर्फ में ठंडा करके लगावें और जो पीडा अधिक होतो खुरासानी अजवायन और अफीम सिरके में पीसकर लगावें और जो इस से लाभ नहो तो रोगन जैत गरम करके उंगली उस में रक्खें कि मवाद पचजावै और जो इस से भी लाभ नहो तो अलसी और कलोंचि के बीज मलें और जब सूजन पकजावैतो चीरदें जब पीव साफ होजावै तो भरलाने का उपाय करें ॥

अबूरसमा ..चोट लगने या कुचल जाने से खाल के नीचे रग फटजातीहै रुधिर और वात उसकी खालके नीचे अटककर रहजाती है लक्षण उसका यह है कि रगके खुलने पर सूजन दब जावेगी और बंद होने पर उभर आवैगी क्योंकि खुलनेमें रुधिर रग के अन्दर खिंचजावैगा और बन्द होने में फिर बाहर निकलेगा और उतनी खालका रंग बैंगनी और नीला-हट लियेहोगाकब्ज करनेवालीऔषधें लगावें. जैसे शाहबुलूत और माजू आदि और जो औषधें रुधिरको हिलावें उनसे बचते रहें

कई प्रकार की फुसियां और दाने होते हैं एक यह कि छोटे२ दाने जिनकी जडें सफेद और कडी हों और देर मे पकें और सिरोंसे उन के थोडी२पीव वहे तो उनको जातुलअस्लकहतेहैं (२)वह कि कडी हों और मुंहपर निकलें और आस पाससे लाल हों उनको शैलम कहते हैं (३)वह जो कनपटीपर कान की जड में होती हैं और उनके चीरने से गाढा रुधिर निकलताहै (४) जो सिर और गरदन के नीचे निकलतीहै वह बहुत सी निकलती हैं और पीडाउन में अधिक होतीहै(५)जोछोटीऔर कडी और पीडा रहित हों और देर तक रहें और एक जगह

से जाकर दूसरी जगह निकल आवे, इन सबमें मवाद के अनुसार मवादको निकाले और लेप लगा औरसिर तथा गर्दन की फुन्सियों में रोगन बनफशा स्त्री के दूध में मिलाकर नाक में टपकावे और सिर पर मले ॥

आंवला फरंग यह रंग बरंग के दाने होते हैं जिस मवाद की अधिकता हो उसी को निकालें ॥

खाल के रोगों का वर्णन

सफेद दाग यह गाढी सफेदी होती है. जो खालपर होती है और सम्पूर्ण शरीर पर भी होजाती है ॥

छीप हलकी सफेदी खाल पर होती है अंतर इन दोनों में यह है कि पहिली में चमक होती है और दिन प्रति दिन खालके भीतर फैलती जाती है और सुई चुभानेसेरुधिरनहींनिकलता और छीप बहुधा गोल होती है और अचानक उत्पन्न होजाती है और सुई से रुधिर निकलता है ॥

काली छीप—और दाद में खाल उधडती है परन्तु छीप की पतली होती है और दाग की मोटी जैसे मछली के छिलके सफेद छीप और दाग में कफका मवाद निकालें. और काले में सौदा काफिर तुरमुस और मूली के बीज सिरके में पीसकर सफेद छीप में लगावें और काली छीप और दाग में काली कुटकी सिरके में पीस कर लगावें ॥

सफेद दाग अर्थात् कोढ में काले सांप का रुधिर लगाना लाभकारक है ॥

झाईं .जो मुंहपर पडती है इस में और काली छीप में यह भेद है कि छीप खदडी होती है और यह साफ होती है ॥

नमश . मुंह पर और शरीर पर लाल बूंदें होजाती हैं ॥

वरश—वैसीही काली बूंदें हैं, इनमें रेवंदचीनी शहद में पीसकर लेप करें, और पीला हरताल हरे धनिये के पानी में पीसकर लगावें, जो इससे भी लाभ न हो तो सब शरीर का मवाद निकालें, फिर लेप लगावें और औषधि लगानेसे पहिले उस स्थान को गरम पानी से सेकें. और औषधि भी गरम करके ही लगावें ॥

तिल .. काले और नीले होते हैं. इन का वह उपाय है जो झांई का है चोट पडने या दबने से रग फटकर खाल के नीचे रुधिर ठंडा होके नीला होजाता है जब पीडा जाती रहै तो करफ्स के पत्तों या पोदीने का लेपकरें ॥

नीलागोदा ..जो स्त्रियोंके होताहै उसके मिटाने का उपाय यह है कि नैतरून और गरम पानी से उस जगह को मलें, और फिर इलकुलवतम शहद में पीसकर कई बार लगावें जो इससे न मिटै तो अस्ल बलादर लगाकर सुई की नोंक कोंचें कि घाव पडकर नीलाहट बहजावै ॥

बादशनाम ...इस में हाथ, पांव और मुंह परसुर्खी पडजाती है विशेष करके ठण्ड मे इसमें फस्द खोलें और हरडको औटाकर जुल्लाब दें और जो घाव हो तौ लाल मरहम लगावें और उसी जगह का रुधिर निकालें और साबन लगावें जब वह सूखजा है तौ गरम पानी से धोकर फिरलगावें और इसी प्रकार से कईबार करें ॥

धूपमें फिरने या निर्वलता या गर्म औषधें खाने या किसी मवाद की अधिकता से शरीर का रंग बदलजावै तो उस कारण को रोकें और मवाद निकालें. और बाकले के आटे से मुंहधोडालें ॥

सिर से भूसी झडै तो रोगन मलें और चुकन्दर के पानी में नमक डालके सिर धोवें जो इमसे लाभ न हो तौ कफ और रुधिर और वादी का मवाद निकालें।

हाथ पांव आदि जो हवाकी गरमी या ठंढ से फटें तौ मोम रोगनमलें औरजो भीतरके बिगाडसे फटजांयतौ तरऔषधेंका म में लावें जैसे दूध आदि और मवाद को निकालें जो खाल कडी होजावै या उतर ने लगै तौ मवाद को निकालें औरतर रोगन मलें जो खाल छिलजावै तौ मुर्दामंग गुलाब में घिस कर मलें जो सूजन का डर होतौ फस्द खोलें और कपडा पा नी में भिगोकर रक्खें परन्तु जो पट्ठे के किनारे पर हो तौ भीगा कपडा न रक्खें॥

बालों के रोगों का वर्णन।

कभी वाल झडजातेहैं और खालनहीं उतरती और कभीदो- नों वातें होती हैं यह खाल का विगाड है इसमें मवादको नि- कालें जो विना विगाड के वाल झडें और टूटें तौ कारण के अनुसार उपाय करें।

जो सिरके वाल झडके खाल नरम होजावें तौ जल्दी जल्दी सिर मुडायाकरें आसऔर आंवलेका तेल नित्य सिरपरमला करें जो चंदिया के वाल उतर आवें तौ उसकाभीयही उपाय है परंतु जो बुढापे से होतौ अच्छा कदापि नहीं हो सकता है जो वाल खुश्कीसे फटने लगें तौ तर औषधें और रोगनलगा वें जो सिरकी खाल चिकनी हो जावै तौ इतरीफलोंसे मवाद को निकालें।

जो बुढापे से पाहिले वाल सफेद हो जावें तौ सवेरे नित्य एक हरड का मुरब्बा खावें और महीने में सात दिनतकइत- रीफलसगीर खाया करें और दो महीने पीछे कफका जुल्लाा

व लियाकरें, और खट्टी वस्तुओं और फस्द और विषय की अधिकता से बचें ।

जो चाहें कि बाल काले रहें तौ आद्न और आस का तेल मला करें और बालों को लम्बा करने के लिये आंवले को पानी में भिगोकर आस और गुलाब के फूल छान कर उस पानीमें मिलाकर सिरधोवें बालोंको उत्पन्न करनेकेलियेपुराना रोगन जैत लेकर उसमें कैसूम की राख और समन्दर फैन मिलाकर मलें और जो उपाय बाल झडने का है वही करें और बालोंको उतारना चाहें तौ चूना और हरताल लगावें इस को नूरा कहते हैं परंतु पेडू के बाल उस्तरेसे मूंडना अच्छा है, इस से विषय की चाहना अधिक होतीहै और वहां नूरा लगाने से हानि है और जो चाहें कि बाल न निकलें तौ वनज और अफीम और शूकरान सिरकेमें पीसकरमलें और माजू और कछुये का रुधिर और चेंटी के अंडे मलना भी यही लाभ देता है, और घूंघर वाले और घने बाल होने के लिये बेरी के पत्ते और माजू और मेथी के बीज पानी में डालकर उस पानी से सिर को धोवें और बालों को पतला करने के लिये हल्दी की राख नूरे में मिलाकर गोली बनावें सूखे बालों पर दिन भरमें कई वार सूखी गोली फेरा करें परंतु एक जगह पर न ठहरावें नहींतौ बाल झड जावेंगे बालों के सीधा करने के लिये कि उलझें नहीं तेल को पानीमेंमिलाकर गुनगुना मलें ।

खिजाब के लिये मुर्दासंग बुझा हुआ चूना और मुलतानी मिट्टी तीनों बराबर लेकर पानी में पीसकर बालों पर लगावें और अरंड का पत्ता ऊपर बांधें पहर भर पीछे खोल कर पानीसे धोडालें और लगाने से पहिले भी धोलें कि मैलनरहै

और न कोई रोगन सिवाय रोगनगुलके लगावें औरबालोंको लाल पीलापन लिये हुए करने के लिये महंदी शराब की तलछट और रातीनज मिलाकर पानीमें पीसे. और फिटकरी और हरताल मिलाकर मलें।

और वालों के लाल करने के लिये मोथा और कुंदुश को औटाकर धोवें बनूमाश को पीसकर सिरके में मिलाकर लगाना वालों को सफेद करता है।

नाखूनों के रोगों का वर्णन।

नाखून सफैद होजावें तौ मेथी अलसी के बीज कूटकर शहद में मिलाकर लेपकरै और जो इससे लाभ न होतोमवाद निकाले। जो पीले पडजावें तौ जरजीर के बीज सिरके में पीसकर लगावे और पित्तका मवाद निकाले जो उन में पीडाहो तौ आसके पत्ते और सर्रूके पत्ते कूटके मले जो नाखूनों की जडें मोटी और कुरूप होजावें तौ वादी का मवाद निकाले, और मरहम दाखलियून और मोमरोगन लगावे।

जो नाखून फटैं तौ हरीतकी पहुंचाना चाहिये और वादीका मवाद निकाले और वतखकी और मुर्गकी चरवी मेथीकेलुआव में मिलाकर मले॥

जो नाखून कफ के कारण ढीले होकर गिरते हों तौ पीडा न होगी कफ का मवाद निकाले और जो रुधिर की तेजी सेहो तौ फस्द साफिन खोले और पिंडली पर पछने लगावे जो हाथ के नाखूनों में हो तौ फस्द वासलीक और जो पांव के नाखूनों में होतो शरवत उन्नाव पिलावे॥

जो नाखूनों में खुजली होतो नदी के पानी से धोकर और इंजीर कूटकर लगावै जो नाखून कुचल जावै तौ आदिमेंआस

और अनारके पत्ते कूटकर बांधे फिर गेंहूका आटा जैतूके तेल में मिलाकर बांधे जो नाखून अभ्रककी प्रकार सफैद और चमकीले और भुर भुरे होजावें तौ माउल उसूल और गुलकंद और सिकंजवीन रोगन बादाम में मिलाकरदें जब मवाद पक चुके तौ इफ्तीमून औटाकर पिलावें और बकरी की पीठ का मैल चर्बी और बादाम मिलाकर लगावें ॥

नाखून पर चोट लगने से रुधिर नीचे जमजावै तौ जिफ्त लगावै, और जरजीर के बीज के सिरके में पीसकर मलें और दिन में कई बार मुंह में उंगली डाल कर चूसे यह अति लाभदायक है ॥

जो नाखून को उखेडना होतो हरताल और जावशीर कडुये बादाम के तेल में मिलाकर मलें, और जो पहिले मरहम दाखलीयून लगावै तौ शीघ्र लाभकरैगा ॥

अलग अलग रोगों का वर्णन

जूंये और लीखें और धक चाहै सिर में या कहीं और जगह पड़ें तौ खारी पानी से स्नान करें और जल्दी जल्दी उजले कपडे बदला करें, और गोह की बीट और नौशादर सिरके में घोलकर मलें, जो अधिक खाने से पसीना बहुत आवें तौ भूखा रक्खें, और कमजोरी से हो तो पुष्ट करें और माजू पीसकर मलें और आसके पत्ते जलाकर धूनी लें और ऐसे भोजन खिलावें जिन से गाढा रुधिर उत्पन्न हो और पसीना रुक जावै, और नंगा रहना और हलके कपडे पहनना, और हवा में बैठना, और पसीने का न पोछना लाभकारक है ।

और यह रोगन पसीना को रोकता है और दिलको पुष्टकरता है और मूर्च्छा को लाभ कारक है सेव और बिही का

पानी और गुलाब. रोगन गुल में मिलाकर आग पर जलावै कि रोगन रहजावें. फिर इसको लगावै ॥

बुहरान के दिन जो पसीना विशेष निकले तौ उसे बन्द न करें जब तक कि मूर्च्छा और निर्वलता का डर नहो जो पसीने में रुधिर निकले तौ फस्द खोलें और जुल्लाब दें और वह औषधें पिलावें जो रुधिर की गरमी को बुझाती है फिर ऐसी औषधें शरीर पर मलें जो उसके छिद्रों को वंद करे, जैसे अनार के छिलके और आस के पत्ते या इन के पानी से स्नान करें ॥

अधिक दुवला पन और मुटापा भी एक रोग है, मोटा करने का उपाय यह है कि पाहिले उस के कारण को दूर करे फिर वह वे भोजन और औषधें समय के अनुसार दे जो शरीर को ताजा करें, और यह औषधि अति लाभकारक है तौदरी सफेद, तौदरी लाल. खशखाश, सफेद बादाम, हब्बसनोवर, हब्ब सवना, फिन्दक, हब्बतुलखिजरा सब को बराबर लेकर कूट छान कर गाय के घी मे चिकना करके हलुआ बनावै और सवेरे और सांझ को जितना उचित हो खिलावैं और भोजन ऐसा दे जो अच्छा और गाढा और तर रुधिर उत्पन्न करे और दुवला करने का उपाय यह है कि जुल्लाब दे और मूत्र लाने वाली औषधें पिलावे और भोजन और पानी थोडा दे और सोये और कूट का तेल मलै और इतरीफल और कमूनी खिलावै, और कडी जगह पर सुलावै, और यह औषधि शरीर को दुवला करती हैं धोई हुई लाख ३॥ माशे सिरके में पीस कर नहार मुंह खिलावै ॥

सिर और माथे की खाल खिंचने में बनफशा या कद्दू और

काहू का तेल, और स्त्री का दूध मले, और भेजे का मवाद निकाले, और जो जन्म से होतो अच्छा नहीं हो सकता जो सिर बडा हो जावै तौ चमडे की टोपी बनाकर पहनावे, जो बहुत तंग हो, और पांव और पिंडालियां मले और भोजन थोडा दे ॥

जो सर्दी के समय उंगलियां फूलें और खुजलावेंतो खारी पानी या चुकन्दर के औटे हुए पानी से धोवें जो ठुड्ढी घायल और लाल होजावै तो आदि में बैठने और चित्त लेटने से रोकें और रसौत गिलेअर्मनी, अकाकिया और गुलनार आदि लगावें और घावोंपर सफेदेका मरहमलगावें जो शरीर से दुर्गंधि आती हो तो मवाद निकालें. मुरदासंग घिसकर लगावें और नौशदारू खिलावै ॥ जो ठंड से हाथ पांव काले और बिगड जावें तो सूजन होनेसे पहिले रोगन जैत या कोई और गरम रोगन मलें और जब सूजन होतो आदि में नाखूना और मेथी, अलसी आदि को औटा के हाथ पांव उसमें रक्खें और जब उससे निकालें तो रोगन गुलमलें और पिसी हुई मसूरको औटाके लगावें, और जब कालक आजावे तौगहरेपछनेलगावें और गरम पानी में रक्खें और रुधिर को बहने दें, कि आप बंद होजावे तो गिलै अरमनी पानी और शहद और सिरके में पीसकर लगावें, और थोडी देर पीछे पानी और सिर के से कोई बार धोवें ॥

जो आगसे जल जावै और फफोला न पडा होतो कपडा बरफ पर ठण्डा करके जली हुई जगह पर रक्खें, और हर घडी बदलें, और गिले अरमनी पानी और सिरके में मलके और मसूर उसमें पकाके लेप करें. और काजल गोंद में घोट कर लगाना. और अंडेकी सफेदी लगाना और दही और

दूध मलना लाभकारक है, और जब छाला पडे तो फस्द खोलें और सफेदे और चूने का मरहम लगावें ॥

जलते हुए तेल से जल जाने में वही उपाय करें जो आग से जल जाने का है. परंतु अंडे की सफेदी तेल में घोलकर सफेदा मिलाकर लगाना अति लाभ कारक है, खोलते हुए पानी से जल जाने में जौ की राख अंडे की जर्दी मिलाकर लगावें बिजली से जल जाने का उपाय वही है जो आग का है धूप से जलने में काफूर और सिरके का मरहम मलें, भिलावे के चेप लगने से जलन हो तो पछने लगावें, जो पान खाने से चूने के कारण जीभ फट जावे तो लुआब अस्पगोल आदि से कुल्ली करें और बादाम और जायफल का तेल मलें और खोपरा चबावें ॥

घाव का वर्णन

मांस के फटने को घाव कहते हैं, जब उसमें पीप पडे तो उसका नाम कुरहा है, उसकी प्रकारें बहुत हैं. उनका वर्णन तिब्ब अकबर आदि बडी पुस्तकों में देखें यह जर्राही से संबन्ध रखता है, परंतु थोडासा जानलेना चाहिये दिल को घाव की सहार नहीं उससे मनुष्य तुरंत मरजाता है. और भेजा भी नहीं सहार सकता, लक्षण उसके घाव का बुद्धि का बिगड जाना है, और गुर्दे और मसाने और आंत का घाव भी ऐसाही जानों, और पहचान मसाने के घावकी यह है कि मूत्र उसी में से निकलेगा. और जो आंतमें हो तो पैखाना निकलेगा, जिगर का घाव भी बुरा है. परंतु अच्छा हो सकता है. और पट्ठे आदि का घाव भी बुरा है उसमें रंग बदलता है और मूर्छा और खिचाव होता है, और रान का घाव आगे

की ओर हो तो बचने की आस कम है तर पेट का घाव जो भली भांति लगा हो भयानक है और उबकाई और हिचकी उसमें बराबर रहती है छाती का घाव भी ऐसाही है उससे हवा निकलती है छाती के परदों का घाव बुरा है उसमें दम रुकता है और मेदे का घाव भी बुरा है पेट का खाना उस में से निकलआता है सिवाय इनके और कहीं घाव हो तो कुछ डर न करे सीधा हो तो टांके लगावै और कोई हड्डी का टुकडा हो उसे निकाल डाले जर्राह बुद्धि मान और दस्तकार चाहिये ॥

जो कोई वस्तु चुभजावै तो पहिले उसे निकालें फिर मुर और कुन्दर घाव पर छिडकें ॥

कुरहका वर्णन

इसकी प्रकारें भी बहुत हैं यह भी जर्राही से संबंधरखता है जो थोडा हो तो आपसे आप अच्छा होजाताहै और जो बहुत हो तो वह मरहम लगावै जो बडी पुस्तकोंमें लिखे गयेहैं और नीमके पत्ते कूटके शहद में मिलाके बांधै और परहेज और मवाद निकालना अति लाभदायक है और नासूर को पहिले गुलाब से जिस में अंगूर की लकडी की राख पडी हो भली भांति धोवे और समुद्र पानी से या साबन के पानी से जिसमें थोडी हरताल और नोशादर मिलाहो उससे धोना अति लाभदा- यक है और फिर पुरानी रुई को गुलाब या माउल असल में भिगो कर उस में इंजरूत, एलुआ, मुर, दम्मुलअखवैन कुन्दुर अफीम केसर पीसके मिलावे और घाव पै रक्खे जब तक अच्छा नहो और जो इस से लाभ नहो तो जहां तक हो सके बुरा मांस काटडाले फिर उस के भरने का उपाय करे ॥

मारने और गिरपडने से चोट लगने का वर्णन

जो सूजन और तप न हो तो गिल अरमनी और अंडे की सफेदी आदि का लेप करें, और जो सूजन और तप हो तो फस्द और पछने लगाकर ऐसी ठंडी औषधें लगावे जो मवाद को इधर गिरने से रोकें और जो शरीर के किसी बडे स्थान पर लगी हो तो उसे पुष्ट करे. और उजले की चोट में पहिले पीडा को दूर करना चाहिये ॥

कोडे की चोट का वर्णन

जो खाल के नीचे मांस टुकडे २ हो गया होतो उसे दबाकर और मलकर इकट्ठा करे. और फिर बकरी की खाल जल्दी से गरम २ उधेड कर बांधें, और जब वह सूख जावे तो उसे खोले, इस उपाय से एक रात दिन में अच्छा होजाता है और जो खाल के नीचे रुधिर सिमट आया होतो रोटीका गूदा और मूली मलें ॥

हड्डी के टूटने उखडने और खिसलने का वर्णन

इसका उपाय कमानगर जानते हैं, और खिसलने में आम के पत्ते कुचलकर बांधें और मुगाप खैरू और अंडे की जर्दी मिलाकर मलें ॥

विषका उपाय

गुनगुना पानी या तिली का तेल या मक्खन बहुतसा पिला कर तुरंत उलटी करावें और जो इससे उलटी भली भांति न हो तो सोयेके बीज और नमक पानी में औटा कर और तिली का तेल बहुत सा मिलादें और उलटी के लिये जो कुछ दें बहुतसा दें. जब भली भांति उलटी हो चुके तो गौका ताजादूध जितना पिया जावे पिलावें और जो यह भी उलटी में निकल जावे तो बहुत अच्छा है और मक्खन और घी पिघला कर

दूधकी जगह दे सकते हैं, और तिरियाक कबीर लाभ कारक हैं और विष खाने वाले को कभी सोने न दें, और जो भूखा हो तो उचित भोजन पेट भर कर खिलाने और जब उस विष का नाम मालूम हो जावे तो वही औषधें दें जो उसे दूर करती हैं जब विष खाने वाले को मूर्छा आजावे और आंखों की पुतलियां फिर जावें या आंखें लाल हों और नाडी बंद हो जावै और जीभ बाहर निकल आवे औ ठंडा पसीना निकलने लगे तो जानो कि अब न बचेगा ॥

विषेले जानवरों के काटने या डंक मारनेका उपाय

इसका उपाय छः प्रकार से हो सकता है, जैसा उचित समझें वैसा करें, पहिले वह औषधें दें कि असली गरमी को उभारें और भीतर के स्थानों को पुष्ट करें और विष को दूर करें, जैसा तिरियाक कबीर, लोबत बरबरी और जिदवार आदि, दूसरे वह औषध दें जो शरीर से तरी को निकालें. उलटी या जुल्लाब से परंतु फस्द न खोलें और जरारा बिच्छू के डंक मारने में या ऐसे सांप के काटने में जिनसे कि शरीर के हर छिद्र से रुधिर निकलने लगता है. फस्द खोल सकतेहैं

तीसरे जहर मुहरा और तिरियाक जो उसी विष के दूर करने को हो दें जैसै घडियाल के काटने में उसी का मांस और सांप के काटने में उसी सांप का मांस खिला देना अति लाभदायक है ॥

चौथे वह औषधें दें जो उस विषैले जानवर के मिजाज से विपरीत हो जैसे हींग बिच्छू के लिये, और इसी प्रकार से जो हो, पांच वें वह उपाय करें, जो मवाद को हिला कर विष को खाल की ओर बहादे, जैसे दवा या दौडने से पसीना निकालना परन्तु इस में डर है ॥

छटे विषको फैलने न दें इस प्रकार से कि जिस जगह कां-
टा या डंक मारा है जो हो सकै तो उस स्थान को तुरंत ही
काट डालें. और दागदें, या ऊपरको हटके कसकर बांधे कि
विष आगे बढने न पावै और ठंढी व सुन्न करने वाली
औषधें लगावें और उस जगह सींगी लगाना और मुंह से
चूसना लाभदायक है. परन्तु चूसने वाले का पेट भारा हो
और रोगन गुल से उसे कुल्ली करादें जो उसे हानि न हो॥

लागिया एक पेड है जिस में से दूध निकलता है उसका
दूध सांप के काटे हुये कोलाभकारक है. और तुरंज के बीज
९ माशे सब जानवरों के विष को लाभ देते हैं और चिनर
का ताजा फल भी अति लाभ कारक है, न्यौले का पेदा
और पेटखूबसाफ करके धनिया लगाकर भूनना और सुखा
कर खिलाना और बकरी की मेंगनी जलाकर खिलाना और
लेप करना और सातर खाना और लेप करना अति लाभ
दायक है और पक्का या कच्चा दूध घी के साथ उस स्थान
पर लगाना भी अच्छा है।

भिड और चेंटी और शहदकी मक्खी के काटने में तीनहतेली
भर धनियां फांके।

बावले कुत्ते के काटे को चालीस दिन तक अच्छा न होनेदे
जो घाव भरने लगेतो ऐसी औषधि लगादे जिस से वह बहे
और सौदा का मवाद निकालने में बहुत लगेरहे इसका विष
वरषों के पीछे जोर करता है और जिस किसी को कुत्ते ने
काटा हो उसके काटने में वही अवगुण होताहै जो कुत्ते
के काटने में होता है चाहिये कि उससे भी बचे कुत्ते का
काटा हुआ पानी से बहुत डरता है और पानी पीना छोड
देता है इसीसे मरजाता है उसे पानी पिलाने का उपाय यह

है कि एक नरकुल बहुत लम्बा लेके एक सिरा उसके मुंहमें डालें और बहुत दूरसे दूसरे सिरेमें पानी छोडें कि वह पानी को देखने न पावै और कहतेहैं कि जब कुत्ता काटे उसीसमय रुधिर उसका लेके थोडा सा पानी में मिलाकर पिलादेंयाछह महीने तक रोज एक माशे मुश्क खिलावें और तीन महीनेतक घाव को बहने दें और जिस कुत्ते ने काटाहो उसीका कलेजा भूनकर खिलाना अति लाभदायक है ।

समाप्तोयं ग्रन्थः ।

परिशिष्ट।

नाडी परीक्षा

दिलकी रगके चलने को नाडी कहते हैं।

वह दिलके खुलने और बन्द होने से चलती हैं खुलने से हवा खिचके भीतर जाती है जिससे रूह हैवानी जो दिलमेंहै आराम पाती है और गरम हवा के दूर करनेके लिये दिलबंद होता है इन दोनों से मनुष्यके शरीर का और उसकेरोगऔर आराम मालूम होतेहैं इस प्रकारसे शरीरका हालजानाजाताहै एक तो यह कितनी खुलती है और कितनी बंद होजाती है इसकी नौ सूरतें हैं क्यों कि नाडी में लम्बाई औरचौडाई और गहराई है और हरएक इनतीन में से या बहुत अधिकहै या कम है या मध्यम है जब उनतीन से इनतीन को गुण करोगे तो नौ होंगे वह नौ यह हैं तवील अर्थात् अधिक लम्बी २ कसीर बहुत कम लम्बी ३ मोतादिल अर्थात् न लम्बी न छोटी उतनी लम्बी जितनी कि चाहिये४अरीज अधिक चौडी ५ जैयक कम चौडी६मोतादिल उतनी चौडी जितनी कि चाहिये७पुशरिफ अधिक उभरी हुई८मुनखफिज दवी हुई९मोत दिल न बहुत उभरी न दबी।

तवील में जितना कि चाहिये वह रोग अधिक मालूम होता है कारण इसका गरमी की अधिकता है (२) कसीर में कम मालूम होता है उस से जितना कि चाहिये कारण इसकागरमी की कमी है (३) मोतादिल में रग उतनी मालूम होती है जितनी कि चाहिये इस में मिजाज की गरमी ठीक२ होती

है (४) अरीजमें उसका चौडान जितना कि चाहिये उस से अधिक होता है इस में तरी की अधिकता होगी ।

(५) जैयक में चौडान कम होता है इस में तरी कम होतीहै
(६) मोतादिल में जितनी चाहिये उतनी चौडाई होगी उसमें तरी ठीक २ होती है (७) मुशरिफ में वह रग अधिक उभरती है यह भी गरमी का कारण है (८) मुनखफिज में हद से कम उभरती है गरमी की कमी होगी ॥

(९) मौतदिल में उतना उभारहोगा जितना कि चाहिये इस में गर्मी भी ठीक २ होगी यह नो प्रकारें एक २ कुतरकी हैं, लम्बाई और चौडा और गहराई को यहांपर कुतर कहते है, जब दो या तीन कुतरों को मिलाओ तो दो प्रकारें सत्ताईस२ की निकलेंगी जैसा कि आगे के दो नकशों में लिखा गया है परंतु दो कुतरों के लेने की रीति जिसको सनाई कहते हैं यह है कि लम्बाई की तीन प्रकारों को चौडाई की तीन प्रकारों के साथ लें तौ नौ होंगी फिर लम्बाई की तीन प्रकारों को गहराई की तीन प्रकारों के साथ लें यह भी नौ होंगी, फिर चौडाई की तीन प्रकारों को गहराई की तीन प्रकारों के साथ लें यह भी नौ होंगी, यह सब मिलकर सत्ताईस हुई ॥

नकशा सनाईका

त. अ,	त. ज.	त. मो.	क. अ.	क. ज.	क. मो.	मो. अ,	मो. ज.	मो. मो.
त. मुश.	त. मुन.	त. मो,	क. मुश.	क. मुन.	क. मो.	मो. मुश.	मो. मुन.	मो. मो.
अ. मुश.	अ. मुन.	अ. मो.	ज. मुश.	ज. मुन.	ज. मो.	मो. मुश.	मो. मुन.	मो. मो.

और तीन कृतर के लेने की रीति जिसको सलासी कहते हैं। यह है कि दो प्रकारों को एकही रक्खें और तीसरी प्रकार बदलती रहै ॥

नकशासलासी

त.	त.	त.	त.	त.	त.	त.	त.	त.
अ.	अ.	अ.	ज.	ज.	ज.	मो.	मो.	मो.
मुश.	मुन.	मो.	मुश.	मुन	मो.	मुश.	मुन.	मो.
क.	क.	क.	क.	क.	क.	क.	क.	क.
अ.	अ.	अ.	ज.	ज.	ज.	मो.	मो.	मो.
मुश.	मुन	मो.	मुश	मुन.	मो.	मुश	मुन.	मो.
मो.	मो.	मो.	मो.	मो.	मो.	मो.	मो.	मो.
अ.	अ.	अ.	ज.	ज.	ज.	मो.	मो.	मो.
मुश.	मुन.	मो.	मुश.	मुन.	मो.	मुश.	मुन.	मो.

प्रगट होकि ऊपर के दोनों नकशों में त. से तवील और अ. से अरीज और क, से कसीर और मो. से मोतदिल और ज. से जयक, मुश से मुशाफिर और मुनसे मुनखफिज जानों।

दूसरी प्रकार जोर और कमजोरी जानना है, वह यह है जो नाड़ी देखनेवाले की उंगलियों के मांस जोर से लगे परतो उस को पुष्ट कहते हैं उस में दिलभी पुष्ट होता है और जो होले से लगे तो वह कमजोर कहलावेगी यह पहिचान दिलकी कम-जोरी की है ॥

और तीसरी मोतदिल है जिससे जोर हैवानी का दिल में ठीक होना पायाजाता है ॥

तीसरी प्रकार नाड़ी की चालका समय देखना है जो वह जल्दी से आवै जावै तो उसे सरी कहते है उसमें हवा के अंदर जानेकी अधिक आवश्यकता होगी और मोतदिल में चालकी-

क २ होगी। चौथी प्रकार नाडी के ठहरने का समय देखना है जो वह उंगलियों पर लगकर तुरन्त अलग होजावेतो उस को मुतवातिर कहते हैं इस में ज़ोर हैवानी कम होगा और जो ठहर के देर में अलग होतो उसे मुतफावुत कहते हैं इसमें वह ज़ोर पुष्ट होगा मोतदिलमें वह दोनों बातें ठीक२ होंगी॥

पांचवीं प्रकार नाडी की नरमी और कडापन देखना है॥ जो अधिक नर्म हो तो लीन कहते है इसमें तरी होगी जो कडी होतो सल्ब कहते हैं इसमें खुश्की होगी मोतदिलमें तरी और खुश्की मध्यम होगी॥

छटी प्रकार गरमी और ठंड देखना है जो अधिक गरम हो तो हार कहते हैं इसमेंगर्मी अधिक होती है और जो ठंडा होतो बारिद कहते हैं इसमें गरमी कम होगी उससे जितनी कि चाहिये मोतदिल में गरमी और ठंड मध्यम होगी॥

सातवीं प्रकार उस वस्तु का जाननाहै जो रग के भीतरहै वह रुधिर और रूह हैं॥ जो नाडी भरी हुई होतो उसे मुमतली कहते हैं यह चिन्ह है मवाद की अधिकता का, और जो खाली होतो उसे खाली कहते हैं इस में जितना चाहिये उससेकम मवाद होता है और मोतदिल में मवाद ठीक २ होता है॥

आठवीं प्रकार नाडी का हाल जानना है हाल नाडी केवही हैं जो ऊपर लिखे गये हैं जो हर नबजा एकसा पाया जावे उन सब हालों में तो उसको मुस्तवी मुमलक कहते हैं इस में शरीर का हाल एकसा होता है और जो सब हाल अलग २ पाये जावें तो उसको मुखतालिफ कहते हैं जो कुछ हाल एकसे हों और कुछ अलगरहों तो उसको मुस्तवी फिलवाज़ और मुख्तालिफ फिलवाज कहते हैं इस में हाल बुरा होगा जोहर नबज के टुकडे सब हालों में एकसे पाये जावें और जो सब नबजें

अलगर हों तो उसे मुस्तवी मुतलक टुकड़ों की राह में कहेंगे और जो अलगर हों तो मुखतलिफ मुतलक टुकड़ों की राहसे कहेंगे यह दोनों बुरे हालके चिन्ह हैं मस्तवी में थोड़ा और मुखतलिफ में अधिक और जो नवज के हर टुकड़े के एक टुकड़े में मुस्तवी और मुखतलिफ देखें अर्थात् जो टुकड़ा नाड़ीका एक उंगली तले हो उसको आदि और अंत और मुखतलिफ मुतलक कहेंगे और इसी प्रकार से मुस्तवी फिलवाज और मुखतलिफ फिलवाज जानों यह भी हाल के बुरा होने और कमजोरी की अधिकता और मवाद के भारी होने का लक्षण है परंतु मस्तवी में थोड़ा और मुखतलिफ में अधिक॥

नवीं प्रकार मुखतलिफ नाड़ी में एक सा होना देखा जावे जो दौरा नवजे का एक प्रकार का अंतर रक्खे तो उसको मुखतलिफ मुंतजम कहते हैं और जो एकसा न रहै तो मुखतलिफ गैरमुंतजम कहते हैं यह बहुत बुरे हाल का लक्षण है

दसवीं प्रकार नाड़ी की तोल देखना है तोल कहते हैं एक वस्तु को दूसरी वस्तु से अंदाजा करने को इस लिये अच्छे पन में जो नाड़ी होती है उसको जैयदुलवजन कहेंगे और जो इससे विपरीत हो उसे रदीउल वज़न कहेंगे इसकी तीन सूरतें हैं पहिली मुजाविजुलवजन वह है कि एक अवस्था वालेकी नाड़ी मिलती हो उसके पास वाली अवस्था की नाड़ीसे जैसे कि लड़के की नाड़ी जवानकी सी या जवान की बुढ्ढे कीसीहो दूसरी मुत्राइदुलवजन वह है कि जो नाड़ी दूरकी अवस्थावाले से मिलती हो जैसे लड़के की नाड़ी बुढ्ढे कीसी हो तीसरी खारिजुलवजन वह है कि किसी अवस्था कीसी नहो जैसे कांपती हुई नाड़ी जो वहुत बुरी है और इससे ऊपर की दोनों

भी बुरी है परंतु इससे कम नाडी रूह और असली गरमीको आराम देती है जब गरमी की अधिकता हो और नाडी में किसी प्रकार का कडापन हो और जोर भी होतो नाडी अजीम होगी अर्थात् तीनों कुतरों पर बढी हुई और जो इस से कुछभी लाभ हो तौ सरी हो जावेगी ओर इस से गर्मी बढे और लाभ न होतो मुतवातिर हो जावेगी और जो नाडी में कडापन होतौ सगीर होगी अर्थात् तीनों कुतरों में घटी हुई और जो नाडी नरम हो परंतु उस में जोर न होतो सरी होगी और जो उससे लाभ न होतो मुतवातिर हो जावेगी और जो कमजोरी बहुत होतो काम जल्दी न कर सकेगी औरसगीर होजावेगी ।

जब मवाद या भोजन के जोर के बोझके नाडी दब जावै और उभर न सके तौ कुछ सगीर होजाती है जैसा कि तप के आदि में वारियों के अन्दर होता है चाहै जोरहो तरी से नाडी नरम होजाती है और खुश्की से कडी परंतु बुहरानों में कुछ कडी पाई जाती है ।

मवाद के बोझ से या कमजोरी की अधिकता से नाडी में भेद पड जाता है और जब कमजोरी बहुत बढजाती है तौ इन्तिजाम नाडी का जाता रहता है उचित वजन भी नहीं होता ।

नाडी की मिली हुई प्रकारें ।

अजीम उस नाडी को कहते हैं जो तीनों कुतरों में बढी हुई हो सगीर वह है जो तीनों कुतरों में घटी हुई हो गलीज वह है जो चौडाई और गहराई में बढी हो और लक्षण है मवाद की अधिकता का, दकीक जो चौडाई और गहराई में घटी हुई हो, यह मवाद से खाली होने का लक्षण है।

जोर का चिन्ह है अब समझना चाहिये कि जो टुकडा नाडी का पहिली उंगली के तले हो उसमें दूसरी उंगली के नीचेका टुकडा वढा हुआ हो और तीसरी उंगली का उससे भी अधिक और चौथी उंगली वाला उस से भी वढा हुआ और इसी प्रकार से हर उंगली के नीचे एक से एक छोटा होता जावेगा इसी तरह और हालों में भी जानों जो प्रकार नाडी की पहिले हाल की और फिरे उसे जनवराजे कहते हैं और जो न फिरे तो दो प्रकार की होतीहै जो छोटा होना उसका उतना हो कि चाल न जान पडे तौ जनव मुनकती और जो जान पडे तौ जनव साबित कहते हैं।

मतरकी जो उंगलियों को लगे और थोडा हटके उंगलियों के नीचे से फिर लगे भली भांति जैसे निहाई पर हथौडा पडता है, कारण इसका जोर और आराम की अधिकता आवश्यकता और नाडी का कडापन है और कभी कमजोरी से भी ऐसा होता है, और कभी किसी और ध्यान लगजाने में भी ऐसा होता है।

जुलफितरा–वह है कि नाडी चलते२ रहजाया करे कारण इसका दिलकी कमजोरी या कोई भारी काम या सोच है।

वाके फिलवस्त ..वह है जो ठहरने की जगह पर चल जाया करे।

इति नाडी परीक्षा समाप्त

मूत्रपरीक्षा ॥

जानना चाहिये कि मूत्र पिया हुआ पानीहै यह पहिले पेटे में भोजन के साथ मिलता है कि उसे पतला कैलूस बनावै, फिर मासारीका में होता हुआ जिगर में पकताहै वहांसे गुरदे में होके मसाने में इकट्ठा होता है और जो कुछ रुधिर से मिलाहुआ जिगरमें रहजाता है वह रगोंकी राहसे सारे शरीर में पहुंचकर कुछ पसीनेमें निकलजाता है और कुछफिर गुरदे में होता हुआ मसाने में गिरता है इसीलिये मूत्र रंगीन होजा ताहै जिसको पसीना बहुत आता है उसे पेशाब कम होताहै। और पसीना कम आने वाले को पेशाब अधिक होता है जब मसाने में इकट्ठा होजाता है तौ पेशाब लगता है इसी लिये सारे शरीर का हाल इससे जाना जाता है यहां से दो बातें मालूम हुई. एक यह कि पेशाब में दो वस्तु हैं. एक पानी दूसरा भारीपन दूसरे पेशाब से जिगर और मसाने का हाल भलीभांति जाना जाता है।

मूत्रके रंग का वर्णन।

असल रंग पांच हैं पीला लाल हरा काला और सफेद औ र सिवाय इनके जो हों वह इन्हीं के साथ हैं।

पीलेरंग की पांच प्रकारें हैं।

तियनी उस पानी कासा रंग होता है जिसमें भूसा भिगो या हो अर्थात् पीला होता है सफेदी लिये हुए यह लक्षण है मिजाज की ठंढ का क्योंकि या तो पानी की अधिकताहोगी

या पित्तों की कमी यह दोनों ठंड से होते हैं परंतु पित्तों के सरसाम में भी मूत्र का रंग ऐसा होजाताहै।

उतरुजी....अर्थात् हलका पीला रंग जैसे तुरन्तके छिलकेका होता है इसमें पीलापन तिबनी से अधिकता होता है यह लक्षण है मिजाज के ठीक होने का और भली भांति पचाव होने का।

अगकर—यह पीला रंग है लाली लिये हुए मिजाजमें गरमी होने का लक्षण है।

नारी—यह रंग वह है जिसमें पीलेपन में लाली अधिक होती है और चमक आगकी सी होती है इसमें अशक से अधिक गरमी होती है।

अहमरनासे ...इसमें नारी से लाली अधिक होती है, और गरमी भी अधिक होगी।

दूसरा रंग लाल है वह चार प्रकार का होता है।

असहव, थोडी लाली हो और सफेदी भारे पतलेरुधिरसे

वरदा गुलाबी रंगको कहते हैं इसमें लाली असहव से अधिक होती है और गाढे रुधिर से पाया जाता है।

कानी ...यह बहुत लाल होता है उस रुधिर से जिस्में गरमी बढी हो।

अकतम ...लालहो कालापन लिये हुए सौदा के गाढे रुधिर की गरमी से यह चारों रुधिर और गरमी की अधिकता के लक्षण हैं एक दूसरे से अधिक और कभी ठंडे रोगों में भी लाल रंग होजाता है जैसे फालिज और लूउलकिनीआमें क्यों कि जिगर की निर्बलता से रुधिर पानी से भली भांति अलग नहीं होसकता और रुधिर पेशाब में मिला आता है तीसरा रंग हरा है, यह भी चार प्रकार काहै १ फिस्दकी

अर्थात् पिसनई रंगयह ठहका चिन्हहै क्यों कि पित्तों और वा
दी के मिलने से होता है परंतु वह वादी जो ठंड-से उत्पन्न हो
कुर्शीने कहा है कि यह रंग पित्तों के जलने का लक्षण है क्यों
कि इसमें पीलेपन की झलक होती है जो ठंडे सौदासे होतातो
कालापन होता ।

२ नीलनजी जैसे नील पानी में घुला हो इसमें फिस्तकी
से भी अधिक ठंड होती है यह दोनों रंग जो बच्चों के मूत्रमें
होंतो फालिज या तशन्नुज होनेका डर है ।

३ जनजारी अर्थात् जंगार का सा, इसका कारण गरमी की
अधिकता और पित्तों का जलना है ।

४ कुर्रासी गन्दने कासा रंग यह भी पित्तों के जलने का
लक्षण है परंतु जंनजारी से कम है । चौथा रंग कालाहै इसके
कई कारण है एक इस प्रकार से जिससे कि पहिले शरीर में
गरम पित्तहों और वह मूत्र के मवाद को जलादे जिससे रंग
उसका काला होजावे परंतु उसमें पीलेपन की झलक होगी
और पहिले से मूत्र में गंध होगी या लाल आवैगा । (२)
कारण जमना है इसी प्रकार से शरीर में ठण्डा मवाद हो जो
मूत्र के मवाद को जमादे और काला कर दे इसमें पहिले से
हरा मूत्र विना गंध के या खट्टी गंध लिये हुए आवैगा ।

तीसरा कारण वादी का मूत्रमें निकलना है यह सौदा की
तप में और बुहरानके दिन आवेगा इससे मवाद के पकने के
लक्षण पाये जावेंगे और पीछे रोग में कमी होगी ।

चौथा कारण किसी रंगीन वस्तु का खानाहै । जैसे काली
शराब आदिजो वह वस्तु जैसीकी तैसी मूत्रमें निकले तोजान
लो कि जिगर का जोर जाता रहा और डरावना है औरजो
अधिक खालेने से होतो कुछ डर नहीं।पांचवां रंग सफेदहै यह

दो प्रकार का होता है एक दूधकासा गाढा यह कफकी अधिकता और मिज़ाज की ठण्ड या हड्डियों और पट्ठों के और चर्बी के पिघलने का लक्षणहै जैसा कि दिक के अन्तमेंहोताहै कारण इसका अधिक गरमी है इसमें चिकनाई सफेदीकेसाथहोगी और शरीर दुबला और प्रति दिन पिघलता जावैगा।

दूसरे पानी कासा रंग यह लक्षण है जिगर के पचाव जाते रहने का ठंडकी अधिकता से या मूत्र के रस्ते में सुद्दा पडने से कि रंगीन वस्तु नहीं निकलती है और निरा पानी निकल आता है।

मूत्र का गाढा और पतला होना।

मोतदिल वह है जो न बहुत गाढा हो न पतला जैसा कि चंगेपन में होता है और लक्षण है पचाव और भली भांति पकने का। गाढा होना लक्षण है न पकने का क्यों कि बिना पचाहुआ फोक मूत्रमें मिलकर उसे गाढा करदेती है औरकभी चिन्ह होता है गाढे मवादके पकनेका पहिचान उसकी यहहैकि पकनेस पहिले मूत्र बहुत गाढाआवेगा और पकने के पीछेकम गाढा आवैगा।

कभी बहुत पानी पीने से मूत्र पतला आता है और कभी मूत्र मार्ग में सुद्दा पडने से भी पतला आताहै पहिचान उसकी यह है कि सुद्दे की जगह बोझ और तनाव पाया जावैगा और कभी मवाद के न पकने से भी पतला हो जाता है, जब कि मवाद ऐसा कच्चा हो कि निकल न सके जैसा कि कफ की तपों में होता है।

मूत्रका साफ और गदला होना।

साफ वह है कि एकसा हो और वार पार उसमेंसे दीखपडे

जैसे पानी चाहे गाढा हो जैसे अंडे की सफेदी । और गदला यह है जिसमें वार पार न दीखपड़े । साफ मूत्र चिन्हहै मवाद के पकने और ठहरने का और गदला होना चिन्ह है मवादके न पकने और आंटने का और कभी जोर जाते रहने से और शरीर के अंदर की सूजन से मूत्र थोडा गदला होजाता है ॥

मूत्र की गंध ।

जब तक कि मूत्रमें जितनी चाहिये उतनीही गंध होतो जानो कि मिजाज ठीक और मवाद पका हुआ है और जब उस से बढजावै तो दो बातें होंगी या तो मवाद अधिक सडा होगा जैसा कि सडी हुई तापों में या मूत्र केस्थानों में खुजली और घाव होगा ऐसा बहुधा मसाने के घाव से होता है क्योंकि वहां मूत्र देरतक ठहरता है और घाव में पीडा पाई जायगी और मूत्र में पीप और छेछड घाव से निकलेंगे और मवादके सडने में यह बातें न होंगी ।

मूत्र या गंध बिलकुल न होना चिन्ह है मवाद के कच्चा होने और जमजाने का और कभी जोर जाते रहने से भी ऐसा हो जब सडा हुआ मवाद न निकल सके तो ऐसी अधिक दुरगंध से रोगी मर जावैगा ॥

मूत्रका कफ ।

कफ उत्पन्न होता है लसदार तरी से जब कि वह बात के साथ मूत्रमें हो और उसके चेपके कारणसे वह फट न सकैतो बात से उसमें फैन उठेंगे और जितना लस उस तरी में अधिक होगा उतनेही फेन अधिक होंगे जो मूत्रमें कफ बहुत हो और देर तक ठहरे तो जानो कि गाढा लसदार मवाद और बात अधिक है ॥

मूत्रकीतलछट

तलछट उसे कहते हैं जो कुछ पतली वस्तु के नीचे ठहरजावै परंतु यहां पर उस गाढी वस्तुका नाम है जो पानी से अलग मालूम हो चाहे नीचे हो या ऊपर या बीच में. जो नीचे हो उसे रसूब रासिब कहते हैं, जो बीचमें हो मुतअल्लिक और जो ऊपर हो उसे गम्माम बोलते हैं ॥

जो तलछट मवाद के पकने का चिन्ह हो उसे रसूब महमूद कहते हैं और इस के विपरीत रसूब रदी है,

रसूब महमूद में कई बातें पाई जाती हैं, एक सफेदी दूसरे चिकना होना तीसरे एकसा होना, चौथे इकट्ठा होना ॥

रसूब महमूद की तीन प्रकारें हैं सब में अच्छी रसूब रासिब फिर मुतअल्लिक फिर गम्माम ॥

वाय से तलछट ऊपर होती है जितनी अधिक वाय मूत्र में होगी उतनी ही तलछट ऊपर पाई जायगी और वायकी अधिकता मवाद को नहीं दूर होने देती ॥

रसूब मजमूम वह है जिसमें रसूब महमूदकी बातें न पाई जावें इसकी भी तीन प्रकारें हैं सब में अच्छी गम्माम फिर मुतअल्लिक फिर रासिब जब कि ऊपर ठहरना तलछट का गरमीसे हो रसूबररदी, यातो तरी से उत्पन्न होती है या शरीर से, शरीर की रसूब जो असल स्थानों से हो उसे खरराती कहते हैं और जो उन से नहो और चिकनाई उसमें पाई जावे तो वसमी कहते हैं, और जो चिकनाई नहो तो लहमी है ॥

खरराती जो ऊपर से आवे तो कशूरी कहेंगे, और जो भीतरसे आवै तो टुकडे उसके बडे और चौडेहोंगे सफेदी या लाल होतो सफायही कहेंगे सफेद चिन्ह हैं मसाने के छिलने का और लाल गुरदे या जिगर के छिलने का ॥

जो टुकडे बडे और चौडे न होंतो लालको कुरसनी कहेंगे और नहीं तो नखाली ॥

तलछट जो तरी से हो उनमेंसे जो काली लिये हुएहो वह चिन्ह है रुधिर के जलने का और कभी कफके जलने का और जो पीली हो तो पित्तों की अधिकता का और काली सौदा के जलने का चिन्ह है ॥

जो मूत्र विना तलछटके हो उस के कई कारण हैं एक मवाद का न पकना, दूसरे सुद्दा, तीसरे मवाद की कमी । चंगे मनुष्यों के मूत्र में तलछट बहुत थोडी होती है, और जो होती भी है तो विना पचे हुए भोजन के फोक से, दुबले मनुष्य के और मिहनत करने वाले के मूत्र में तलछट बहुत कम होती है, और जो रोगी मोटा और आराम चाहने वाला हो उसके मूत्र में बहुत आती है, जिस तलछटका फोक पीप हो उसे मद्दी कहते हैं और जिसका फोक गाढा और कच्चा मवाद हो वह मुखाती है, यह बहुत करके अरकुन्निसा और वजैउलफासिक के रोगों में आती है. इनदोनों की सूरत एकसी होती है परंतु अंतर यह है कि मद्दी में दुरगंधि होती है और सूजन या घाव के फूटने के पीछे निकलती है, और जल्दी इकट्ठा होजाती है और मुखाती में यह बातें नहीं होतीं ॥

मूत्रका थोड़ा और घना होना ।

मूत्र के घने के होने के बहुत कारण हैं एकपानी बहुत पीना अकेलाया कोई वस्तु मिलाकर या तरमेवों का खाना दूसरे शरीर का पिघलना जैसा कि गरम तपों में होताहै, तीसरे रुके हुए मवाद का निकलना जैसा कि बुहरान इदरारी होताहै ॥

बुहरानी और जूवानी में यह अंतर है कि बुहरानी में जोर होता है और मवादके निकलने के पीछे रोगीको आराम होता

है और जवानी में कमजोरी होती है उसमें पुष्टगर्मी पाई जाती है और गंधितेज होती है और बुहरान के दिन नहीं होता। बुरा मूत्र जैसे काला और गाढा इस में अच्छा वह है कि बहुत आवे और रुकर के न आवे इस में जोर होता है और जो कम जोरी होगी तौ रुक के आवेगा, मूत्र के थोडा होने के कारण भी बहुत हैं, एक तरी का अधिक पचना दूसरे शरीर में तरी का न रहना गरमी की अधिकता से तीसरे सुद्दा पड़ना उन रस्तों में जिनसे कि तरी मसाने में जाती है चौथे अधिक दस्त या पसीना आना. इस से जो तरी मूत्र में आती थी वह दस्त और पसीने में निकल जावेगी पचाव के कम होने पर भी जो मूत्र बहुत थोडा आवे तौ जलंधर होजाने का डर है॥ इति

बुहरानका वर्णन

रोगकी लड़ाई जो मिजाज के साथ होती है उसे बुहरान कहते हैं।

जो मिजाज जीते और रोग एक वारगी जातारहै उसे बुहरान महमूद या कामिल कहते हैं और जो रोग जीते और रोगी एक वारगी मरजावै तौ बुहरान रदी नाम है यह दोनों गरम रोगों में होते हैं॥

जो रोग अच्छा होने कोहो परन्तु देरमें इसे तहल्लुल कहते हैं यह बहुधा पुराने रोगों और ठंडे मवाद में होता है॥ और जो इसी प्रकार से रोग मारडालने को होतो जूवान और रज बूल कहते हैं चंगाहोने के लक्षण या तो एक वारगी मालूम होवेंगे परन्तु देर में अच्छा हो और मवाद थोडा २ निकले या पहिले मिजाज का जोर कुछ न मालूमहो परन्तु मवाद को कुछ २ निकालके एक वारगी जीत जावे तो बुहरान जैयद नाकिस कहते हैं जो रोग जीते कुछ२ जोर को घटादें या पहिले से

रोग का जोर मालूम नहो परंतु कुछ शरीर के जोर को घटा-
तारहै और एक वारगी मारडालैं उसे बुहरान रदी नाकिस
कहते हैं इन चार पिछलों का नाय बुहरान मुरक्कब है ॥
इन आठों सूरतों में रोग छः प्रकारसे वदलते हैं या तो एक
वारगी चंगा होने की ओर या एक वारगी मरने की ओर या
थोडा२ चंगा होने की ओर या थोडा२ मरने की ओर या दोनों
ओर हो और रोगी चंगा होजावै या दोनों हों, मरजावै । जब
बुहरान से मवाद एक वार दूर नहो सके तो वडे २ स्थानों
से दूसरी ओर चला जाता है इसे बहुरान इंतकाली कहते
हैं, कुछ रोग जैयद हैं, जैसे यरकान, खुजली, दाद, और
कुछ रदी हैं जैसे कोढ, खुन्नाक, आकिला, दुवैला, आदि ।
बुहरान इंतकाली नहीं होता, परंतु जब कि कमजोरी हो और
मवाद गाढा हो ॥
बुहरान होने से पहिले उस के लक्षण पाये जाते हैं अर्थात्
जो वह दिन को होतो पहिली रातको और जो रातको न
तो दिन को वह चिन्ह होंगे कभी गरम रोगों में तीन दिन
तक वह रहते है चिन्ह जिस दिन अधिकता हो वही दिन
वहुरान का जानों ॥
जिस बुहरान में मवाद दूर हो वह पांचप्रकार का होताहै. नक
सीर वमन, दस्त मूत्र पसीना । मूत्र और पसीने का बुहरान
वहुधा नाकिस होता है नकसीर का बुहरान सब से अच्छाहै
फिर दस्तों का फिर वमनका फिर मूत्रका फिर पसीने का फिर
खुराजात का अब हर बुहरान के चिन्ह अलग २ लिखेजातेहैं
नकसीर के बुहरान के चिन्ह यह हैं कि कानों का सुनहीं

ना, आवाजेअनी. सिर जलना चमकती हुई वस्तु आंखों के सामने दिखलाई देना, नाक खुजलाना, सिरकी रगें धमकना आंखें और मुंह लाल होना, उलटी वाले के चिन्ह यह हैं, दम फूलना, मतली, मिचलाहट, मुंह कड़वा होना, फड़कन कौडी की पीडा, आंखों के नीचे अंधेरा होना. नाडी का बंद होना और नीचे का होठ फडकना ॥

दस्त के लक्षण यह हैं, पेट की पीडा, शरीर का बोझल होना पसलियों का तनना, पेट फूलना. पीठ की पीडा, दस्त रंगीन होना, आंतों का बोलना, नाडी का सगीर, कवी, और सख्त होना और किसी बुहरान के लक्षण न होना ॥

(मूत्र के लक्षण) मसाने का बोझल होना, मूत्रका बहुत और गाढा होना, और मवाद का दूर न होना, यह बहुधा जाडों में होता है ॥

(पसीने के चिन्ह) मुंह का फूलना चौथे दिन मूत्र रंगीन होना. सातवें दिन गाढा होना, है तथा रोगी स्वप्न में हम्माम और नदी और मेह बरसता देखेगा और जब उसके शरीर पर देर तक हाथ रखेंगे तो गरमी अधिक मालूम होगी ॥

(बुहरान इंतकाली के लक्षण) तपका जोर मवाद का न निकलना, सारे शरीर में या एक जगह पीडा होना कोई डर की बात न होनी. और जोर आर नाडी का ठीक होना कान बहना. चीपड, आंसू और नाकआना सिरके रोगों के बहुरान की पहिचान है. और गल बहना छाती के रोगों की और बवासीर का रुधिर बहुत से रोगों का बहुरान जैयद है कभी मरने के चिन्ह मालूम होते हैं और रोगी अच्छा हो जाता है और कभी मरने को होता है और रोग घट जाता है उस समय नाडी नमली या बंद होजाती है ॥

बुहरान जैयद की पहिचान यह है कि मवाद अच्छा पका होगा और वह भली भांति निकलेगा और नाडी ठीक और शुद्ध होगी बुहरान रदी इसके विपरीति है' बुहरान के दिन कोई ऐसी औषध न दें जो मवाद को निकाले इस वास्ते जुल्लाब आदि न देना चाहिये, जो होसके तो भोजन भी न दें और नहीं तो हलका भोजन देना चाहिये. और लक्षणों को देखकर मिजाज की मदद करें, जो मवाद नकसीर से निकला चाहता हो और मिजाज कमजोरी के कारण उसे न निकाल सकता हो तो मदद दें, इस प्रकार से कि सिरको गरम रक्खें और गरम पानी से तरेडा दें जो वमन आने को होतो वमनकरावें और जो प्रकृति जुल्लाब चाहती होतो गुलैय्यन दें इसी प्रकार और भी जानों जब मालूम हो कि बुहरान इंतकाली है और मवाद किसी जगह गिरकर उसे बिगाडेगा तो मवाद को उधर गिरावें जिधर से कुछ हानि नहो जैसे कि जो जगह उस के बराबर हो उसे कसकर बांधे या सींगियां या वार लगावें या कोई गरम लेप लगावें जो मवाद दहने हाथ में हो तो बांये हाथ से कोई कडा काम न करें या बोझ न उठावें जो मवाद सिर या आंख में हो तो पहिले पीडा को दूर करें और पांव मलें या गरम पानी में रक्खें या पिडलियां टखनों तक कसें और जो मेदे में हो और छाती की ओर आवे तो बाहें और रान कसें मूत्र में पसीना निकालें और पसीने में मूत्र और उलटी में दस्त और दस्त में उलटी जब तक अधिक आवश्यकता नहो बुहरान में मवाद निकालना बंद न करें और उसे शरीर की किसी उत्तम और कमजोर जगह पर न गिरावें रोग के आदि से बुहरान बहुत बुरा है. बहुत से हकीम जो रोग दो पहर से पहिले उत्पन्न हुआ हो उस दिन को हिसाब में गिनते हैं और

जो दोपहर के पीछे हो उसे छोड देते हैं जननेके पीछे जो तप हो उसी समय से गिनी जावेगी, रोग में कुछ दिन बुहरान के दिन हैं उन्हें बाहुरिया कहते हैं और कुछ योमुलअनजार अर्थात् खबर देनेवाले और कुछ न बुहरान के हैं न ख़बर दैने वाले परंतु कभी २ बुहरान उनमें हो जाता है. उन्हें वाकैफिल वस्त कहते हैं जैसा कि आगेके नकशेमें लिखा जावेगा बुहरान का जोर और कडापन आठवें दिन तक रहताहै फिरघट जाताहै जिन दिनों में बुहरान बहुत करके होता है और अच्छा होता है वह ग्यारह दिन हैं उनकी जगह हमने एकका अंक नकशे में लिखा है, और जिन दिनोंमें बुहरान रदी और बुरा होता है वह आठ दिन हैं उनकी जगह दोका अंक लिखा है और जिन दिनों में बुहरान नहीं होता वह तेरह दिन हैं उनकी जगह तीन का अंक लिखा है और उनमें जुल्लावभी वे खटके होकर देसक्तेहैं और छः दिन वाकै फिलवस्त हैं, उनकी जगह चार का अंक लिखा है ॥

दिन	हाल	दिन	हाल	दिन	हाल	दिन	हाल
१	बुहरान	११	४	२१	१	३१	१
२	खिलाफी	१२	२	२२	३	३२	३
३	४	१३	४	२३	३	३३	३
४	१	१४	१	२४	१	३४	१
५	४	१५	२	२५	३	३५	३
६	२	१६	२	२६	३	३६	३
७	२	१७	४	२७	१	३७	१
८	२	१८	२	२८	३	३८	३
९	४	१९	२	२९	३	३९	३
१०	२	२०	१	३०	३	४०	१

कभी देखने में रोग मालूम नही होता. छटेदिन बुहरान जैयद होजाता है तौ वह दिन सातवां होता है. क्योंकि बुहरान जैयद छटे दिन बहुत कम होता है ॥

न-शे में जो दिन लिखे गये हैं उनमें गरम रोगोंका बुहरान [illegible] और पुराने रोगों में महीना और वरस दिनकी जगह [illegible] कफकी और वादीकी रुवा में सात महीने गिन्ब की सात वारियों के बराबर हैं. इसलिये बुहरान १२० दिन या सात महीन या सात वर्ष या चौदह या इक्कीस वर्ष पीछे हो॥

वारी वाली तपमें वारी के दिन बुहरान होता है. उसदिन पेट भरा न रक्खें ॥

बुहरान में बहुत बुरे बुरे लक्षण होना मरने की पहिचान है।

इति बुहरान का वर्णन समाप्तम्

मिलीहुई औषधियों के बनानेकी विधि

इस पुस्तक में जो बनी हुई औषधें रोगी को देने के लिये बताई गई हैं उनके बनाने की रीति अब लिखते हैं ॥

इतरीफल धनियां का

तीनोंहरड. बहेडा. छिलेहुए आमले. धनियां. उस्तखुद्दूस. मुंडी बनफशेके फूल. प्रत्येक२तोले लेकर तीन तोले रोगन बादाम में मिलाकर तिगुने शहद के कवाममें मिलाकर चालीस दिन तक जौ के अंदररखें और उसमेंसे एक तोले या दो तोलेखावें

इतरीफल गुदी

उस्तखुद्दूस. गदूद जो बकरीके गलेमें होते हैं उन्हें सुखाकर

विसफायज, प्रत्येक १७॥ माशे, हरड, आमला, तुरबुद, प्रत्येक २४॥ माशे, इफ्तीमून ३॥ माशे, अनीसून, मस्तगी, लोंग, तज प्रत्येक सातमाशे, शैतरज, नरकचूर, रपरीकून, प्रत्येक ७०॥ माशे कूटछानकर उसी प्रकार से शहद में बनालें और १७॥ माशे खावें ॥

अयारिज फैकरा.

वालछड, दारचीनी, तज, हब्बुबिलसान, ऊदबिलसान, मस्तगी, आसारोन, केसर, प्रत्येक एक तोला, एलुआ दो तोले या तीन तोले सबको कूटछान के फंकी बनावे उसमें से सात माशे पेट खाली होने पर शहद और गरम पानी के साथ दें।

असानासिया।

मुरक्की, अफीम, बजरुलबनज, केसर, जुंदबेदस्तर, कूठ करफ्स माना खशखाश गाफिस, बकरी का दहना सींग जला हुआ, भेडिये का कलेजा सुखायाहुआ सबको बराबर लेकर कूटछान के घोलने की दवा घोलकर शहद में मिलावें और छः महीने पीछे ३॥ माशे कासनी के पानी या शहद के पानीके साथदें॥

बासलीकून

चांदीका मैल, समन्दर फैन प्रत्येक २२॥ माशे, सफेदाकलाई ऊद, नमकतुर्की, काली मिरचें, नौशादर, दारफिलफिल, प्रत्येक ४॥ माशे जलाहुआतांबा २१॥ माशे लोंग, छडीला, प्रत्येक १॥ माशे, कपूर,४ रत्ती, तेजपात, जुन्दबेदस्तर, बालछड़, सुरमा प्रत्येक ३॥ माशे इन सबको पीसकर सुरमा बनालें।

बरूदबनफसजी।

बनफशेके फूल, धनियां, बबूलका गोंद, कतीरा, प्रत्येक ३॥ माशे निशास्ता १०॥ माशे कूट छानकर पांचवार सिरके में भिगोकर छायामें सुखावें फिर सुरमा बनालें।

बनादिकुलबुजूर

खरबूजे और ककडी के बीज प्रत्येक १७॥ माशे कद्दूकुलफे और खैरू के बीज सफेद बजरूलअनज, बादाम, कतीरा, निशास्ता, मुलहटी का सत, खशखाश सफेद गिलेअर्मनी कर्फस के बीज प्रत्येक ७ माशे कूट छान कर बीदाने के लुआब में क़ुर्स बनावें और १० माशे खावें।

तिरयाक

गोलमिर्चें सफेद, मुरमकी. प्रत्येक १॥। माशे, शातरा ३॥ माशे जरावन्द मुदहरज ५।माशे हरमुलके बीज, कलौंजी. जीरा, प्रत्येक ७माशे कूट छानकर गुलाब में गूंधले और बाकले के बराबर खावें।

सोंठकी माजून

सोंठ ७० माशे, बबूलकागोंद, इलायची के दाने प्रत्येक ७ माशे, लोंग. दारचीनी प्रत्येक १७॥ माशे जायफल, केसर प्रत्येक ३॥ माशे जावित्री १४॥माशे मिश्री की चाशनी में मिला दें।

भिलावे की माजून।

काली मिर्चें, दारफिलफिल, काली हरड बहेडा आमला जुंद वेदस्तर प्रत्येक १४ माशे मोथा १७॥ माशे कूट भिलोयाविरंग कावली शकर तनरजद, हब्बुलगार प्रत्येक ४२० माशे कूट छानकर दुगने शहद और अस्लबलादुर को चाशनी कर के मिलावें और छः महीने-पीछे खावें।

जवारिश जालीनूस

बालछड, लौंग, इलायची, तज, दारचीनी, सोंठ, कुलीजन केसर, सफ़ेदमिरचें, दारफिलफिल, दर्याईकुन्द, मोथा, ऊदवि-

लसान, अब्बुलआस, आसारोन, मीठा चिरायता प्रत्येक तोले भर मस्तगी ५ तोले और सब के बराबर शकर दुगने शहद में माजून बनावें और सात दिन पीछे ९ माशे खावें ।

ऊदकी माजून

जो पचाव को ठीक करती है और भूख लगातीहै औरतरी और कफ को मेदेसे दूर करती है केसर सोंठ दारफिलफिल जायफल प्रत्येक ३॥ माशे बालछड इलायचीके दाने जावित्री प्रत्येक ७ माशे लौंग मस्तगी प्रत्येक १०॥ माशे कच्चा ऊद तज प्रत्येक १७॥ माशे कूट छानकर दो सेर शकरमें चाशनी करलें ।

जवारिश खोंजी

कुन्दर, अजवायन, मस्तगी, मोथा, बालछड, प्रत्येक १७॥ माशे और मुनक्केको सिरकेमें भिगोकर निकालकर भूनलें और पीसकर उसमेंसे १०५ माशे हब्बुलआस २१० माशे सबको कूट छान कर दुगने शहद और कन्दकी चाशनी करके दवाओं को मिलादें और १०॥ माशे से १४ माशे तक खावें ।

हब्बकोकाया

फीकरा ३॥ माशे तुरबद सफेद मुनाहुआसकमूंनियां उस्तखुद्दूस प्रत्येक १॥। माशे बकायन ९। रत्ती कूट छानके सोंफ के पानी में गोलियां बनावें यह सब एक बारके खानेको है ।

हब्बुलमिस्क

छालिया लौंग अकरकरा प्रत्येक ३॥ माशे गुलाब के फूल सफेद चन्दन हरड प्रत्येक ७ माशे बंसलोचन १॥ माशे मुश्क कपूरप्रत्येक १ दांग कूट छानकर गुलाब और पानके अर्क में गोलियां बनावें ।

हब्बेगावन्द

रावंद १॥ माशे गारीकून३॥ माशे तुर्बद ७ माशे जरावन्दद्रो दांग गूगल १॥। माशे. अनीसून १ दांग. कूटछानकर गोलियां बनावें यह दोवारके खानेको है।

हब्बासिकबीनज

सिकबीनज. एलुआ. गारीकून. गूगल. बराबरलेकर गोलियां बनावें और ७ माशे से १०॥ माशेतक खावें॥

हब्बर्वीजगान

भुनाहुआ सकमूनियां, जावशीर. प्रत्येक ४॥ माशे बकायन ५। मासे नोशादर. ७ माशे गारीकून ८॥ माशे अयारिज फीकरा १०॥ माशे इंजरूत १४ माशे तुर्बुद. २४॥ माशे कूट छानकर गंदने के पानी में गोलियां बनावें और ३॥माशेखावें

हब्बग्रासली

बालछड, तज हब्ब और ऊद बिलसान आसारोन. मस्तगी, दारचीनी केसर प्रत्येक ३॥ माशे नमक ७ माशे भुनी हुईसक मूनियां १४ माशे उस्तखुद्दूस. बकायन प्रत्येक १७॥ माशे तुर्बुद २४॥माशे एलुआ ५६ माशे कूटछानकर पानीमें गोलियां बनावें और १४ माशे खावें।

हब्बासिब्र

भुनी हुई सकमूनियां ७ रत्ती उसारागाफिस ९ रत्ती गारीकून १८॥रत्ती सिब्र३॥माशे कूट छानकर हरी कासनीके पानीमें गोलियां बनावें यह एकवार खावें।

हब्बइफतीमून

उस्तखुद्दूस ४ दांग कालीकुरकी नमक प्रत्येक १॥। माशे

त्रिसफायज, गारीकून. प्रत्येक ३॥माशे अयारिज फीकरा ३॥ माशे गोलियां बनालें यह सबदो बारयाँ ३ वार खानेको हैं॥

दिबाल मिश्क ।

मस्तगी. रूम्बाऊद, तुरंजके छिलके. दालचीनी, लौंग. बालछड, सुक, जायफल. कबाबा बडी इलायचीके दाने मोथा, सरकंडेकी जड. जंगलीतुलसी, फिरंजमुश्क नमशाम, बालंगूकेबीज. दौनामरुवा, विनाविंधेमोती. बुसुद, कहरुवाशमई कच्चा रेशम कटाहुआ. सफेद और लाल बहमन प्रत्येक ३५ माशे मुश्क १७॥ माशे हरडके मुरब्बे के शीरेमें गूंथ के माजून बनाले ।

दबायतुर्बुद ।

तुर्बुदसफेद छिलाहुआ साफकियाहुआ ३५॥ माशे, सोंठ मस्तगी. प्रत्येक १७॥ माशे कन्द इन सबके बराबर कूटछान कर फंकी बनावें ओर ४॥ माशे खावें ।

दवाउलकरकम ।

केसर ५४ माशे आसारोन. दूकू. अनीसून, फितरासालयून. रेवन्द, मुरमक्की प्रत्येक १४माशे बालछड २१ माशे मीठाकूट तज फकाह, सरकंडेकीजड हब्बबिलसान. प्रत्येक ७माशे मुलैठी जोद. मस्तगी. गाफिस प्रत्येक १०॥ माशे बिलसानका तेल १७॥ माशे कूट छानकर शहदमें मिलाकर माजून बनालें और माउलअस्ल के साथ ३॥ माशेखावें ॥

दवाउलदूरंजबील ।

तुरंजबीन सफेद साफकरके १०५ माशे डेढ सेर दूध में औटावें जब गाढी होजावै तो १३॥ माशेखावें ।

जरूरअसफर ।

इंजरून एलुआ. रसौत प्रत्येक ७ माशे, केसर.मुर. प्रत्येक ३॥ माशे पीस छानकर आंखमें लगावें ।

मस्तगीकातेल ।

मस्तगी ३५ माशे रोगन गुल १७५ माशे एक शीशीमें डाल कर गरम पानी में उसे रक्खें और उसके नीचे आग जलावें यहां तक कि वह मस्तगी तेलमें पिघलजावे फिर उसे निकालले

कूठका तेल ।

कूठ ३५ माशे कालीमिर्चें, फराफियून. प्रत्येक १९॥ माशे अकरकरा १४ माशे. जुन्दबेदस्तर ८॥। माशे जैतका तेल १७५ माशे कूट और अकरकरे और मिरचोंको ३५० माशे पानी में १ रात दिन भिगोकर औटावें कि आधाजलजावे फिर जैतका तेल मिलाकर औटावें कि निरातेल रहजावै फिर जुन्दबेदस्तर और फराफियून को कूटछानकर आगपर से उतार के डालदें॥

केसरका तेल ।

मुरमक्की १॥। माशे चिरायता १७॥ माशे केशर, फर्दमाना प्रत्येक २१ माशे चिरायते और केसर को अलग और मुर्र मक्कीको अलग सिरके में भिगोवें पांच दिनतक और छटेदिन फर्दमानाको भी सिरके में भिगोवें एक दिन सातवें रोज छान कर तिलीका तेल मिलाकर औटावें कि सिरका जलजावे. और तेल रहजावै उसे काम में लावें ।

बिच्छूका तेल ॥

जरावंद मुदहरज जिन्तयाना मोर्था. करने की जडकी छाल प्रत्येक ३ तोले कूटकर शीशे में भरें. और ४०५ माशे कडुये वादाम या तिलीका तेल उसमें डालदें और मुहबंद करके धूप में रखदें, गरमी में सात दिन और जाडोंमें चौदह दिन फिर उस दवाको उसतेल में भली भांति घोलें और दो बड़े बिच्छू जीते उसमें छोडदें फिर मुंद बंद करके चौदह दिन और धूप में रक्खें फिर छानलें ॥

सुद्दावका तेल

हरे सुद्दाव का अर्क ९ तोले, तिलीया जैत के तेल में जो तीन तोले हो औटावे कि पानी जलजावे।

नारदीनका तेल

चिरायता, वरकुलगार, कपूरकचरी, ऊदविलसान, लाख, तेजपात, आसके पत्ते, नारदीन, सरकन्डेकी जड, रासन, अवहल करदमाना, दौनामरुवा, बराबर लेकर कुचल के १ रात दिन गुलाब और पानीमें भिगोवे फिर छानकर तिली का तेल मिलाके औटावे कि निरातेल रहजावे॥

रोगनमोची

काले चैंटे जो कबरों में होते हैं १०० पकडें और एक शीशेमें जिसमें चमेली का तेल पडाहो जीते डालें और मुंहउसका बंद करके गरमी की धूपमें सातादिन तक रक्खें फिर साफ करलें॥

आसका तेल

हब्बुलआस कूटकर तिली के तेलमें औटावें, फिर निचोडलें॥

रोगन आमला

छिलेहुए आमले, आस के पत्ते, सनोवर के जडकी छाल बराबर लेकर कूटके पानीमें औटावे, कि गलजावे फिर छानके उतना तेल मिलाकर पानीको जलावे कि निरा तेल रहजावे॥

सोये का तेल

सोये के बीज छाया में सुखाके तीन तोले लें और तिली का तेल ५७॥ तोले शीशे में भरके धूपमें २० दिनतक रक्खें फिर छानलें॥

गोखरू का तेल

हरे गोखरू को कूटके पानी उसका तिली के तेल में मिला-कर आगपर जलावे कि निरा तेल रहजावे ॥

गेहूं का तेल

इस के बनाने की दो रीति हैं एक यह कि गेहूं को आतिशी शीशे में भरकर ऊपर से कपड़ौटी करें और उस के मुंह में रेशे किसी छाल के या तिनके भरदें कि गेहूं गिरने न पावें. फिर उसको किसी बर्तन में कि नीचे उसके छेद हो उलटा रखकर ऊपर इसके अर्ने उपले चुनें और आग लगादें और तेलमें एक बरतन रखदें कि तेल उसमें टपका करे ॥

दूसरी रीति यह है कि गेहूं को किसी साफ पत्थर पर रख कर उपर से कोई लोहे की वस्तु गरम करके जोर से दबानेसे तेल निकल आता है ॥

सुर्मा रोशनाई

तुहास जलाहुआ शादना प्रत्येक १७। माशे गोल मिरचें, दार फिलफिल, केसर, बकायन १॥। माशे जंगाल, एलुआ, नमक अर्मनी प्रत्येक ३॥ माशे इकलीमिया ७ माशे पीसकर सुर्मा बनालें

माजूनजरऔनी

काली मिरचें, दारफिलफिल, सोंठ, तज, दारचीनी, लौंग कुलीजन प्रत्येक तोले भर दोनों तोदरी और बहमनें, वूजीदान लिसानुलअसाफीर, मीठाकूठ, मोथा, वालछड, प्रत्येक २ तोले कूट छानकर माजून बनालें ॥

सिरके की सिकंजबीन

सिरका और शक्कर दोनों बराबर लेकर बनालें ॥

सिकंजबीन बजूरी गर्म

उसारागाफिस, रेवन्दचीनी, प्रत्येक ७ माशे, कर्फस, कासनी

और कुसूमके बीज, सौंफ, अनीसून प्रत्येक. १७॥ माशे कित्र और सौंफ और कर्फ़स के जड की छाल २४। माशे सब को कुचल कर १२१५ माशे पानी में भिगोवें और पानी से चौथाई सिरका उसमें डालें एक रात दिन उसे भीगा रक्खें फिर औटा कर साफ़ करलें और ६७॥ तोले कंद में चाशनी करलें ॥

सिकंजबीन अनसिली

अनसिल ३ छटांक लकडी की छुरी बनाकर काटें छोटे छोटे टुकडे और पुराना सिरका २०२५ माशे डालें और औटावें कि बिलकुल गलजावे और सिरका पांचवां हिस्सा रह जावे, फिर उस में १॥ गुणा कंद मिलाकर धीमी आग में पकावें, और उस के झाग निकालते जावें यहां तक कि चाशनी पर आजावे ॥

सिकंजबीन अफतीमून

उस्तखुद्दूस, सौंफ, शाहतरा प्रत्येक १७॥ माशे, अफतीमून बिसफायज, सनाय, काबिली हरड प्रत्येक ३५ माशे इन सब को १३५ माशे सिरके में भिगो कर औटाकर छानलें और ऽ॥ आध सेर कंद में चाशनी बनावें ॥

सिकंजबीनसफरजली

खट्टी बिही ताजी कूटकर पानी १ सेरलें और पावभर सिरका मिलाकर औटावें फिर सेरभर कंद डालकर कवाम अर्थात् चाशनी बनालें और जो सिरके के बदले नीबूका अर्क मिलावें तो अति लाभकारक होगा ।

सुफूफचारतुखम

ईसबगोल, तुखमरेहां. कनौचे और बारतंग के बीज बराबर लेके किसी मिट्टी के बरतन में भूने और गरम पानी ऊपर

डालके लत करें और थोडा सा रोगन गुल या वादाम डाल कर खिलावें ।

सुफूफ हब्बुलरुम्मां

खट्टे अनार के दाने भुने हुए ७० माशे करोया धनियां प्रत्येक १४ माशे झाऊ खरनूबनिबती प्रत्येक ७ माशे गुलनार गर्द सिमाक प्रत्येक१०॥ माशे करोया और धनिये को सिरके में भिगोकर सुखाके भूने फिर सबकोकूट छानकर फंकी बनावें और ७ माशे खावें ।

सुफूफ मिक्लियासा

ईसबगोल ७० माशे रेहां वारतंग मरूके बीज बबूलकागोंद गिले अर्मनी खशखाश प्रत्येक २७ माशे बीजों को भूनके और बाकी सबको कूटके मिलादें और ठंडे पानी के साथ फकावें

सुफूफतीन

ईसबगोल मरू और रेहांके बीज निशास्ता भुने हुए चूके के बीज गिले अर्मनी बंसलोचन बबूलका गोंद सब को सिवाय अस्पगोल के कूटकर मिलाकर१०माशे रोगन गुल या बादाम से चिकना करके गुलाब के साथ फकावें ।

सुफूफतरातेजक

तरातेजक को एक रातदिन अंगूर के सिरकेमें भिगोवें और थोडा सा जौका आटाउसमें मिलाकर गूंधे और धीमीआगके तनूर में रोटी उसकी पकावे कि जल न जावे और सूख जावे फिर उस रोटी में से १४० माशेले और संभालूकेबीज इसक्लूकन्दरीयून फित्र के जड की छाल उजवा प्रत्येक १७॥माशे गन्दनेके बीज जीरा किरमानी कि एक रात, सिरके मेंभिगोकर भूनलिया हो प्रत्येक २२॥ माशे सब को कूटछान कर फंकी बनालें ॥

मञ्जन दांतोंका पुष्ट करनवाला

गुलनार फिटकरी आमला अकाकिया बराबर लेकर मंजन बनावें।

दूसरा मंजन यह है सुर तूतिया फिटकरी गर्द सिमाक गुला बकेफूल खट्टे अनारके छिलके आमलेका उसारा माजूगुलनार झाऊ बराबर लेके कूट छानकर मंजनबनावें।

कूठ के तेलकी दूसरी रीति

तज २१ माशे मुरमक्की मारचोबा प्रत्येक १४०माशे कडुआ कूट ३५० माशे सबको कुचल के गुलाब में एक रात दिनभि गोवै फिर औटावै और छानकर तिली या जैत के तेल में जो पानी से तिगुना हो मिलाके औटावे कि निरातेल रहजावै।

सुरती जान

खट्टे और मीठे अनार के छिलके प्रत्येक १०५ माशे माजू गुलनार फिटकरी जला हुआ कागज अकरकरा प्रत्येक ३५ माशे सिमाक ५२॥ माशे नमक नौशादर प्रत्येक १७॥ माशे कूट छानकर हब्बुल आस के सिरके में गूंधके टिकियाबनाकर सुखा रक्खें॥

शर्बत वर्द मुकर्रर

गुलाब के फूल ताजे खुशबूदार जीरा और सबजी निकाल के १ सेर भरलें और पांच सेर पानी में औटावें यहां तककि रंग और स्वाद और गंध उसकी पानीमें आजावे फिर मलके उसका फोक निकाल डालें और उतनेही नये फूल डालके औटावें और उसका भी फोक निकाल डालें इसी प्रकार से जितनी बार चाहें नये फूल बदलते जावें फिर छानके पानीके बराबर शक्कर मिलाकर कवाम करलें और१या२तोले पीवें।

शर्वतइफसंतीन

इफसंतीन रूमी १७॥ माशे गुलाव के फूल २८ माशे ३ पहर पानीमें भिगोकर औटावै जब चौथाई रहजावैतो मलकर छान कर शकर मिलाके कवाम करै।

शर्वतजूफा

सूखा जूफा डंठल निकालके २०२ माशे लें, और उस से दुगने पानी में भिगोवें, फिर औटाके १०२ माशे कंद और ४०५माशे शहद डालकर कवाम करलें ॥

शर्वत खशखाश

पोस्त खशखाश दानों समेत १०० ले, उन्हें कुचलके दोसेर पानी में औटावै फिर १॥ सेर कंद मिलाकर कवाम करले ॥

शर्वत पोदीना

खट्टे अनारका रस एक हिस्सा लें और हरे पोदीने का रस कूटकर आधा हिस्सालें फिर दोनोंको मिलाकर औटावें और उसके वरावर कंद डालकर कवाम करलें ॥

शर्वतदीनार

रेवंद १ . माशे, कूशूस के वीज १७॥ माशे, गुलावके फूल५२॥ माशे. कासनी के वीज ९० माशे, कासनी की जड १०५ माशे रेवंदको कुचलके पोटली में वांधकर और औषधें के साथ भिगोदे और हलकी आंचपर औटावै फिर छानकर कंद सफेद४०४ माशे डालकर कवाम करले, और ३५माशे, से ४५माशे, और ५२॥ माशे तक पीवे ॥

शर्वत हव्बुलआस

हव्बुल आस ४०५ माशे कुचलकर और हरामाजू. उसके वरावर कुचलकर मिलाकर सात दिन तक पानी में भिगोवें, फिर औटाकर वरावर कंद डालकर कवाम करलें ॥

शर्बत अंजवार

अंजवार की जड और छिलके और डाली ६ तोले से ७॥ तोले तकले और कुचलकर एक रात दिन गरम पानीमेंभिगोवे और हलकी आंच में औटावे मलकर छानकर ४०५ माशे कन्द मिलाकर कवाम करै और चाहेंतो १॥ तोले खट्टे अनार के दाने भी मिलालें।

शर्बत गावजुवां।

हरी गावजुवां का रस निकालकर और कन्द सफेद प्रत्येक १सेर भरलेकर और मिलाकर औटावें औरझाग निकालडालें फिर गुलाव ४० माशे डालकर कवाम करलें।

शर्बत बालंगू।

बाळंगूके हरेपत्ते कूटकर रस निकालें एक हिस्सा लेकर दुगनीकन्द डालकर कवाम करलें।

शर्बत नीलोफर।

नीलोफरके हरेफूल २०३ माशे चौगुने पानीमें १ रातदिन भिगोकर औटावें जब तिहाई रहजावेंतो मलकर साफकरेंऔर २०३ माशे कन्द मिलाकर कवाम करलें।

यही रीति शर्बत बनफशा बनाने की है।

शर्बत सन्दल।

सफेद चन्दनका चूरा खुशबूदार ९० माशे लेकर ४०५माशे गुलाबेंम दो रात दिन भिगोवें फिर गुलावको अलग निकालें और चन्दन में थोडा पानी डालकर औटावें फिर वह पानी और गुलाव मिलाकर ८१० माशे कंद में कवाम मलें।

शर्बत उन्नाव।

उन्नाव एक हिस्से चार हिस्से पानी में भिगोकर औटावें

जब चौथाई जल जावै तौ दुगनी शक्कर डालकर कवाम करलें शर्वत केवडेकीभी यही रीतिहै उसकी वालको औटानाचाहिये

शर्वत फ़िजनोश।

कच्चे अंगूरकारस ४३० माशे सिमाक माजू गुलनारगुलाव के फूल कुन्दर शातरा मोथा प्रत्येक २५ माशे केसर फिटकरी प्रत्येक ३॥ माशे लोहे का मैल १३५ माशे दवाओंको कूटकर अंगूरके रसमेंऔटावें जबतिहाई रहजावेंतौ साफकरकेरखछोडें

शियाफ कुन्दर।

कुन्दुर २५ माशे उशक इंजरूत प्रत्येक १७॥ माशे केसर ७ माशे मेथी के लुआव में शियाफ बनावें। और जब आवश्यक हो तब उसे टपकावें और जो घाव और फ़ुंसियों को पकाना होतौ पट्टी भी बांधें।

शियाफ अवियजकुन्दुरी।

कतीरा बबूलका गोंद प्रत्येक १०॥ माशे निशास्ता ३॥माशे कुन्दर ८ जौ पीस छानकर ईसबगोल के लुआव में बनावें॥

शियाफ अहमरलीन।

धुलाहुआशादना ३५ माशे जलाहुआतांबा २८ माशे बबूल का गोंद कतीरा सुरमक्की प्रत्येक ७ माशे वुसुद कहरुवा मोती तेजपात प्रत्येक १४ माशे दम्मुल अखवैन केसर प्रत्येक ३॥ माशे उसी प्रकार से बनालें।

शियाफ जंगार।

जंगार बबूलका गोंद सफेदा प्रत्येफ ७ माशे पीसकर बनालें

शियाफगर्व।

एलुआ कुन्दुर इंजरूत दम्मुल अखवैन गुलनार सुरमा फिटकरी प्रत्येक १ तोला जंगार ३ माशे पीसकर बनालें।

शियाफदीनार

जर्दचोबा, धोयाहुआ शादना, एलुअ। शियाफ मामीसा बराबर लेकर पीसकर बनालें ॥

शियाफ अहमर

धुला हुआ शादना २१ माशे, बबूलका गोंद १७॥ माशे जलाहुआ तांबा, जंगार, जलाहुआजाज, प्रत्येक ७ माशे अफीम, एलुआ. प्रत्येक १॥ माशे केसर, मुरमक्की प्रत्येक १॥ दांग पीसकर बनावें ॥

शियाफ रुधिर का रोकने वाला

सुरमा. गुलनार, फिटकरी, तनकारसनाई, गर्दकुन्दर, माजू अकाकिया, बराबर लेकर कूटछान पानी में गूंधकर बत्ती बनावें

जिमाद शोसा

बनफशे और बाबूने के फूल, सोये, कतां और हलवे के बीज. जौका आटा सबको पीसकर थोडेसे पानी में पकाकर तिली का तेल मिलाकर गुन गुना पीडा की जगह लगावें ॥

फरजजाहाबिसा

कुंदुर, इंजरूत, दम्मुलअखवैन. मुरमक्की, फिटकरी, अनार के छिलके, सरों के फल कूट छानकर वारतंग या आराके पानी में घोलकर कपडा उसमें लथेड के रक्खें।

फलदिफियून

विना बुझा चूना तोलेभर, पीली और लाल हरताल कुली, अकाकिया प्रत्येक ६ माशे, सबको पीसकर अंगूर के सिरकेमें गूंधके कुर्स बनावें ॥

माजूनफलाफली

काली और सफेद मिरचें, दार फिलफिल प्रत्येक ६ तोले

ऊदविलसान ३ तोले, वालछड, हम्मामा प्रत्येक १४ माशे-सोंठ कर्फस के बीज, सीसालियूसरूमी, तज, आसारोन, रासन प्रत्येक ३॥ माशे सबको कूटछानकर तिगुने शहद में माजून बनालें और ३॥ माशे गरम पानी के साथ खावें ॥

फिलोनिया

अकरकरा. फराफियून. वालछड प्रत्येक ३॥ माशे केसर १७॥ माशे, अफीम २५ माशे, सफेदमिरचें सफेद बजरुल बजन प्रत्येक ७० माशे, कूटछानके शहद में माजून बनावें जवानको जायफल की बराबर. और बुड्ढे को बाकले की बराबर. और लडकों को चने की बराबर दें ॥

कुर्स अम्बरबारीस

जरिश्क. लाख धुली हुई रेवन्दचीनी. गुलाब के फूल उसारा तरखाशिखूरु, कासनी और कुशूस के बीज तुरंजबीन इन सब को बराबर लेकर के छानकर कुर्स बनालें ॥

कुर्स माजरीयून

माजरीयून मुदब्बर. पीली हरड के छिलके, जौ का आटा बराबर लेकर शकर मिलाकर कुर्स बनावें और ४॥ माशे शर्बत गुल के साथ खावें ॥

कुर्स अनीसून

इफसंतीन रूमी. आसारोन. करफस के बीज बादाम अनीसून- कूटछानकर पानी में गूंध कर बनावें और सिकंजबीन के साथ दें ॥

कुर्स किब्र

जरावंद तवील ७ माशे. किब्र के जडकी छाल. उशक प्रत्येक १४ माशे. संभालू के बीज, गोल मिरचें प्रत्येक २१ माशे उशक

को पुराने सिरके में घोलकर और औषधों को कूटछानकर मिलादे और ४॥ माशे सिकंजवीनके साथ खावै ॥

कुर्सकाकैब ।

वालछड, जुन्दवेदस्तर, तज, तीनुलबहीरा, बैरूज के छिल्के मुरमक्की, प्रत्येक १४ माशे अफीम, केशर, मीठा कूठ, जलाहुआ अवरक, प्रत्येक १७॥ माशे, सफेद खशखाश, दूकू अनीसून, सीसालियून, खुरासानी अजवायन, सूखामीआ करफस के वीज प्रत्येक २१ माशे, गोंदों के पानी में घोलकर और सब औषधों को पीस छानकर शहद में गूंथ कर कुर्स बनाकर छाया में सुखावै ॥

कुर्स सुम्बुल ।

वालछड, फिक्काह, सरकंडेकी जड, तज, जरावन्द तवील, दारचीनी, चिरायता, प्रत्येक १०॥ माशे, केसर अनीसून, मुरमक्की, कडुवाकूट, काली मिर्चें प्रत्येक ३॥ माशे गूगल, मस्तंगी, प्रत्येक ७ माशे, उशक १॥। माशे, पहिले गूगल को गुलाब में घोलें फिर और औषधों को कूट छानकर मिलालें और सात माशे खावें ॥

कुर्स एलाऊस ।

कर्फस के बीज, अनीसून प्रत्येक ५२॥ माशे, इफसंतीन, ७ माशे, तज, ७ माशे, मुरमक्की, काली मिरचें, जुन्द, अफीम प्रत्येक ८॥। माशे, सब को कूट छानकर पानी में कुर्स बनावें और ८ माशे खावें ।

कुर्स कुहल ।

सुरमा, धोयाहुआ शादना, दम्मुलअखवैन प्रत्येक १०॥माशे गुलनार, माजू प्रत्येक ७ माशे, गुजनका सींग जला हुआ

अकाकिया प्रत्येक ३॥ माशे. शादन, केसर. प्रत्येक १॥। माशे हंसराज ५।. माशे. कूटछानकर हरे वारतंग के पानी में गूंध कर बनावें और ३॥ माशे. वारतंग और कुलफे के पानी के साथ खावें ।

कुर्स गुल ।

वंसलोचन, इफसंतीन, बालछड, प्रत्येक ७ माशे तुरंजवीन, १०॥ माशे, गुलाव के फूल, मुलैटी, प्रत्येक १० माशे कूटछान कर गुलाब में बनावें. और ३ माशे या उससे अधिक खावें।

कुर्स कहरुवा ।

कहरुआ. वुसुद, मोती, जली हुई कौडी, पहाडी बकरी का सींग जला हुआ, धोया हुआ शादना. प्रत्येक १०। माशे गुलाव के फूल कुलफे के बीज. धनिया, सिमाक भुना हुआ निशास्ता और बबूलका गोंद. गुलनार प्रत्येक १७॥ माशे. वंसलोचन. अकाकिया, वरगद की डाढी का उसारा प्रत्येक ७ माशे कूट छानकर वारतंग के पानी में गूंधकर गोलियां बनावें और ७ माशे खावें ॥

कुर्स काकनज।

ककडी के बीज ३५ माशे, काकनाज १०॥ माशे, कर्फस के बीज. भंग गिलेअर्मनी. बबूल का गोंद दम्मुल अखवैन, वज रुल वनज प्रत्येक ७ माशे अफीम ३॥ माशे कूट छानकर बनावें और १॥। माशे खावें ॥

कुर्स जियावीतुस

वंसलोचन, मुलहटी का सत, प्रत्येक १७॥ माशे, कुलफे और काहू के बीज, गुलाव के फूल, गिले अर्मनी प्रत्येक ५२॥माशे धनियां, चूके के बीज १॥ माशे, सफेद चन्दन, गुलनार, सिमाक

बबूल का गोंद प्रत्येक ७ माशे कपूर १।।। माशे कूट छानकर कुलफे और काहूके पानी में बनावें ॥

कुर्स बौलुद्दम।

ककडीके बीज १४ माशे निशास्ता, कतीरा, गुलनार, सुम्क, दम्मुल अखवैन, बबूलका गोंद प्रत्येक ३।। माशे कूटछानकर कुलफे या बारतंग के बीजमें बनावें ॥

कुर्स नफसुद्दम।

गिले अर्मनी, कहरुवा, बबूलका गोंद दम्मुल अखवैन. वंस-लोचन निशास्ता, कतीरा. अकाकिया गुलनार बरगदकी डाढी बराबर लेकर बारंतग और कुलफे के पानी में गूंधकर बनावें

कुर्स तवाशीरमुलय्यन।

निशास्ता, बबूलका गोंद, सफेद खशखाश, कतीरा प्रत्येक ३।। माशे खीरे ककडी कद्दू के बीज प्रत्येक ९ माशे तुरंजवीन १।। माशे सफेद वंसलोचन, १४ माशे कूटछानकर ईसवगोल के लुआब में बनावें और ४।। माशे खावें ॥

कुर्स तवाशीर काबिज।

वंसलोचन १४ माशे कुलफे के बीज भुनेहुये ७ माशे गुलाब के फूल २४।। माशे सफेद चंदन, बबूल का गोंद कतीरा नि-शास्ता, शाहबुलूत, चूकेके बीज सब भुने हुये मुलहटीका सत जारिश्क प्रत्येक ७ माशे गुलनार अकाकिया ३।। माशे कूट छानकर सेव या जारिश्कके पानीमें बनावें और ४।। माशे खावें।

कुर्स काफूर।

कपूर २ माशे, गुलावके फूल, तुरंजवीन, प्रत्येक ३५ माशे. खीरे ककडी के बीज वंसलोचन, मुलहटी प्रत्येक १७ माशे, काहू के बीज, २८ माशे, कुलफे के बीज २१ माशे, कासनीके

बीज ७ माशे. कद्दू के बीज १४ माशे. मुलहटी का सत ११ माशे कूटछान के ईसबगोल के लुआब में बनावें और ७ माशे तक खावें ॥

कमूनी

जीरा, मुदव्वर. सुदाव. सोंठ. काली. मिरचें. नमक अर्मनी को शहद में मिलाके माजून बनावें ॥

कोहलुलजवाहिर

इसकी दो रीति हैं एक यह कि लाल फीरोजा. मारक शीशा सफेदा. निशास्ता. प्रत्येक ७ माशे. धोया हुआ शादना रसोद शियाफ मामीसा. केकड जलेहुए इकलीमिया. प्रत्येक ३॥ माशे तूतिया वंसलोचन दहनाफरंग. प्रत्येक ४॥ माशे इंजरूत १४ माशे. सुरमा ७० माशे. कपूर. सोंठ प्रत्येक १६ जौ १७॥ माशे कच्चे अंगूर के रस में घोटै ॥

दूसरी रीति यह है. सुरमा २४॥ माशे. मार्क शीशी १७॥ माशे इकलीमिया जहबी धुली हुई, बुसुद मोती प्रत्येक १०॥ माशे. शादना ७ माशे. केसर १॥। माशे. सुरमा बनावें ।

कुहलअजीजी

जला हुआ सुरमा १७॥ माशे सोने और चांदी की इकलीमियां. शादना. तूतिया. जला हुआ तांबा' प्रत्येक ७ माशे पीली हरड के छिलके. तेजपात, काली मिरचें. दारफिलफिल नौशादर. एलुआ. रसोत. केसर केकडा प्रत्येक ३॥ माशे. सोंठ १॥। माशे. कपूर ८ जौ. मुश्क तीन जौ. लौंग बत्तीस जौ. पीसकर सुरमा बनावें ॥

कलकलानजगरम

रेवन्द, उसारागाफिस. अनीसून. बालछड. प्रत्येक सात माशे

ईरसा १०॥ माशे, माजरीयून मुदव्वर, गारीकून. पीली हरड सिकंजवीन प्रत्येक १७॥ माशे. कूट छान कर शहद में मिलाकर माजून बनावें और १०॥ माशे से चौदह माशे तक खावें

कलकलानज ठंडी

गुलाब के फूल. मुलैटी. कासनी. और ककडी के बीज. मुलहटी का सत. प्रत्येक ७ माशे, उसाराइफसंतीन १०॥ माशे, माजरीयून मुदव्वर, पीली हरड प्रत्येक १७॥ माशे. तुरंजवीन. अमल तास. सफेद कन्द प्रत्येक ५२॥ माशे. माजून. बनावें और ७ माशे से १०॥ माशे तक खावें ॥

लाजवर्द के धोने की रीति

लाजवर्द को पीसकर सुरमा करलें और पानी में औटालें और थोडा सा जैतून का तेल डालें फिर नितारें फिर बहुत सा पानी डालकर होले होले घोलें और रंगीन पानी अलग बरतनमें निकाल कर ढकदें घडी भरपीछे तलछट बैठजायगी वही तलछट कामकी है इस प्रकार से फिर उस पहिले लाजवर्दको बहुतसे पानीमें डालकर बैठालें यही तलछट सुखाकर काममें लावें।

माजून फिलासफा

काली मिर्च दारफिलफिल सोंठ दालचीनी आमला बहेडा शैतरजाहिन्दी जरावन्द मुदहरज खुसियतुस्सालिब चिलगोजे के बीज बाबूने की जड दरयाईनारियल प्रत्येक ३॥ माशे बाबूने के बीज १७॥ माशे मुनक्के १०५ माशे दुगनेशहदके कवाम में माजून बनावें और १ दिन पीछे खावें।

माजून नुजाह

काबिली हरडके छिलके कालीहरड बहेडे के छिलके छिल

हुए आमले प्रत्येक ३५ माशे तुरबुद सफैद विसफायज इफती मून उस्तखुद्दूस प्रत्येक १७॥ माशे कूटछानकर दुगने शहद के कवाम में माजून बनावें।

लोहेके मैल की माजून

काली हरड, आमला, काली मिरचें, सोंठ, दारफिलफिल, मोथा शैतरज वालछड प्रत्येक ३५ माशे गंदने और सोयेके वीज प्रत्येक १४ माशे लोहे का मैल धुला हुआ ३५० माशे कूट छानकर रोगन वादाम मिलाकर शहद में मिलावें फिर मुश्क ७ माशे मिलाकर चीनी के वर्तन में रक्खें।

लोहे के मैलकी धोने की रीति

मैलको १४ दिन अंगूर के सिरके में भिगोवें और मिट्टीउस में न गिरने दें फिर उसे सुखाकर काममें लावें।

माजून लबूब

वादाम अखरोट हब्बकर्तुम हब्बुलखतम हब्बसुनोवर हब्बे-जलम फिन्दक पिस्ता नारियल ताजा हब्बफिलफिल इन सबकी मिंगी खशखाश सफेद दोनों तोदरी और वहमनें छिले हुए तिल खरबूजे जिरजीर पियाज शलगम रतवा हिलयून इन सब के वीज और सोंठ दारफिलफिल कबाबा तज दार-चीनी शकाकुल कुलीजन सब को वरावर लेकर कूट छानकर तिगुने शहद में माजून वनावें।

माजून बुजूर

गाजर शलगम पियाज मूली हिलयून रतवा जिरजीर इन सब के वीज हब्ब सुनोवर हब्बफिलफिल लालतोदरी हब्ब जलम पीलीतोदरी के वीज लिसानुल असाफीर शकाकुल बहमन बूजीदान मीठाकूट सोंठ दारफिलफिल हींग हिरफ

सब बराबर लेकर शहदमें माजून बनावें और १०॥ माशेताजे दूधके साथ खावें ।

बिच्छूकी माजून ।

जलाहुआ बिच्छू १२॥ माशे. जिन्तयान५। माशे. सोंठ ३॥ माशे. दाराफिल्फिल. काली मिरच प्रत्येक ७ माशे काक-नज १९। माशे. जुन्दबेदस्तर १४ माशे, कूटछानकर शहद में मिलाकर बनावें और १६ जौ खावें और लडकको ८ जौदें ॥

बिच्छूके जलाने की रीति ।

मोटा शीशा कपडौती करके. बिच्छू को उसमें छोडदें. बंद करके गरम तनूरमें एकरात उसेरक्खें, और सवेरे निकालले ॥

माजुन हजरुलयहूद ।

कद्दू खीरे ककडी और खरबूजे के बीजोंकी मिंगी प्रत्येक १७॥ माशे हजरुल यहूद असील १७५ माशे, कूट छानकर शहद में मिलावें और और ७ माशे से १०॥ माशे तक खावें ॥

माजूनकमीला ।

कमीला, काबली हरड- बहेडा, आमला. तुरबुद. सोंठ बराबर लेकर कूटछानकर तिगुने शहद में या कंद के कवावमें मिलाकर माजून बनावें और सात माशे खावें ॥

मतबूख मुलय्यन ।

उन्नाव लहसोडे नीलोफर खैरूके बीज बनफशा बाबूनके फूल अमलतासका शीरा तुरंजबीन रोगन बादाम पानी में औटाकर मलके छानके पिलावै ।

मुफर्रह सगीर ।

गावजुबां मूंगकी जड धनियां मोती सफेद बहमन तुरंजके छिलके कहरुबा रेशमसफेद जला हुआ कुलफेके बीज ६ तो-

ले कपूर ६ माशे कूटछानकर हरडके मुरब्बे के शीरे में माजून बनावें और ७ माशे खावें ।

मुफर्रह दिलकुशा ।

मूंगे की जड़ कहरुवा नरकचूर दरोनज प्रत्येक ३॥ माशे ७॥माशे कच्चाऊद काबली हरड़ और पिस्ते और तुरजके छिल-के कच्चा रेशम कटाहुआ मोती प्रत्येक ७ माशे धनियां वंस-लोचन प्रत्येक १०॥ माशे दोनों वहमनें प्रत्येक १७॥ माशे गा वजुवां शाहतरा बालंगू सबको कूटछानके अनार चूका और जरिश्कका पानी प्रत्येक ३५ माशे लेकर सफेद कन्द शर्बत बनफशा प्रत्येक ४०५ माशे मिलाकर कवाम बनावें फिर औ-षधें डालकर माजून बनावें।

मुलय्यन मुबारिक ।

अमलतास इसको कासनी के पानी वा जौके पानी में घोल-कर पिलावे और थोडासा जो रोगन बादाम या रोगन गुल मिलावें तो अतिलाभदायक होगा ।

मरहम बासलीकून ।

रातीनज जिफ्त चर्बी बराबर लेकर देवक कालस मिलाकर मरहम बनावै ।

मरहमसुल ।

जावशीर जंगार गन्दाबिराजा मुरमकी मुरतक प्रत्येक ७ मा शे कुन्दुर जरावंदतवीलि प्रत्येक १०॥ माशे मुर्दासंग १५॥माशे उश्क २४॥ माशे गूगल सफेद मोम रातीनज प्रत्येक १४-माशे गूगलको सिरकेमें घोलकर और बाकी औषधों को जैत के तेलमें ६०८ माशेहो पिघलाकर सबको मिलाकर मरहमबनावें

चूनेकामरहम ।

चूनेको पानीमें घोले फिर नितार कर दूसरा और पानी

डालकर इसी प्रकार ७ बारकरें फिर सुखाकर रोगन गुल या तिलीके तेलमें मिलाकर मुलतानी मिट्टी डालकर मरहमबनावें

मरहमकाफूर

सफेदे के मरहम में कपूर मिलादेने से बनजाता है ।

सिरके का महरम

मुर्दासंग १॥ तोले पीसके २ तोले अंगूर के सिरके और दो तोले जैत के पुराने तेल में डालके हलकी आगपर पकावेऔर घोटते रहें कि मुर्दासंग जमने न पावे जब वह जलके काला होजावे और मरहम कवाम ठीक होतो उसे निकालें ।

मरहम सफेदा

रोगनगुल ४ तोले मोम एक तोले पिघलाके थोडासासफेदा मिलावै इतना कि रोगन और मोम को उठाले फिर अंडे की सफेदी मिलावें और कभी थोडासा कपूर भी मिला लेते हैं ।
दूसरीरीति इसकी यहहै कि सफेदा और सफेद मोम रोगन गुल मिलाके मरहम बनालें ।

मसूरका मरहम

मसूर बाबूने के फूल नाखुना खैरू सबको पानी में औटावै जब गाढा होजावे तो अंडेकी जरदी और मुर्गी की चर्बी मिलाके मरहम बनालें ।

मुरदासंगका मरहम

मुरदासंग सफेदा केसर फिटकरी पीसकर रोगन बादाम में मोम पिघलाकर वह औषधें मिलावे ।

काला मरहम

जैतका तेल १२१५ माशेलें उसमें मुरदासंग २ तोलेपीसकर मिलादें औरऔटावें कि कालावें होजावे फिर कुंदर दम्मुल

अखवैन, इंजरूत, प्रत्येक ७ माशे पीसकर मिलावैं।

मरहम जंगार।

इंजरूत उशक प्रत्येक ६ माशे जंगार तोलाभर सिरके में पीसकर शहद मिलावे।

नौशदारू

गुलाव के फूल २१ माशे सौदूरूफी १७॥ माशे लौंग मस्तगी तगर वालछड प्रत्येक १०॥ माशे जरम्बं वंसवासा छोटी और बडी इलायची के दाने, जायफल, तज, केसर, प्रत्येक ७ माशे कूट छान कर अलग रक्खें और ताजे आंवले दूधमें तीन रात दिन भिगोवें और हररोज दूध बदल डाला करें फिर पानी से धोकर ताजे पानी में औटावें जब भली भांति गलजावैं तौ कपडे में बांध कर सारा पानी निचोड डालेंऔर भलीभांति पीसकर उनमेंसे एक सेरभर लें फिर दो सेर शहद या कन्द के कवाम में मिलाकर पकावें फिर वह औषधें पिसी छनी हुई उसमें मिलाकर चीनी या चांदी के वरतन में रक्खें और ४० दिन तक रखछोडें फिर ३॥ माशे से १०॥ माशे तक खावें जोर इस का दो वर्ष तक रहता है। जब तक नहीं विगडता है।

नकूहामिज

वनफशे के फूल १७॥ माशे इमली छिली हुई ३५ माशे नीलोफर के फूल तीन आलू वडे सात पीले आलू और उन्नाव प्रत्येक १५ माशे पानी में भिगोकर छानकर पिलावें।

बनीहुई औषधें समाप्त

——(०)——

औषधियों की कैफियत।

अब हम तुम्हें कैफियत उन औषधियों की बतलाते हैं जो इस पुस्तक में बहुत काम आई हैं परंतु तुम्हें इतना समझले ना चाहिये कि औषध की कैफियत वही औषधकी गरमीठंड और तरी और खुश्की है हकीमों ने इन चारों के चार दरजे ठहराये हैं।

जो पीछे पीने से कुछ न मालूम हो परन्तु बार२ अधिक खाने से गरमी ठंड आदि मालूम होतो यह पहिला दर्जा है इसकी जगह हमने १ का अंक लिखा है। और जो असर मालूम हो परंतु मनुष्य के किसी काम में हानि न करें वह दूसरा दर्जा है उसकी जगह २ का अंक लिखा है। और जोमनुष्यके कामों में हानि हो परन्तु मार न डाले वह तीसरा दर्जा है इसकी जगह ३ का अंक लिखा है। जो कामों में हानि हो और मारभी डालें तो चौथा दर्जाहै इसकी जगह ४ का अंक लिखा है।

और हर दरजे में तीन२ रुतबे हैं आदि मध्यम अन्त परंतु हर औषधमें इन रुतबोंको जानना कठिनहै और जोऔषधें बाहर लगाई जाती हैं उनमें तो अत्यंत ही कठिन है।

तर औषधों की गरमी पहिले दर्जे से नहीं बढती क्योंकिजो गरमी अधिकहो जावेगी तौतरी जाती रहेगी और यहभीध्यन रखना चाहिये कि दरजे और रुतबे जो ऊपर लिखे गये हैं उनमें हकीम लोग आपस में कुछ अन्तर भी रखते हैं।

हिन्दी वैद्योंने औषधों के दोही दर्जे ठहराये हैं पहिला स्थूल जिसमें पहिला और दूसरा दर्जा आगया और दूसरा महा जिसमें तीसरा और चौथा दर्जा आजाता है।

हमने आगे गरम की जगह [ग] और ठंडे की जगह (ठ)

और तर की जगह (त) और खुश्क की जगह (ख) लिखा है ।

पहिले दरजे की गरम औषधें ।

चना लादन राख कौडी जंगली शाहतरा एलुआ इफसंतीन बाबूना. तेंदुआ, कर्ता के बीज. आदि ॥

दूसरे दरजे की गरम औषधें ।

करफस, कुंदर, मस्तगी. गर्ब्कीजड, सफेद, और काली माजरीयून की जड बादरूज जरावंद तवील और मुदहरज शहद चिरायता केसर अनसल सोया विरंजासफ नमक फरासियून मंधक सलारस शहद के छत्ते का मैल इसका कस त्रिलसान उटंगन के बीज मेथी कुमाडल हिमारका उसारा बुनके पेडकी छाल आदि ।

तीसरे दरजे की गरम औषधें ।

कमाजरीयूस दौना मरुवा नाना जलीहुई फिटकरी पुरानी शराब गार इस्पन्द मूली हम्मामा अनीसून इफतीमून जावशीर हाशा तज शहिअरमनी पहाडी करफस अजवायन वच, खरनूबनिवती संभालू के पत्ते और बीज तगर पहाडी पोदीना सुद्दाब सिकंजवीन दूध जलेहुए बाल फोडनजन नहरीकरोया काशिम अखरोट आदि ।

चौथे दरजे की गरम औषधें ।

लहसन पियाज जुबदुलबहर जंगली सुद्दाब गंदना दूधवाले पेडोंके कीडे फराफियून कूठ कुतगन आदि ।

पहिले दरजे की ठंडी औषधें ।

ताजे छुआरे बिसफायज बाजरा कंगनी खशखाश बनफशे के पत्ते बिना धुला अकाकिया मुल्हत नैके पत्ते नीलपनीर

कांच, सरमक. अमरूद. नाशपाती. निशास्ता, हिन्दवा. मामीसा, तांबे का बुरादा, शिंगरफ का तेल. आदि ॥

दूसरे दर्जे की ठंडी औषधें

तरबूज, ईसबगोल, कच्चा जैतून, हरामाजू. कद्दू. वारतंग. मूंग. ककडी. हिलयून के पत्ते. शफतालू रांगा. सिमाक. उतरुज के छिलके आदि ॥

तीसरे दर्जे की ठंडी औषधें

कुलफा, लोनियां, चूका, उतरुज, बडी और छोटीसदाबहार काली खशखाश. काकसाग, फेनछतर. जलनार. आदि ॥

चौथे दर्जे की ठंडी औषधें

अफीम. शुकरान. धतुरा, काली माजरीयून. और सब औषधें जो सुन करने वाली हैं ॥

पहिले दर्जे की खुश्क औषधें

मुलहटी, मीठाबादाम, हंसराज, बिसफायज. खरबूजेके बीजों के छिलके. केसर; मोथा. कुन्दर. अमरूद. नाशपाती. गोखरू नीलकी जड. बाबूना. उटंगन के बीज. हब्बुलगार, छोटी और बडी सदाबहार. अखरोटकातेल.सोंफ. सातर. जौकेसतूू आदि

दूसरे दरजे की खुश्क औषधें

मूली. जुन्दवेदस्तर. बुन. बालछड शाहतरा. मस्तगी. शहद, मुरमक्की. जंगलीबैंगन, चाय, नीलोफरकीजड, बिलसान. जराबंद, जिप्त शैलम. शहदानज. चिरायता, करसना. करम्न मकडीका जाला, जावशीर का दूध आदि ॥

तीसरे दरजे की खुश्क औषधें

लहसन, अनीसून, इफतीमून, तगर, जलनार, हींग. चने जूफा. तज. मरू. दौनामरुवा. जापन. जायफल, सातर, बुलूत

अक्राक़िया, इफसंतीन. अभल. माजरीयूनकीजड. बिलसान. नमक हाशा. चूका, उतरुज. दारशीशआन नतरूनवर्री. मूली का तेल. जलाहुआ केंकडा. सुरमा. बागी सुद्दाव. जलीहुई फिटकरी. फलोंजी. जलेहुएबाल. एलुआ. सिमाक. फादानिया केसूर. करोया. वच. मुश्क तरामशी, अजवायन. आदि॥

चौथे दरजे की खुश्क औषधें

राई सुद्दाबवरीं, गन्दना, अफरीनियून कुतरान अफीम. धतूरेका फल आदि ।

पहिले दरजेकी तर औषधें

रोगनगुल. काहू. पालक गाउजवां खुसयतुस्सालिव शफतालू वनफशे के पत्ते चिरोंजी इंजीर आदम. तोदरी, सौसन, का उसारा ॥

दूसरे दर्जे की तर औषधें

कुलफा. लोनियां. तरबूज. कद्दू, मिशमिश. अस्पगोल, पलवल ॥

अ, ई, उ,

अस्पगोल—ठ, ३ तर, पित्तोंको ठीक करता है ॥
अनीसून ग. २ ख ३ कफको ठीक करता है ॥
मुलहटी ग, २ ख १ कफको ठीक करता है ॥
इंजीर ग, १ त, २ सौदाको ठीक करता है ॥
इस्पंज--ग. १ ख, २
ईजरूत .ग २ अंत, ख, २ आदिमें ॥
अकाकिया--ठ२ख२याठ१ख२रुधिरकेदस्तोंकोबंधकरताहै,
उस्तखुद्दूस--ग १.ख १. सौदाका जुल्लाव है ॥

इफसंतीन–ग १, ख २, पित्तों का जुल्लाव है ॥

इज्ज़ात–ठ १. त. २ पित्तों का जुल्लाव है ॥

इफतीमून– ग ३ ख ३ सौदाका जुल्लाव है ॥

आमला--ठ २, ख ३. आदि में सौदाका जुल्लाव है ॥

इस्फानाख–अर्थात् पालक ठ १, त १. आदि में. उलटी में पित्तों को निकालता है ॥

अवहल--ग २, ख २,

अनारमीठा--ठ, त १. दिलको पुष्ट और खुश करताहै

अवरेशम- अर्थात् कच्चारेशम ग १. ख १. दिलको पुष्ट और प्रसन्न करता है ॥

उशना अर्थात् छडीला–ग. ठ जिगर को पुष्ट करता है ॥

अजफारुत्तीव--ग २ ख २. जिगरको पुष्ट करता है ॥

उशनान--ग २. ख २ या ग ३. ख ३.

इस्कूलूकन्दरीयून– ग १. ख २.

उरज अर्थात् चांवल--इसको कुछ लोग पहिले दर्जे का गरम बतलाते हैं और कुछ लोग ठंढा कहतेहैं कुछ मौतदिल जानतेहैं और दूसरे दर्जे का खुश्क है. और कुछ लोग यह कहते हैंकि इस का असर मिलाहुआ है और यही बात ठीक मालूम होतीहै

अम्बर--ग २. ख १.

ऊद अर्थात् अगर--ग २ अंत में ख ३.

उन्नाव--गरमी और सर्दीमें मोतादिलहै और तरीभी इसमें पाई जाती है ॥

इनबुस्सालिव अर्थात् मकोह--इसके पानी में गरमी है इसको लोग गरम और ठंढी बताते हैं ॥

असल अर्थात् शहद--ग २, ख १,

इल्कुलत्तम--गोंद है बतम के पेडका, ग २, ख २ अन्त में ॥

ब,

बीदाना-ठ २. त २. पित्तों को ठीक करता है ॥

बादियान-अर्थात् सौंफ ग३ आदि ख३ अंत में कफको ठीक करता है ॥

बिरंजास्फ-ग ३ ख ३ आदि में कफको ठीक करता है

बाबूना-ग ख

बेदकेपत्ते-ठ. त.

बेदकेफूल-ठ, २ त १

भंग-ग ३ ख ३

बादरंजबोया-अर्थात् बिल्लीलोटन और फारसी में इसको बालंगू कहते हैं ग २ ख २ मध्यम में।

बूराअर्मनी-अर्थात् खारीनोंन ग ३ ख ३

बिहार बिही- अर्थात् दिहीके साजेफूल मीठाठंडा और तरहोताहै और मोतदिलभी कहतेहैं दिल और भेजे और मेदेको पुष्टकरताहै और भेजमें गरमीनहीं चढनेदेता और गरम खफकानको दूरकरताहै

बिहारसेब- इसका गुलकन्द दिल और भेजे की कमजोरी को लाभदायक है ॥

बिहार अमरूद-दिलको पुष्ट और प्रसन्न करता है।

बिलादुर-अर्थात् भिलावा ग ४ ख ४ भेजे को पुष्टकरता है।

बुंदुक-ग १ ख १ भेजे को पुष्ट करता है ॥

बुसुद-ठ १ ख १ दिलको पुष्ट और प्रसन्न करता है।

बहमन-सफैद-ग २ ख २

बहमन लाल-ग ३ दिलको पुष्ट और प्रसन्न करता है।

बादरूज-ग २ ख १ दिलको पुष्ट और प्रसन्न करता है।

बायबिडंग-ग. २ ख. २ अन्त में

बारुजद्द-अर्थात् गोहकी बीट ग, २ ख २

प,

परसियावशां--अर्थात् हंसराज. मोतदिल ग. ख.

त,

तुख्मकुशूस--ग. १ ख २ सडे हुए कफको रगों से निकालता है तुख्म बीज को कहते हैं, इसकी जगह तु लिखा है ।

तु० खरबूजा....ग. १ त. २ सौदा को ठीक करता है ।

तु० मरू—ग, २ त २, सौदाको ठीक करता है ।

तु० सोया--ग३ अन्त ख २ आदि उलटीमें कफको निकालता है

तु० गाजा....ग, २ त, २

तु० मूली--ग ३ ख. २ उलटी में कफको निकालता है ॥

तुर्बुद--ग, ३ आदि ख, ३ अंतमें कफका जुल्लाब है ॥

तमरहिन्दी--अर्थात् इमली, ठ १ ख २ पित्तों का जुल्लाव है ॥

तुरंजबीन ...ग. १ त, १

तम्बोल—अर्थात् पान ग, २ ख २

तरबूज....ठ १ आदि ग २ अंत

ज, च

जुन्दबेदस्तर--अर्थात् दरयाई कुत्ते का फोता ग. ३ अन्त ख, २

जौ-- त १ ख २ आदि ॥

जलनार ...अर्थात् गुलनार, ठ २, ख २ आदि में ॥

जदवार—अर्थात् निरबिसी, ग ३ ख ३ आदि में दिलको पुष्ट और प्रसन्न करती है ॥

जायफल....ग२ अंत; ख ३ जिगरको पुष्टकरता है ॥

जाफरान.... अर्थात् केशर, ग १; ख१ ;

जूफासूखा....ग २, ख २ अंत में

जंजबील....अर्थात् सोंठ; ग ३ ख३

जरम्बाद अर्थात् नरकचूर ग२ ख२ अंत दिलको पुष्ट और प्रसन्न करता है

जाक-ग३ ख३
जिफ्त — ग,ख
जरीनज-अर्थात् हरताल पीली ग३,ख३, और लाल ग४ख४
चिनार-ठ, त

ह

हुजज-अर्थात् रसौत, गरमी और ठंढ में मौतदिल है ख२
हिलतीत-अर्थात् हींग ग४ आदि ख२ अंत
हब्बुल मुल्क-दूध उसका ग३ ख३ और पत्ते औरदाने उसके ग३, ख३, अंतमें
हब्बुलनिल-अर्थात् कालादाना-ग३ ख३ कफका जुल्लाव है।
हुरमुल अर्थात् इस्फन्द ग३ ख३ कफका जुल्लाव है।
हजरलाजवर्द —ग१ ख२ सौदाका जुल्लाव है।
हजर अरमनी-ग२ ख२ सौदाका जुल्लाव है।
हम्मामा-ग३- ख३ जिगरको पुष्ट करता है।
हब्बाविलसान-ग२, ख२ अन्तमें जिगरको पुष्ट करता है।
हजरुलयहूद-ग१ ख२
हलैलाजर्द-ठ१ अंत, ख२. पित्तों का जुल्लाव है।
हलैला काविली-मौतदिल ठंढ में ख१ सौदाका जुल्लाव है
हलैला काली-ठ१ मध्यम. ख२सौदाका जुल्लावहै हलैलाहरड को कहते हैं।

ख

खुरफा-अर्थात कुलफा. ठ३-त-२-पित्तोंको ठीक करता है
ख्यारैन-अर्थात खीरे ककड़ी के बीज.ठ२ त,२ पित्तोंको ठीक करता है।

खरवक-अर्थात् कुटकी, ग.३,ख२
खिश्त-अर्थात् ईंट. ग२. ख४
ख्यारशम्बर-अर्थात्-अमलतास. ग१ त१
खिसकदाना-अर्थात् कड, ग,२ ख१ अंत में कफका जुल्लावहै
खैरू-त.ठ
खिसक-अर्थात् गोखरू, ग, ख, या. ठ, ख. या मौतादिल।
खूबकला-ग,त,

द

दम्मुलअखवैन-ठ ३. ख ३,
दमागजानवरोंका-ठ, त. भेजेको पुष्ट करता है॥
दुरराज-अर्थात् तीतर ग, ख, १ , भेजेको पुष्ट करता है॥
दरोनज-ग ३, ख ३, दिलको पुष्ट और प्रसन्न करती है॥

र

रैहां-[तुलसी या नाजवो] ग १, ख १.
रेत-ख ३.
रोगनकेसर-ग २, ख १, भेजेको पुष्ट करना है।
रैवास-ठ २. ख २, दिलको पुष्ट और प्रसन्न करता है॥
रोगनजर्द-[घी] ग १, त १. अंतमें पुरानेमें खुश्की आजाती

स

सम्बुलतीफ [बालछड] ग२, ख.२, अंतकफको ठीककरतीहै
सिपिस्तां-[लिहसौडा] मौतादिल गरमीऔर ठंडमें, त१.सौदा
को ठीक करता है॥
सबूस-[भुसी] ग १. ख १,
सिरका-ठ २ ख २,
सुरंजान ग ३, ख २.

सोद-(मोथा) ग २. ख २.

सकमूनिया-ग ३. ख २, अंत पित्तों का जुल्लाब है ॥

सनायमक्की-ग २ अंत. ख १. सौदाका जुल्लाब है ॥

सुद्दाव-ग ३, ख ३,

सलीखा-(तज) ग २, ख २, अन्त. जिगर को पुष्ट करती है

साजिज-(तेजपात) ग ३, ख २. मेदे को पुष्ट करता है ॥

सफाल-ख, ४ ग, १

सरेश-ग २, ख २

सरतां-(केंकडा) ठ २. त २

संगयशम-ठ २, ख २

सरो — ग १, ख

सकखहैया (केंचली) ग २. ख २

सन्दल सफेद और पीला ठ३, ख२. और लालठ२ ख३ पित्तों को ठीक करता है ॥

सिब्र (एलुआ) ग ख

सातर — ग २, ख, २ अंत

समग (बबूलका गोंद) ग, ख२

सावन — ग ३, ख ३

बंसलोचन — ठ २. ख ३, दिलको पुष्ट और प्रसन्न करता है ।

श

शूनीज (कलोंजी) ग३, ख ३

शिब (फिटकरी) ग२. ख ३

शाहतरा — ग, ख२

शुकाई — ग २. ख२

शीरखिश्त — ग १ अंत और मोतादिल त. ख

शहमहन्जलायन — ग ४. ख २ कफका जुल्लाब है

शकर-ग१.त१ अंतमें और पुरानी. ख
शीर भेड-ग.त भेजेको पुष्ट करता है
शकाकुल-ग.१ तर. दिल को पुष्ट और प्रसन्न करता है
शादना-ठ.१ अंत. खर

ग-

गारीकून-ग १, खर कफका जुल्लाव है
गालिया — ग, ख. भेजे को पुष्ट करता है
गाफिस — ग१. खर जिगर को पुष्ट करता है
गावजवां — ग१, ख. सौदा को ठीक करती है
गुलवनफसा — ठ१. त१
गुलाव — ठ. या. ग
गुलाव के फूल — ठ१, ख. २ भेजे को पुष्ट करते हैं
गज्माजज — (झाऊ) ठ१ खर
गावरस — (बाजरा) ठ१. खर
गुलनीलोफर — ठ१. तर
गिलेमखतूम — ठ.२. ख.२ दिलको पुष्ट और प्रसन्न करतीहै
गिलेमुल्तानी — ग. ख

फ.

फिरंजमुश्क — (रामतुलसी)गर. खर दिलको पुष्ट औरप्रसन्न करती है
फादानियां — गरम दिलको पुष्ट और प्रसन्न करता है
फरफियून — ग३. ख३
फिंजन किश्त — (संभालू) गर खर

क.

काकला — (इलायची) ग बडी १, खर. छोटी. गर. खरकफ को ठीक करती है ॥

फरनफल – (लौंग) ग२. ख२

कुस्त – (कूट) ग३, ख२

फलफनार – ग२. ख३

फन्नगीपून – बड़ी, ग२ अंत ख ३ छोटी ग३ ख३ कफका जुल्लाब है ॥

फशरजनरज—(छिलके बीजोंरेके) ग१ ख२ दिलको पुष्ट और प्रसन्न करता है

फुरानिलहिमार जुल्लाब की औषध है

फमीदा . ग२ ख२

कासनी ठ२ ख२ पित्तों को ठीक करती है

किशनीज (धनियां) ठ२ ख२ पित्तों को ठीक करती है ॥

काहू – ठ३ ख३ अंत पित्तों को ठीक करती है ॥

कमून (जीरा) ग २ ख२ कफको ठीक करता है ॥

कुन्दर—ग १ ख१

कुन्दुश ग३, ख३ अंत

कद्दू – ठ२ त२

काकनज – ठ२ ख२

कवाबा – ग२ ख२

कहरुबा – मोतदिल गरमी और ठण्ढ में ख दिलको पुष्ट और प्रसन्न करता है ॥

करम्ब – ग२ ख२

करांया – ग २ ख२ मेदेको पुष्ट करता है

ल.

लबलाब – ठ २, – ख ३ पित्तों का जुल्लाब है

लोबिया लाल – ग १ अंत तर

लोबिया सफेद – मोत दिल गरमी और ठंढ में

लाख--ग २, ख ३, या ग १, ख २,

लागिया--ग ४. ख ४,

लोबतबरबरी -ग २, ख २,

म.

मामीरा--ग. ३. ख ३, अंत.

मुनक्का ...ग २, ख ३,

मुश्क....ग ३, ख ३,

मुर – ग ३ अन्त, ख२ अन्त,

मरजनजोश –(दोनामरुवा) ग २ अन्त ख. १

माहीजहरज – ग ३, ख ३, कफका जुल्लाव है, इसमें से छाल वांपर जाती है

मस्तगी – ग २, ख२ अन्त

मिलह निफती –(नमक दुर्गंधवाला) ग ३ ख३ कफ और सोदा को निकालता है ॥

मोम – ग २ आदि में

मोती – ठ २ ख अन्त दिल और भेजेको पुष्टकरते हैं ॥

मुर्ग,–ग १ अंत मौतदिल तरी में भेजेको पुष्टकरता है

मिश्कतरामशी – अर्थात् पहाडी पोदीना ग ३ अन्त मेदे को पुष्ट करता है ॥

मुर्दासंग ग३ ख,३ विषहै ऊपर लगाने से अच्छा मांस उत्पन्न होजाता है ॥

न.

नमक – ग,२ ख ३

नानकुलाग –(खुब्बाजी) ठ १ त १

नानख्वाह –(अजवायन) ग३ ख३ आदि में

नारंज – पीले छिलके और फूल उस के ग २ ख २

नारंज की खटाई—ठ २ अंत ख १

नारंजके छिलके और बीज ..ठ२ ख भेजे को पुष्ट करताहै ॥

नारदीन – ग २ ख २ जिगरको पुष्ट करता है ॥

नौशादर .ग३ खं३ भोजन को पचाता है. मेदे और आंतोंसे मवाद निकालता है

व.

वरकचांदी के–ठ १, ख १. दिलको पुष्ट और प्रसन्न करतेहैं

वरकसोने के--मोतादिल और गरमी रखते है दिलको पुष्ट और प्रसन्न करते हैं.

य.

याकूत – मोतदिल गरमी और ठंड में. ख २ दिलको पुष्ट और प्रसन्न करता है ॥

इतिसम्पूर्णम्

दवादेनेकावर्णन

रोगी के हाल ऋतु और शरीर के स्थान के अनुसार औषधें देनी चाहिये. और जो वस्तु भोजन में खाने के योग्य हो उन्हें भोजन में खाना चाहिये, और जो दवा की तरह पर खाने पीने और लगाने के लिये हों उन्हें इसी प्रकार से काममें लाना चाहिये अर्थात् जो औषध खाने की हो. उसके लगाने से कुछ लाभ न होगा

वह औषधें जो रुधिर के बिगाडको ठीककरें

चाहै वह बिगाड केवल रुधिर में हो या किसी और मवाद के निकालने से हो ॥

रुधिर के औटनेको रोकने वाली औषधें।

कासनी और काहूके बीज धनियां गुल्नार के फूल नीबूका रस सिकंजबीन उन्नाब चन्दन और केवडे का शरवत ॥

गाढे रुधिर को पतला करने वाली औषधें

आलूबुखारे का पानी सौंफका अर्क शहतरे का अर्क सिकंजबीन माउलअस्ल ॥

पतले रुधिर को गाढा करने वाली औषधें

बिल्ली लोटन रेहांके बीज हंसराज काबिलीहरड और बाकी औषधें रुधिर की ठीक करने वालीयह हैं ब्रह्म दंडी आबनूस और शीशम की लकडी नीम के फूल और पत्ते नीलोफर और बनफसे के फूल गाजरका शर्बत गुन्दी कचनाल नीलकंठी.

पित्तों की ठीक करने वाली औषधें।

ईसबगोल बीदाना कुलफा व कासनी खीरे ककडीके बीज धनियां सफेद चन्दन कपूर काहू के बीज बनफसे आलू नीलोफर और चन्दन का शर्वत कुर्स कापूर कुर्सतबाशीर मुलय्यन कुर्सतबाशीर काबिज ॥

कफकी ठीक करने वाली औषधें

सोंफ अनीसून छिली हुई मुलहटी जीरा दालचीनी मुनक्के बालछड खेरू खुब्बाजी इलायची बिरंजासफ माजून सीर माजून फिलासफा सोंठ की माजून जवारिश जालीनूस

सौदाकी ठीक करने वाली औषधें

लिहसौडा गावजवां खरबूजे के बीज मुलहटी इंजीर मुनक्के इफतीमून कनोचे के बीज सिकंजबीन इफतीमून मजून सुकरात याकूतीबूअली नौशदारू मुफर्रह दिलकुशा शर्वत बालंगू शर्वत गवजवां ॥

गाढे मवादको पतला करनेवाली औषधें।

अवहल. इमफील, चूका, सिरका, उस्तखुद्दूस हब्बुलिलसान उक्हवान. इंजीर. जुन्दवेदस्तर, राई. करतम, लहसन. सरकंडे की जड, संभालू, बाबूना, दारचीनी, मोथा, जादा. वजसूखा जूफा. कूट, सातर. पोदीना, जरावन्द, अजवायन, वटंगन, शोरा, अकरकरा. सिकंवीनज, सुदाब, नम्माम, ईरसा, हुर्मुल हुर्फ. मशकत्तरामशी, बिल्ली लोटन, करदमाना, कमाजरयूस

मुन्जिशें

वह औषधें हैं जो बिगडे हुये मवाद को पकाकर निकालने के योग्य करदें, अर्थात् पतलेको गाढा करें, जैसे खशखाशकाहूके बीज या गाढेको पतलाकरें जैसेसूखे जूफा और हाशाकाजुशांदा, या कडे और जमे हुये को नरम करें, जैसे अलसी और मेथी के लेप से कफ और सौदाकी सूजन नरम होजाती है।

पित्तों की मुंजिशें।

उन्नाव गुलाब के फूल वनफशे और नीलोफर के फूल शाहतरा कासनीके बीज और जड मकोह सिकंजवीन तुरंजवीन, लालशकर शर्वत आलू गुलकंद आफतावी।

मुनक्के, खैरूके बीज सोंफ अनीसून मुलहटी हंसराज शुकाई पीलाइंजीर गुलाव के फूल गुलकन्द सिकंजवीन।

सौदाकी मुंजिशें।

लिहसौढे उन्नाव गावजवां बिल्लीलोटन छिलीहुई मुलहटी हंसराज उस्तखुद्दूस शाहतरा शुकाई वादावर्द सोंफ तुरंजवीन गुलकन्द।

जुल्लावों की औषधें।

यह औषध बुरे मवाद को दस्त से निकालदेती हैं।

पित्तों के जुल्लाव ।

इमली, आलूबुखारे, तुरंजवीन, शीरखिश्त सनायके पत्ते पीली हरड, बनफशे और गुलाब के फूल कुशूस के बीज-अमलतास, इफसंतीन सकमूनिया शाहतरा एलुआ लवलाब शिवरम माजरीयून ।

कफ का जुल्लाव ।

बकायन कन्तूरीयून माहीजहरज गारीकून कालादाना तुर्बुद हस्तुल खिसकदाना बिसफायज कलोंजी शुकाई मीठी सुरंजान रेवन्दचीनी सोंठ गूगल वेदइंजीर के बीजोंकी गिरी और तेल अमलतास हब्ब अयारिज हब्बुसलातीन फराफियून माहूदाना कुसाउल हिमार ।

सौदाके जुल्लाव ।

इफ्तीमून उस्तखुद्दूस बिल्लीलोटन आमला लाजवर्द हजर अर्मनी काबिली हरडसनायमक्की कुशूस बिसफायज गारीकून कालादाना अयारिज फीकरा रेवन्दखताई ।

मूत्रलाने वाली औषधें ।

यह औषधें पतले और बुरे मवाद को मूत्रमें निकालती हैं ।

ठंडी ।

खीरे ककडी और कुलफे के बीज खरूके फूल खारखिसक कद्दू ककडीऔर तरबूजकापानी खरबूजे और चिरचिरेकेबीज अलसीके बीज आश जौ कासनीकापानी बीज और जड़ का कनज नीबूका अर्क मिलाहुआ सोरा सिकंजवीन ।

गरम ।

करफसके बीज सोंफ अनीसून बिरंजासफ सूखाजूफा कबाबा अजवायन सुदाव गाजरके बीज हंसराज बालछड

अमलतास मीठी कूट केसर तज तगर ऊदविलसान अन्न हल कडके बीजों की मीगी कलोंजी पोदीना खुब्बाजी चनों का पानी ।

मौतदिल ।

हंसराज खरबूजे के बीज गरम और ठंडी औषधोंको मिलाकर पीना ।

हैज बढ़ाने वाली औषधें ।

तज कलोंजी अवहल हुरमुल जुन्दवेदस्तर बाय।विडंग त्रिर जास्फ कर्दमाना बाबूना मीठा कूट कबाबचीनी हंसराज फर सीयून ऊद फादानिया जिन्तयाना अजवायन जाविशीर जाद सुदाब केसर तगर नम्माम सूखाजूफा करफस दोना मरुवा कमाजरीयूस बुन मश्कतरामशी चनों का पानी अमलतास के छिलके मोथा तुरमुस ।

वीर्य निकालने वाली औषधें ।

करफस इफसंतीन सोंफ तुर्मुस दरमनातुरकी सुदाब ॥

उलटी लाने वाली औषध ।

जोमेदे और उसके आस पाससे मवादको उलटीमेंनिकालतीहैं मूली सोये कडवे बादामका पानी और बीज खरबूजे की जड बिना छिली मुलहटी शहद सिकंजबीन लालशकर गरम पानी जरजीर के बीज कुन्दुश मवीजज मावल अस्क भेडका दूध माजरीयूनके बीज लाल लोबिया अश्तगार॥

उलटी लाने वाली पुष्ट औषधें ।

कुटकी राई जौजुलकै कंकरजद जीवेलहक ॥

भेजे की पुष्ट करने वाली औषधें ठंडी और तर

मोती आमला बिही सेब और अमरूद के ताजे फूल गुलाब और गुलाब के फूल नारंज ॥

गरम ।

बलादुर. फिन्दक, बिल्लीलोटन, सोंठ, मोथा, बालछड मुश्क ऊद, अम्बर, गालिया, लौंग, कुन्दुर, रोगन, अवहर जानवरों के भेजे, मुर्ग, तीतर, भेडका दूध ।

और बाकी यहहैं. हरडका मुरब्बा. सेव बिही अमरूद नाशपाती फिरंजमुश्क जायफल, केसर, उस्तखुद्दूस. चमेलीकद्दू और काहूके बीज सफेद चन्दन बादाम, शर्बत नारंज ।

दिलकी पुष्ट और प्रसन्न करने वालीठंडी औषधें

अमरूद. नाशपाती. अनार, आमला, इमली, सेव, चन्दन, बंसलोचन, गिलेमखतूम. रैवास. वुसुद. कहरुबा. कपूर. गावजवां, धनियां, गुलाबके फूल. मोती. नीलोफर, नारंज, हरड, याकूत, चांदीके वर्क ।

गरम ।

सोनेके वर्क, उतरुजके छिलके. उस्तखुद्दूस, रेशम. बहमनें बिसफायज बिल्लीलोटन बादरूजजदवार दारचीनी नरकचूर दरूनज केसर सुम्बुल मोथा तज शकाकुल ऊदगरकी अम्बर फिरंजमुश्क. फादानियां, इलायची, लाजवर्द नाना ।

बाकी यहहैं, छडीला. इजफारुत्तीब. आलू. धनियां, मूंगा, मूंगे की जड, नीलोफर, बजरुलहुम्मास, पान हरड सोसन ऊद अम्बर याकूत फिरंजमुश्क मुश्क ।

जिगरकी पुष्ट करने वाली औषधें ।

ठंडी कासनी जरिश्क अनार, और उनके पानी लुआबईसबगोल शर्वत सन्दल, सिकंजवीन ।

गरम--छडीला, इजफारुत्तीब. जायफल. हम्मामा, हब्बविलसान. दारचीनी, गाफिस, लौंग. तज, कुशूस. रूमी मस्तगी,

नारदीन, सौंफ,कर्फसके बीज, मुलकन्दअसली, आसानासिया दवा उलकरकम ।

और वाकी यहहैं इफसन्तीन, नरकचूर मोथा दरोनज,तगर इलायची जरावंद, विल्लीलोटन मुनक्के गुलाबके फूल, निशास्ता मेहकापानी ऊदहिन्दी ।

मेदे की पुष्ट करने वाली औषधें ।

ठंडी आमला अनारदाना. सिमाक वहेडा. हरड का मुरब्बा इड बिही वंसलोचन गुलाबके फूल ॥

गरम--सरकंडेकी जड तुरंजके छिलके विल्लीलोटन जायफल दारचीनी, नरकचूर मोथा, तज तेजपात, लौंग इलायची: कुन्दुर करोया रूमीमस्तगी, मशकतरामशी नाना ऊदगरकी ॥

वाकी यह हैं कच्चे आलू, जामन, तगर,गोल मिरच, ऊंटनी का दूध छडीला, कचनार, पोदीना, ऊदहिन्दी, संगदान, मुर्गदही हम्मामा ॥

जिगरकी हानिकारक औषधें ।

ठंडा पानी ,नारंगी छुआरा, इंजीरतर, इंजीर आधिक, सूखा हुआसिरका नितखाना, जाडोंका शहद, काली हरड, वसवासा, हब्बुलबान, दारशाशि आन ॥

मेदे को हानि कारक औषधें ।

तिली, मसूर माउश्शईर,हाळम के बीज. मीठे आलू, उन्नाव अलसी के वीज,मुअसफरके फूल, अदरक वौरक. इंजीरसाफ सिया जादा हसरम,हम्मामा, पुराना पनीर,गरम पानी.गौका घी. मिठाई ॥

भेदकी ढीला करने वाली औषधें ।

हब्बुलखान, हजर अर्मनी. पेठे के बीज, सज्जी. लोबियाका साग, नारियल का दूध ॥

भेजेकी हानिकारक पीडा उत्पन्न करनेवालीऔषधें

इजफारुत्तीव की धुनी. बजरुल्बनज, कुन्दर गंदना, सोया लहसन पियाज, खैरूके फूल,सूंघना मंझूर मेथी,ककरीके बीज बैगन मूली, खुबफलांजुरुज,तूत इफसंतीन पालक.संभालूमर कंडे की जड, तदर्व. बुल्त. जादा, गुलनार. जायफल.लुबान पैवन्दमरियम हींग खशखाश इज्जास अश्तरगार काबिलीहरड तम्बाकू सरशफ ॥

पेटकी नरमकरनेवाली औषधें ।

मूली,पालक, करम्ब, बिनोला, चुकन्दर,गन्नेकारस,शहदकफ समेत शफतालू सिरका अंसिली,हब्बुसमना कुलफे और बथु-ये का साग भेडका दूध, बकरीका दूध मक्खन बहुत खाना तरा,सौंफ,हरड,मना,इमली,गुलाब,तुरंजबीन, सौंफ की जड और अर्क गुलकंद ॥

पेटबन्दकरनेवाली औषधें ।

बकरी, और भेड का कलेजा, भुनाहुआ भुनाहुआ बाकला अंजबारकी जड जौका सतू,कल्लेपाये भुनेहुये कचनार,जीरा सिमाक रैहांकेबीज,ईसबगोल कनौचा बारतंग, बेलगिरी हब्बु-लआस इलायची, सौंफ अनीसून, निशास्ता गिले अर्मनी, जहरमुहरा ।

सुदा और बात दूर करनेवाली औषधें ।

सरकंडेकी जड शाहतरा, गारीकून सौंफ, अफीम इफसंतीन सातर बसबासा संभालू जावशीर, कर्फस उस्तखुद्दुसफती

मून जिन्तियाना जीराकिरमानी. ईरसा. अजवान. हालों, गाजरके बीज,सोंठ,दाराफिलफिल, कबावचीनी, सुद्दाब,दारचीनी केशर, दोनामरुवा, जरावंद, कबाबचीनी, कुशूम,इस्पन्द,अनीसून,ऊद, तुरमुस,हाशा, सलारस कस्तूरीयून फरसना ।

कब्ज करने वाली औषधें

तुरंज के छिलके,सगदानमुर्ग की खाक, बुलूतके फल,पिस्ते के बाहर के छिलके जरिश्क. हब्बुलास. बाकला,बंसलोचन दम्मुल अखवैन,गुलनार बुसुद अखरोट, सिमाक,मसूर,वारतंग सरकंडे की जड, सरोंके फल, जामन और आम की गुठली की मिंगी मस्तगी, चना, चांवल, माई माजू, कुन्दुर, तीनम खतूस ईसबगोल भुना हुआ,सोने के वर्क, अमरूद कहरुवा रैहां के बीज,निशास्ता, जारूर,गावरस, नारदीन, कुनार की गुठलीकी मिंगी ॥

नींदलाने वाली औषधें

खशखास और पोस्त का तरेडा खशखास के फूल सूंघना सोया सिरहाने रखना केशर मुअसफरके फूल बनफशे के फूल हरा धनियां आशजौ बादाम का शीरा और रोगन रोगन गुल रोगन नीलोफर हाथ पांव मलना पानी की आवाज गाना हवा से पत्तों के हिलने की आवाज काहूका साग किन्न की मिट्टी सोते हुऐ आदमी के मुंहपर छिडकना अफीम तुफाह हम्मामा भावूना ॥

नींद खोने वाली औषधें

पोदीना सिरका राई लौंग सिर और माथे और कनपटी पर लगाना गोल मिरचें मुश्कनमक सिरका कपूर और गुलाब के फूल सूंघना अयारिज फीकरा से कुल्ली कराना फाखता या चिमगादडकी बीट सिरपर बांधना चाय और बुन पीना खट्टा अनार नींबू कन्दका शर्बत गुलाब ॥

सोतेमें बुरेबुरे स्वप्न दिखलानेवाली औषधें

गन्दना. लोबिया. बाकला कच्चा, प्याज, शराब ताजा, चितसोना. आलू. बैगन. सौदा.उत्पन्न करनेवाली वस्तु.किम्वती

बुरे स्वप्न बन्द करनेवाली औषधें

बिलौर और जैतकी लकडी, गले में लटकाना, फिटकरी, सिरके नीचे रखकर सोना. दरोनज,कुलफाका साग.अकरकरा सोना, मर्कशीशा, हजरुलजजान ॥

पचाब करनेवाली और भूख लगानेवाली औषधें

नीबू . .नीबू और तुरंज के छिलके, गोल मिरचें सिकंजबीन सफरजली जारिश्क सिरका मस्तगी कुलीजन नमक इलायची ऊंटनी का दूध ठंडा पानी फिरंज मुश्क मेवे की पुष्ट करने वालीवस्तु सिवाय केशर के ॥

दांतों और मसूडोंकी पुष्ट करनेवाली औषधें

गुलनार, फिटकरी, कुन्दुर, गुजन, : बारहसींगा के सींग जले हुए मिस्सा हरडके छिलके छालियां अकरकरा सिमाक गुलाब का जीरा, मोथा, माजू, माई मस्तगी; इलायची काली मिरच जली हुई, कसीस, बंसलोचन, भिलावाजलाहुआ पीली हरड की गुठली जली हुई लोहे का बुरादा गुलाबकी कली-नास जलाहुआ तमाकू सुन्दरूस इंजरूत संगजिराहत कवाबा खन्दा पीलीकौडी मीठाकूट मोती मोलसिरी की छाल सिरसके बीज जरम्ब सुक रामक मौरद के पत्ते समन्दरफैन छिलीहुई मसूर इमली के बीज सुरमक्की नै और मूंगे की जड ॥

दांतो और मसूडों की हानिकारक औषधें

दूध, ऊंटनी का दूध मूली. वर्फ और शोरे का पानी खटाई

गरम गरम वस्तु पर ठंडा पानी पीना ठंडी वस्तु पारा उश्नान

दृष्टि को पुष्ट करने वाली औषधें

आंमला, पीली हरड, बादाम, सौंफ मुन्डी पकाहुआ प्याज शहद जली सीपी और रेशम सुरमा सोने और चांदी का मैल गोल मिरच लगाना मुश्क और केशर और मोती पीसके सोने की सलाई से लगाना चन्द्रमाकी ओर देखना सिरका ॥

वह औषधें जो मवाद को आंख पर न गिरनेदें

तरबूज के छिलके, कुन्दुर, करनुल, इक्लदक्षीक, आवनूस, वजरूलबनज केशर स्त्री के दूध में मिली हुई बनफसा लबलाब छाछियां तिरियाक फारूक इंजरूत मकोय विही मसूर वादरुज सफेद चन्दन. बकायन फिस्तकजरवर्द अकाकिया नौसिमाक अमरूद बुसुद तूतिया रसौत कुतरान ॥

दृष्टिको हानि कारक

खारीभोजन, गरमपानी, सिरपर डालना, सूरजको देखना वैरी अर्थात् शत्रुको देखा करना मसूर कुलफा चूका करम्ब काहू चिरचरा गन्दना विषय की अधिकता धूप में आग के पास बैठना चमकीली वस्तु देखना ॥

स्त्रीसंगकी चाहनाको पुष्ट करने वाली औषधें

एकवर्षका बकरी का बच्चा, मुर्ग, तीतर, मछली, अंडे चिडिया शलजम गाजर मूली प्याज और उनके बीज गाय और भेड गाय का घी खीर छुआरे बादाम फिन्दक हब्बुरसमना पिस्ता चिलगोजा सालब शकाकुल कुलीजन बूजीदान गोखरू बहमन तोदरी तिली हालों चिराचेरेजे के बीज, कवांच के बीजों की मिंगी मूसला सेंमल मूसली अकरकरा मस्तगी, गंदने के बीज, दालचीनी, दार फिल फिल

खशखाश सफेद. सोंठ, उशना. तगर. नरकचूर. वाकला, इन्द्रजौ. लोहे का मैल. रेगमाही. माहीरोबिया. माही सकूनकूर, मुश्क, मोती. चिडिया और उसके अन्डे, अंगूर. करफस. वसवासा, कतीरा. अखरोट. पनीर. मायाशुतर. जिरजी. हब्बुज्जलम. हींग, सुरंजान, फिस्तक. तज कूट. चने, भेडके बच्चे का भेजा. हिलयून के बीज, लोविया नारियल कीगिरी. इंजीर

विषय की चाहना को खोने वाली और हानिकारक औषधें।

फिरंजमुश्क. कासनी, काहू. उन्नाव. ईरसा कूटहिन्दी. मकोडफली. धनियां. मकोह. कच्चा लहसन. नीलोफर की जड. काली खशखाश. कपूर. पानी अधिक पीना. विषय के पीछे पानी पीना. खटाई. इमली. आलूबुखारा. नीबू. बादी तोडने वाली वस्तु. चूका. बकलाय मानियां ॥

वीर्य उत्पन्न करने वाली औषधें

गन्दनेके बीज शकाकुल मीठा. सुरंजान. कद्दके बीजों की मींगी पियाज. गौका दूध- ऊंटनी का दूध बुरा मिलाहुआ- वतख, मुर्ग, हब्बुलम. बूजी. वहमन, बादाम पिस्ता, शलजम- हालों. चना. इन्द्रजौ, सुगाम. नारियल. तोदरी. अलसी के बीज, छडीला. तुरंजबी. सोंठ. मुश्क, केसर ॥

विषय करने में अधिक ठहराने वाली औषधें

अफीम. जायफल. वीर बहुट्टी. गूगल. धतूरे के बीज. और पत्ते खुरासानी अजवायन. लौंग. काली मिरच. बसबासा. केसर मस्तगी. दारचीनी. सोंठ. कपूर. मुश्क. अकरकरा. बबूल के फूल. गोमाके बीज. गिलोयसत ॥

विषय करने में मजा देने वाली औषधें

लोंग. दारचीनी. कवाब. अकरकरा. मवीजज कुचलकर और सोंठ शहद में भिगोकर थूकके साथ लिंग पर मलकर विषयकरना । सिरके बाल पीसकर, वीरबुहुटी, पारा केसर कपूर, कबूतर की बीट ॥

लिंग के बढाने वाली औषधें

केंचुये, अकरकरा सफेदकनेर की जड की छाल घोडे के सुम, लोंग, जायफल. दारचीनी. केसर, रोगनजैतून मलना, कर्फस के पानी से कईवार धोना. बकरीके घीसे कईवार चिकनाना. केंचुये और जोंक सूखे हुए सोसन के तेल में पीसकर मलना ।

भगको तंग करने वाली औषधें

बकायन और अनारकी छाल, मौलसिरी की छालको पीसकर कपडे में लगाकर रखना, माजूफल और कपूर और शहद मिला मिलाकर भग में लगाना. बबूल. इसपंज. काली तिली गोखरू, इमली के बीज वीरबहुटी ॥

नीचे लिखी हुई औषधें से बच्चा जल्दी जनाजाताहै

गूगल. तज. गुलनार. बकायनकी छाल. नीलोफर की जड. मोथा. वारतंग और मकोय का बसरा. काली खशखाश लगाना. चुम्बक पत्थर का बडा टुकडा उलटे हाथ में पकडना- बुसुद सीधा जांघपर बांधना. दारचीनी, खाना. तिली का तेल अलसी के लुआब में मिलाके भग में लगाना ॥

मरेहुए बच्चेको निकालने वाली औषधें

जरावन्द. अवहल अलसी तज. गोल मिरच, बूजीदान हंसराज काली कुटकी । कालाजीरा माजू पीसके पीना कलौंजी,

हरीमहंदी की छाल, बांस के पत्ते औटाके पीना, पीपलामूल और काली कुटकी पीसके विरोजा मिलाके टूंडीपर लेपकरनां और पिसाहुआ कूंदश शहदमें मिलाकर टूंडी या पेडूपर लेपकरै

मशीमा को निकालने वाली औषधें।

हंसराज, करम्बके बीज, कबूतर की बीट, तज, कलौंजी. विरंजासफ, जुन्दवेदस्तर, ईरसा पिसाहुआ, अवहल रहममें टपकाना, और पीना, बाबूना. हब्बुकली ॥

मसाने और गुरदेकी पथरी की तोडने वाली औषधें

तगर, दिरंजासफ, समग आल्ह, खरबूजेके बीज, गोखरू, हंसराज, सौंफ, काले चने, हजरुल यहूद, संगसरमाही, हब्बुल किल्त, कडुआ बादाम मोथा. सिकवीनज, बिच्छूकी राख ॥

सूजन को पटकाने वाली औषधें।

फमाजरीयूस, झाऊ, हाशा, जराबन्द, नाखूना, बज, खरजहरा, हजार जिशान, जादा. जावशीर. उशकहंसराज, जंगली पियाज, चाबूना, बिरंजासफ, सरकन्डेकी जड, बाकला, तगर, उकहवान, खेरू, जिफ्त, बतमका गोंद, लादन, नम्माम, मुलहटी. तुरमुस, कुसाउलहिमार, दोना मरुवा. गाफिस, किन्ना, फौदना. खुरू, जुन्दबेदस्तर, राई, दारहल्द, खैरी दारचीनी, ककडा, सोया, एलुआ ॥

सूजन को नरम करने वाली औषधें।

गोंद, जैतून, वजरुलवनज, गूगल, मोथा. बेद इंजीर और बिनौला और खुरूका तेल, बतककी चर्बी, नलीका गूदा, ईसवगोल, खैरू और कनौच, जिफ्त, इलकुलदतम, ईरसा, सलारस, नाखूना, करम्ब, अम्बर, मोम मुरलादन, सुक, अलसी, महंदी, ॥

सूजनको पकाने वाली औषधें ।

नाखूना, ईरसा, करम्ब, वतम का गोंद अम्बर क्वादन, मोम, खैरूके बीज, मुर, सुरू ॥

सूजनको फोडने वाली औषधें ।

जंगली पियाज, गंधक, हरीजाज, हुर्फ, पेडोंका दूध, कबूतर की बीट, चना, कूट, फरफियून, साबन, कळकतार, शनजार जरारीह ॥

बुरेमांस को गला देनेवाली औषध ।

इंजरूत, उशनान, नमक, मुरदासंग, तांबेका बुरादा, सफैदा सैन्दूर, जलीहुई सीपी, जंगार, तूतिया चूना ॥

साफ करने वाली औषधें ।

अवहल, जिफत, शोरा, नमक, मिसरी, आवकासा, ईरसा, शहद, गंधक, हब्बाविलसान, इंजरूत ॥

कीडे मारने वाली औषधें ।

वायविडंग, इफसन्तीन, जादा, सूखाजूफा, करोया, हुर्फ.पोदीना, कमीला, शीह, कलौजी, शफतालू के पत्ते तुरमुस ॥

घावको भरने वाली औषधें ।

सुर्मा, समगआलू, इंजरूत, इस्फंज, वर्कतुलूत, दम्मुलअम्बवैन, जिफत, जरावन्द, वातंग, कालाजीरा, ईरसा, एलुआ. गिलेम खतूम, संगजिराहत, राल, कतीरा, गुलनार सफैदकनेर सफैद मोम, गौका दूध धोया हुआ, लिसानुल हमलका पानी ।

घावको सुखाने वाली औषधें ।

जलीहुई सीपी और छुआरा और घोडे गधेका सुम, इंजरूत, छडीला. मुरदासंग. एलुआ. धोयाहुआ चूना, तूतिया. सुन्दरूस, ।

नाक.मुंह और दस्तोंके रुधिरको रोकनेवाली औषधें।

दम्मुल अखवैन. मस्तगी. कन्तूरीयून. सरोके फल. धनियां,

जरिश्क, बुसुद, रसोत, जीरा, कपूर, अंजबारकी जड, पोदीना, गेरू, बादरूज, सुरमा, बुलूत, बारतंग, कहरुवा, निशास्ता, बजरुलबनज, शादना, गुलनार, कुन्दर, माजू. गिलेअर्मनी, बरगदकी डाढी, पत्थर, रेवन्दचीनी, झाऊका फल, पेठेके बीज जुन्दवेदस्तर, साफासिया, मवाद को खेंचने वाली है। नूरा, गंधक सफेद, राखका पानी बाल उडानेवाली हैं॥ मोम, निशास्ता, कहरुवा, कतीरा, जमानेवाली हैं॥ इंजरूत, छडीला, धुलाचूना तूतिया, एलुभा, जलीहुई सीपी, साफ करने वाली हैं। मकोह ईसबगोल, गुलनार, छलियां, धनियां, मवादको रोग की जगह नहीं गिरने देतीं। अफीम, अफरीबीयून, बचनाग, निफ्त, मारडालने वाली हैं॥ राई, फौदनज, इंजीर, लालानोमानी, लाल करने वाली हैं॥ अफीम. इस्पन्द, कुचला, जर्वकी जड. शाहतरे की जड, तम्बाकूके पत्ते और बीज, कुन्दुर, थूकरान लोंग, धतूरा का फल, बजरुलबनज, काकनज, लबरूजुस्सनम सुन करने वाली है॥ अफीम, बतखकी चरबी, यबरूजुरसनम की जड, अंडे की सफेदी, निशास्ता कतीरा, बबूल का गोंद पीडाके रोकने वाले हैं॥ उक्हुवान, इसतरक, हम्माम, केसर सोवा, शकायक, काहू, लफाह शाहसफरम, सुलाने वाले और सुन करने वाले हैं॥ तगर, हब्बुलाकिल्त, हाशा, शाहतरा, वादावर्द, बनफशे की जड, हजरुल गाफातीस, फेंफडे को हानि देती हैं। तम्बाकू. नकछिकनी, छींक लाने वाली है। बबूलका गोंद, निशास्ता' कतीरा, धोयाचूना, चिपकने वाली और सुद्दा उत्पन्न करने वाली हैं। अनीसून, इफ्तीमून, वसवासा, जाजर के बीज, संभालू. जावशीर, हम्मामा, दारफिल्फिलका लीमिरच, जीरा, कर्दमाना, सोंठ, नरकचूर, जरावन्द, सुद्दाब मोथा, सातर, कुन्दर, करफस, अजवायनपेट फूलने और वायुको

लाभदायक हैं। गंधक, जाज, इसफील, लहसन, पियाज, हुर्फ कबूतरकी बीट, चूना, कूट, पोदीना, सावन, सुहाव, रासन फरफयून, पेडोंका दूध, घाव डालनेवाले हैं। केसर, कच्चा रेशम, लोंग, कपूर, सफेद चन्दन, मुश्क, इजफारुत्तीन, तज, बालछड, अमरूद, बतरुज, अनार, आमला, फली और छिलका नीबू का, मूंगा, मूंगे की जड, बिसफायज, पान, जहरमुहरा खताई, लाजवर्द, गुलाब के फूल. इमली, वंसलोचन, ऊद, मोती नीलोफर के फूल, पोदीना. नम्माम. याकूत. संग, पुश्त. अम्बर सोने चांदी, के बरक. पिस्ता. बहमनें. बुसुद सेब, बिही, इंजीर जंदवार. बादरुज, बिल्ली लोटन. दारचीनी. नरकचूर. बालछड मोथा. शकाकुल. तीनमखतूम, फिरंजमुश्क, फादानिया. इला- यची. कहरुवा. गावजवां, धनियां, सौसन, नानख, हरड- छडीला, आलू, चांदनी के फूल, कुन्दर, कतीरा, अर्क केवडा, इत्र, उस्तखुद्दूस, प्रसन्न करने वाली और दिलकी पुष्ट करने वाली हैं ॥

केसर, कडुवा. बादाम. भंग. जावित्री. शराव में छडीला डा- लना. केसर. छडीला शराव पीकर सूंघना. कडुवा बादाम. या पांच दाने काकनज के पीने के पीछे खाना. शराव नशे को शीघ्र उत्पन्न करता है ॥

शराव पीकर अमरूद. बिही या मीठा बादाम. या नारियल की गिरी या धनियां खाना. नशे को देर में चढ़ने देता है ॥

बूंटीप्रचार ।

यह वैद्यकका छोटासा ग्रन्थ अपने ढंगका एकही है इसको स्वर्गवासी महात्मा महंत सुखरामदासजीने जीवनभर अपने अनुभव किये हुए चुटकुलों से भरा है बडे से बडे और छोटेसे छोटे रोगों के बहुत ही सुगम उपाय लिखे हैं यह पुस्तक प्रत्येक गृहस्थी को सदैव अपने घरमें रखना उचित है इसके पास होने से साधारण रोगों में वैद्य और हकीमों के पास दौडने की आवश्यकता नहीं रहैगी, इस पुस्तक को विदेश में भी साथ रखने से मनुष्य अपना और अपने साथियों का रोग दूर कर सकता है इन सब वातों के सिवाय धातुओं के जारण मारण की विधि जंगल की जडी बूंटीद्वारा बहुतही सहज लिखी हैं तथा औषधि प्रस्तुत करने की प्रणा ली भी विधिपूर्वक लिखी है। जिन जिन जडी बूंटियों का काम इस पुस्तक में पडा है उन सबके एसे सुन्दर चित्र दिये हैं मानों अक्सही खींच दिया है ये चित्र प्रायः २०० से अधिक हैं पुस्तक के अन्त में नागेश्वर यंत्र मृगागयंत्र आदि के कितने ही अद्भुत और उपयोगी चित्र दिये हैं। इस तरह सब मिलाकर यह पुस्तक प्रायः२०० पृष्ठमें सम्पूर्ण हुईहै मूल्य विलायती कपडे की जिल्दका १)रु० डाक म०=)

❀ केश कल्पद्रुम ❀

अर्थात् खिजाब शतक ॥

इस पुस्तक में बालोंपर खिजाब करनेके उत्तमोत्तम १०० नुसखे बडे २ हकीमों तथा वैद्यों के आजमाये हुये संग्रह करके लिखे गयेहैं एक २ नुसखा वुड्ढों को जवान बनाने और बे रोजगारों को धन कमाने के लिये काफी है, मूल्य ।)आना

चरकसंहिता।

मूल भाषा टीका आयुर्वेदिक इतिहास सहित यह ग्रन्थ आयुर्वेद के ग्रन्थों में सब से प्राचीन चिकित्साका अखिल भंडार और आर्य्यावर्त्तका गौरव स्वरूप है यदि आकाश के तारागण समुद्र की वालू के कण और मेघ के बिन्दु किसी प्रकार गणना में आसक्के हों तो इस ग्रन्थ के गुण भी गिनने में आसक्के हैं इसकी प्रशंसा से पत्र को भरना वृथा है क्योंकि कोई ऐसा हिंदू नहीं है जिसने इसका नाम न सुना हो इसके निघंटु भाग में ५०० द्रव्यों के अंग्रेजी फारसी. अरबी, बंगला हिन्दी, गुजराती, मरहठी आदि भाषाओं के नामान्तर हैं जिस से सबको उपयोगी होगी ग्रन्थ के प्रारम्भ में आयुर्वेदीय इतिहास है जिस में चरक सुश्रुतादि सम्पूर्ण आयुर्वेद के ग्रन्थकारों का जीवन चरित्र भी है इसके विषयों की अनुक्रमणिका ८० पृष्ठ में है इस तरह ग्रन्थ में सब मिलाकर १५०० पृष्ठ हैं ग्रन्थ ३० पौंड के मोटे चिकने विलायती कागज पर मुंबई के अक्षरों में बहुत स्पष्ट छापा गयाहै विलायती कपडेकी जिल्द मूल्य डाक व्यय सहित १०)

तिब्बअकबर।

यूनानी हिकमतका सबसे बडा और अपूर्वग्रन्थ

इसकी केवल १०० प्रति बाकी रहगई है इस अवसर पर भी न खरीदोगे तो बहुत दिन पछताना पडेगा। इस ग्रन्थका गौरव सब को मालूम है इससे हम के विषय में बहुत न लिख कर इतनाही लिखते हैं कि यूनानी हिकमत में यह ग्रन्थ चरक सुश्रुत के जोडका है। इसकी पृष्ठसंख्या १२५० है कागज मोटा चिकना सुन्दर जिल्द मूल्य ७) रु०

सुश्रुतसंहिता।

सान्वयां संस्कृत टीका तथा भा. टी. सहित

यह ग्रन्थ भी एकबार. छपकर बिक चुका है अबकीवार इसमें अन्वय के अंक तथा डल्हनाचार्यकृत संस्कृत टीका और भी लगाकर सांगोपांग ठीक करदिया है इतनाकाम बढाने पर भी मूल्य उतनाही रहैगा जितना पहिले था यह कुछ छपचुका है और इस के छपने का काम बराबर जारी है जो इसे लेना चाहै वह हमको सीधा पत्र लिखकर ग्राहक श्रेणी में नाम लिखावें अन्यत्र से मंगाने पर यही पुस्तक मिलै वा न मिलै ॥

शालहोत्र बडा।

इस में घोडों के शुभ अशुभ लक्षण. जाति. उत्पत्ति स्थान भौरियों ने शुभ अशुभ फल तथा बीमार घोडों के चित्र उनके घाव. व्रण. फोडा, फुंसी जहर बात तथा और भी समस्त रोगों का इलाज भली भांति वर्णन किया गया है वह पुस्तक अश्वचिकित्सक. घोडों के सौदागर. तथा उन रईसों के बडे काम की है जिनके यहां घोडे रहते हैं पुस्तक उर्दू से अनुवाद की गई है मूल्य ॥=) आना

आयुर्वेद शब्दार्णव

यह वैद्यक के शब्दों का कोष है. इस में सब औषधियों के संस्कृत नाम आकारादि क्रम से दिये गये हैं उनके आगे ही उन के अर्थ और पर्य्यायवाची शब्द प्रचालित भाषा में दिये गये हैं अज्ञात शब्दों का अर्थ जानने के लिये यह पुस्तक वैद्यों को परमोपयोगी है मूल्य १)

होमियो पैथिक चिकित्सा तत्त्व ।

इस समय डाक्टरी का प्रचार अधिक होरहा है विशेष कर " होमियो पैथिक " औषधियों का प्रयोग तो रोग निवारणमें जादूही का असर करता है इसी लिये हमने उपरोक्त ग्रन्थ बडे परिश्रम से तयार करवाया है इस पुस्तक में रोगो की पहिचान तथा लक्षण थर्मामेटर आदि डाक्टरी यंत्रों का प्रयोग विधि. होमियो पैथिक औषधियों के नाम. गुण. मात्रा. तथा प्रतिलोम यानी यह कि अमुक वस्तु या औषधि अमुक औषधि के गुण को नाश कर देती है औषधि देने का समय दवा रखने का स्थान औषधियों के सल्यूशन तथा डेल्यूट करने की विधि पथ्यापथ्य सब रोगों की चिकित्सा तथा और भी उपयोगी और आवश्यक विषयों का विचार और वर्णन भली भांति किया गया है सच तो यह है कि ग्रन्थकारने सागर को गागर में भरने का उदाहरण चरितार्थ कर दिखाया है इस पुस्तक के पास रखने से होमियोपैथिक इलाज में बहुत कुछ अभ्यास हो सक्ता है तथा बार२ डाक्टरों की खुशामद करने की आवश्यकता नहीं रहती वैद्यों तथा डाक्टरों द्वारा प्रसंशित यह छोटासा ग्रंथ अवश्य देखने योग्य है मूल्य सुलभ ।।) आना मात्र है डांक व्यय पृथक